

महाकइपुप्फयतविरइयउ

अवहइभासाणिबहु

ह रि वं स पु रा णु

(Printed Separately from the Mahapurana Vol III)

विष्णुमान्दा १९९७]

[रिस्तान्दा १९९१

मूल्य साधैरूप्यकलयम्

महाकवि पुष्पदन्त

[इस महाकवि का परिचय सबसे पहले मैंने अपने 'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षक विस्तृत लेखमें दिया था। परन्तु उसमें कविके समयपर कोई विचार नहीं किया जा सका था। उसके थोड़े ही समय बाद अपभ्रंश भाषाके विशेषज्ञ प्रो० दीरालालजी जैनने 'महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार' शीर्षक लेख लिखकर उस कमीको पूरा कर दिया और महापुराण तथा यशोधरचरितके अतिरिक्त कविकी तीसरी रचना नागकुमारचरितका भी परिचय दिया। फिर सन् १९२६ में कविके तीनों ग्रंथोंका परिचय समय-निर्णयके साथ मध्यप्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित 'फ़ैटलैंग आफ़ मेनु० इन सी० पी० एण्ड वरर' में प्रकाशित हुआ। इसके बाद प० जुमलकिशोरजी मुख्तारका 'महाकवि पुष्पदन्तका समय' शीर्षक लेख प्रकट हुआ, जिसमें कौशलाके भंडारसे मिली हुई यशोधरचरितकी एक प्रतिके कुछ अक्षरों देकर यह सिद्ध किया गया कि उक्त काव्यकी रचना योगिनीपुर (दिहौ) में वि० स० १३६५ में हुई थी, अतएव पुष्पदन्त विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिके विद्वान् हैं। इसपर प्रो० दीरालालजीने फिर 'महाकवि पुष्पदन्तका समय' शीर्षक लेख लिखकर बतलाया कि उक्त प्रतिके अक्षरों में मूल अक्षरों न होकर प्रतिलिपि अक्षरों जान पड़ते हैं, वास्तवमें कविका ठीक समय नहीं शताब्दी ही है। इसके बाद १९३१ में 'काव्या-जैन सीरीज' में यशोधरचरित प्रकाशित हुआ और उसकी भूमिकाओं में वि० स० एल० बैलने कौशलाकी प्रतिके उक्त अक्षरों और उसी प्रकारके अन्य दो अक्षरों को वि० स० १९६५ में रुद्रनन्दन गन्धर्वद्वारा ऊपरसे जोड़ा हुआ सिद्ध कर दिया और तब एक तरफ़से उक्त समयसम्बन्धी विवाद समाप्त हो गया। इसके बाद नागकुमारचरित और महापुराण भी प्रकाशित हो गये और उनकी भूमिकाओंमें कविके समयकी ओर भी बहुत-सी शक्तियाँ बाँटे प्रकट हुईं। राक्षसमें यही इस लेखकी पूर्वपीठिका है, जो इस विषयके विचारियोंके लिए उपयोगी समझ कर यहाँ दे दी गई है। प्रस्तुत लेख पूर्वोक्त सभी सामग्रीपर लक्ष्य रखकर लिखा गया है और इधर जो बहुत सी नई नई बातोंका मुझे पता लगा है, वे सब भी इसमें शामिल कर दी गई हैं। कविके स्थान, कुल, धर्म आदिपर बहुत-सा नया प्रकाश डाला गया है। ऐसी भी अनेक बातें हैं जिनपर पहलेके लेखकोंने कोई चर्चा नहीं की है। मैंने इस बातका प्रयत्न किया है कि कविके समयकी सभी शक्तियाँ बाँटे क्रमबद्ध रूपसे हिन्दीके पाठकोंके समक्ष उपस्थित हो जायें। इसके लिखनेमें सज्जनोत्तम प्रो० दीरालाल जैन और डा० ए० एन० लण्घ्यायकी सूचनाओं और सम्मतिपूर्वक लेखनेमें यथेष्ट लाभ उठाया है।]

अपभ्रंश-साहित्य

महाकवि पुष्पदन्त अपभ्रंश भाषाके कवि थे। इस भाषाका साहित्य जैन-पुस्तक-भंडारोंमें भरा पड़ा है। अपभ्रंश बहुत समय तक यहाँकी लोक-भाषा रही है और इसका साहित्य भी बहुत लोकप्रिय रहा है। राजदरबारोंमें भी इसकी काफी प्रतिष्ठा थी। राजशेखरकी काव्य-मीमांसासे पता चलता है कि राजसमाजमें राजासनके उत्तरकी ओर संस्कृत कवि, पूर्वकी ओर प्राकृत कवि और पश्चिमकी ओर अपभ्रंश कवियोंको स्थान मिलता था। पिछले २५-३० वर्षोंसे ही इस भाषाकी ओर विद्वानोंका ध्यान आकर्षित हुआ है और अब तो

१ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक १ (सन् १९२४)।

२ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक २।

३ जैनजगत् १ अक्टूबर सन् १९२६।

४ जैनजगत् १ नवम्बर सन् १९२६।

वर्तमान प्रान्तीय भाषाओंकी जननी होनेके कारण भाषाशास्त्रियों और भिन्न भिन्न भाषाओंका इतिहास लिखनेवालोंके लिए इस भाषाके साहित्यका अध्ययन बहुत ही आवश्यक हो गया है। इधर इस साहित्यके बहुत-से ग्रन्थ भी प्रकाशित हो गये हैं। कई यूनीवर्सिटियोंने अपने पाठ्य-क्रममें भी अपभ्रंश ग्रन्थोंको स्थान देना प्रारम्भ कर दिया है।

पुष्पदन्त इस भाषाके एक महान् कवि थे। उनकी रचनाओंमें जो आज, जो प्रवाह, जो रस और जो सौन्दर्य है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाषापर उनका असाधारण अधिकार है। उनके शब्दोंका भंडार विशाल है और शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनोंसे ही उनकी कविता समृद्ध है। उनकी सरस और सात्विक रचनाये न केवल पढ़ी ही जाती थी, वे गाई भी जाती थी और लोग उन्हें पढ़-सुनकर मुग्ध हो जाते थे। स्थानाभावके कारण रचनाओंके उदाहरण देकर उनकी कला और सुन्दरताकी चर्चा करनेसे निरत होना पड़ा।

कुल परिचय और धर्म

पुष्पदन्त काश्यपगोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिताका नाम केशव भट्ट और माताका मुरधादेवी था।

उनके माता पिता पहले शैव थे, परन्तु पीछे किसी दिगम्बर जैन गुरुके उपदेशावृत्तको पाकर जैन हो गये थे और अन्तमें उन्होंने जिन-सन््यास लेकर शरीर त्यागा था। नागजुमारचरितके अन्तम कविने और और छागोंके साथ अपने माता पिताकी भी कल्याण कामना की है और वहाँ इस बातको स्पष्ट किया है^१। इससे अनुमान होता है कि कवि स्वयं भी पहले शैव थे।

कविके आश्रयदाता महामात्य जरतने जब उनसे महापुराणके रचनेका आग्रह किया, तब कहा कि तुमने पहले भैरव नरेन्द्रको माना है और उसको पर्वतके समान घोर, घोर और अपनी श्रविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला वर्णन किया है। इससे जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न हुआ है, उसका यदि तुम इस समय प्रापञ्चित कर डालो, तो तुम्हारा परलोक सुधर जाय^२।

१ मूल पंक्तियाँ कठिन होनेके कारण वहाँ उन्हें सस्वर-छायायुक्त लिखा जाता है।

शिवभक्त्यै मि जितसन््यासे वे मि भ्याह दुरिपिण्यसं ।

बभणार कासवपिगोचरं गुरुवप्याभियपूरिषोत्तरं ॥

मुद्रापर्वकेसव्यामह बहु पिण्यरं ह्यैव सुहृषामह ।

[शिवभक्तौ अपि जितसन््यासेन ह्यै अपि मृतौ दुष्टिनिर्वाणेन ।

ब्राह्मणौ काश्यपप्रापिगोत्रौ गुरुवचनाभूतपूतिवधेनौ ।

मुग्धानेविनेशवनामनी मम पितरौ मया मुखापमनी ॥]

‘गुरु’ शब्दपर मूल प्रतिमें ‘दिगम्बर’ टिप्पण दिया हुआ है।

२ त्रिविधित्रिविधेसमिजियसुरिदु, गिरिधीरतीरमहस्वगिरिदु ।

पद मण्डित मण्डित बारणद, उष्णद जो मिच्छदमाद ।

पञ्चिदु ताम्र अह नरह अरु, ता पदर मुग्ध पत्योवकम्बु ।

इससे भी मालूम होता है कि पहले पुष्पदन्त शैव होंगे और शायद उसी अवस्थामें उन्होंने मैत्र नरेन्द्रकी कोई यशोगाथा^१ लिखी होगी ।

स्तोत्र-साहित्यमें ' गिवमहिम्न स्तोत्र ' बहुत प्रसिद्ध है और उसके कर्त्ताका नाम ' पुष्पदन्त ' है । असम्भव नहीं जो वह इन्हीं पुष्पदन्तकी उस समयकी रचना हो जब वे शैव थे । जयन्तभट्टने इस स्तोत्रका एक पद्य अपनी न्याय-मंजरीमें ' उक्त च ' रूपसे उद्धृत किया है । यद्यपि अभी तक जयन्तभट्टका ठीक समय निश्चित नहीं हुआ है, इसलिए जोर देकर नहीं कहा जा सकता । फिर भी सम्भावना है कि जयन्त पुष्पदन्तके बादके होंगे और तब शिवमहिम्न इन्हीं पुष्पदन्तका होगा ।

उनकी रचनाओंसे मालूम होता है कि जैनेतर साहित्यसे उनका प्रगाढ़ परिचय था । उनकी उपमायें और उत्प्रेक्षायें भी इसी बातका सकेत करती हैं^२ ।

अपने ग्रंथोंमें उन्होंने इस बातका कोई उल्लेख नहीं किया कि वे कब जैन हुए और कैसे हुए, अपने किसी जैन गुरु और सम्प्रदाय आदिकी भी कोई चर्चा उन्होंने नहीं की, परन्तु ख्याल यही होता है कि पहले वे भी अपने माता-पिताके समान शैव होंगे । यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे माता-पिताके जैन होनेके बाद जैन हुए या पहले । परन्तु इस बातमें सन्देहकी गुजाइश नहीं है कि वे सद्ध श्रद्धावादी जैन थे ।

उन्होंने जगह जगह अपनेको ' जिणपयमस्ति ब्रह्मास्ति वयसंजुति उत्तमस्ति विय-लियसर्कि ' अर्थात् जिनपदभक्त, व्रतस्सुक्त, विगलितशक्त आदि विशेषण दिये हैं और ' मग्गियपण्डियपण्डियमरणे ' अर्थात् ' पण्डित-पण्डितमरण ' पानेकी तथा बोधि-समाधिकी आकांक्षा प्रकट की है ।

' सिद्धान्तशेखर ' नामक ज्योतिष-ग्रंथके कर्त्ता श्रीपति भट्ट नागदेवके पुत्र और केशवभट्टके पौत्र थे । ज्योतिषरत्नमाला, दैवज्ञवल्लभ, जातकपद्धति, गणिततिलक, बीजगणित, श्रीपति-निबन्ध, श्रीपतिसमुच्चय, श्रीकोटिदकरण, ध्रुवमानसकरण आदि ग्रंथोंके कर्त्ता भी श्रीपति हैं । वे बड़े भारी ज्योतिषी थे । हमारा अनुमान है कि पुष्पदन्तके पिता केशवभट्ट और श्रीपतिके पितामह केशवभट्ट एक ही थे^३ । क्योंकि एक तो दोनों ही कार्श्यप गोत्रीय हैं और

१ आगे बतलाया है कि यह यशोगाथा शायद ' कथामकरन्द ' नामकी होगी और उसका नायक मैत्र नरेन्द्र । मैत्र कहेंगे राजा थे, इसका अभी तक पता नहीं लगा ।

२ चलिजीमूतदधीचिपु खैपु स्वर्गितामुपगतेषु ।

सम्प्रत्यन्यगतिकस्यागणुणो भक्तमावसति ॥ — प्रशस्ति श्लोक ९ ।

३ यह ग्रन्थ कलकत्ता मूनीवर्सिटीने अभी हाल ही प्रकाशित किया है ।

४ गणिततिलक श्रीसिंहतिलकसंस्कृत टीकासहित गायकवाड ओरियण्टल सीरीजमें प्रकाशित हुआ है ।

५ भट्टकेशवपुत्रस्य नागदेवस्य नन्दनः, श्रीपती रोहिणीख(ले)डे ज्योति-शास्त्रमिद व्यधात् ।

— ध्रुवमानसकरण ।

६ ज्योतिषरत्नमालाकी महादेवप्रणीत टीकामें श्रीपतिका काश्यप गोत्र बतलाया है—“ काश्यपवश-पुण्डरीकलण्डमार्तण्ड केशवस्य पौत्रः नागदेवस्य सन्नु श्रीपति सहितार्थमग्निषातुरिन्दुराह—। ”

दूसरे दोनोंके समयमें भी अधिक अन्तर नहीं है।

केशवमहर्षेके एक पुत्र पुष्पदन्त होंगे और दूसरे नागदेव। पुष्पदन्त निम्पुत्र-कलत्र थे, परन्तु नागदेवको श्रीपति जैसे महान् ज्योतिषी पुत्र हुए। यदि यह अनुमान ठीक हो, तो श्रीपतिका पुष्पदन्तका भतीजा समझना चाहिए।

पुष्पदन्त मूलमें कहैंकि रहनेवाले थे, उनकी रचनाओंमें इस बातका कोई उल्लेख नहीं मिलता। परन्तु उनकी भाषा बतलाती है कि वे कर्नाटकके या उससे और दक्षिणके द्रविड़ प्रान्तोंके तो नहीं थे। क्योंकि एक तो उनकी सारी रचनाओंमें कन्नड़ी और द्रविड़ भाषाओंके शब्दोंका प्रायः अभाव है, दूसरे अब तक अपभ्रंश भाषाका ऐसा एक भी ग्रन्थ नहीं मिला है जो कर्नाटक या उसके नीचेके किसी प्रदेशका बना हुआ हो। अपभ्रंश साहित्यकी रचना प्रायः उत्तर भारत और राजपुताना, गुजरात, भाजरा, बरारमें ही होती रही है। अतएव अधिक संभव यही है कि वे इसी ओरके हो।

श्रीपति ज्योतिषी रोहिणीखंडके रहनेवाले थे और रोहिणीखंड बरारके मुल्ताना जिलेका रोहनखंड नामका गाँव जान पड़ता है^१। यदि श्रीपति सचमुच ही पुष्पदन्तके भतीजे हो तो पुष्पदन्तको भी बरारका रहनेवाला मानना चाहिए।

बरारकी भाषा मराठी है। अभी ग० बा० तगारे एम० ए०, बी० टी० नामक विद्वानने पुष्पदन्तको प्राचीन मराठीका महाकवि बतलाया है^२ और उनकी रचनाओंमेंसे बहुतसे ऐसे शब्द चुनकर बतलाये हैं, जो प्राचीन मराठीसे मिलते जुलते हैं^३। वैष्णवमार्कण्डेयने अपने 'प्राकृत-सर्गस्य'^४ में अपभ्रंश भाषाके नागर, उपनागर और प्राचट ये तीन भेद किये हैं। इनमेंसे प्राचटको छाट (गुजरात) और निर्दम (बरार) की भाषा बतलाया है। सो पुष्पदन्तकी अपभ्रंश प्राचट होनी चाहिए।

श्रीपतिने अपनी 'ज्योतिषरत्नमाला' पर स्वयं एक मराठी टीका लिखी थी, जो

१ महाप्रह्लादपञ्चम ५ सुभाकर द्विवेदीने अपनी गणिततथ्यानी में श्रीपतिका समय या स १२१ बतलाया है और स्वयं श्रीपतिने अपने 'वीरशक्तिद्वय' में अर्धपञ्चमशतके क्रि. श. स १६१ का उपयोग किया है। जिससे अनुमान होता है कि वे उस समय तक जीवित थे। भुवमानचक्रणके सम्पादनमें श्रीपतिका समय या स १५ के आसपास बतलाया है। पुष्पदन्त श० स ८९४ की मस्मसेटकी लुट तक बल्कि उसके भी बाद तक जीवित थे। अतएव दोनोंके बीच जो अन्तर है वह इतना अधिक नहीं है कि चचा और भतीजेके बीच सम्भव न हो। श्रीपतिने उग्र भी शायद अधिक गाँई हो।

२ मुल्ताना जिलेके गजेन्द्रपुर नामक स्थान पर रहनेवाले विद्वान् श्री १५-१६ वीं शताब्दिमें सानदेशके सुवेद्य और बहमनी साम्राज्यके नवाबोंके बीच अनेक छद्मार्थों हुई हैं।

३ देखो ब्रह्माग्नि (माधवपत्र) का अंक १९४१ का अंक, पृ. २५३-२६।

४ कुछ गोपेय शब्द देखिए—उग्ररुद्र=उग्रिन्द्र (धृतराष्ट्र) गजोत्थिष्ठ=गजोत्थिष्ठ (कुली), विद्विष्ठ=विद्विष्ठ (कीचक) पुष्पदन्त (बी) पुरुषोत्तमस्य (गोपना) पेश=पेशने (लोचना) शोक=शोक (वचन), आदि।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार राजवाडेको मिली थी और उन्होंने उसे सन् १९१४ में प्रकाशित भी करा दिया था। मुझे उसकी प्रति अभी तक नहीं मिल सकी। उसके प्रारम्भका अंश इस प्रकार है “ते या ईश्वररूपा कालाते मि। ग्रथकर्त्ता श्रीपति नमस्कार। मी श्रीपति रत्नाचि माला रचितो।” इसकी भाषा गीताकी प्रसिद्ध टीका ज्ञानेश्वरसे मिलती-जुलती है। इससे भी अनुमान होता है कि श्रीपति वरारके ही होंगे और इसलिए पुष्पदन्तका भी वहींका होना सम्भव है।

सबसे पहले पुष्पदन्तको हम मेलाडि या मेलपाटीके एक उद्यानमें पाते हैं और फिर उसके बाद मान्यखेटमें। मेलाडि उत्तर अर्काट जिलेमें है जहाँ कुछ कालतक राष्ट्रकूट महाराजा कृष्ण तृतीयका सेना-सन्निवेश रहा था और वहीं उनका भरत मन्त्रीसे प्रथम साक्षात् होता है। निजाम-राज्यका वर्तमान मलखेड ही मान्यखेट है।

यद्यपि इस समय मलखेड महाराष्ट्रकी सीमाने अन्तर्गत नहीं माना जाता, परन्तु बहुतसे विद्वानोंका मत है राष्ट्रकूटोंके समयमें यह महाराष्ट्रमें ही गिना जाता था और इसलिए अब वहाँ तक वैद्यों अपभ्रंशकी पहुँच अवश्य रही होगी।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले नासिकके पास मयूरखडी या मोरखडीमें थी, जो महाराष्ट्रमें ही है। अतएव राष्ट्रकूट इसी तरफके थे। मान्यखेटको उन्होंने अपनी राजधानी सुदूर दक्षिणके अन्तरीपपर शासन करनेकी सुविधाके लिए बनाया था, क्योंकि मान्यखेटमें केन्द्र रख कर ही चोल, चेर, पाण्ड्य देशोंपर ठीक तरहसे शासन किया जा सकता था।

भरतको कविने कई जगह भरत भट्ट लिखा है। नाड्ल और सीलडय भी ‘भट्ट’ विशेषणके साथ उल्लिखित हुए हैं। इससे अनुमान होता है कि पुष्पदन्तको इन भट्टोंके मान्यखेटमें रहनेका पता होगा और उसी सूत्रसे वे धूमते-धामते उस तरफ पहुँचे होंगे। बहुत सम्भव है कि ये लोग भी पुष्पदन्तके ही प्रान्तके हों और महान् राष्ट्रकूटोंकी सम्पन्न राजधानीमें अपना भाग्य आजमानेके लिए आकर बस गये हों और कालान्तरमें राजमान्य हो गये हों। उस समय वरार भी राष्ट्रकूटोंके अधिकारमें था, अतएव वहाँके लोगोंका आवागमन मान्यखेट तक होना स्वाभाविक है। कमसे कम विद्योपजीवी लोगोंके लिए तो ‘पुरन्दरपुरी’ मान्यखेटका आकर्षण बहुत ज्यादा रहा होगा।

भरत मन्त्रीको कविने ‘प्राकृतकविकाव्यरसावलम्ब्य’ कहा है और प्राकृतसे यहाँ उनका मतलब अपभ्रंशमें ही जान पड़ता है। इस भाषाको वे अच्छी तरह जानते होंगे और उसका आनन्द ले सकते होंगे, तभी न उन्होंने कविको इतना उत्साहित और सम्मानित किया होगा ?

व्यक्तित्व और स्वभाव

पुण्यदन्तका एक नाम 'खण्ड' था। शायद यह उनका धरू और बोलचालका नाम होगा। महाराष्ट्रमें खड्गी, खडोरा नाम अब भी कसरतसे रखे जाते हैं। अभिमानमेरू, अभिमान चिह्न, काव्यरत्नाकर, कम्बुकुलतिलक, सरस्वतीनिर्लय, कव्यपिसङ्ग (काव्यपिशाच या काव्यराक्षस) ये उनकी पदमियाँ थीं। यह पिछली पदवी बड़ी अद्भुत-सी है, परन्तु इसका उन्होंने स्वयं ही प्रयोग किया है। शायद अपनी महती कवित्व शक्तिके कारण ही यह पद उन्होंने पसन्द किया हो। 'अभिमानमेरू' पद उनके स्वभावको भी व्यक्त करता है। वे बड़े ही स्वाभिमानी थे। महापुराणकी उल्यानिकासे माझूम होता है कि 'नव वे खलजनोद्धार अहेलित और दुर्दिनोसे पराजित होकर घूमते घूमते मेलपाटीके बाहर एक बगीचेमें विश्राम कर रहे थे, तब 'अम्भइय' और 'इन्द्र' नामक दो पुरुषोंने आकर उनसे कहा, "आप इस निर्जन वनमें क्यों पड़े हुए हैं, पास्के नगरमें क्यों नहीं चलते?" इसके उत्तरमें उन्होंने कहा, "गिरिकन्दराओंमें घास खाकर रह जाना अच्छा

१ (क) ओ विदिगा विम्भउ कव्वविहू त गिमुपेवि सा सचलित सङ्ग।—म पु सन्धि १, क ६

(ख) मुग्धे भीमदनिग्यसण्डमुक्केवकुगिरेस्त।—म पु सन्धि ३

(ग) वाण्डनिपमइ कुतुल्लमती सण्डस्य कीर्ति हुते।—म पु स ३९

२ (क) त मुपेवि मणइ अहिमाणमेरू।—म पु १३१२

(ख) क वाल्यस्यभिमानरत्ननिर्लय भीपुण्यदन्त विना।—म पु स ४५

(ग) गण्णहा मदिरे गिवसु सङ्ग अहिमाणमेरू गुणयणमहात्तु।—जा कु १२२

३ वयसमुत्ति उच्चमसत्ति विगलियसकि अहिमाणकि।—म च ४११-३

४ ओ ओ केसवतपुणइ णवसरवहमुइ कव्वरणरणायार। म पु १४१

५-६ (क) त गितुणवि मरोइ दुत्तु ताव, ओ कइत्तुल्लित्तव विगुक्कवाव।—म पु १८१

(ख) अयाइ कइराउ पुण्ययत्त सरसणिळत्त।

देविवाहि सरुत्त वण्णइ कइवणकुल्लित्तत्त।—म च १८१५

७ (क) गिणचरणकमलमत्तिहण्ण ता अपिउ कव्वपिसङ्गण्ण।—म पु १८८

(ख) बोद्धविउ कइ कव्वपिसङ्गत्त कि तुहु सचउ वण मणिळत्त।—म पु ३८३५

(ग) गण्णसस पत्तणाय कव्वपिसङ्गेण पवियमुपेव।—जा च अन्तिम पथ

८ मीहि परिमयत्तु मेवाट्ठिययइ।

अवोहेरिपत्तल्लेण गुणमहात्तु दिवोहि पणइत्त पुण्ययत्त।

णदणवणि निर बीसमइ आम ठहि विणि पुसि सपत्त ताम्।

पणवेप्पिणु ठेहि पवत्त एव मो सङ्ग गल्लिपपावावलेव।

परिममिरममरवणुमगुमति कि निर गिवसहि गिज्जणवणत्ति।

कसिसवोहिरेमदिचक्कवालि पइसरहि ण कि पुत्तरि विहात्ति।

त मुणिवि मणइ अहिमाणमेरू वर सङ्ग गिरिकन्दरि प्पेह।

णत्त दु जनभउएवकिगाइ दीएणु कइसमावविगाइ।

परन्तु दुर्जनोकी टेढ़ी भौहें देखना अच्छा नहीं । माताकी कूँखसे जन्मते ही मर जाना अच्छा परन्तु किसी राजाके भ्रूकुचित नेत्र देखना और उसके कुवचन सुनना अच्छा नहीं । क्योंकि राजलक्ष्मी दुरते हुए चँवरोफी हवासे सारे गुणोको उड़ा देती है, अभिप्रेतके जलसे सुजनताको धो डालती है, विवेकहीन बना देती है, दपसे झूठी रहती है, मोहसे अंधी रहती है, मारण-शील होती है, सत्ताग राज्यके बोझसे लदी रहती है, पिता-पुत्र दोनोंमें रमण करती है, विषकी सहोदरा और जड-रक्त है । लोग उस समय ऐसे नीरस, और निर्विधेय (गुणाव-गुणविचाररहित) हो गये हैं कि बृहस्पतिके समान गुणियोंका भी द्वेष करते हैं । इसलिए मैंने इस वनकी शरण ली है और यहींपर अभिमानके साथ मर जाना ठीक समझा है । ” पाठक देखें कि इन पक्तियोंमें कितना स्वाभिमान और राजाओं तथा दूसरे हृदयहीन लोगोंके प्रति कितने ज्वालामय उद्गार भरे हैं !

ऐसा मात्स्य होता है कि किसी राजाके द्वारा अवहेलित या उपेक्षित होकर ही वे घरसे चल दिये थे और भ्रमण करते हुए और बड़ा लम्बा दुर्गम रास्ता तय करके मेलपाटी पहुँचे थे । उनका स्वभाव स्वाभिमानी और कुछ उग्र तो था ही, अतएव कोई आश्चर्य नहीं जो राजाकी जरा-सी भी टेढ़ी भौहको वे न सह सके हो और इसीलिए नगरमें चलनेके आग्रह करनेपर उन दो पुरुषोंके सामने ही राजाओपर बरस पड़े हो । अपने उग्र स्वभावके कारण ही वे इतने चिढ़ गये और उन्हें इतनी वितृष्णा हो गई कि सर्वत्र दुर्जन ही दुर्जन दिखाई देने लगे, और सारा ससार निष्फल, नीरस, शुष्क प्रतीत होने लगा ।

जान पड़ता है महामात्य भरत मनुष्य-स्वभावके बड़े पारखी थे । उन्होंने कविवरकी प्रकृतिको समझ लिया और अपने सद्व्यवहार, समादर और विनयशीलतासे सन्तुष्ट करके उनसे वह महान् कार्य करा लिया जो दूसरा शायद ही करा सकता ।

राजाके द्वारा अवहेलित और उपेक्षित होनेके कारण दूसरे लोगोंने भी शायद उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया होगा, इसलिए राजाओंके साथ साथ औरोंसे भी वे प्रसन्न नहीं दिखलाई देते, उनको भी घुरा-भला कहते हैं, परन्तु भरत और नञ्जकी लगातार प्रशंसा करते हुए भी वे नहीं थकते ।

धत्ता—वर पारवरं धवलच्छिदे होहु म कुच्छिदे मरुत सोणिमुहगियमे ।

खलकुन्तिष्ठपहुवयणइ भिउडियणवणइ म पिहालउ सूरुगमे ॥

चमराणिलसुवुणियगुणाइ अहिसेवधोयसुयणत्तणाइ ।

अभियेयइ दणुत्तालियाइ मोहवइ मारणसीलियाइ ।

सत्तमारज्जमरभरियाइ पिउपुत्तरमणरसयारियाई ।

विससदज्जमाइ जडरत्तियाइ किं जच्छिइ विउसरिरत्तियाइ ।

सपइ जणु नीरसु गिन्विसेसु गुणवतउ जइ मुरगुवि देसु ।

तदिं अमहइ लइ काणणु नि सरणु अहिमार्गे सहु नीर होउ मरणु ।

१ जो जो दीसइ सो सो दुजणु

गिण्णल नीरसु ज सुकउवणु ।

उत्तरपुराणके अन्तम उन्होंने अपना परिचय इस रूपमें दिया है, “सिद्धिविलासिनीके मनोहर दूत, मुग्धा देवीके शरीरसे समूत, निर्धनों और धनियोंको एक दृष्टिसे देखनेवाले, सारे जीवोंके अकारण मित्र, शब्दसलिलसे बड़ा हुआ है काव्य-स्रोत जिनका, केशवके पुत्र, काश्यपगोत्री, सरस्वतीविलासी सुने पड़े हुए धरो और देवकुलिकाओंमें रहनेवाले, कलिके प्रमल पाप पटलोसे रहित, बेचरबार, पुत्रकलत्रार्हान, नदियों बापिकाओं और सरोवरोंमें जान करनेवाले, पुराने बख और बन्कल पहिननेवाले, धूलधूसरित अग, दुर्जनोके सगसे दूर रहनेवाले, जमीनपर सनेवाले और अपने ही हाथोंको ओढ़नेवाले, पण्डित पण्डित-मरणकी प्रतीक्षा करनेवाले, मान्यखेट नगरम रहनेवाले, मनमें अरहतदेवका ध्यान करनेवाले, भरत मनीद्वारा सम्मानित, अपने काव्यप्रचारसे लोगोंको पुष्किल करनेवाले और पापरूप कौचकको जिन्होंने धो बाढा ह, ऐसे अभिमानमेरु पुष्पदन्तने, यह काव्य जिन पदकमलोंमें हाथ जोड़े हुए भक्तिपूर्वक क्रोधनसरस्वतीकी असा सुदी दसरीकी बनायी।

इस परिचयसे करिकी प्रवृत्ति और उनकी निस्सगताका हमारे सामने एक चित्र सा खिच जाता है। एक बड़े भारी साम्राज्यके महामन्त्रीद्वारा अतिशय सम्मानित होते हुए भी वे सर्वथा अकिञ्चन और निर्लिप्त ही रहे जान पड़ते हैं। नाममात्रक गृहस्थ होकर एक तरहसे वे मुनि ही थे।

एक जगह वे भरत महामात्यसे कहते हैं कि “मैं धनको तिनकेके समान गिनता हूँ। उसे न नहीं लेता। मैं तो केवल अकारण प्रेमका भूखा हूँ और इसीसे तुम्हारे महलमें हूँ। मेरी कविता तो जिन-चरणोंकी भक्तिसे ही स्फुरायमान होती है, जीविका निर्वाहके खयालसे नहीं।”

१ सिद्धिविलासिनिमण्डप
निदणसखण्णोन्नममिच्छ
सहस्रलितपरिवर्तितुयसोत्ते
विमलसदसहजगियविलासे
कलिमलयलमवलयपरिचर्ते
गङ्गा-वासी-तलाय सरदाले
धीरे धूलै धूलरिगै
महिसयगयले करपगुरे
मण्णपेइपुरवरे गिवसते
महामण्णपिने नयगिरुए
पुण्ययतकङ्गा पुण्यके
कयउ कयु मतिए परमये
कोइणसवन्दरे आधायए

२ धनु तनुतनु मञ्जु न त गाणु
देवीमुअ मुदगिदि तेण हउ
३ मण्ण कइतणु जिणपयमदिहे

मुद्रापरीतनुपवृष्ट ।
सर्वजीवविकारणमित्ते ॥ २१
केसवपुत्ते काश्यपगोत्ते ।
सुष्णमनवदेवतलविवर्ते ॥ २२
विमलेय विष्णुत्तकलत्ते ।
जल-वीर बकल-परिहाणे ॥ २३
वृक्षवर्धनस-दुज्जणस्यै ।
मणियरादिबपदिबमरणे ॥ २४
मगे अरहत्त देउ हावते ।
कल्लमवचजगियलणुलए ॥ २५
नह महिमाणमकणामने ।
जिणवपकयमउल्लिमहाये ॥ २६
बहमए दिपेरे चदइरुलए ।
वेहु विहारिउ इच्छमि ।
गिरए सुहारए अच्छमि ॥—२ उत्तर पु
पवरए नउ गिवगीवियविसिदि ।—३ ५

इस तरहकी निस्पृहतामें ही स्वाभिमान टिक सकता है और ऐसे ही पुरुषको 'अभिमानमेरु' पद शोभा देता है। कविने एक-दो जगह अपने रूपका भी वर्णन कर दिया है, जिससे मालूम होता है कि उनका शरीर बहुत ही दुबला पतला और सौंवला था। वे बिल्कुल कुरूप थे^१ परन्तु सदा हँसते रहते थे^२। जब बोलते थे तो उनकी सफेद दन्तपक्तिसे दिशाएँ धबल हो जाती थीं^३। यह उनकी स्पष्टवादिता और निरहकारताका ही निदर्शन है, जो उन्होंने अपनेको शुद्ध कुरूप कहनेमें भी सकोच न किया।

पुष्पदन्तमें स्वाभिमान और विनयशीलताका एक विचित्र सम्मेलन दीख पड़ता है। एक ओर वे अपनेको ऐसा महान् कवि बतलाते हैं जिसकी बड़े बड़े विशाल प्रयोंके ज्ञाता और मुहत्तसे कविता करनेवाले भी बराबरी नहीं कर सकते^४ और सरस्वतीसे कहते हैं कि हे देवी, अभिमानरत्ननिष्ठ पुष्पदन्तके बिना तुम कहाँ जाओगी—तुम्हारी क्या दशा होगी^५ ? और दूसरी ओर कहते हैं कि मैं दर्शन, व्याकरण, सिद्धान्त, काव्य, अलंकार कुछ भी नहीं जानता, गर्भमूर्ख हूँ। न मुझमें बुद्धि है, न श्रुतसंग है, न किर्तीका बल है^६।

भावुक तो सभी कवि होते हैं परन्तु पुष्पदन्तमें यह भावुकता और भी बड़ी चढ़ी थी। इस भावुकताके कारण वे स्वप्न भी देखा करते थे। आदिपुराणके समाप्त हो जाने पर किसी कारण उन्हें कुछ अच्छा नहीं लग रहा था, वे निर्विण्णसे हो रहे थे कि एक दिन उन्हें स्वप्नमें सरस्वती देवीने दर्शन दिया और कहा कि 'जन्ममरण-रोगके नाश करनेवाले अग्रहत भगवानको, जो पुण्य-वृक्षको सींचनेके लिए मेघतुल्य हैं, नमस्कार करो।' यह सुनते ही कविराज जाग उठे और यहाँ वहाँ देखते हैं तो कहीं कोई नहीं है, वे अपने घरमें

१ कण्ठसरीरं दुर्दृक्कुरूपं मुद्राएविगम्भसभूवं । —उ० पु०

२ गण्यस्स पत्थणाए कम्बमिसल्लेण पवसियमुहेण ।

गायकुमारचरित्तं रद्धयं सिरिपुण्यतेण ॥—गायकुमार च०

पवसियत्तुहिं कइणा खँहं । —यशोधरचरित

३ विचदतपतिषवलीकयासु ता जयइ वरवायाविलासु ।

४ आलम्भ (!) कवितारसैकधिषणासौमाम्भमाजो गिरा

दृश्यन्ते कवयो विशालसकलप्रन्यानुगा बोधत ।

किन्तु प्रौढनिरुद्धगूढमतिना श्रीपुष्पदन्तेन मो

साम्यं विप्रति (!) नैव ज्ञातु कविता शीम त्वत्. प्राकृते ॥ —प्र० श्लो० ४०

५ लोके दुर्गेनसकुले इतकुले तृष्णावशे नीरसे

घालकारवचोकिचारचतुरे आकियलीलावरे ।

भदे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ साम्प्रत

क यास्यस्याभिमानरत्ननिष्ठय श्रीपुष्पदन्तं विना ॥ —प्र० श्लो० ४५

६ ए ह्यु ह्यु उदिरिग्यह्यु न ह्यु सुयस्यह्यु णठ कासु वि केरठ बल । —उ० पु०

ही हैं। उन्हें बड़ा विस्मय हुआ।^१ इसके बाद भरतमन्त्रीने आकर उन्हें समझाया और तब वे उत्तरपुराणकी रचनात्म प्रवृत्त हुए।

कविके प्रयोक्ते मास्त्र होता है कि वे महान् विद्वान् थे। उनका तन्नाम दर्शनशास्त्रोंपर तो अधिकार था ही, जैनसिद्धान्तकी जानकारी भी उनकी असाधारण थी। उस समयके ग्रन्थकर्ता चाहें वे किसी भी भाषाके हों, संस्कृतज्ञ तो होते ही थे। यद्यपि अभी तक पुष्पदन्तका कोई स्वतन्त्र संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है, फिर भी वे संस्कृतमें अच्छी रचना कर सकते थे। इसके प्रमाणस्वरूप उनके वे संस्कृत पत्र पेश किये जा सकते हैं जो उन्होंने महापुराण और यशोधरचरितमें भरत और नन्दाकी प्रशंसामें लिखे हैं। व्याकरणकी दृष्टिसे यद्यपि उनमें कहीं कहीं कुछ स्वरूपायें पाई जाती हैं, परन्तु वे कवियोंकी निरकुशताकी ही द्योतक हैं, अज्ञानताकी नहीं।

कविकी ग्रन्थ-रचना

महाकवि पुष्पदन्तके अब तक तीन ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं और सौभाग्यकी बात है कि वे तीनों ही आधुनिक पद्धतिसे सुसम्पादित होकर प्रकाशित हो चुके हैं।

१ तिसहिमहापुरिसगुणालकार (त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालकार) या महापुराण। यह आदिपुराण और उत्तरपुराण इन दो खंडोंमें विभक्त है। ये दोनों अलग अलग भी मिलते हैं। इनमें ब्रह्म शास्त्रका पुरुषोक्ते चरित है। पहलेमें प्रथम तार्थिकर ऋषभदेवका और दूसरेमें शेष तार्थिकरोंका और उसके समयके अन्य महापुरुषोंका। उत्तरपुराणमें पद्मपुराण (रामायण) और हरिवंशपुराण (महाभारत) भी शामिल हैं और ये भी कहीं कहीं पृथक् रूपमें मिलते हैं।

अपभ्रंश प्रयोगोंमें सर्वाङ्गी कगह सन्धियाँ होती हैं। आदिपुराणमें ३७ और उत्तरपुराणमें ६५ सन्धियाँ हैं। दोनोंका श्लोकपरिमाण लगभग बीस हजार है। इसकी रचनाने कविकी लगभग ऊँह वर्ष लगे थे।

यह एक महान् ग्रन्थ है और जैसा कि कविने स्वयं कहा है, इसमें सब कुछ है और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है।

१ अथि नाथन कि ति अमनोर्गे कइवपदिनइर केण वि कर्मे ।

विनिष्पठ विठ जम महाकइ वा विवन्तरी पत्त सरावइ ।

भगइ भगरी मुहमरुगेह कणसइ अइइ मुहमरुगेह ।

इय गिउपेवि विठइइ कइक सवज्जकवइ ग उणउतइइ ।

दिउठ विद्वान् कि ति अ वेच्छइ वा विविषमइ विपथि अच्छइ ।—महापुराण ३८ २

२ केवल हरिवंशपुराणकी अर्धमूर्ति एक विद्वान् आसक्तर्क ने अर्धमयामें सम्पादित करके प्रकाशित किया है।

३—अन प्रावृत्तमयानि सनका नीति रिपिउच्छइ

मर्यादकृतयो सत्यम विविषममार्थमैर्गीतव ।

विश्रामपदिहसि जैनपथि नान्न राहिजो

इत्येवो मयेगपुनदानी विद्व कनोपेयम् ॥ —प्र० अ० १५

महामात्य भरतकी प्रेरणा और प्रार्थनासे यह बनाया गया, इसलिए कविने इसकी प्रत्येक सन्धिके अन्तमें इसे 'महामन्त्रभरहाणुमणिष' (महामन्त्रभरतानुमते) विशेषण दिया है और इसकी अधिकांश सन्धियोंमें प्रारम्भमें भरतका विविध-गुणकीर्तन किया है।

जैनपुस्तकभण्डारोमें इस ग्रन्थकी अनेकानेक प्रतियाँ मिलती हैं। इसपर अनेक टिप्पण-ग्रन्थ भी लिखे गये हैं, जिनमेंसे आचार्य प्रभाचन्द्र और श्रीचन्द्र मुनिके दो टिप्पण उपलब्ध हैं। श्रीचन्द्रने अपने टिप्पणमें लिखा है—'मूलटिप्पणिका चालोक्य कृतमिदं समुच्चय-टिप्पण।' इससे मान्य होता है कि इस ग्रन्थपर स्वयं ग्रन्थकर्ताकी लिखी हुई मूल टिप्पणिका भी थी, जिसका उपयोग श्रीचन्द्रने किया है। जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध रहा है।

महापुराणकी प्रथम सन्धिके छठे कद्वकमें जो 'वीरभइरवणरिदु' शब्द आया है, उसपर प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण है—“वीरभेरव. अन्यः कश्चिद् दुष्टः महाराजो वर्तते, कथा-मकरन्दनायको वा कश्चिद्वाजास्ति।” इससे अनुमान होता है कि 'कथा-मकरन्द' नामका भी कोई ग्रन्थ पुष्पदन्तकृत होगा जिसमें इस राजाको अपनी श्रीविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला और पर्वतके समान वीर बतलाया है। भरतमन्त्रीने इसीको लक्ष्य करके कहा था कि तुमने इस राजाकी प्रशंसा करके जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न किया है, उसका प्रायश्चित्त करनेके लिए महापुराणकी रचना करो।

२ नागकुमारचरित—(नागकुमारचरित)। यह एक खण्डकाव्य है। इसमें ९ सन्धियाँ हैं और यह गण्णणामकिय (नरनामाकित) है। इसमें पद्मकी उपवासका कल बतलानेवाला नागकुमारका चरित है। इसकी रचना बहुत ही सुन्दर और प्रौढ़ है।

यह मान्यखेटमें नन्नेके मन्दिर (महल) में रहते हुए बनाया गया है। प्रारम्भमें कहा गया है कि महोदधिके गुणधर्म और शोभन नामक दो शिष्योंने प्रार्थना की कि आप पद्मी-फलकी रचना कीजिए, महामात्य नन्ने भी उसे सुननेकी इच्छा प्रकट की और फिर नाइछ और शीलभट्टने भी आग्रह किया।

३ जसहरचरित (यगोवर्गचरित)। यह भी एक सुन्दर खण्डकाव्य है और इसमें 'यशोधर' नामक पुराण-पुरुषका चरित वर्णित है। इसमें चार सन्धियाँ हैं। यह कथानक जैनसम्प्रदायमें इतना प्रिय रहा है कि सोमदेव, वाढिराज, वासयसेन, सोतकीर्ति, हरिमद्र,

१ ये गुणकीर्तनके सम्पूर्ण वर महापुराणके प्रथम राष्ट्रकी प्रस्तावनामें और जैनसाहित्यसंशोधक राष्ट्र २ अक १ के मेरे लेखमें प्रकाशित हो चुके हैं।

२ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण परमार राजा जयसिंहदेवके राज्यकालमें और श्रीचन्द्रका भोजदेवके राज्य-कालमें लिखा गया है। देखो, अनेकान्त वर ४, अक १ में मेरा 'श्रीचन्द्र और प्रभाचन्द्र' शीर्षक लेख।

क्षमाकरुणा आदि अनेक दिगम्बर-रत्नेताम्बर लेखकोने इसे अपने अपने ढंगसे प्राकृत और संस्कृतम लिखा है ।

यह ग्रन्थ भी भरतके पुत्र और बल्लभनरेन्द्रके गृहमन्त्रीके लिए उन्हींके महलमें रखते हुए लिखा गया था, इसलिए कविने इसके लिए प्रत्येक सन्धिके अन्तमें 'जयजयकल्याणभरण (नचके कानोका गहना) विशेषण दिया है । इसकी दूसरी तीसरी और चौथी संधिके प्रारम्भमें नचके गुणकीर्तन करनेवाले तीन संस्कृत पद्य हैं । इस प्रथमी कुछ प्रतियोंमें गार्ध्व कविके बनाये हुए कुछ छेपक भी शामिल हो गये हैं जिनकी चर्चा आगे की गई है । इसकी कई सटिप्पण प्रतियों में मिलती है । मन्त्रिके ऐक्य पनालाछ सरस्वती मयनमें (८०४ क) एक प्रति ऐसी है जिसमें ग्रन्थकी प्रत्येक पंक्तिकी संस्कृतच्छाया दी हुई है जो संस्कृतज्ञोंके लिए बहुत ही उपयोगी है ।

उपलब्ध प्रयोगों में महापुराण उनकी प्यारी रचना है और यशोधरचरित सबसे पिछली रचना । इसकी अन्तिम प्रशस्ति उस समय लिखी गई है जब युद्ध और छूटके कारण मान्यखेटकी दुर्दशा हो गई थी, वहाँ दुष्काळ पड़ा हुआ था, लोग मूर्खों मर रहे थे, जगह जगह मर-कफाळ पड़े हुए थे । नागकुमारचरित इससे पहले बन चुका होगा । क्योंकि उसमें स्पष्ट रूपसे मान्यखेटकी 'श्रीकृष्णरानकी तलवारसे दुर्गम' बतलाया है । अर्थात् उस समय कृष्ण दूसरी जीवित थे । परन्तु यशोधरचरितमें नचकी केवल 'बल्लभनरेन्द्रगृहमहत्तर' विशेषण दिया है और बल्लभनरेन्द्र राक्षसोंकी सामान्य परवी थी । वह खोहिंगदेवके लिए भी प्रयुक्त हो सकती है और उनके उत्तराधिकारी कर्त्तके लिए भी । महापुराण श० स० ८८७ में पूर्ण हुआ था और मान्यखेटकी छट ८९५ के लगभग हुई । इसलिए इन सात आठ बरसोंके बीच कविके द्वारा इन दो छोटे छोटे उपलब्ध प्रयोगों के सिवाय और भी प्रयोगों के रचे जानिका सम्भावना है ।

कोच-ग्रन्थ । आचार्य हेमचन्द्रने अपनी 'देसीनाममाळा'की खोपह दृष्टिमें किसी 'अभिमानचिह्न' नामक ग्रन्थकारके सूत्र और स्वविशुद्धिके पद्य उद्धृत किये हैं । क्या आश्चर्य है जो अभिमानमेढ और अभिमानचिह्न एक ही हों । यद्यपि पुष्पदन्तने प्राय सर्वत्र ही अपने 'अभिमानमेढ' उपनामका ही उपयोग किया है, फिर भी यशोधरचरितके अन्तमें एक जगह अधिमाणिकि (अभिमानाक) या अभिमानचिह्न भी लिखा है । इससे बहुत

१ कौशिल्यगीतगोविन्ददिनयन्त्र ब्रह्महन्तरिचरितकृतम् ।

जयश्री मन्दिर निवसन्तु कुरु अभिमानमेढ कथं पुष्पकम् । — नामाङ्कितचरित १२२

२ देखो कारना-दीर्घिका यशोधरचरित १ २४ ४७, और ७५ ।

३ देखो, देवीनाममाळ १-१४१, ६-१३, ७-१, ८-१२, १० ।

४ देखो यशोधरचरित, १ १, पंक्ति १ ।

सम्भव है कि उनका कोई देसी शब्दोंका कोश ग्रन्थ भी स्वोपज्ञटीकासहित हो जो आचार्य हेमचन्द्रके समक्ष था ।

कविके आश्रयदाता

महामात्य भरत । पुष्पदन्तने दो आश्रयदाताओंका उल्लेख किया है, एक भरतका और दूसरे नन्नका । ये दोनों पिता-पुत्र थे और महाराजाविराज कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य । कृष्ण राष्ट्रकूट वंशका अपने समयका सबसे पराक्रमी, दिग्विजयी और अन्तिम सम्राट् था । इससे उसके महामात्योंकी योग्यता और प्रतिष्ठाकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । नन्न गायद अपने पिताकी मृत्युके बाद ही महामात्य हुए होंगे । यद्यपि उस कालमें योग्यतापर कम ध्यान नहीं दिया जाता था, फिर भी वैसे वैसे राजपद प्रायः वंशानुगत होते थे ।

भरतके पितामहका नाम अण्णप्पा, पिताका एयण और माताका श्रीदेवी था । वे कोण्डिन्न्य गोत्रके ब्राह्मण थे । कहीं कहीं इन्हें भरत मष्ट भी लिखा है । भरतकी पत्नीका नाम कुन्दव्वा था जिसके गर्भसे नन्न उत्पन्न हुए थे ।

भरत महामात्य-व्रगमें ही उत्पन्न हुए थे परन्तु सन्तानक्रमसे चली आई हुई यह लक्ष्मी (महामात्यपद) कुछ समयसे उनके कुष्ठसे चली गई थी जिसे उन्होंने बड़ी भारी आपत्तिके दिनोंमें अपनी तेजस्थिता और प्रभुकी सेवासे फिर प्राप्त कर लिया था ।

भरत जैनधर्मके अनुयायी थे । उन्हें अनवरत-रचित-जिननाथ-भक्ति और जिनवर-समय-प्रासाद-स्तम्भ अर्थात् निरन्तर जिनभगवानकी भक्ति करनेवाले और जैनशासनरूप महलके स्तम्भ लिखा है ।

कृष्ण तृतीयके ही समयमें और उन्हींके सामन्त अरिकेसरीकी छत्रछायामें बने हुए नीतिशास्त्राभूतमें अमात्यके अधिकार बतलाये गये हैं—आय, व्यय, स्वामिरक्षा और राजतंत्रकी पुष्टि । “ आयो व्यय स्वामिरक्षा तत्रपोषण चामात्यानामधिकार । ” उस समय साधारणतः रेवेन्यू-मिनिस्टरकी अमात्य कहते थे । परन्तु भरत महामात्य होंगे । इससे माझ्म होता है कि वे रेवेन्यूमिनिस्टरके सिवाय राज्यके अन्य विभागोंका भी काम करते थे । राष्ट्रकूट-कालमें मन्त्रोंके लिए शास्त्रज्ञके सिवाय शास्त्र भी होना आवश्यक था, अर्थात् जरूरत होनेपर उसे युद्ध-क्षेत्रमें भी जाना पड़ता था ।

एक जगह पुष्पदन्तने लिखा भी है कि वे बल्लभराजके कटकके नायक अर्थात् सेनापति

१ महामत्तवत्तयवहु महीन (महामात्यवंशध्वजपटगभीर) ।

२ तीव्रपरिवर्तये कपुर्वीतेनैकेन तेजस्विना सन्तानक्रमतो गताऽपि हि स्मा कृश प्रभो. सेवया । यस्याचार्यर्षदं वदन्ति कवय सौजन्यस्यात्यद सोऽय श्रीभरतो जयत्वनुपम. काले कलौ वाग्यतम् ॥

हुए थे'। इन्होंने सिखाय वे रामावत दानमन्त्री भी थे। इतिहासमें वृष्ण तृतीयके एक मन्त्री नारायणका नाम तो मिलता है, जो कि बहुत ही विद्वान् और राजनीतिज्ञ था परन्तु भारत महामात्यका अत्र तक किसीको पता नहीं। क्योंकि पुण्यदन्तका साहित्य इतिहासइतने पास तक पहुँचा ही नहीं।

पुण्यदन्तने अपने महापुराणमें भारतका जो बहुत-सा परिचय दिया है, उसके विषय उन्होंने उसकी जगिषाका सीधियोंके प्रारम्भमें कुछ प्रवृत्तिपर भी पीछेसे जोड़े है जिनकी संख्या ४८ है। उनमेंसे कुछ (५, ६, १६, ३०, ३५, ४८) तो छुट प्राकृतके हैं और शेष सप्तकके। इन ४८ पद्योंमें भारतका जो गुण-कीर्तन किया गया है, उससे भी उनके जीवनपर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। हो सकता है कि उक्त सारा गुणानुवाद कनिष्ठपूर्ण होनेके कारण अतिशयोक्तिमय हो, परन्तु कविके स्वामन्त्री देखते हुए उसमें सचार्थ भी कम नहीं जान पड़ती।

भारत सारी कलाओं और विधाओंमें कुशल थे, प्राकृत कवियोंकी रचनाओंपर मुख्य थे, उन्होंने सरस्वती सुरमिका रूप दिया था। छत्ती उन्हे चाहती थी। वे सत्यप्रतिष्ठ और निर्भर थे। सुखोंका बोझ ढोते ढोते उनके कर्णें घिस गये थे, अर्थात् उन्होंने अनेक छद्मपूर्ण लड़ी थी।

बहुत ही ननोहर, कवियोंके लिए कामधेनु, वीर-शुश्रूषोंकी आशा पूरी करनेवाले, शत्रु और प्रसिद्ध, पराधीनपरामुख, सखरित्र, उन्नतवर्ति और सुजनोके उद्धारक थे।

उनका रंग सौन्दर्य था, हाथोंकी सूखे समान उनकी भुजाएँ थी, अङ्ग सुखी थे,

१ शीघ्र श्रीभक्त नमस्कृतित् कान्त सुवृत्तं शुचि सम्मोतिर्मविराजते पुर दधानम्भीं पुनैर्मावते ।

बहो वेन श्वेतरामिह महाभाषाङ्ग प्रसन्नान् श्रीभक्तप्रमत्तकिकरके नयामवभाषक ॥ ३ ॥ ४६

२ ॥ ४ ॥ मय प्रवृत्तानिपदिमने त्पामसन्धानकत्तं कोऽयं कथं प्रचलं प्रवरकशिराकाराहुं प्रसन्नं ।

कन्य प्रलेखिगोपमनवलयतो चैतनादीतकन्य कन्यो कन्य कन्यैव भवति कन्य कन्य भानादि नो लम् ॥ १५

३ देखो कालेयकी किलकिल, ४ ५ किल ४, ५ ६ ।

४ वमईके सरस्वती मन्त्रमें महापुराणकी जो बहुत ही अद्भुत प्रति है उसकी ४२ वीं श्लोकके बाद एक 'इति मनसो मे' आदि अद्भुत पद्य अधिक दिया हुआ है। जान पड़ता है अन्य प्रतियोंमें शायद इस तरहके और भी कुछ पद्य होंगे।

५

कन्यकन्यप्रसन्नान्

कमलान् अमलान् कलान्

६ कविलावित्तादिनिदिनहने

कापीपदीपरिपुत्रित

परमनिपुणान् सुदली

वीरैरुत्ताविष्णान् सुतान् ।

शरीरसुखसुखदुःख ॥

श्वभरसुखसुखदुःख ॥

शुपतिमहाप्रदामधेनु ।

अन्यसुखसुखदुःखदुःख ॥

अन्यसुख सुखदुःखदुःख ॥

नेत्र सुन्दर थे और वे सदा प्रसन्नमुख रहते थे^१ ।

भरत बहुत ही उदार और दानी थे । कविके शब्दोंमें बलि, जीभूत, दर्शानि आदिके स्वर्गगत हो जानेसे त्याग गुण अगत्या भरत मन्त्रीमें ही आकर बस गया था^२ ।

एक सूक्तिमें कहा है कि भरतके न तो गुणोंकी गिनती हो सकती है और न उनके शत्रुओंकी^३ । यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि इतने बड़े पदपर रहनेवालेके, चाहे वह कितना ही गुणी और भला हो, शत्रु तो हो ही जाते हैं ।

इस समयके विचारणीय लोग जिस तरह मन्दिर आदि बनवाना छोड़कर विधोपासनाकी आवश्यकता बतलाते हैं उसी तरह भव्यात्मा भरतने भी वापी, कूप, तडाग और जैनमन्दिर बनवाना छोड़कर वह महापुराण बनवाया जो संसार-समुद्रको आरामसे तरनेके लिए नावतुल्य हुआ । भला उसकी वन्दना करनेको किसका हृदय नहीं चाहता^४ ?

इस महाकविको आश्रय देकर और प्रेमपूर्ण आग्रहसे महापुराणकी रचना कराके सचमुच ही भरतने यह काम किया, जिससे कविके साथ उनकी भी कीर्ति चिरस्थायी हो गई । जैनमन्दिर और वापी, कूप, तडागादि तो न जाने कब नामशेष हो जाते ।

पुष्पदन्त जैसे फक्कड़, निर्लौभ, निरासक्त और संसारसे उद्विग्न कविसे महापुराण जैसा महान् काव्य बनवा लेना भरतका ही काम था । इतना बड़ा आदमी एक अकिंचनका इतना सत्कार, इतनी खुशामद करे और उसके साथ इतनी सद्बुद्धताका व्यवहार करे, यह एक बड़ी भारी बात है ।

पुष्पदन्तकी मित्रता होनेसे भरतका महल विद्याविनोदका स्थान बन गया । वहाँ पाठक निरन्तर पढ़ते थे, गायक गाते थे, और लेखक सुन्दर काव्य लिखते थे^५ ।

गृह-मन्त्री नञ्ज

वे भरतके पुत्र थे । नञ्जको महाभाव्य नहीं किन्तु बल्लभनरेन्द्रका गृहमन्त्री लिखा है ।

१ श्यामशक्ति नयनतुभ्यौ लज्जन्प्रपन्नमहामादाय ।

भरतच्छलेन सग्राति काम. कामाकृतिमुपेत ॥ प्र० श्लो० २०

२ देखो, पृष्ठ ३०३ के टिप्पणका पद्य ।

३ धनधवल्लभाप्रधानामचलस्थितिकारिणा मुदुर्ध्रमताम् ।

गणनैव नास्ति लेके भरतगुणानाम्भीणा च ॥ प्र० श्लो० २७

४ वापीकूपतडागमनैवसतीत्यक्त्वेह यत्नारितं

भयभीमस्तेन सुन्दरविद्या जैन पुराण महत् ।

तत्कृत्वा प्रबभूवम रविकृति (१) सप्तस्वाधे सुख

कोऽप्य (सत्पदशो) स्ति नस्य हृदय त वन्दितु मेहते ॥ प्र० श्लो ४७

५ ३६ शतितुन्दर कचकेर्गायमान ३६ लिखितमवल्ल लेखकैश्चाय काव्य ।

गतवति कविभिरे मित्रता पुष्पदन्ते भरत तथ गृहेस्मिन्प्राप्ति विद्याविनोद ॥ प्र० श्लो० ४३

उनके विषयमें कविने घोषा ही लिखा है परन्तु जो कुछ लिखा है, उससे माझम होता है कि वे भी अपने पिताके सुयोग्य उत्तराधिकारी थे और कविका अपने पिताके ही समान आदर करते थे, तथा अपने ही महत्त्व रखते थे ।

नागकुमारचरितकी प्रशस्तिके अनुसार वे प्रकृतिसे सौम्य थे, उनकी कीर्ति सारे लोकमें फैली थी, उन्होंने जिनमन्दिर बनवाये थे, वे जिन-चरणोंके भ्रमर थे और जिन-पूजामें निरत रहते थे, जिनशासनके उद्धारक थे, मुनियोंको दान देते थे, पापराहित थे, बाहरी और भीतरी शत्रुओंको जीतनेवाले थे, दयावान्, दीनोके शरण राजलक्ष्मीके कीड़ासरोवर, सरस्वतीके निवास, समान विद्वानोंके स्त्राय विद्या विनोदमें निरत और शुद्ध हृदय थे ।

एक प्रशस्ति-पत्रमें पुष्पदन्तसे ननको उनके पुत्रों सहित प्रस्तन रहनेका आशीर्वाद दिया है । इससे माझम होता है कि उनके अनेक पुत्र थे । पर उनके नामोंका कहीं उल्लेख नहीं है ।

कृपायज (तृतीय) के सो वे गृहमन्त्री थे ही, परन्तु उनकी मृत्युके बाद खोगिदेवके और शायद उनके उत्तराधिकारी कर्क (द्वितीय) के भी वे मन्त्री रहे होंगे । क्योंकि यशोधरचरितके अन्तमें कविने लिखा है कि जिस नन्हे बच्चे भारी दुष्काळमें स्मय—जब कि सारा जनपद नीरस हो गया था, हुस्सह दुःख व्याप्त हो रहा था, जगह-जगह मनुष्योंकी खोपड़ियाँ और कफाळ फैले पड़े थे, सर्वत्र रक्त ही रक्त दिखलाई पड़ते थे,—सरस भोजन, सुन्दर वस्त्र और ताम्बूलादिसे भरी खातिर की, वह चिरायु हो । निभय ही माण्डवेटकी छट और बरबादीके बादकी दुर्दशाका यह चित्र है और तब खोगिदेवकी मृत्यु हो चुकी थी ।

१ सुदुर्गममन्त्राचारमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

कौटिल्योत्तमवत्सलस्य पदार्थं लोभस्य ॥ १

सुदुर्गममन्त्राचारमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

असमर्थमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥ २

असमर्थमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥

जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य सुनिदिष्टमन्त्रस्य ॥ ३

कर्ममन्त्रमन्त्रमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥

कर्ममन्त्रमन्त्रमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥ ४ ॥

जिनचक्रमन्त्रमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥

जिनचक्रमन्त्रमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल जिनचक्रमन्त्रमन्त्रस्य ॥ ५ ॥

२ स भीमादि भूतेषु तद् भुजैर्नृपमिषे नवतात् ॥ यत्नो २

३ जगद्वनीरि, दुर्मिषमन्त्रीरि ।

कर्मिषमन्त्रीरि दुर्मिषमन्त्रीरि ।

पदमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

पदमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

पदमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

पदमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल ।

मनु उच्यते पुनः पेरित । गुणमन्त्रिण्यहोत्तमवत्सल । यत्नो ४-११

कविके कुछ परिचित जन

पुण्ड्रिकने अपने ग्रन्थोंमें भरत और नन्नके सिवाय कुछ और लोगोका भी उल्लेख किया है। मेलपाटीमें पहुँचनेपर सबसे पहले उन्हें दो पुरुष मिले जिनके नाम अम्भइय और इन्द्राय थे। वे वहाँके नागरिक थे और इन्होंने भरत मन्त्रीका प्रशंसा करके उनके यहाँ नगरमें चलनेका आग्रह किया था। उत्तरपुराणके अन्तमें सबकी शान्ति-कामना करते हुए उन्होंने देविल्ल, भोगल्ल, सोहण, गुणवर्म, दंगइय और सतइयका उल्लेख किया है। इनमेंसे देविल्ल शायद भरतका पुत्र था जिसने महापुराणका सारी पृथिवीमें प्रसार किया। भोगल्लको चतुर्विधदानदाता, भरतका परम मित्र, अनुपमचरित्र और विस्तृतयशस्वला बतलाया है। शोमन और गुणवर्मको निरन्तर जिनधर्मका पालनेवाला कहा है। नागकुमारचरितके अनुसार ये महोदयिके शिष्य थे और इन्होंने कविसे नागकुमारचरितकी रचना करनेकी प्रेरणा की थी। दंगइय और सतइयकी भी शान्ति-कामना की है। नागकुमारचरितमें दंगइयको आशीर्वाद दिया है कि उनका राज्य विजुद्ध हो। नाइल्ल और सील्लइयका भी उल्लेख है। उन्होंने भी नागकुमारचरित रचनेका आग्रह किया था।

कविके समकालीन राजा

महापुराणकी उत्पत्तिकामें कहा है कि इस समय 'तुडिगु महाभुभाव' राज्य कर रहे हैं। इस 'तुडिगु' शब्दपर टिप्पण-ग्रन्थमें 'कृष्णराज' टिप्पण दिया हुआ है। कृष्णराज दक्षिणके सुप्रसिद्ध राष्ट्रकूटवंशमें हुए हैं जो अपने समयके महान् सम्राट् थे। 'तुडिगु' उनका वरू प्राकृत नाम था। इस तरहके वरू नाम राष्ट्रकूट और चालुक्य वंशके प्रायः सभी राजाओंके मिलते हैं। वल्लभनरेन्द्र, वल्लभराय, शुभतुंगदेव और कण्हराय नामसे भी कविने उनका उल्लेख किया है।

शिलालेखों और दानपत्रोंमें अकालवर्ष, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परममाहेश्वर, परमभद्रारक, पृथिवीवल्लभ, समस्तभुवनाश्रय आदि उपाधियाँ उनके लिए प्रयुक्त की गई हैं।

वल्लभराय पदवी पहले दक्षिणके चौलुक्य राजाओंकी थी, पीछे जब उनका राज्य राष्ट्रकूटोंने जीत लिया तब इस वंशके राजा भी इसका उपयोग करने लगे।

भारतके प्राचीन राजवंश (तृ० भा० पृ० ५६) में इनकी एक पदवी 'कल्हजरपुरवराधीश्वर' लिखी है। परन्तु हमारी समझमें वह भ्रमवश लिखी गई है। वास्तवमें 'कालिंजरपुरवराधीश्वर' होनी चाहिए। क्योंकि उन्होंने चेदिके कलचुरि-नरेश स्हस्त्रार्जुनको जीता था और कालिंजरपुर चेदिका मुख्य नगर था। दक्षिणका कलचुरि राजा विज्जल भी अपने नामके साथ 'कालिंजर-पुरवराधीश्वर' पद लगाता था।

१ जैसे गोविन्द, वदिय, पुट्टिग, खोड्डिग आदि।

२ अब लेखकोंने मानविके बल्लभ नामक बल्लभ राजाओंका जो उल्लेख किया है, वह मान्यलेखके 'वल्लभराज' पद धारण करनेवाले राजाओंको ही लक्ष्य करके किया है।

अमोघय तृतीय या बह्मिन्के तीन पुत्र थे—तुडिगु या कृष्ण तृतीय, जगत्तुग और खोड्गिदेव । कृष्ण सबसे बड़े थे जो अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे और चूँकि दूसर जगत्तुग उनसे छोटे थे तथा उनके राज्य कालमें ही स्वर्गगत हो गये थे, इस लिए तीसरे पुत्र खोड्गिदेव गद्दीपर बैठे । कृष्णके पुत्रका इस बीच देहान्त हो गया था और पौत्र भी छोटा था, इसलिए खोड्गिदेवको अधिकार मिला ।

कृष्ण तृतीय राष्ट्रकूट वंशके सबसे अधिक प्रतापी और सार्वभौम राजा थे । इनके पूर्वजोंका साम्राज्य उत्तरमें नर्मदा नदीसे लेकर दक्षिणमें मैसूर तक फैला हुआ था जिसमें सारा गुजरात, मराठी सी० पी०, और निजम राज्य शामिल था । मालवा और मुन्देलखण्ड भी उनके प्रभावक्षेत्रमें थे । इस विस्तृत साम्राज्यको कृष्ण तृतीयने और भी बढ़ाया और दक्षिणका सारा अन्तरीप भी अपने अधिकारमें कर लिया । कन्हारके ताम्रपत्रोंके अनुसार उन्होंने पाण्ड्य और केरलको हराया, सिंहलसे कर वसूल किया और रामेश्वरमें अपनी कीर्तिबछ्छरीको छगाया । ये ताम्रपत्र सन् ९५९ (श० स० ८८१) के हैं और उस समय लिखे गये हैं जब कृष्णराज अपने मेळपाटी नगरके सेना-शिबिरमें ठहरे हुए थे और अपना जीता हुआ राज्य और धन-रत्न अपने सामन्तों और अनुगतोंको उदारतापूर्वक बाँट रहे थे^१ । इनके दो ही महीने बाद लिखी गई श्रीसोमदेवसूरिकी यशस्तिलक-प्रशस्तिसे भी इसकी पुष्टि होती है^२ । इस प्रशस्तिमें उन्हें पाण्ड्य, सिंहल, चोल, चेर आदि देशोंको जीतनेवाला लिखा है ।

देवकीर्ति शिलाखेल्से माध्यम होता है कि उन्होंने कांचीके राजा दन्तिगको और मय्युक्की मारा, पञ्चन-नरेश अन्तिगको हराया, गुर्जरोंके आक्रमणसे मध्य भारतके कलचुरियोंकी रक्षा की और अग्य शत्रुओंपर निजय प्राप्त की । हिमालयसे लेकर ल्हा और पूर्वसे लेकर पश्चिम समुद्र तकके राजा उनकी आज्ञा मानते थे । उनका साम्राज्य गंगाकी सीमाको भी पार कर गया था ।

चोलदेशका राजा परान्तक बहुत महत्वाकांक्षी था । उसके कन्याकुमारीमें मिले हुए शिलाखेल्में^३ लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयको हराकर वीर चोलकी पदवी धारण की । किस जगह हराया और कहाँ हराया, यह कुछ नहीं लिखा । बल्कि इसके विरुद्ध ऐसे अनेक प्रमाण मिले हैं जिनसे सिद्ध होता है कि ई० स० ९४४ (श० ८६६) से लेकर कृष्णके राय कालके अन्त तक चोलमण्डल कृष्णके ही अधिकारमें रहा । तब तक केवल इतनी ही

१ एपिमरिया इतिहास क्रिस्ट ४४ २४८ ।

२ स दीपादिण्यपण-वचनपदक ग्रीह परिमण्डु मेल्हनिनर ।

३ ' पाण्ड्यसिंहल-चोल-चेरमयस्तीम्भगीतीयसाम्य ' ।

४ जर्नल बायें ब्राउन ए ए को क्रिस्ट १८, ४ २३९ और क्रिस्ट आफ इन्क्यूएन्स सी पी० एण्ड बयार, ४० ८१ ।

५ चावणकोर आर्कि सीरीज वि ३, ४ १४३, ब्लोक ४८ ।

सचाई हो सकती है कि सन् ९४४ के आसपास वीरचोलको राष्ट्रकूटोंके साथी लड़ाईमें थोड़ी-सी अल्पकालिक सफलता मिल गई होगी ।

दक्षिण अर्काट जिलेके सिद्धलिङ्गमादम स्थानके शिलालेखमें^१ जो कृष्ण तृतीयके पाँचवें राज्य-वर्षका है उनके द्वारा काची और तजोरके जीतनेका उल्लेख है और उत्तरी अर्काटके भोलापुरम स्थानके ई० स० ९४९-५० (अ० स० ८७१) के शिलालेखमें^२ लिखा है कि उस साल उन्होंने राजादित्यको मारकर तोदयि-मढल या चोलमण्डलमें प्रवेश किया । यह राजादित्य परान्तक या वीरचोलका पुत्र था और चोल-सेनाका सेनापति था । कृष्ण तृतीयके बहनेई और सेनापति भूतुगने इसे इसके हाथीके हाँदैपर आक्रमण करके मारा था और इसके उपलक्ष्यमें उसे धनवासी प्रदेश उपहार मिला था ।

ई० सन् ९१५ (अ० स० ८१७) में राष्ट्रकूट इन्द्र (तृतीय) ने परमार राजा उपेन्द्र (कृष्ण) को जीता था और तबसे कृष्ण तृतीय तक परमार राजे राष्ट्रकूटोंके मांडलिक थे । उस समय गुजरात भी परमारोंके अधीन था ।

परमारोंमें सीयक या श्रीहर्ष राजा बहुत पराक्रमी था । जान पड़ता है इसने कृष्ण तृतीयके आधिपत्यके विरुद्ध सिर उठाया होगा और इसी कारण कृष्णको उसपर चढ़ाई करनी पड़ी होगी और उसे जीता होगा । इस अनुमानकी पुष्टि श्रवण-वैरगोलके मारसिंहके शिलालेखसे होती है जिसमें लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयके लिए उत्तरीय प्रान्त जीते और बदलेमें उसे ' गुर्जर-राज ' का खिताब मिला । इसी तरह होलेकेरि^३ ई० स० ९६५ और ९६८ के शिलालेखोंमें मारसिंहके दो सेनापतियोंको ' उज्जयिनी-भुजग ' पदको वारण करने-वाला बतलाया है । ये गुर्जर-राज और उज्जयिनी-भुजग पद स्पष्ट ही कृष्णद्वारा सीयकके गुजरात और मालवेके जीते जानेका संकेत करते हैं ।

सीयक उस समय तो टब गया, परन्तु ज्योंही पराक्रमी कृष्णकी मृत्यु हुई कि उसने पूरी तैयारीके साथ मान्यखेटपर धावा बोल दिया और खोद्दिगदेवको परास्त करके मान्यखेटको घुरी तरह छुटा और बरबाद किया ।

पाण्ड्य-लच्छी नाममालाके कर्ता धनपालके कथनानुसार यह छूट वि० स० १०२९ (अ० स० ८९४) में हुई और त्रायद इसी लड़ाईमें खोद्दिगदेव मारा गया । क्योंकि इसी साल उत्कीर्ण किया हुआ खरडाका शिलालेख^४ खोद्दिगदेवके उत्तराधिकारी कर्क (द्वितीय) का है ।

कृष्ण तृतीय ई० स० ९३९ (अ० स० ८६१) के दिसम्बरके आसपास गद्दीपर

^१ मद्रास प्रेसप्रातिः रूल कॉलेजियन १९०९ न० ३७५ । २ ए० इ० जि० ५, पृ० १९५ । ३ ए० इ० जि० १९, पृ० ८३ । ४ आर्चिलेजिक्ल सबे आफ साउथ इण्डिया जि० ४, पृ० २०१ । ५ ए० इ० जि० ५, पृ० १७५ । ६ ए० इ० जि० ११, न० २३-२३ । ७ ए० इ० जि० १२, पृ० २६३ ।

बैठे होंगे। नया कि इस वर्षके दिसम्बरमें इनके पिता बरिग जीवित थे और कोछगढ़की शिलाछेल फान्गुन सुदी ६ शक स० ८८९ का है जिसमें लिखा है कि कृष्णकी मृत्यु हो गई और खोटिगदेन गदीपर बैठा। इससे उनका २८ वर्षतक राज्य करना सिद्ध होता है, परन्तु किट्टर (६० अर्साट) के धीरत्तनेस्सर मन्दिरका शिलाछेले उनके राज्यके ३० वें वर्षका लिखा हुआ है। विद्वानोंका खयाल है कि ये राजकुमारस्थामे, अपने पिताके जीते जी ही राज्यका कार्य सँभालन लगे थे, इसीसे शायद उस समयके दो वर्ष उक्त तीस वर्षके राज्य-कालमें जोड़ लिये गये हैं।

राष्ट्रकूटों और कृष्ण तृतीयका यह परिचय कुछ विस्तृत इस लिए देना पड़ा जिससे पुष्पदन्तके प्रयोगे जिन जिन बातोंका जिक्र है, वे ठीक तारसे समझमें आ जायें और समय निर्णय करनेमें भी सहायता मिले।

समय विचार

महापुराणकी उपायनिकामें कविने जिन सत्र प्रयोगों और प्रत्यकर्ताओंका उल्लेख किया है, उनमें सबसे पिछले प्रत्य धवल और जयधवल हैं। धालक जानते हैं कि बीरसेन स्वामीके शिष्य जिनसेनेने अपने गुरुकी अधूरी छोड़ी हुई टीका जयधवलका श० स० ७५९ में राष्ट्रकूटनरेश अमोघनर्य (प्रथम) के समयमें समाप्त की थी। अतएव यह निश्चित है कि पुष्पदन्त उक्त सत्रके बाद ही किसी समय हुए हैं, पहले नहीं।

कूटका समय क्षीयुत काणे और डों० देके अनुसार ई० सन् ८००-८५० के अर्थात् श० स० ७२२ और ७७२ के बीच है। इससे भी लगभग उपर्युक्त परिणाम ही निकलता है।

अभी हाल ही डा० ए० एन० उपाध्येको अपभ्रंस भाषाका 'धम्मपरिक्खा' नामका

१ महाव द क १९१३ न २३६ । २ महाव परिभाषिक कलेकशन खद १९१, न २३९ ।

३-अनलक कवि (आलंकार) कवचर वा कषाद (वैद्येयिकवचनकर्ता) द्विज (वेदपाठक), सुगत (मुद) पुरंदर (आचार्य) दन्तिख, विशाल (सगीतशास्त्रकर्ता) मया (नाट्यशास्त्रकार), पतञ्जलि भाषाविद् व्यास, कोहल (वृष्णाष्टकवि) चतुर्मुख स्वयंभु भीक्षु (हर्षवदन) द्रुहिण (मरतेने अपने नाट्यशास्त्रमें द्रुहिण महाभारता उल्लेख किया है जो आठ रस मानते थे।) इद्यान, बाण, धवल जयधवल-विद्वान्त, कूट और यशस्विह इतनोंका उल्लेख किया गया है। इनमेंसे अकलक, चतुर्मुख और स्वयंभु जैन हैं। अकलक देव, जयधवलका मिनसेनेने वाले हुए हैं। चतुर्मुख और स्वयंभुकी टीका समय अभी तक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु स्वयंभु अपने पञ्चमविरचमें आचार्य हरिरेणका उल्लेख करते हैं जिन्होंने वि स ७३३ में पद्यपुराण लिखा था। इससे उनसे पीछेके हैं। उन्होंने चतुर्मुखका भी स्मरण किया है। स्वयंभु भी अपभ्रंस भाषाके महाकवि थे। इनके पञ्चमविरच (पञ्चविरच) और अरिहनेमिचरिच (हरिकेशपुराण) उपलब्ध हैं। उनका स्वयंभु छन्द नामका एक छन्दशास्त्र भी है। 'पञ्चमविरच' नामका ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ है जो अभी तक नहीं प्राप्त नहीं हुआ है। उनका कोई अपभ्रंस भाषाका व्याकरण भी था। ये स्वयंभु यापनीय सनके अनुयायी थे। ऐसा महापुराण टिप्पणके माध्यम से होता है।

४ पठ मुद्रित आत्मसु कदमासु सिद्धतु पञ्च जयधवल नाम।

ग्रन्थ मिला है जिसके कर्त्ता बुध (पंडित) हरिषेण हैं, जो धक्कड़वशीय गोवर्द्धनके पुत्र और सिद्धसेनके शिष्य थे। वे मेवाड़ देशके चित्तौड़के रहनेवाले थे और उसे छोड़कर कार्यवश अचलपुर गये थे। वहाँपर उन्होंने वि० स० १०४४ में अपना यह ग्रन्थ समाप्त किया था। इस ग्रन्थके प्रारम्भमें अपभ्रंशके चतुर्मुख, स्वयम् और पुष्पदन्त इन तीन महाकवियोंका स्मरण किया गया है। इससे सिद्ध है कि वि० स० १०४४ या श० स० ९०९ से पहले ही पुष्पदन्त एक महाकविके रूपमें प्रसिद्ध हो चुके थे। अर्थात् पुष्पदन्तका समय ७५९ और ९०९ के बीच होना चाहिए। न तो उनका समय श० स० ७५९ के पहले जा सकता है और न ९०९ के बाद।

अब यह देखना चाहिए कि वे श० स० ७५९ (वि० स० ८९४) से कितने बाद हुए हैं।

कविने अपने ग्रन्थोंमें तुडिगुं, शुभतुगै, वल्लभनरेन्द्र और कण्हरायका उल्लेख किया है और इन सब नामोंपर ग्रन्थोंकी प्रतियों और टिप्पण-ग्रन्थोंमें ' कृष्णराज. ' टिप्पणी दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि ये सभी नाम एक ही राजाके हैं। वल्लभराय या वल्लभनरेन्द्र राष्ट्रकूट राजाओंका सामान्य पदवी थी, इसलिए यह भी मालूम हो गया कि कृष्ण राष्ट्रकूटवंशके राजा थे।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले मयूरखंडी (नासिक) में थी, पीछे अमोघवर्ष (प्रथम) ने श० स० ७३७ में उसे मान्यखेटमें प्रतिष्ठित की। पुष्पदन्तने नागकुमारचरितमें कहा है कि कण्हराय (कृष्णराज) की हाथकी तलवाररूपी जलवाहिनीसे जो दुर्गम है और जिसके धवलगृहोंके शिखर मेघावलीसे टकराते हैं, ऐसी बहुत बड़ी मान्यखेट नगरी है।

१ इह मेवाड़देशे अजसकुले
गोवर्द्धणु नाभे उष्णभो
सरो गोवर्द्धणामु सिम शुणवह
साए जणित हरिलेणाम सुओ
सिरिचित्तउडु खेएवि अवलउरओ
तहि छदालकारपछहिह

२ विक्रमणिवधिरित्तइ कालए
३ चउमुहु कन्वविरयणे सयमु
सिण वि जोग्य जेण त ससइ
जो सयमु सो हेउपहणउ
पुष्पवतु णवि भाणुसु सुचइ

४ सुवणेकणामु राथाहिराउ

५ सुहउगदेवकमकमलमसु

६ वल्लभणरिदधमइयसु।—य० च० का प्रारम।

६ सिरिकण्हरायकयलणिहियवसिजलवाहिणि दुष्पयि।

धवलहरसिद्धिदमेहउलि पविउल मण्णसेउणवरि ॥

सिरिउवपुरणिमवधकइकुले ।
जो सम्मत्तरयणसंपुणओ ॥
जा जिणवरय विच वि पणवइ ।
जो सगाउ विवुहकइविस्तुओ ॥
गउ भियकज्जे जिणहरपउरओ ।
धम्मपरिक्ख एह ते साहिइ ॥
वनगए वरिससहस चउतालए ।
पुष्पवतु अण्णाणिसु वि ।
चउमुहमुदे यिय ताम सयसइ ।
अह कह जोग्यजोग्य वि राणउ ।
जो सरसए कया वि ण सुचइ ।

जहि अन्तइ ' सुविगु ' महाणुमउ । म० पु० १-३-३

धीसेसकलविण्णाणकुल्लु । म० पु० १-५-२

राष्ट्रकूटवंशमें कृष्ण नामके तीन राजा हुए हैं, एक तो वे जिनकी उपाधि शुभतुंग थी। परन्तु उनके समय तक मान्यखेट राजधानी ही नहीं थी, इसलिए पुष्पदन्तका मतलब उनसे नहीं हो सकता।

द्वितीय कृष्ण अमोघवर्ध (प्रथम) के उत्तराधिकारी थे, जिनके समयमें गुणभद्राचार्यने श० स० ८२० में उत्तरपुराणकी समाप्ति की थी और जिन्होंने श० स० ८३३ तक रच्य किया है। परन्तु इनके साथ उन सब बातोंका मेल नहीं खाता जिनका पुष्पदन्तने उल्लेख किया है। इसलिए कृष्ण तृतीयको ही हम उनका समकालीन मान सकते हैं क्योंकि—

१—जैसा कि पहले बताया जा चुका है चोलराजाका सिर कृष्णराजने कटवाया था, इसने प्रमाण इतिहासमें मिलते हैं और चोल देशको जीत कर कृष्ण तृतीयने अपने अधिकारमें कर लिया था। २—यह चोलनेरक्ष ' परान्तक ' ही मालूम होता है जिसने औरचोलकी पदवी धारण की थी।

३—घारानरेश-द्वारा मान्यखेटके छूटे जानेका जो उल्लेख पुष्पदन्तने किया है, वह भी कृष्ण तृतीयके साथ मेल नहीं खाता। यह घटना कृष्णराज तृतीयकी मृत्युके बाद खोह्मिदेवके समय की है और इसकी पुष्टि अन्य प्रमाणोंसे भी होती है। धनपाकन अपनी ' पाण्ड्यलक्ष्मी (प्राकृतलक्ष्मी) नाममात्रा'में लिखा है कि वि० स० १०२९ में माळव नरेन्द्रने मान्यखेटको छूटी।

मान्यखेटको किस मालव-राजाने छूटा, इसका पता परमार राजा उदयादित्यके समयके उदयपुर (ग्वालियर) के शिलालेखमें परमार राजाओंकी ' ने प्रशस्ति दी है उससे लगता है। उसके १२ वें पंथमें लिखा है कि ' इर्षदेवने खोह्मिदेवकी राजकुमारोंको युद्धमें छीन लिया'।

ये इर्षदेव ही घारानरेश थे, जो सीपक (द्वितीय) या सिंहभद्र भी कहलाते थे, और जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जिनपर कृष्ण तृतीयने चढ़ाई की थी। खोह्मिदेव कृष्ण तृतीयके भाई और उत्तराधिकारी थे।

४—महापुराणकी रचना जिस सिद्धार्थ सक्त्तरमें शुरू की गई थी, उसी सक्त्तरमें

१ उम्बद्वद्भू भूमामीसु लोकेषिणु चावरो लण्ड लीसु।

२ शीनानाचन उदावहुजन मोरुसुत्तवातीनन

मान्यासदपुर पुरदपुरीलीनदर सुन्दर।

घारानापनेन्द्रकोपशिक्षिता दग्ध विदग्धप्रिय

केदानी वसति करिष्यति पुन भीषुष्यन्त कवि ॥ प्र श्लो ३६

३—विक्रमकालस्य मय अठपुत्तीसुत्तर लक्षसमि।

मालवपरिदधाहीय दृष्टिर् मन्वखेटमि ॥ २७६ ॥

४ परिप्राप्ति आ इति का मिल १, पृ २२६।

५—भीर्षदेव इति खोह्मिदेवकथं व्याह यो जुषि नगादसम्प्रदाय।

सोमदेवमूरिने अपना यशस्तिलक चम्पू समाप्त किया था और उस समय कृष्ण तृतीयका पड़ाव मेलपाटीमें था। पुष्पदन्तने भी अपने ग्रन्थ-प्रारम्भके समय कृष्णराजका मेलपाटीमें रहनेका उल्लेख किया है। साथ ही यशस्तिलककी प्रशस्तिमें उनको 'चोल आदि देवोंका जीतनेवाला भी लिखा है'। ऐसी दशामें पुष्पदन्तका कृष्ण तृतीयके समयमें होना निःसंशयरूपसे सिद्ध हो जाता है।

पहले उक्त मेलपाटीमें ही पुष्पदन्त पहुँचे थे, सिद्धार्थ स्वस्वस्थमें ही उन्होंने अपना महापुराण प्रारम्भ किया था और यह सिद्धार्थ श० स० ८८१ ही था। मेलपाटी या मेलपट्टिमें श० ८८१ में कृष्णराज थे, इसके और भी प्रमाण मिले हैं जो ऊपर दिये जा चुके हैं।

इन सब प्रमाणोंसे हम उस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि श० स० ८८१ में पुष्पदन्त मेलपाटीमें भरत महामात्यसे मिले और उनके अतिथि हुए। इसी साल उन्होंने महापुराण शुरू करके उसे श० स० ८८७ में समाप्त किया। इसके बाद उन्होंने नागकुमार-चरित और यशोधर-चरित बनाये। यशोधर-चरितकी समाप्ति उस समय हुई जब मान्यखेट लूटा जा चुका था। यह श० स० ८९४ के लगभगकी घटना है। इस तरह वे ८८१ से लेकर कमसे कम ८९४ तक, लगभग तेरह वर्ष, मान्यखेटमें महामात्य भरत और नन्नके समानित अतिथि होकर रहे, यह निश्चित है। उसके बाद वे और कब तक जीवित रहे, यह नहीं कहा जा सकता।

बुध हरियेणकी धर्मपरीक्षा मान्यखेटकी लूटके कोई पन्द्रह वर्ष बादकी रचना है। इतने थोड़े ही समयमें पुष्पदन्तकी प्रतिभाकी इतनी प्रसिद्धि हो चुकी थी। हरियेण कहते हैं कि पुष्पदन्त मनुष्य थोड़े ही हैं, उन्हें सरस्वती देवी कभी नहीं छोड़ती, सदा साथ रहती है।

एक शंका

महापुराणकी ५० वीं सन्धिके प्रारम्भमें जो 'दीनानाथधन' आदि संस्कृत पद्य हैं और पहले उद्धृत किया जा चुका है, और जिसमें मान्यखेटके नष्ट होनेका संकेत है, वह श० स० ८९४ के बादका है और महापुराण ८८७ में ही समाप्त हो चुका था। तब शंका होती है कि वह उसमें कैसे आया ?

इसका समाधान यह है कि उक्त पद्य ग्रन्थका अविच्छेद्य अंग नहीं है। इस तरहके अनेक पद्य महापुराणकी भिन्न भिन्न सवियोंके प्रारम्भमें दिये गये हैं। ये सभी मुक्तक हैं, भिन्न भिन्न समयमें रचे जाकर पीछेसे जोड़े गये हैं और अधिकांश महामात्य भरतकी प्रशंसाके हैं। ग्रन्थ-रचना-कालसे जिस तिथिको जो सवि प्रारम्भ की गई, उसी तिथिको उसमें

१—“शकनृपकालातीतसंवत्सरान्तेष्वस्वेकस्मिन्वर्षेऽपि गतेषु अकतः ८८१ सिद्धार्थस्वस्वस्थान्तर्गत चैत्रमासमदनत्रयोदश्या पाण्ड्य सिंहल-चोल-चेरप्रभृतीन्महीपतीन्प्रसाधय मेलपाटीप्रवर्द्धमानराज्यप्रभावे श्रीकृष्ण-राजदेवे सति तत्प्रादक्षोपनीयिन समधिगतपत्रमहाशब्दमहासामन्ताधिपतेभ्योऽनुकूलजन्यन सामन्तचूडामणैः श्रीमदरिकेसरिणः प्रथमपुत्रस्य श्रीगुह्यदिगयन्तस्य लक्ष्मीप्रवर्धमानवसुधरामा गगधाराया विनिर्मापितामिदं काव्यमिति।”

दिया हुआ पद्य निर्मित नहीं हुआ है। यही कारण है कि सभी प्रतियोंमें ये पद्य एक ही स्थानपर नहीं मिलते हैं। एक पद्य एक प्रतिमें जिस स्थानपर है, दूसरी प्रतिमें उस स्थानपर न होकर किसी और ही स्थानपर है। किसी किसी प्रतिमें उक्त पद्य न्यूनाधिक भी है। अभी मन्त्रोंके सरस्वतीभस्मकी प्रतिमें हमें एक पूरा पद्य और एक अधूरा पद्य अधिक भी मिला है जो अन्य प्रतियोंमें नहीं देखा गया।

यशोहरचरितकी दूसरी, तीसरी और चौथी सन्धियोंमें भी इसी तरहके तीन संस्कृत पद्य नमकी प्रशंसाके हैं जो अनेक प्रतियोंमें हैं ही नहीं। इससे यही अनुमान करना पड़ता है कि ये सभी या अधिकांश पद्य भिन्न भिन्न समयोंमें रचे गये हैं और प्रतिलिपियों कराते समय पीछेसे जोड़े गये हैं। गरज यह कि 'दीननाथधन' आदि पद्य मान्यखेटकी छत्रके बाद ही लिखा गया है और उसके बाद जो प्रतियाँ लिखी गईं, उनमें जाड़ा गया है। उसके पहले जो प्रतियाँ लिखी जा चुकी होंगी उनमें यह न होगा।

इस प्रकारकी एक प्रति महापुराणके सम्पादक डा० पी० एल० वैद्यकी नौदणी (कोल्हापुर) के श्री लक्ष्मण साहब पाटीलसे मिली है जिसमें उक्त पद्य नहीं हैं। ८९४ के पहलेकी छिपी हुई इस तरहकी और भी प्रतियोंकी प्रतिलिपियाँ मिलनेकी सम्भावना है।

एक और छाका

'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षक लेख मैंने 'माण्डारकर इन्स्टिट्यूट' पूनाकी दि० स० १९६० की छिपी हुई जिस प्रतिका आधारसे लिखा था उसमें प्रशस्तिकी तीन पक्तियाँ इस रूपमें हैं—

पुष्पमतकहणा ध्रुवपक्के जब अहिमाणनेरुणात्मके ।
कपठ कन्धु भक्तिपरमये छसपठहोचरकयसात्मके ॥
कोहणसम्पन्ने आस्यदए, दहमए दियहे चदरुहसदए ।

इसमें 'छसपठहोचरकयसात्मके' पदका अर्थ उस समय यह किया गया था कि यह प्रायः शकसंवत् ६०६ में समाप्त हुआ। परन्तु पीछे जब गहराईसे विचार किया गया तब पता लगा कि ६०६ सत्त्वका नाम जोधन हो ही नहीं सकता, चाहे वह शक संवत् हो, विक्रम संवत् हो, गुप्त संवत् हो, या कलचुरि संवत् हो। इसलिए ज्ञात पाठके सही होनेमें

१ इति मनसो मोहं द्रोहं महाप्रियञ्जुनं यस्तु यस्मिन् दंष्ट्रस्य प्रसातिकृतो— ।

त्रिनवरकथाग्रन्थप्रस्तावामितस्तथा कथय कथय त्वेकस्मिन् युवाञ्च मत्प्रभो ।

यह पद्य बहुत ही अद्भुत है ।

—४२ वीं पद्यके बाद

२ आकल्य मरते-वरस्तु अपतायेनादयन्नामिता ।

भोग्य भुवि मुक्तये त्रिनवका उत्तामृतस्यन्दिनी ।

—४३ वीं पद्यके बाद

३ देखो, महापुराण प्र स०, स० पी० एल० वैद्य-लिखित भूमिका पृ १० ।

४ स्व बाबा दुलीचन्दजीकी ग्रन्थ-सूचीमें भी पुष्पदन्तका समय ६०६ दिया हुआ है ।

सन्देह होने लगा । ' छस्यल्लडोत्तर ' तो खैर ठीक, पर ' कयसाम्भवे ' का अर्थ दुरुह हो गया । तृतीयान्त पद होनेके कारण उसे कविका विशेषण बनानेके सिवाय और कोई चारा नहीं था । यदि बिन्दी निकालकर उसे सप्तमी समझ लिया जाय, तो भी ' कृतग्रामर्थे ' का कोई अर्थ नहीं बैठता । अनपेक्षित शुद्ध पाठकी खोज की जाने लगी ।

सबसे पहले प्रो० हीरालालजी जैनने अपने ' महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार ' लेखमें बतलाया कि कारजाकी प्रतिमें उक्त पाठ इस तरह दिया हुआ है—

पुष्पयतकङ्गणा ध्रुवपक्वै जइ अहिमाणमेरुणामके ।
कयउ कब्बु भक्तिए परमत्थे जिणपयपक्वमउल्लियहत्थे ।
कोहणसवध्दरे आसाढए दहमइ दिवहे चट्ठरुइरुढए ॥

अर्थात् क्रोधन स्वत्सरकी असाढ़ सुदी १० को जिन भगवानके चरण-कमलोके प्रति हाथ जोड़े हुए अभिमानमेरु, धूतपक (चुल्ल गये है पाप जिसके), और परमार्थी पुष्पदन्त कविने भक्तिपूर्वक यह काव्य बनाया ।

यहाँ धर्मिके सरस्वती-भवनमें जो प्रति (१९३ क) है, उसमें भी यही पाठ है और हमारा विश्वास है कि अन्य प्रतियोंमें भी यही पाठ मिलेगा ।

ऐसा मान्य होता है कि पूनेवाली प्रतिके अर्द्धदश लेखकको उक्त स्थानमें सिर्फ़ मिट्टी गिरी देखकर स्वत्-सत्या देनेकी जरूरत महसूस हुई और उसकी पूर्ति उसने अपनी रिलक्षण बुद्धिसे स्वयं कर डाली ।

यहाँ यह बात नोट करने लायक है कि कविने सिद्धार्थ स्वत्सरमें अपना ग्रन्थ प्रारम्भ किया और क्रोधन स्वत्सरमें समाप्त । न यहाँ शक स्वत्की सत्या दी और न यहाँ ।

तीसरी शृंका

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले प० जुगलकिशोरजी सुल्तारको शका हुई थी कि पुष्पदन्त प्राचीन नहीं है । उन्होंने इस विषयमें एक लेख भी लिखा था और उसमें नीचे लिखी प्रगप्तिके आधारपर ' जसहरचरित ' की रचनाका समय वि० स० १३६५ बतलाया था ।

किठ उवरोहें जसस कडयइ एउ भवत्तर ।

तहो भग्गट्ट णामु पायडमि पयडठ धर ॥ २९ ॥

चिरु पटणे छगेसाह साहु तहो सुउ खेला गुणवत्तु साहु ।

तरो तणुरट्ट वीसलु णाम साहु वीरो साहुणियहि सुडहु णाहु ।

सोमरु मुग्गणगुणगणसणाहु एक्कया चित्तड चित्ति लाहु ।

हो पडिउट्टहुर रुणहपुत्त उवयारियवट्टहपरममित्त ॥

१ जैनशास्त्र संग्रहक मान २, अंक ३-४ ।

२ देवी, जैन-ग्रन्थ (१) जसहर खन १९२६) में ' महाकवि पुष्पदन्तका समय ' ।

कइपुण्यति जसहरचरितु	किउ ॥ सदलखणनिचिउ ।
पेसहिं तहिं राउलु कउलु अणु	जसहरनिवाहु तह जणियचोणु ।
सयलह मथममणमवतराइ	महु बछिउ कइहि गिरतराइ ॥
ता साहुसमीहिउ कियउ सवु	राउलु रिवाहु मरमणु भवु ।
उखणिउ पुरउ हवेइ जाम	सुठुउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसु सिहु	साहुहि धरे सुथियणहु ॥
पणसहिंसहियेतरहसयाइ	णिवनिक्कमसरच्छरगयाइ ।
बइसाहपहिछुइ पनिस बीम	रनिवारि समिधउ मिससीय ॥
चिरु शयुमणि कइ कियउ न जि	पइरिवणभि मइ खउ त जि ।
गवणे कण्हणणदणेण	आयह भवाइ किय थिरमणेण ।
महु दोसु ण दिजइ पुंवि कहिउ	कइरच्छराइ त सुउ छउ ॥

परन्तु जान पड़ता है कि उस समय इस पकियोका ठीक ठीक अर्थ नहीं समझा गया था । वास्तवमें इसका भाग्य यह है—

“ जिसने उपरोध या आप्रहसे कनिने यह पूर्वमर्जका वर्णन किया (अब मैं) उस भव्यका नाम प्रकट करता हूँ । पहले पणं या पानीपतमें छगे साहु नामके एक साहु थे । उनका खेला साहु नामके गुणी पुत्र हुए । फिर खेला साहुके वीसल साहु हुए जिनकी पत्नीका नाम बीरो था । वे गुणी धाता थे । एक दिन उन्होंने अपने बिसमें (सोचा और कहा) कि ह कण्हके पुत्र पंडित ठक्कुर (गवर्नर), बल्लभराय (कृष्ण तृतीय) के परम मित्र और उपकारित कनि पुण्यदन्तने सुन्दर और शम्भलक्षणाचित्र जो जसहरचरित बनाया है उसमें यनि राजा और कौलका प्रसंग, मशोवरका आश्चर्यजनक विवाह और उसके भगतर और प्रणिष्ठ कर दो, तो मेरा मन चाहा हो जाय । तब मैंने वही सब कर दिया, जो साहुने चाहा था—राउलु (राजा) और कौलका प्रसंग, विवाह और भगतर । फिर जब वीसल साहुके सामने स्वारयान किया, सुनाया, तब वे सुठुए हुए । योगिनीपुर (दिल्ली) में साहुके घर अच्छी तरह सुस्थितिपूर्वक रहते हुए निम्न राजाके १३६५ सत्रमें पहले पैगाखके दूसरे पक्षकी तीन रनिगरको यह कार्य पूरा हुआ । पहले कनि (बच्छराय) ने जिसे वातुन्दमें बनाया था, वही मने पइरिवण रचा । कण्हके पुत्र गवर्नने रियर मनेसे भगतराको कहा है । इसमें कोई सुखे दोष न दे । क्योंकि पूर्वमें बच्छरायने यह कहा था । उसीके सूत्राको लेकर मने कहा । ”

इसके आगेका घटा आर प्रशस्ति स्वयं पुण्यदन्तद्वारा है जिसमें उन्होंने अपना परिचय दिया है ।

१ ‘ पणु ’ का कबीरान्तिप्रीति दूर है ।

पूर्वोक्त पद्योंसे विन्कुल स्पष्ट हो जाता है कि गन्धर्व कविने दिल्लीमें पानीपतके रहनेवाले वीरस साहु नामक धनीकी प्रेरणासे तीन प्रकरण स्वयं बना कर पुष्पदन्तके यशोधर-चरितमें पीछेसे स० १३६५ में शामिल किये हैं और कहाँ कहाँ शामिल किये हैं, सो भी यथास्थान ईमानदारीसे बतला दिया है। देखिए—

१ पहली सन्धिके चौथे कदवकके 'चाएण कण्णु विहवेण इदु' आदि पक्तिके बाद आठवें कदवकके अन्त तककी ८१ लाइने गन्धर्वरचित है जिनमें राजा मारिदत्त और भैरवकुलाचार्यका सलाप है। उनके अन्तमें कहा है—

गवब्बु भणइ मइ कियउ एउ णिव-जोइसहो सजोयमेउ ।

अग्गइ कइराउ पुण्णयतु सरसइणिलउ ।

देविबहि सत्तउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ ॥

अर्थात् गन्धर्व कहता है कि यह राजा और योगीश (कौलाचार्य) का सयोग-भेद मैंने कहा। अब आगे सरस्वतीमिलय कविकुलसिलक कविराज पुष्पदन्त (मैं नहीं) देवीका स्वरूप वर्णन करते हैं।

२ पहली ही सन्धिके २४ वें कदवककी 'पोदत्तणि पुट्टि पल्लियंगु' आदि लाइनसे लेकर २७ वें कदवक तककी ७९ लाइनें भी गन्धर्वकी हैं। इसे उन्होंने ७९ वीं लाइनमें इस तरह स्पष्ट किया है—

अ वाससेणि पुत्ति रइउ त पेक्खवि गवग्गेण कहिउ ।

अर्थात् वाससेमने पूर्वमें जो (ग्रन्थ) रचा था, उसको देखकर ही यह गन्धर्वने कहा।

३ चौथी सन्धिके २२ वें कदवककी 'जज्जरिउ जेण बट्टमेयकम्मु' आदि १५ वीं पक्तिसे लेकर आगेकी १७२ लाइनें भी गन्धर्वकी हैं। इससे आगे भी कुछ लाइनें प्रकरणके अनुसार कुछ परिवर्तित करके लिखी गई हैं। फिर एक चत्ता और १५ लाइने गन्धर्वकी हैं

१ श्रीवाससेनके इस यशोधरचरितकी प्रति बम्बईमें (न० ६०४ क) मौजूद है। यह संस्कृतमें है। इसकी अन्तिम पुष्पिकमें 'इति यशोधरचरिते मुनिवाससेनकृते काव्ये अष्टमः सर्गः समाप्तः' वाक्य है। प्रारम्भमें लिखा है 'प्रभजनार्दिभिः पूर्वं हरियेनसमन्वितैः, यदुभय तत्कस्य शक्यं मया बालेन भाषितम्।' इससे मान्य होता है कि उनसे पूर्व प्रमज्ज और हरियेने यशोधरके चरित लिखे थे। इन कविवरने अपने समय और कुलादिना कोई परिचय नहीं दिया है। परन्तु इतना तो निश्चित है कि वे गन्धर्व कविसे पहले हुए हैं। इस ग्रन्थकी एक प्रति प्रो० हीरल्लजीने जबपुरके बाबा दुर्जीचन्दजीके मठमें भी देखी थी और उसके नोट्स लिखे थे। हरियेण शायद वे ही हों, जिनकी धर्मपरीक्षा (अपभ्रंश) अभी डा० उपाधेने लोग निकाली है।

२ अपरिवर्तित पाठ मुद्रित ग्रंथों में होनेके कारण यहाँ दे दिया जाता है—

सो मसवर से कात्रगामिनु

सो अभयनाउ सो मारिदत्तु ।

वणि ठुत्पकयभोइणदिणु

सो गोवइदणु गुणगणविसेसु ॥

जो ऊपर मात्रासहित दे दी गई है ।

इस तरह इस प्रथम सूत्र मिलाकर ३३५ पक्तियों प्रक्षिप्त है और वे ऐसी हैं कि जरा गहराईसे देखनेसे पुष्पदन्तकी प्रौढ़ और सुन्दर रचनाके बीच छुप भी नहीं सकती । अतएव गभर्गके क्षेपकोके सहारे पुष्पदन्तको निम्नकी चौहवीं शताब्दिमें नहीं घसीटा जा सकता ।

इसके सिवाय बहुत थोड़ी प्रतियोंमें, सो भी उत्तर भारतकी प्रतियोंमें ही, यह प्रक्षिप्त अंश मिलता है । क्योंकि तोरहपथी जैनमन्दिरकी जो रि० स० १३९० की लिखी हुई अतिशय प्राचीन प्रति है, उसमें गन्धर्वरचित उक्त पक्तियाँ नहीं हैं और ऐलक पन्नालाख सरस्वती-भजनकी दो प्रतियोंमें भी नहीं है ।

[अनेकान्त, वर्ष ४ अंक १७ और ८ से उद्धृत]

— नाथूराम प्रेमी

सा कुसुमावलि पालिपट्टिगुप्ति सा अमरपद्म सि परिदपुष्टि ।
मन्त्रे दुग्गमगिन्नाल्लेण सउ सपवि चाह सम्पासयेव ।
काले जते सव्वह मवाह त्रिगधम्मे सम्पासा गदाह ॥

१. बम्बईके सरस्वती-भजनमें जो (८ ४ क) उद्धृतअनुवर्तित प्रति है उसमें 'त्रिगधम्मे सम्पासा' गपाह क आगे प्रक्षिप्त पान्की 'गपावे कच्छदपदधन' आदि केवल दो पक्तियों न जाने कैसे आ पयी हैं । इस प्रतीति इन दो पक्तियोंको छाड़कर और कोई प्रक्षिप्त अंश नहीं है ।



LXXXI

पेणविवि गुरुपर्येहं भव्वहं तमोदतिमिरंघहं ।
कहमि पेमिवरिउं मंडणु सुपरिउरैसंघहं ॥ धुवकं ॥

1

धीरं ^१ अविहियसामयं	सीहं हयसरसामयं ।	
दुसियसोत्तियसामयं	विद्धंसियहिंसामयं ।	
रदिणयसयलरसामयं	अविणयधम्मरसामयं ।	5
चंडतिदंहुवसामयं	अलिणीलंजणसामयं ।	
जणियदुक्खवीसामयं	अदविणजीवोसामयं ।	
णासिपतिव्वतिसामयं	वेरीणं पि सुसामयं ।	
यलविहियविवाहयं	पसमियसेलविवाहयं ।	
दुईम्मुकविवाहयं	णिणं खेय विवाहयं ।	10
कयंणिउपुत्तिविउरयं	पयणयसुरणरंसूरयं ।	

1. १ S पणमवि. २ S पइय. ३ ABP अरविचह ४ ABP बीर ५ S जीयासा
६ S दुरविमुक. ७ AS उव ८ AS विउरय, T निउरण. ९ APS सुरयण, T सुरण.

1. 3 a अ वि हियसामय अउसलस्सीमदम्, b हयसरसामय हतकामहस्तिनम् 4 a
सामय सामवेदम्, b हिंसामय हिंसामतम् ■ a सयलरसामय सयस्तपुब्बीपुगम्, b धम्म-
रसामय धम्मरसामृतम् 6 a चंडतिदंहुवसामय अण्णस्तमनोवाक्कायदण्डत्रयोपधामकम्, b सामय
कृण्णम्, 7 a जणियदुक्खवीसामय जनितो दुक्खस्य विभागे विषमो येन, b अदविणजीवा-
सामयद्रव्यवान्छानिपण जीवितासामय च न य भट्टमकम्, द्रव्यजीविताधारहितमित्यर्थ. 8 a तिसामय
तृणारोगम्, b सुसामय सुपु सामद प्रियवचनदायकम् 9 a विवाहय मरुदवाहक विण्णुम्, b पस-
मिय सेलविवाहय शैलस्य पर्वतस्य वय. पणिणो व्यापाश्च प्रशमिता येन 10 a विवाहय परि-
णयनम्, b णिणं खेय विवाहय नित्यमेव विविधवापादायकम्, 11 a कयंणिउपुत्तिविसुरण कृत
नृपपुण्या राजीमत्सा विउरण सुरण येन, b पयणयसुरणरंसूरय पदनता. सुजराः क्षोभना उरगाश्च यस्य.

इतिरुलणहयलसूर्य
पीण सिवपुंरवासर
तवसदणणेमीसय

इदियरिडरणसूर्य ।
तिहसरणीवासर ।
यमिकन नेमीसय ।

यत्ता—मारु मणमि इव पर किं पि यत्थि सुकरसणु ॥
मज्झि विवक्कणह किं सुक्खु लँहमि युणकित्तणु ॥ १ ॥

16

2

णउ मुणमि वितेसणु णउ वितेसु
अद्विकरणु करणु णउ सरपमाणु
कत्तोव कम्मु णउ छिपज्जुसि
विणु वउ कम्मधारउ समासु
अज्झमाउ वि णउ मोवि लम्मु
णउ णउ वि सुवहु तिण्णु विहु
भरुहु केरु मरिदि पिपिहु
इउ कम्मविसल्लउ कम्मकारि
अलसलँहु पुणु परलोत्तवसणु
इउ करमि कण्ठु सो करउ भिरे

णउ छउ यणु वि णउ वेसिलेसु ।
जायणिउ आगमु णउ पुराणु ।
परियाणमि णउ एव वि विहसि ।
तप्पुरिसु वहुवीहि य पथासु ।
णउ जोरु सुकरहि तणउ मणु । ८
णउ अत्थि मणु णउ सहु मिहु ।
अत्थि णउ अलमि एमेव पिहु ।
आयउ वहुसुवणह हिपेवहारि ।
अं विचारमि विरसह मसउ मसणु ।
फलु जाणिहिंति दोह मि मुण्णिह । 10

यत्ता—सरसु लकोर्मलउ अलमलकललि णउ देयिणु ॥
हिंसेसर विमउ महु किलि तिज्जु लयेयिणु ॥ २ ॥

3

चित्तिअरु कल यल्लवराहु
उहु एसियउ महु जिणवीरणाहु

वीरु वि किं लसि सुपर राहु ।
अरु करमि कम्मु सुदमजणु साहु ।

१ ४ हरिउळ ११ ४ पुंरि १२ ४ अरुवि

2 १ ४ कलार २ ४ परियाणमि एव वि ण वि ३ A तप्पुरिसु वि वहुवीहि विदिपथासु
४ B अज्झमवि वि ५ ABP माउ ६ A तिवहु P निम्मु ७ AP परहु ८ A जणि णउ अत्थि
अलमि एव पिहु ९ A एव P एमेव १ B हिवर ११ Ala १२ वहु against M¹⁰ but
glo १ in S दुर्जनसम्मान् १२ B णउ नात्थि १३ AP वणु १४ B णिहु १५ APS दोहि
मि १६ B मुण्णिहु १७ APS सुकोमलउ

12 a सूर्य आदिपम्, b १२ सूर्य सूर्यम्, 13 a नील ज्ञाम, सिवपुरवासरं सिवपुरवास
दायकम्, b तिहारयणीवासरत्तुणागाम्निर्बणम्, 14 a "नेमीसय नेमिबन्धारा ईया दण्डिकादयम्
नेमीये हे ददानीति नेमीयद" सम्, b नेमीसय नेमीषउ नेमिनायम्,

2 ५ a मा वि चित्ते 9 a "वसज्जु ग्रहणम्, 10 b दोहमि मण दुर्जनस्य च

भो सुयण भवधरपुत्रीय
 पंदणवणमपुधारासिणि
 गुमुगुमुमुमतदिडियदुरेहि
 सीर्याणदउत्तरतउणिवसि
 गयणगालगदिमध्वलदमि
 सीहउरि णरादिउ अणदंसु
 पाईसरि मुदि जसु वैसदिससु
 दोदि मि जणेदि णरणायचंदु
 णिसि सुदरि कुलिसु व मैजि पाम

भो णिसुणि भरद गुरुयणाविणीय ।
 महमैदियविनिदवकुलकुलि ।
 इहे जंवूरीवि पच्छिमविदेदि । 5
 जणलकुलि गधिलणामदेसि ।
 पावारगोउरागपरमि ।
 वच्छत्थलि णिवसद लच्छि जासु ।
 मोणिद्व देवि जिणैदत्त तासु ।
 गफहि दिणि अहिसिचिउ जिणिदु । 10
 जिणयत्त पसुत्ती पुत्ताकाम ।

वत्ता—सिघिणइ विदु हरि करि चहु सूरु सिरि गोवइ ॥

नाइ कतिउं त्रियेदु सो णिमैसु णियमणि भावइ ॥ ३ ॥

4

ऐसइ सुउ हरिणा रिउअजेउ
 ससिणा सुहउ णिरु सोमैभाउ
 सिरिदसणि सुवइ सिरिभिंकउ
 थिउ गधिं ताहि कुंमलोयणादि
 उअपणउ वणजेअणि चलसु
 कमणीयां फनइ जणिउ गउ
 णाएसेविमिनाणिमयपयाउ
 णिसुणेयि थम्म उवयणणिवासि
 कुलसपय देवि सणयणामु

करिणा गरुयउ गुरुसोक्कणठेउ ।
 सूरुण महाजसु निवयंतेउ ।
 फइवयविणेदि सणदु देउ ।
 णयमोसहिं कर्त्तणणयणादि ।
 देवदं मि गणोहर णाइ सग्गु । 5
 अरिसिरिचूटामाणिदिणपाउ ।
 जायउ दिथहादि रायाहिगाउ ।
 ताणण विमलवाटणदु पासि ।
 जिणविक्क लेवि कउ मोहणाउ ।

3. १ B¹ °वणि. २ P °सोति. ३ B °महिथ. ४ B °पण्डित°. ५ B दय. ६ A सीगोयति,
 P सीओयति. ७ P °वलि. ८ S णगणिउ ९ S अरुदवाय १० B दम°. ११ A¹ पाणिद.
 १२ B जिणयत्त. १३ B गजसणाम. १४ A¹ विगो. १५ S विमदु (गृहको राजा).

4. १ P सिरिसोम° २ B सोमभाउ. ३ B दिव्यतेउ, Ala. proposition to read दिव्यजउ
 without Mv. authority. ४ B¹ विग° ५ B¹ °मगदि ६ A फालाणयणभादे, Ala. randa
 in S कसणायणयणादे, but the Ms. gives कसणायणयणादे what is wrongly copied
 for ग अ प. ७ P कमणीयदि. ८ S जणियसउ. ९ A तद दग्°, S णादगरिणि° १० B उवयणि.

3. 6 a गीयाणइ° जीलोदानया. B b वच्छत्थलि इदयसणदे.

4. 3 b गालपुदेउ मदे इरगणि वयुः कभिदेयः. 5 a. उवयणउ अपराजितनाम पुनो
 जातः, णव जोयणि वल्लणु नयवीर्यं प्राप्त. 6 a कसद म्नीणाम्. 7 b राया हि राउ अपराजितगजा.

पुसे गहियाह मणुष्याह
भावेपिणु केसरिपुरि पड्डु

एवहीकयसुरजसंपयाह ।
कालेण पराहउ पड्डु इड्डु ।

10

यथा — तेन पैयपियत गत विमलवाहु निव्वाणहु ॥
जिह सो तिह अबव तुह जणु वि सासयठाणहु ॥ ४ ॥

5

अ गिसेउ ताउ संपसुं मौकसु
जउ पडाह ए परिहुर परिहयाह
जउ कुसुमर विलेमियसडवणाह
अथमवयपतपयणेउराह
मिउ मुअर उयणिउ दिम्बु मोउ
चितर गियमणि इयडुण्णयाह
पेच्छेसमिं मुअमि पुणु घरिपि
इय काम न केर गरिउ मासु
ताहि भयसरि इयडु चित जाय
जआहि धणय वड्डुगुणविहाउ
सिरिभरुहवासरिपिणा सणाहु

त जायत भयराइपड्डु पुकसु ।
जउ छावर भमि विलेवणाह ।
जउ माहुरणाह गियकुल्लहणाह ।
कालेयेह पड्डु अतेउराह ।
अ सुहाह तासु पड्डु वि विजोउ । 5
जइ तायविमलवाहनपयाह ।
अ सो धंसणगाह मड्डु गिाविसि ।
अथ दियह पुण्णुं भट्टोवयासु ।
मुहकुहराउ गिणाय मड्डुर भाय ।
मा मरउ भपुण्णर कालि राउ । 10
वक्कवासहि गिणाय विमेल ताहु ।

यथा — सममहेसविष ता समयसरणु किउ अक्खे ॥
भावित परमजिणु वदिअमाणु सहसक्खे ॥ ५ ॥

6

पिउपायादिणवड्डसाइयण
भाहाव कलेउ भावेवि मेहु
पुणु सुह सुह सपसाह वसति

वंदिउ असिह भयराइयण ।
गकयह वड्डु गुणवति मेहु ।
असिउरि मण्णाहि वासरति ।

११ B आदमिणु १२ B पयतिउ

5 १ B मुणित २ AS संव ३ A विमलियसडवणाह ४ A कुसुमराह ५ B गाळोवह
६ A उउ मुअर ७ B पिच्छेसमि P पिच्छेसमि C ABPS add वो after पेच्छेसमि and
omit पुणु १ AP मल्लगाह २ A पणु P पणु ११ ABPS विमलवाहु १२ A वदिअमाणु

6 १ B सपउ

5 3 a विमलियसडवणाह विमलान्नमराणि 6 a इयडुण्णयाह इतमिध्यामतानि
7 b न तो यंसणगाह मड्डु गिाविसि जवणा अचनाहस्य मम विह्विपि नियम 11 b ताहु उरस्य
अपराजितस्य 11 सहसक्खे इन्द्रेण

6 1 a वाइयण कालिहनेन 3 b वासरति शुभेमादिने

वन्देष्णिणु जिणैवेईहराई
सुविस्सुद्धसीलजलहरियकंद
वंदिवि वंदारयवंदणिज्ज
तेहिं मि पउत्तु भो धम्मविद्धि
पुणु सच्चतघसवणावसाणि
मइ दिट्ठा तुम्हइं काइं करमि
पसरइ मणु मेरउं रमइ दिट्ठि
रिसि परमावहिपसरणपवीणु
भो नुव चिरु ससहराकिरणकंति

अक्खंतु संतु धम्मक्खराइं ।
ता दुक्क वेणिणु णहयलि मुणिंद । 5
मणिणय महिणाहें मण्णणिज्ज ।
केवलदंसणगुण होउ सिद्धि ।
पहु पमणइ अण्णहिं कहिं मि ठाणि ।
एवहि सुमरंतु वि णाहि सरमि ।
मणु जइ जाणहि तो जणहि तुट्ठि । 10
ता चवइ जेहु णिट्ठाइ खीणु ।
अम्हइं पइं दिट्ठा नत्थि भंति ।

घत्ता—पमणइ परममुणि नुव पुण्णरदीवि पसिद्धइ ॥

पच्छिमसुरागिरिहि पच्छिमविदेहि" घणारिद्धइ ॥ ६ ॥

7

गंधिलजणवइ खगमहिहरिदि
सूरप्पहंपुरि पइसियमुद्धिदु
पियकारिणि धारिणि तामु घरिणि
जाया कालें छुकयाणुरुयें
तहिं णंवण णं धम्मत्थकाम
ते तिणिण सहोयर मुक्कपाव
तहिं अवव अरिदमणयरि राउ
तहु पणहणि णामें अजियसेण

उत्तरसेट्ठिहि धवलहरवंदि ।
सूरप्पहु णामें णहयदिदु ।
वम्महधरेणीरुहजम्मधरणि ।
भाभारवंत भूतिलयभूयें ।
चितामणचवलगइ ति णाम । 5
णं वंसणणाणचरिसभाव ।
णामेण अरिजउ जयसहाउ ।
कीलंतवें वोह" मि रररसेण ।

घत्ता—पीरुमैइ तणेंय हूँइ सा किं मइ चणिज्जइ ॥

जाइ सल्लवण उव्वेसि रइ रंम हसिज्जइ ॥ ७ ॥

10

१ B जिणवेइय° २ B सुविशुद्ध° ४ AP जलभरिय° ५ AP णहयमुणिंद, B णहयलमुणिंद.
६ S मडिय महिणाहर मडणिज्ज. ७ A सच्चतघसवणावसाणे, P सच्चतघसवणावसाणे ८ ABP णिव.
९ ABP णिव. १० B पच्छिम° ११ B "विदेह"

7. १ P "हेरि. २ P पूरे. ३ B "वरिणी°. ४ AP "रुम ५ AP "भूव. ६ S तहो.
७ B दोहिं. ८ AP ररवसेण, ९ B पिइमइ, P पीइमइ. १० ABP तणया. ११ S चूँइ, Als.
हुइ against Mss. १२ A सुल्लवण १३ A उव्वेसि.

4 b अक्खंतु राजा स्वयं व्याख्यात कुर्वन् 5 a "जलहरियकंद जलभृतमेवौ 10 b जणहि तुट्ठि
रपमुत्तादय 11 b णिट्ठाइ खीणु म्रियया कुत्ता खीणगाय . 12 a चिर पूर्वमवे, ससरकिरणकति
इ शशपरीरणकान्ते राजन् 14 पच्छिमसुरमिरिहि पश्चिममेरौ.

7. 1 a सगमहिहरिदि विजयायें 3 b वम्महधरेणीरुहजम्मधरणि कामवृक्षस्य जन्म
भूमि. 5 b चितामणचवलगइ चिन्तामणिर्मनोवृत्तिरभ्यलगातिरिति नामानि.

8

परियचिवि सुरगिरिवरु तिवांर
णीसेस वि विषपयैमूळि विच
मणमद्वलगराणामालपहि
अविषय गियमायहु पद वच
दिद्री कुमारि गह्वरेर जिणति
वितागह आसह सोममसाणि
सह सुवहि माल विभिद्वैयमणां
विरमयिणु तुहु पावहि न जाम
तं वयणु ताह पदियणु तेंव
केसरिकिसोरेंधयकदरासु
सूर्य्यहृतणय धरिय माल

ओ लेह माल मणिकिरेणफार ।
विज्जोहर मेरु भमत जित्त ।
आवेयिणु धारिणिवालपहि ।
तां तेण वि कर्यं तहिं विजयजत्त । 5
अमरायलपोंसहिं परिभमति ।
इलि वेययति कलहसघाणि ।
सुरसिहरिदि तिणि पयादिनाल ।
इउ पकयन्ति भुवु धरमि ताम ।
थिव गयणगणि जोयतें देय ।
लहु देवि तिमामरि मवरासु । 10
भेवेय विजिय कयरवाल ।

मत्ता—उत्तर सुवहि पर सुवहि न को वि महारत्त ॥

विदु अदिहु तुहु वितागह कतु महारत्त ॥ ८ ॥

9

हा भणितं तेण मारयजवेहिं
पर जिंता प इह पावमाण
जो वचह सो महु अणुत्त कतु
मणालियसरजालणिवरियार
मणयणयहु वड्डहु जह वि रम्भु

अदिलसिय कण्णं तुहु वधवेहिं ।
थिय कायर असहियकुसुममाण ।
करि पवहिं देहु जि तुज्ज मत्तु ।
त मिसुगणि विओद्धि मुदियाह ।
वलिमहु न किज्जह तो वि पेम्भु । 5

8 १ B तिवांर २ A मणिरयणि P मणिरयणं ३ B जह ४ A जीसेसिवि ५ A
“मूळ” ६ A पिआहर ७ B “मावहि” ८ AP तो ८ AP तहिं भेव ९ P गह्वरे, १० P “पातेहिं”
११ BP विमियं १२ P “मणाओ” १३ ABP हुत्त १४ AP जोयति १५ B “किज्जो” १६
केसरिकिसोरें १७ A सुयहृतणय, १८ B गवेय.

9 १ P कण्णे २ A पर जिताह वि इह पळवमाण B जिता प पावमाण P जिता प
इह पावमाण T पळवमाण वाक्कतो ३ B तुहु वि पदु ४ B वलिमहु P वलिमह B वलिमह
५ P देहु

8 1 a परियचि वि प्रदक्षिणीकृत्य ८ लेह वड्डहि 4 a विषमायहु चिन्तागते 10 b
तिमामरि विहा प्रदक्षिणा 11 a सूर्य्यहृतणय चिन्तागतिनाज्ञा ८ गहवेयं इत्यादि गमन
वेगेन स्वरवाक्य प्रीतिमति किता 12 महारत्त महावेयो वेगवान्, 13 अदिहु अर्ह स्वप्न महा
रत्त मयीय

9 3 a अणुत्त अनुत्त ६ b वलि महु कथकारेण

हो हो गियणिलयहु चित्त जाहि
इय चित्तिवि मेहोवि मोहमनि
आइउ जिणु केवलणाणचम्भु

मा दुहहसगि अणमि थाहि ।
पणाविधि निविर्त्ति णामेण गति ।
परिपालेउ सज्जमु ताइ तिग्गु ।

घत्ता—दीणह दुत्थियह मज्झणविओयज्जमग्गह ॥

भीवहे दुग्गसिहि जिणवेग्गपयपरुयलग्गह ॥ ९ ॥

10

10

अवलोइवि केण्हि तणिय चित्त
सहु भायरोहि दमवरममीवि
सणासे मरिचि सिरीवियाणि
तहि दीहकालु गियणियविमाणु
इह जयुदीयि सुरदिमिधिदेहि
अयरायलि उत्तरादिसिणिययि
पुरि णहवह्महि षहु गयणचहु
अमियगर पुत्तु हउ ताहि जाउ
वेणि वि मुरीयसग्गाचइण
तुह विरहणडिय अंसुय मुयनि
जाणसि ज ताइ घउत्तु धारु
अम्हं 'नीहि मि पयसियमणेहि

चितामइणा कय घरेणिवित्ति ।
तथच्चरणु लउउ गुणमणिपईवि ।
आया तिणि वि मईदकयि ।
भुजेप्पिणु मत्तसमुदमाणु ।
पुक्कलवडेमि सउतंमहि । 5
मदानमजरीरणुमवि ।
पिय गयणमुदग मुणतहु ।
इहु अमियनेउ लेहुवरउ भाउ ।
जाणमि 'ज जिन्ती आमि कण ।
जाणसि ज ण ममिच्छिथ गयनि । 10
जाणसि ज किडे बारित्तभार ।
दमवंसयानि पोसियगुणेहि ।

घत्ता—छुउ छुउ जोदेयंड लर जह वि सुहु दुरिहं ॥

छुंछु जाउभरर गयणर मुणति नेहिहं ॥ १० ॥

१ B हो हो गियणिलयह, P हो होउ गियत्तं, S हो हो गियणिलयह ७ B मरिचि ८ ७ गिवित्त.
९ S 'विशेष' १० BPS Ab. गावह ११ P 'यवपर', S om प in यवपर.

10. १ B कणह, P कणहो २ A मरि. ३ B वरि ४ P तउचरणु ५ B मीग.
६ BP माहिदं ७ A पुक्कलवडेमि ८ K णववह्महि ९ A गयणमुदग १० S लहुअयद
११ AP जे १२ P गामे १३ S निउ १४ B तिणि वि, P तिहि ण १५ A रगियवणेहि
१६ B दमवरमयानि. १७ B जोवउ १८ A इयउउ, Ab दुरिहं against Ms. to
accord with the end of the next line. १९ AP घुउ, B घुउ. २० AP जाउवरर,
S जाइमरर २१ AP उंहेहउ, but BK निहिल्ल and gloss in K सिग्गयानि

७ a हो हो इति २ चित्त, २ निजमिल्ले स्थाने गच्छति सा स्वात्मान मगोयनि १ b ता इ तथा
कन्याया. 10 जी बइ विष्वापयति, छुक्कमि हि दुग्गयि

10. 2 b गुणमणिपईवि गुणमणिप्रदीपे. 3 a सिरीवियणि लक्ष्मीविरूपे स्वर्ग, श्रीणा
भेदे वा 5 b सवतमेहि अन्त्येये. 6 a 'गियवि तउ 7 b मुक्कतहु आलसपरहितः. 9 b कण
मीतिमती त्वम् 11 a वउत्तु अतमनुष्ठितम् 14 जाइमरर जातिस्मरणि, नेहिहं विग्गयानि

11

अम्हई ते मायर तुज्जु राय
यरहत्तु समयहणामघेउ
णियजम्मणु तुह जैमैं समेउ
सीहउरि रौउ कूसियविवक्खु
सो तुम्हइ वंघेउ णिविचार
अम्हेइ हई दसनसमीह
पसिय कुउ अपिउ जिणवरसु
हय कदियि साहु गय वे वि ययणि
अदिसिन्धिवि जिणपडिमाउ तेअ
बहुषीणाणीह दाणु देवि
इदियकसायमिच्छसदमणु
मुउ वप्पणउ अणुपविमाणि

अण्णेसहि कम्मयसेण जाय ।
पुच्छियउ पुढरीकिणिहि देउ ।
आहासह जासियमयरकेउ ।
वितागर हुउ अघराइयक्खु ।
ता विमुणिवि केयलिघयणसाह । 5
आया तुह विट्टउ पुरिससीह ।
अण्णै वि तुह जीवेउ पक्कु मासु ।
जरणाहैं छडिं तत्ति मयणि ।
मावें पुज्जिवि अवराइरण ।
अरपुसकलसह परिहरेवि । 10
किउ मासमेसु पाओरेंगमणु ।
वाधीसज्जलहिजीवियपमाणि ।

प्रस्ता—तेरेंहु ओरेंरिवि हह मरहयेति विवर्णयत ॥

कुवत्तमलविसप पुणु इतिणायपुरि जायत ॥ ११ ॥

12

सिरिबदें सिरिमरपदि तज्जु
गुणवच्छु णामें सुप्पह
तेंहु रक्खु देवि हुउ सो महीसु
णीसहु गिरिबद वणि वरहु

विदवमतणु कुवकुलसुवविणुउ ।
मिउं वरादेविहि माणह
सिरिअडु सुमहिरणुवदि सीसु ।
जहिं सिरि अणुइजर सुप्पह ।

11 १ A अण्णणे २ S पुउमिमिदे. ३ BK वमि ४ B राय ५ P हुउ ६ S
अवराइमय ७ S वयउ ८ AB वणु ९ BS अम्हई १ A पघिउ B पघिउ ११ AP
अन्समि सुहु १२ AB छविय, S डडिय १३ S भाहु १४ AP पाओवगमणु. १५ B तित्वहो
१६ S उवरेवि १७ P विस्सावओ

12 १ P कुवत्तमलविविणुओ २ AB गुमि वच्छु. ३ A वृणदा^१ B प्रियु P रिप;
Ala. मियणदा^१ ४ AP पावहहु ५ B जो हुउ P हुओ S जो but gloss सुप्रतिहरय

11 1 ६ अण्णेसहि नमोवत्तमनयरे. 4 a विवक्खु विपय शत्रु ६ अवराइयक्खु
अपरावितायम 5 a विविचार निर्विचार 7 a पसिय प्रतीति कुव 8 ६ पति विन्ता
18 जो मरिवि अवतीव

12 1 ६ विणुउ सुव 3 a महीसु श्रीकन्दराया 4 ६ अणुइजर मुनकि

तहि असद्वरु रिसि चरियइ पवण्णु
तहि तासु यवणपंगणनयाइ
काले जते पिहुसोणियाहि
परियउ अवलोयइ विसउ जाम
चितइ गरयइ णिवाडिय जलति
तिह जीव विविहकिंकरसयाइ
इय बीविवि सुदिदिहि तण्णुहासु
णिज्जाइयसिचपुरमंडिरासु

राय पय घोईवि दिण्णु अण्णु । 5
अच्छरियइ पच समुगयाइ ।
कोलतु समउ रायाणियाहि ।
णिवंडति णिहालिय उक्क ताम ।
गय उक्क खयहु जिह पडे करति ।
अणि कासु वि होति ण सासयाइ । 10
सउं बद्ध पद्ध पदसियमुहासु ।
पणवेण्णियु पाय सुमडिरासु ।

वत्ता—दिहिपरियेसहिउ णीसेसभूयमित्तत्तणु ॥

निरिकरभवणु पडिवण्णउं तेण रिसित्तणु ॥ १२ ॥

13

सुपहं दुद्धरु चिण्णु चरिउं
परवांसमयाइ परिकिजयाइ
विहवेसइ केसइ लुखियाइ
रउं विहुणिवि णिहणिवि जिणिवि कामु
अ सि आ उ सा इं अक्खर सरेवि
अहमिंहु अणुत्तरि दुडे अयति
तेत्तीसमहुण्णवणियमियाउ
तेत्तिंयहि जि सुरिपयोंसपहि
भुंजइ मणेण सुदुमाइं जाइ
णायें परियाणइ लोयणादि
णिवसइ विमाणि पण्णुल्लवत्तु

मणु सत्तुमिसि सरिसउं जि धरिउं ।
पयारइ अगइ सिक्खियाइ ।
गयगण्णइं पुण्णइं संचियाइ ।
अविरुद्धउं वद्धउं अरुहणामु । 5
गयपासें सणासें मरेवि ।
हिमंहससुहारुहकिरणकति ।
तेत्तिंयहि जि पक्खहि ससइ देउ ।
बोलीणहि वरिससेहासपहि ।
मणगेज्जइ किर पोगलइं ताइ ।
करमेत्तवेहु मणंहरकिरीडे । 10
सो होही जैहि न भणमि गोत्तु ।

१ B बीविवि ७ AP फाणे कजाइ ८ B अवलोवइ ९ A विसिउ. १० A णिवडत ११ AP पठरकवि १२ A संचि, P अवेवि १३ B "परियण", K "परिवण" but corrects it to परियर.

13 १ P मणि सत्तु मिनु सरिसउ २ P "वाइयमयाइ ३ A गयगण्णइ, ४ B संचियामि, ५ AP रउं विहणिवि णिहणिवि ६ P हुओ ७ B हिमरासिसुहारुहकिरण ८ B तेत्तीयहि पक्खहि, ९ B तेत्तीयहि सरि, १० A सइ, ११ P "पयासिपहि १२ S "सहापहि APS मणइव, १३ B वइ.

१ a चरियइ मिक्खयम् 7 a पिहुसोणियाहि पृथुक्कीयि 9 b पउ पदम्. 11 a च वि वि कययित्ता

13 3 b गयगण्णइ गतगणितानि असख्यातानि 4 a रउ पापम्, b अ विरुद्धउ समीचीनम्. 6 b "सुहासइ" चन्द्र 8 a सुरिपयासपहि सुरिभिः आचार्यै प्रकाशितानि, 11 b सो सुप्रतिष्ठमुनिचर.

यत्ता—गोचमु मणह सुभि मगहादिव लक्षपससहु ॥
रिसहणाहकयहु पच्छिर्मसतह हरिवसहु ॥ १३ ॥

14

इह वीधि भरहि वरवंच्छदेसि
मघवतु राठ पिछुणयगतावि
रहु नायें पवण सुसुहु सेट्टि
दसठरहु होतंर धीरदसु
बाहहु भईयर नावर कुरसु
कोसवि पडुठ सुसुहुभवनि
सम्बर विच्छर ररसरयाह
वणमाळ बाळ सुमुदेण दिह
नहिलसिय सुसियै तहु देहवेसि
हूसीलें परजापारपेण
बारहरिसौवहि दिणु विणु

कोसबीपुरवरि अणणिवासि ।
तहु वीयसोय नामेण देवि ।
कालिगदेसि कमलाहविट्टि ।
वधि वज्रमाळासहु पोम्मवतु । 5
मायठ अणाहु कयसत्यंसु ।
ठिउ जालगवकसविसतपयणि ।
अणहिं विणि वणकीलहि गयाह ।
छायणयत रमणीवरिहु ।
मणि समी भीसणमयणमहि । 10
वणिवहणा णिठ मायारपण ।
वोंजिकाहि वेसिउ धीरंदसु ।

यत्ता—गठ सो इयद तैहि मालिगणु वेंतु न यद्धर ॥

परहरवासियहु अणु धणिय न कासु वि सुद्धर ॥ १४ ॥

15

वज्रहठ परवेसु पराववासु

परवेसु जीविउ परदिणु गासु ।

१४ P परियवसतप

14 १ B °वच्छदेसो १ S सुसु १ B हुवठ ४ AP वैमरसु S पेमवतु K जोम्मवतु
bnt adds a p पैम इति पाठे स्नेहवान् ५ B मरप १ B °ससु ७ B सुसुहु ८ A वि
हाह P विचार १ AP वणवीकमवाह १ AP अयणयवण ११ S सुसीय १२ B वूसैलें
S वूसैलें ११ B रयेण १४ S °वसामहि १५ B वामिजहो १६ B धीरवसु १७ B तहिं

15 १ S परवठ २ BP °विण्वगासु.

12 मगहादिव हे जेणिक, हरिवरपरण मणु 13 पठिमसतह पमासरपरा पमिमजेणी
हरिवरहु इराकुवरी निन तेन स्वागितामलायो वज्रा, (1) कुकवरो सोमप्रमस्य कुराज इति
नाम दक्षम् (2) हरिवरो हरिपुत्रस्य हरिकान्त इति नाम दक्षम् (3) उग्रवरो काश्यपस्य
मघवा इति नाम कृष्णम् (4) नागवरो अरुणस्य नीलो रोमा कृत

14 3 b कनकाहदिहि कमळकोचन 4 b वणि वणिहु पोम्मवतु पणववन 5 a बाहहु
म १४ इ व्याधानी मयात् 7 a विचई जिता प्रसिद्धा सर्वे जना 9 a सुसिय शुष्का जाता तहु
सुमुलस्य 10 b वणि वहणा वणिपतिना मा नारपण मायारतेन 12 व न व सुमुल 13 वणि य माया

15 1 a वज्रहठ मल्लीमल्ल पराववासु परस्य गेहे वाळ, परेयां अवकाश परस्वेच्छया
पर्यटनम्, परेयां अवकाश प्रवृत्त

भूमंगभिडडिदरिसियमपण
समुयैजिपण सुहुं वणहलेण
वर गिरिकुहुर चि मण्णैमि सल्लघु
कीलंति ताई णारीणराह
बहुकाँलहि औपं मयपमत्तु
जाणित तावें अंतर्तक्षीणु
बलवत्तें रुद्धउ काई करइ
धलसगें लग्गी तासु सिक्ख
चित्तिवि" किं महिलइ किं धणेण
संपुण्णकाउ सोहम्मि देउ

रज्जेण वि किं किर परकण ।
णउ परदिण्णें मेहँणियलेण ।
णउ परघवलहव पद्दामहग्गु ।
उरयलघणयलविणिहियकराहं । 5
वणिष्ठा वणिवइ वणमालरत्तु ।
अपसिद्धंउ णिद्धणु बलाविहीणु ।
अणुदिणु चित्तंतु जि णवर मरइ ।
पोट्टिल्लुं मुणि पणविवि लइय दिग्ग ।
मुउ अणसणेण णियमियमणेण । 10
चित्तंगउ णामें आम जाउ ।

वत्ता—सावयन्नय धरिवि ता कालें कयमयणिग्गहु ॥

रघु मभवंतमुउ सुव हुउ तेत्थुं जि सूरप्पहु ॥ १५ ॥

16

वणमालइ सुसुहें णिरु णिरीडु
आयणित धम्म जिणिंदसिडु
धितवर सेहि दुक्खिविरत्तु
असहायडु आयडु विहलियासु
सुयरेण मोहिणि हुउं कयकुक्कळ
हा किं ण गइय हउं खंडखंड
इय णिवंतइ असणीहयाई
इहं भरहसैसि हरिवरिसविसइ
णरणाडु पइजणु सइ मिककं

मुंजाविउ मुणिवर धम्मसीडु ।
अप्पौणु वि धूलिसमोणु दिडु ।
हा हिउउ किं मइ परकलत्तु ।
हा किं मइ विरइउ गोहणासु ।
मत्तारदोहँकारिणि अलज्जे । 5
हा पडउ मज्झु सिरि वज्जवहं ।
कालेण ताई विणिण वि मुंयाइ ।
ओयउरि मोहँमडुत्तविउसइ ।
तहु धरिणि णिरुविय कौमकंड ।

१ B १यजिणइ. ४ S मेयणियलेण ५ A मण्णवि. ६ AB कालें, P कालह. ७ B आयए, C A ता तावें अत्त खीणु, P अत्तु खीणु, S अत्तु खीणु ९ B अपसिद्धिउ. १० B पुट्टिल्ल, S पोट्टिल्ल. ११ P चित्तए, १२ B तिथु.

16 १ B जिणइ २ AP अप्पाणउ धूलि. ३ B सुमाणु. ४ A मइ किर, P मइ किं ५ BP सुअरइ. ६ B १कुक्कळ ७ B १दोहिं ८ S कारिणी. ९ B अलज्ज. १० B मयाइ. ११ B इय. १२ A मोइसपत्तविसए १३ B पडुनणु. १४ BS मिकहु १५ BS कामकडु.

4] a सल्लघु आध्याम् 7 = अत्तवक्षीणु अन्तर्मनोमध्ये खीणः, b णिद्धणु निर्वनः. 9 a सल्लसगें, आरयो ससंगेण.

16 1 a सुसुहें सुमुलेन च. 4 a आयडु आयत्तस्य. 6 b सिरि मस्तके. 7 a असणी० विडुत्त. 8 b मोहंमडुत्तविउसइ भोगिसुमटुत्तविषये. 9 b कामकड कामनाणाः.

इउ सुमुइ पुसु तदि सीइकेउ
सुइदेवि सुइंप्पावण गुणाल
इरे परिणाविउ सीइकिउ

सार्सेवपुरि गरवइ वज्जेवाउ । 10
वचमाल नादि सुय विज्जेमाल ।
जम्मतरसजियेजेइवहु ।

घसा—पुसु घर परिहरिवि रविम्मराइ पकहिं दिणि ॥

कयकेसग्गाइर कीलति आम पदववणि ॥ १६ ॥

17

कुइलकिरीउविचेइवयस
सा वे वि देव ते' तेतेउ आय
विसगण परिणाविवाइ
सतावपर समाविवाइ
वणमाल पर कुइलिय कुंसील
उवाइवि वेणि वि विवेमि तेसु
इय विंतिमि सुपवळलोसिवाइ
किर गिप्पळजळगिरिपइवि विवा
को पालु वरि को पालु वसु
होलेसु कति इप्पमगिविसि
काठणु सभमूपसु आसु
त गिप्पुगि वि उवसमसगण
वपापुरि वपववुंयेगुजि

सूरप्पा विसगव सुमिस ।
इपर वेविचवि मणि विंठ जाय ।
कहिं जारर विहिणा भागियाइ ।
एवहिं कहिं जति भघाइयाइ ।
इउ सुमुइ सेडि जें मुळ वीळ । 5
जउ चाणु पाणु जउ ग्हाणु जेतु ।
देवेण ताइ संवाडियाइ ।
तोंवियउ जमरु कउणेण ववर ।
सुर सुर सुवर वरराणुवसु ।
गुणवति भसि गिम्पुणि विरसि । 10
किं भण्णइ वणु समाणु तासु ।
भविपसु मुगि वि विसगण ।
विसीइ वे वि उज्जायमगिइ ।

घसा—गव सुरवर गवणि तदि पुरवरि जमरसमाजउ ॥

वदकिंति विजइ सुइ सुइ मि आम मुउ राजउ ॥ १७ ॥

18

१६ A सावल्पुरे १७ AB वज्जेव १८ AP भइवि १९ A सुमुप्पा वणगुणाल २० BS
विज्जमाल २१ S "वविउ

17 १ ABPS "वेचइव" २ S व ३ B तिलु ४ S कुंसील ५ A विवेमि ६ विंतिमि
६ S ग्हाण ७ AP ता इव ८ S वरराणुवसु ९ S गुणवत १० S गिप्पुण ११ B
"वृणगमि १२ B विंता वे वि वि

10 a सुमुइ सुउलवर b वज्जेवाउ वज्जवा

17 1 a विचइव वृणिम ६ b वीळ मोटा ७ b इवक जमरु वृणम 18 a
"गुजि गुमत्ताने 1० विजइ विज्जमाल

18

तद्गु तदि संताणि ण पुत्तु अन्धि
जलभरिउ कलसु कैरि दिण्णु तासु
करडयलगलियमयसल्लिविदु
उत्तंगु णाइ जगमु गिरिदु
दिव्वेण दइवसंचोइएण
उच्चणि पइसिवि सिरिसोक्कहउ
परिवारे मिल्लिवि णियदु पट्टु
परिणवइ कम्मु सब्बायरेण
णउ दिज्जइ संपय दिणयरेण
हुम्माइ ण अक्खे रेवइइ
जय जीवे देव पमणंतपहि
को तुहु भणु सच्च जणणु जणाणे

अहिवासिउ 'मतिहिं भइहत्थि ।
कंकेल्लिपत्तसंछाइयासु ।
चलरुणुरणंतमिलियाल्लिवुं ।
सहुं परियणेण चल्लिउ करिदु ।
मुक्ककुसेण उद्धाएण । 5
अहिसिचिउ कारिणा सीहकेउ ।
मा को वि करड भुयबलमरदु ।
चिरभवसचिउ किं किर परेण ।
गोविंदं वंमं सिणयणेण ।
विपेण्डिज्जइ जणु मिच्छारइइ । 10
पुच्छिउ पुणु राउ महंतपहिं ।
आगमणु काइं का जम्मघरणि ।

घत्ता—जणवइ हरिवरिसि पट्टु कहइ सयल्लमणरंजणु ॥
भोयंपुराहिव मेरउ पिये राउ पइजणु ॥ १८ ॥

19

मुहलोहाणिज्जिकमलसंड
हउ सीहकेउ केण वि ण जिउ
तं सुणिवि मिक्कइ जणिउ जेण
तं पवरसिधुराकउवेदु
पट्टुकिंकरेहिं लेविळमाणु

तद्गु मेहिणि मद्गु मापरि मिक्कइ ।
आणेण्विणु केण वि एत्थु चित्तु ।
मतिहिं मेक्कइ जि मणिउ तेण ।
बहुवर पइदु पुरि बच्चणेहु ।
घयछत्ताचलिहिं पिहिज्जमाणु । 5

18 १ B मतहिं. २ A करविणु ३ S उद्धायासु ४ S मिलियाल्लिवु, BP विदु
५ ABPS उत्तु ६ B जगम. ७ B दइय. ८ B सिल्लिउ, K सिल्लिय ९ B अक्खे १० B
निवडिज्जइ. ११ S जीय. १२ B जणवय १३ B कहमि १४ PS सयल्लमणरंजणु १५ A पाय-
पुराहिव १६ APS पित

19 १ BP सहु. २ BP मिक्कइ ३ B वेत्तु ४ B मिक्कइए. ५ S मक्कड. ६ AB ता
वरसधुरा. ७ B प्हाविजमाणु

18 2 b उद्धायासु प्रच्छादितमुल B दइवसचोइएण पुण्यचोवितेन B
चिरभवसचिउ पूर्वोपनिर्गत पुण्यम् 9 b सिणयणेण शक्रेण पार्वतीकान्तेन 10 a हुम्मा-
पावत्या, रेवइए नमदया. 11 b महन्तपहिं सामन्तै 14 निय पित.

19 3 b मक्कइ मक्कण्ड 1 b बहुवर विटुन्माळासिहकेत्.

चलबामरेहिं विजिज्जमाणु
तडिमालापियकतासहाइ
सताणि तासु जाया अर्धेद
जणसधोहणउवणियसिनेहिं
पुणु देसि कुस्तयइ हुव अदीणु
कुंठि तासु वि जायउ सूरवीव

थिउ बीडु कालु सिरि भुंजमाणु ।
कालें कयलिइ मकडराइ ।
हरिमिरि हिमगिरि वसुगिरि गरिइ ।
अवर वि वहु गणिय गणाहिवेहिं ।
सउरीपुरि राणउ सूरसेणु । 10
चारियिमुकतमानियसरीर ।

प्रस्ता—भरेइपसियपडु थिरयोर्वाहुदुअववळ ॥
जाया ताहिं सुय वरपुंअयततेउजळ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसद्विमहापुरिसगुणालकारे महाकपुष्कर्यतविरहप
महामभरत्तापुमणिय महाकम्मे जेमितिपतित्थमैरत्तयिषवर्ण
नाम धक्कासीतिमो परिच्छेद समप्तो ॥ ८१ ॥

८ A कुसित्थप ९ AP सुउ तासु १ B मरुहे ११ S भाइ १२ P पुष्कर्यत १३ A
तित्थयरत्तामववण B तित्थवरत्तामववण

8 ८ हरिमिरि इत्यादि हरिमिरे पुनो हिमगिरि उरु पुनो वसुगिरि 11 ८ सूरवीव सूरवीरराश
दे मार्गे, भारिणी मुकन्ता थ, चारिणा पुन अमकहणि, मुकन्ताया नरपतिहणि

सहति णीलधम्मेल्लउ अर्धकविट्ठि पटिह्ठि ।

णदणु मययणिज्जउ णररुहविट्ठि उरुज्जति ॥ सुत्तक ॥

1

धणजुयलघुल्लियच्चल्लानमणि
शुणि सुयणविरोमणि परिगणित
यीयउ ण पुणणपुत्तरउ
दिमयतु चिजउ अचलु चि तणउ
लहुयेउ धमुणउ विस्साल्लम
पुणु मदि कुंयदि कुचलवणयणे
णियणोत्तमणोत्तगाराणु
धीयणु सुंमही मरमेहुरसर
तुरियणु मुत्तोर्मे पचमणु पिय
अवरणु वि पदाघड निजमणु
अहमयणु मुत्तपह सुहेचनिय

धत्ता—णररुहविट्ठि मेदिणि
जणि भहारी भाषर

जेट्टणु मुभर नाम रमणि ।
मुउ नाइ समुहविज्जउ जणिउ ।
अकरोणु निमियमायण तहउ ।
धारणु पुणु अदिणयणउ ।
उत्तपण कान्ति पुणु हग्गण ।
मुणिह्ठि मि उगोदयमणमयणे ।
मियणरि पन पटिल्लाराणु ।
तहयस्स मयपह कमत्तपण ।
मियेवाय नाम पचकत्तरेय ।
कान्तिगी पणहणि मत्तमणु ।
णरमणु गुणत्तामिणि लभणिय ।

रिमल्लनीलज्जन्धविहिणि ॥
पोमययण पोमायड ॥ १ ॥

5

10

15

2

तहि उल्लामेणु परमेणहण
पुणु देधमेणु महसेणु हउ

सुउ जायउ करिकरुहदपण ।
साहमणिरामु णररुहसुउ ।

1 १ B अधयविट्ठि, २ AP पटिह्ठिउ ३ B णररु ४ ABP दुहज्जउ. ५ ABP'S
मुणपुत्त. ६ A विमिरसायक ७ B लहुओ. ८ B विल्लह ९ AP तुमरि, B तुमरि १० B
पयणा ११ B मयणा १२ B मुज्जमणी. १३ B उरु महुत्त. १४ A मुणीय. १५ P'S पियमाय.
१६ ABP मिय १७ B मुत्तचरिय १८ A गुणभाविणि १९ P' पउमययण.

2 १ AP णरविद

1 1 पटिह्ठि प्रथमाया धारणाः पुत्रोत्तराणि 2 मयययणिज्जउ गतमिन्दः निन्दा-
रहितः; दुदजहि दिगीयाया. मुक्कालाया नरपतिरुणि. 3 ७ जेहणु अन्धकण्णे. 4 ७ उपोदयमण-
मयण उत्तादितमनोमदना 10 a सरमहुत्तसर स्मत्तावि मधुत्तरा, अथवा, यत्तस्सरम्मपुत्तरा.
12 a अवरणु जन्धस्य भार्या प्रभावती, निजमणु तमोरहितस्य, पाप्महितस्य वा 11 ७ वा ति नि नी.

2 1 a परसेणहण परमेणभहाराः

एयंहु लहुई ससं सोम्ममुदि
विष्णाणसमत्ति पयार्वैहदि
कुरुजगलि इत्थिणायणयदि
तहु वेवि सुवकि सुकोतलिय
हयउ पारासक तौहि सुउ
मच्छउलरायसुय सज्जवइ
हेप्पणु वासु तौहि मलियकौई

अन्ता—ताहि तेव उप्पण्णउ
लक्खणलक्खियकायउ

गंजारी पाम तूसवियसुदि ।
किं वण्णमि सुय पोमावेइहि ।
तहि ईत्थिराउ छुंइघोयघरि ।
सिद्धा इव वरेवण्णुज्जलिये ।
कैयें व सुखउ लग्गसुउ ।
तहु विष्णी सुदरि सुदी सइ ।
तहु मज्ज सुमर पसण्णमाइ ।

सुउ अयउ महुण्णउ ॥
पड विउर पुणु जायउ ॥ २ ॥

5

10

3

ते तिणि वि भावर मज्जहरहु
तहि पडकुमारें तिजगपुय
सउइयकि रैमती सदिहि सहु
तो लउउ मइ परजम्मफलु
पइ वविवि तवोलेय इउ
पहु वि कणु कण्ण व वीसर
आणइपणविपवरेदिणहु
तहि विट्ठियं पडं पुडरिय
विज्जाहरयरकरपरिगलिय
पडिमायउ त जोयवै रयव

वहुकालें मय सउरीपुरहु ।
अयलोइव मयकविट्ठिय ।
विउर सुईरि अइ होइ महु ।
कौंतिइ जोयहु यिरच्छियलु ।
तो सउउ पुलइयवैहु गउ ।
रिसि सिद्धि व द्वियवइ समरइ ।
अण्णहि विणि गउ महुण्णवणहु ।
वीयलियहरियमैणियरफुरिय ।
तकणेण इइव अण्णुयलिय ।
किं जोयहि इय पुच्छेइ इयउ ।

5

10

१ P एयं १ B सति ४ B वरहो ५ B वरहो ६ A इत्यु राउ ७ B इहोय ८ B
सकोतलिया ९ B परं १० B कण्णुमलिया १ B तासु, ११ B कय १२ B अहजणुरायं
१३ A बुद्धमइ १४ B उप्पण १५ B तहो १६ A ललियगइ

3 १ ABP कावहि १ A लवरीपुणो १ B अवयं ४ PS रमति ५ B सउ ६ A
सुदरु B सुदर ७ APS तो ८ B पणचिउ ९ A वरिहियहो १ APS दिद्धी ११ A पंडुर
पंडुरिय B पंडु पुडरिय P पंडु पंडुरिय १२ AB मणि विण्णुरिय १३ B जोयउ १४ B पुच्छिइ

3 a एयहु एतेषा वषाणाम् सस मग्गिनी 4 a पयार्वइहि विषातुः ६ सुय पोमा वइहि गान्धारी
6 a सुवकि सुवस्कीनाम्नी ६ सिद्धा मातृका 7 a पारासक पराधर 8 a मच्छउलरायसुय
मत्स्यकुलराजपुत्री न इ जाला हीना जीवरपुत्री, किं तु उत्तमैर्गन्धर्वमत्स्यकुलोसया 9 a वासु व्यास
अ लियकइ अतत्यकविः 10 ६ अहुण्णउ न हुनै

3 2 a तिजगपुय त्रिजगन्मुखा ६ अयकविट्ठिसुव कोन्ती (कुन्ती) 3 ६ चितइ
पाण्डुभिन्ययति 5 ६ पुलइयवैहु रोमाञ्जित 8 a पंडु पाण्डुना पुडरिय पाण्डुरभर्मोयता ६ मणि
यर मणिकिरणा

अविस्त्रुत खगेण रयणाहिं जडिं
चितिवि किं किञ्च परवसुणा

घत्ता—विहसिवि^१ वासहु पुत्तं
णेहिं खयर गियच्छिउ

इह मेरुं अंगुलीं पडिं ।
तं दंसिं तासु वाससिमुणा ।

जिवेकुमारिदियचित्तं ॥
तहु सामत्थु पपुच्छिउ ॥ ३ ॥

4

भो भणु भणु मुदहि तणउ गुणु
इच्छियउ रूउ खाणि संभवइ
अहंसणु होइ ण भंति क वि
भो^२ गहयर एह दिव्व सुमह
को पासइ सज्जनजंपियउं
गउ गहयर एहुं वि आइयउ
सयणालइ सुसी कौंति जहिं
परिमेट्टउ हत्थे थणञ्जुयल्लु
फण्णाइ विर्योणित पुरिसकर
तो देमि^३ तासु आलिंणउं
भवणति कवाहु गाहु पिहिं
सरल्लगुलिमूसणु घल्लियउ
दे वेहि देवि महु सूरयसुहुं
मज्जायणियंथणु अहकमिउ

घत्ता—ता वम्महसमदेवउ
णवमासहिं उप्पण्णउ

तं गिस्सुणिवि खेयेंरु भणेइ पुणु ।
वहरि वि पथपंकयाइं णवइ ।
ता भासइ कुरुकुलमयणरवि ।
अच्छउ महु करि कहवय दियह ।
तहु मुहारयणु समप्पियउं । 5
अहंसणु णेयं विवेइयउ ।
सहस सि पइइउ तरुणु तहिं ।
वियसांविउं धुसें मुहकमल्लु ।
चितइ जइ आयउ पंहे^४ वर ।
अण्णाहु णे वि अप्पमि अप्पणउं । 10
गुञ्जह्वरइ अप्पउं णउ रहिउ ।
कुंवरं पयइगे वोल्लियउं ।
उल्लोवहि विरहदुयासदुहु ।
ता^५ दोहिं मि तेहिं तेत्थु रमिउं ।

ताहि गम्भि संभूयउ ॥ 15
कउ सयणाहि पच्छण्णउ ॥ ४ ॥

१५ B विपत्तेवि १६ A द्रवकुमारि^६

4 १ AP भो भो भणु २ B मुदय. ३ AP झुणेवि ४ AP खगेसर. ५ APS कहइ.
६ S रुउ. ७ AP हो ८ A एवहिं. ९ A नेव, B नेइ १० S परिमदउ ११ S विहसाविउ
१२ AS वि जणित १३ S पदवव १४ S देवि १५ APS णउ. १६ B जुअए १७ P ओव्हा-
वटि १८ S दोइ १९ PS^७ रूयउ

12 ॥ परवसुणा परद्वेषण, ७ वाससिमुणा व्यासपुत्रेण पाण्डुना. 13 a वासहु पुत्तं पाण्डुना,
७ निवकुमारिदियचित्तं कौन्त्या दत्तचित्तेन 14 a ने हि स्तेहेन

4 १ a सुमह सुतेजा 7 b तरुणु युवा पाण्डु 11 a भवणति रहमथ्ये 12 ७ पयइगे
प्रकाशनेन 14 a मज्जायणिवधणु व्यमर्षोदामिर्नेध. 15 ७ संभूयउ कर्णनामा पुत्रो जात,

5

कुडलकुयलउ कचणकवउ
 निविडहि मजूसहि घल्लियउ
 बंपापुरि पावेसावरहिउ
 सुत्तउ अचलोइउ कण्णक
 सुउ पडिचण्णउ समाधिपहि
 ण पोरिसपिडउ निम्मविउ
 ण आसुवकुउ नीसरिउ
 मइइ सुउव वडियफुरण
 पत्तहि णरणाहे सिउ सुणिधि
 हो कोति मदि वेणि वि अंभित
 वरणु आळिगणु वेतिवइ
 सुउ अणित सुद्धिदुत्तु भीमु नउ
 महीइ नइलु सयणुवरणु

अथा—तिहुंयणि कउपरइइ
 विण्णी पालियरइइ

पैसें सहु वाळउ दिव्वेयउ ।
 काळिविपवाहि पमेहियउ ।
 आइवें रोए सगइउ ।
 कण्णु जि इक्कारिउ सो कुयवे ।
 ते^१ दिण्णउ राइहि राणियादि । 5
 न पक्कहिं साइसोइ धाविउ ।
 धरणिइ विइलुअरणु व धरिउ ।
 जावइ भीयउ वससयकिरणु ।
 सुत्तत्तणु जामायइ मुणिधि ।
 परिणाविउ पइ पीणयेणिउ । 10
 कोतीइ तीइ कीळतियइ ।
 जम्मोइरोइपारोइकउ ।
 अण्णु वि सहपइ धीणसरणु ।

जरवइविहुं इइइ ॥

अधारि वि धयरइइ ॥ ५ ॥

15

6

हुउ ताहि गग्गि कुळभूखणउ
 पुणु हुइरिलणु हुम्मरिसणउ
 सउ पुत्तइ एउ ताइ अणित
 अण्णहिं विणि सुखीउ छिरिहि

हुओइणु पुणु वृसासणउ ।
 पुणु अण्णु अण्णु इयउ तणउ ।
 जिणमासिउ सेणिय मइ गणिउ ।
 विविण्णुं गधमायणमिरिहि ।

5 १ B पचिहिं २ A दिक्कउ ३ Als पावस्य^१ against Mas v B एए, ५ AP
 कुमर ६ B व ७ APS 'हुमकुव' ८ A वणिविइ^२ ९ A ता १ A जणीउ ११ B पीण
 यणीउ १२ B कुळउरण, K records a ४ कुळ^३ १३ A तिहुवण^४ B तिहुवण^५ P तिहुवणि
 6 १ P हुम्मुहु पुणु अण्णु इयउ २ B निविण्ण S निविण्ण

5 1 १ पैसें सहु पुणैण लेलेन सह दिव्ववउ दिव्ववपु 2 a निविडहि निविडायाम्
 १ काळिवि^६ मजुता 3 a पावसावरहिउ पावसा (वा) पडिहः ४ आइवें राए आदिसनाम्मा
 राहा 4 a सुत्तउ सुत्तः, कण्णकव कणींरि दत्तत्त 5 ४ पइहि पणानाम राणा 6 ४ साइसोइ
 अहुत्तकर्मणम्मा 7 a पावडुअकुउ त्यामइक्ख अहुत्तः ८ विइलुअरणु सुद्धिअनोअरण 8 ४ वस
 सयणिरणु सयं 9 a णरणाहे अचकण्णिना 12 a वर अजुन ४ जम्मोइरोइपारोइ^७ वउ
 पादपाहुइ

6 4 a सुखीउ अचकण्णिमिता छिरिहि कम्माः सकाया

गड वदित सुप्यद्वयकहुं
अर्पणु णीसंगु णिरंवरड
णिसिदिवसपन्नमसासेणं हय
ता सुप्यद्वयसिदिदिह हरड
तं दुहं दूसहु साहुं सदिहं
उप्यणुणं केवलु विमेलु किह
जायउं चउंविहु देवागमणु
पुच्छित परमेसर परमपर
उयसगाहु कारणु काहं किर

धत्ता—अंबूदीश्व भारदि
भावणमवणभिरतरि

सुयजमलहु महियलु देवि पिहू । ४
जायउ मुणि कयमणसवरड ।
वारह संवच्छर जाम गय ।
उयसगु सुदंसणु सुय करड ।
आळरिउं श्माणु रोसंरदिउं ।
जाणिउं तेल्लोक्कु झड त्ति जिह । 10
तहिं अंधयैविदिदिहि णैमित जिणु ।
णाणाविहजम्मणमरणद्वर ।
ता जिणमुहाउ णीसरिय गिर ।

देसि^१ कलिणि सुहावदि ॥
दिण्णकामि कंजीपुरि ॥ १ ॥ 15

7

तहिं विणयरवत्त सुवत्त वणि
लकाहदिं वीविदि सचेरिवि
लोदिह ण सुक्कहु वेंति पणुं
तरु णिहणंतहिं रसवणिचेरहिं
ता जुज्झिवि ते तिह्वाइ हय
णारय हूवा पुणु मेस वणि
गंगायदि गोडलि पुणु वसह
संमैयमहीहरि पुणु पमय
अभिभट्ट दसणणहज्झरिउ

कि वण्णमि वणयसमाणधणि ।
अण्णंण पेसंडिभंहु भरिवि ।
भइयइ महिमज्झि बिबंति धणु ।
सं दिट्ठउं णियउं जाम परदि ।
अवरोप्यर मंतिहं इणिचि मय । 5
पंचसु पत्त पुणु भिंजिवि रणि ।
भुंल्लोपिणु पुणु संपत्तवह ।
तण्हाइ सिलोपलि सल्लिरय ।
मुड पक्ख पक्ख तहिं उग्वरिउ ।

१ BP सुप्यद्व, S सुप्यतिद्व, ४ S अरिद्व, ५ AB पद्व ६ B अप्पणु ७ APS मातेहिं ८ A साहुहु सदिह ९ P रोसहरिउ १० S विमल ११ B आयउ. १२ ABP चउविहवेवा^१, S बहुविहु, १३ AP अधरुभिदिं, S विहं. १४ PS वविउ. १५ B अंबूदीश्व. १६ S देसं.

7 १ P सवरेवि. २ ABPS अण्णणु ३ B पसडे ४ A पक्ख ५ B वणिचेरहिं, P वणिचेरहिं ६ A णिय उज्जम परदि, P णियउ जाम परदि. ७ A सतिए ८ AP पुणु हूवा. ९ S मिडवि. १० A जुज्जेण वि पुणु वि पवण वह, B जुज्जेण वि पुणु वि पवणवहि. ११ S सिछायलं

5 b पिहु विस्तीर्णम् 8 b सुदसणु सुदत्तवणिक्चरः. 9 a साहु साहुना 15 a आवणं हट्ट.

7 1 b वणयसमाणधणि कुवेरसदशधनवन्तौ 2 a दीविहिं द्वीपेषु, b पसदि महु सुवर्ण-
माण्डम्. ३ a सुक्कहु शुक्लस्य, पणु मागः, b मइयइ मयेन 4 b त धनम्, णियउ नीतम्. 5 a
तिह्वाइ तृणया. 7 b संपत्तवह प्राप्तवर्षी. 8 a पमय वानरी 9 b पक्ख सुदत्तचर, पक्ख दिनकर-
दत्तचर

इसीसि जाम नीससह कर
चारण जियमण तेहोकरु
कहियाह तेहि बुझियहर
यथा—सिधगहकामिपिकतहु
मुन पावक मैव लेविणु

सपत्ता ता तहि बेणिज जर । 10
ते थामे सुखगुह देवगुह ।
करयेव वध परमस्वर ।
धम्मु सुनिवि भैरवतहु ॥
जिणवद खणु भणेपिणु ॥ ७ ॥

8

सोहम्मसगि सोहम्मगुह
काले अते पयु जि भरहि
योपणपुरि सुखियपयिवहु
सिद्ध जायड गमि सुखकषणहि
पाडसि गड करय कालेगिरि
हा मइ मि भासि इय सुखियव
भासविड छरि सुधम्मु सर
इयव वि सत्तार सत्तरि
सिधुतीरद धनपणगुहिलि
तावलिहि विसालहि हरणगुह
पद्मगितावतयधसणउ
हउ सुखदु बिद पाणिबड
उदसगु करि जियकम्मबहु
सत्तारि न को मोहिज जिड
यथा—त जिधुनिवि पणवेपिणु
भयकोविडि जिणवद

विसगड जामे अमद हुड ।
वेसमि सुखमार सुखनिवि ।
सिक्कासिपरजियपरणिवहु ।
सुपयहु जामु सुविदकषणहि ।
तहि विहा बेणिज भिडत हरि । 5
करवसणि जियमण बुझियव ।
इय यहु जिणतहु खिणु मई ।
पुणु भायड गहुहुकई सदिवि ।
णयकुसुमरेणपरिमलबेहलि ।
तयसिहि सिद्ध हुड सुगोपणगुह । 10
हुड जोरसदेव सुदसणउ ।
इह सो सुदपु मइ जाणियड ।
न मुणइ परमापमणापरहु ।
त सुनिवि सुवसणु भमि थिड ।
सिरि करपुपु पवेधिणु ॥ 15
पुष्किल विधयमवतड ॥ ८ ॥

११ B भरिवहो ११ AP वड

8 १ B बुझिड २ B कालिमिदि ३ APS बहुवारड उप्पविदि मरिवि but K adds
४ B बहुवारड उप्पविदि मरिवि इति तावपने in second hand ५ B गुहिलि ६ S वहुले
७ B मियणहो P मियाकणहो ८ AP तावतपुवतवड ९ B त जिधुनेपिणु सिरि १ AP
विडिहि १ B जियद

10 a कर कपि 14 a वावक दिनकरदत्तव

8 1 a सोहम्मगुह लीगम्मगुह 4 a सुखकषण हि सुखकषणानाम्वा 5 a पाडसि वर्षा
काले 6 हरि वानरी 6 b करदलनि करिदरने 8 a इयव इयव सुदत्तव 9 a गुहिलि गहरे
वपने 10 a हरमणहु क्कगपव 6 म्मावव म्मावकनना 12 a इड सुपयिह 13 b सिरि
मत्तवे

9

जिणु कहइ पत्थु मारहवरिसि
 गरवइ अणंतवीरिउ वसइ
 तेत्थु जि सुरिंदंदत्त वणिउ
 अरहतदेवपरिइयमइ
 अट्टमिहि दीस चालीस पुणु
 अट्टणउ पत्ति पत्ति सुवइ
 तैं जंतै सायरपरपइ
 मो रुइदत्त सुइ करहि मणु
 पुज्जिअसु जिणयइ एण तुहुं
 इय भासिधि जिणउ सेट्टि किइ
 वत्ता—विरइयकिस्मिमेसइ
 धड्डियजोम्मअद्वयै

कोसलपुरि पडरजणियहरिसि ।
 अस्तु आस्तु चदजोणइ वि हसइ ।
 शुणवंतु संतु मल्लउ भणित ।
 अणवरउ देइ दीप्पार दह ।
 अमैवासहि मणकवडेण विणु । 5
 दविणै जिणु पुज्जइ मत्तु धुयइ ।
 अरि अच्छिउ पुच्छिउ विष्णु मरु ।
 लइ वारहसंवच्छैरहं धणु ।
 इउ एमि आम आयवि सुहु ।
 वमममममवणहु धम्म जिइ । 10
 अजउ जूवइ वेसइ ॥
 देववत्तु अलविष्यै ॥ ९ ॥

10

पुणु पट्टणि रयणिहि सचरइ
 अयलोइउ सेणै तलयरिण
 पुणरवि मुकंद बंभणु भणिवि
 त णिलुणिवि पीरसु मजरिउ
 गउ भिल्लपट्टि कालउ सवर
 भासाइयतरुणाहालहि
 तपुरररगोमइलु गहिउं

परघणु सुवणणइ अवहरइ ।
 कुसुमालु धरिउ णिदुरकरिण ।
 अइ पसंदि तो पुरि सिउ लुणिवि ।
 कुसुमालु दियवउ धरहरिउ ।
 तैं सेविउ आवतिकंदधेर । 5
 अण्णहिं दिणि आविवि णाहलहि ।
 धौविउ पुरवर सेणियसहिउ ।

9 १ P मरइ २ B सुदिदयवउ, PS सुदिदयवउ ३ A मावावहे ४ B सुवइ ५ B पुरइ ६ S पाव पव ७ AP पयित ८ ABP विणवइ, S विपइ ९ B इयय १० B सव-
 पट्टहि ११ APउ जूइ

10 १ S धण २ सेणे. ३ P पयुक् ४ A पइवहि पुरि तो ५ APS तिकइकव
 ६ BP सुवइ ७ BP भाउ ८ B सेणे, P सेणिय, S सेण

9 1 a मोसलपुणि अयोध्यायाम्, पडर पीराणाम् 2 b अस्तु आस्तु वस्य यय 4 a प-
 रिरइमइ विरपितनिइउ 6 a पत्ति पत्ति चतुदंशा अशोतिदीयता 8 a सुइ शुचि निर्लोमम्
 9 b एमि भागएणि. 11 b जूवउ जूवेन, वेस इ वेदय

10 1 a रयणि हि गणी 2 b कुसुमालु चो 4 a पीरसु कंजम्, 6 a आसाइय
 आन्नाइरानि, 8 पाइइ हि थिरे.

सो सोचिधसवक निवाहय
पुणु अलि ससु पुणु पुणु पुंशु उरउ
पुणु पविर्देराउ पुणु कुरमा
पुणु भमिउ सचणपरपराहि
पुणु पयु वेत्ति कुळसगळ

प्रस्ता—छोयहु मर्मापउजउ
कविर्दे सुभामे सोचिउ

वरयावणि मरिबि पराहयउ ।
पुणु वधुं जाउ मारणगिरउ ।
पुणु सीहु विरौलु रणेकैर । 10
पाणाजोगिहि तसयाधरहि ।
करिवरपुरि परिहाजळवळ ।

अहिं वरणाहु धणअउ ॥
तहिं वरुं विवसिउ ॥ १० ॥

11

तहु घणयणसिहरयिसुभणिहि
सो गोचसु जामे नीसिरिउं
नीसेलु बि पळयहु गयउ कुलु
मळपळबिलिसे मुर्चविहुर
मसिकसणवणु शेरधीरयउ
जणयिविउ जणपरकळकळ
पुरहिमहि हम्मा आरउ
तुंगीउ वूहेउ हुम्मापतणु
तें पुरि पडसु सुखवरिउ

आयउ मणुपाहहि वभणिहि ।
पन्मेटुमणिहुपुणैकिरिउ ।
थिउ देहमेसु पाथिहु कलु ।
ज्यासहाससकुळभिहुव ।
आहिउर मरि मरि देहिसव । 5
महिवालु य वल्लह इउयउ ।
मुक्कवार भमिपलोपणु पडर ।
रसवसलोहियपयइतवणु ।
विहउ लमुहसेणापरिउ ।

१ B सोचिउ १० AP पुणु वळणिहि ससु पुनरवि उरउ ११ B हुउ S omits पुणु १२ AT
वणु हरिणमारण BP वणु नीममारण S वणु नीउ मारण १३ B पविउर १४ APS विनाह
१५ AP रणेकम १६ PS मणु १७ A कविउरु जामे

11 १ AP हुउ हुउ मणु २ B नीसिउरिउ PS नीसिउरिउ K नीसिउरिउ but
strikes off म Als नीसिउरिउ on the strength of पुणय who has नि नीउ १ B पन्महु
४ B पुणुकिरिउ ५ B पळिउ ६ BP मुळ विहव ७ B उकुळियसिउ ८ S जरनीर ९ P
भोयण S लोयण १ PS दोणउ ११ S वूहउ १२ PS सेणापरिउ

8 a निवाहयउ निपातिव ८ कुरयावणि ससमनरके 9 a पुणु पुणु विनाह सर्पः 10 a पविउ
राउ मळ ८ विराळु मारणः 1१ ८ करिवरपुरि हलिनामपुरे 13 a कोयहु मणापउजउ
लोकस्य न्यायमार्गे प्रवर्तक

11 1 a विहउमणिहि निहमन स्तनयो कथा पुने जाते चलि स्तनस्याप पदन मवतीति
माव 2 a नीसिउरिउ निस्स निर्वन नीरुहिव अद्योग्यो द्रिहो वा ८ पन्महुक निहपुण्यकिरिउ
पुण्यक्रियारहितः ९ a नीसेसु सर्वथ ८ देहमेसु पराक्येव 4 a मुचनिहुव मुकहु लः ८ ज्ञमा
सहासं युकावलेण उकुळनिहुव प्लक्षेण ० ८ देहिसव देहि हति घम्भ कुर्वत्, 6 a जण
निदिउ लोकनिन्य 9 a ते शीतवेन

तद्दु मग्गेण जि स्रो चत्थियउ

जाणिपि सुहफम्मं वेत्तियउ ॥ 10

घत्ता—पर्येयिपामुत्थियान्ठउ

वृद्धंमणु वियमन्ठउ ॥

वेणिवरणादिदि विट्ठउ

ण गुवास्तु पद्दुत्ठउ ॥ ११ ॥

12

पट्ठिमात्तिउ निमि पद्दमयणघनि

जाट्ठम विण्णु सुधिसुत्तु फरि ।

सुणिचट्टु भणिपि एमागियउ

रंकु वि नेत्तु जि वद्धसागियउ ।

भोयणु आर्कंठु तेण वासिउ

धियचिचि रिमिसु जि अट्ठिलमिउ ।

गउ गुरुमग्गेण जि गुरुमवणु

स्रो भावद पेट्ठाल्मगणु ।

तुत्तं पेसग्गेण आगिमि गममि

तुत्तं जिह तिह एउ नग्गाउ भगमि । 5

गुरुणा तद्दु फम्मु विरिक्किगयउ

विण्णउं वउ वरधु वि भिक्किगयउ ।

फाल जेत्तं स्वममापि थिउ

हुउ स्रो मिग्गिगोर्नणु लोयपिउ ।

मज्झिमग्गेयज्जदि तासु गुरु

उवगिल्लियमाणद जाउ गुरु ।

सो तेत्ति मग्गेपि आगिमि हुउ

अट्ठायीसदि स्वायग्गि हुउ ।

द्वि जायउ अंधफपिट्ठि सुत्तु

विउ स्सव्णु अणुत्थियि हि तुत्तु । 10

घत्ता—अणुत्तंजियवृद्धकम्मद

आयणिपि धियज्जग्गा ॥

पुणु तणुगण्ड भवायानि

पुण्डिउ राणं कंयलि ॥ १२ ॥

13

जणलवणसुत्तु जणद

ता जिणग्गे भणद ।

इउ भरपयगिखम्मि

घग्गालयंस्समि ।

भट्ठिलपुं राउ

भट्ठगु विक्कमाउ ।

णीग्गयंवरिग्गस

रायगिया तन्म ।

ण अट्ठग्गा फा वि

भग्गा गीहंवेपि । 5

पायट्ठियगुरुयिजउ

वृद्धंमणो तणउ ।

११ ॥ पायट्ठिय', १४ ॥ वणे.

12 १ ॥ १५ पट्ठिमात्तिउ. २ ॥ भणिउ. ३ ॥ वृद्ध. ४ ॥ १६ विरिक्किगयउ. ५ ॥ १७ उदि जि मग्गेपि. ६ ॥ १८ द्य.

13 १ ॥ १९ जं गमण'. २ ॥ २० तस्समि ३ ॥ २१ भिग्गमसरीग्गम. ४ ॥ २२ गट्ठायलि. ५ ॥ २३ वट्ठग्गाणो.

11 ॥ पायट्ठियगण्ड भवायानि.

12 १ ॥ पट्ठिमात्तिउ भवायानि. २ ॥ अट्ठायि. ३ ॥ पट्ठाल्मगणु गट्ठं भवायानि. ४ ॥ गुरुणा दत्ता वि गमग्गेण गीतग्गय भाय निगिज्जग्गा मत्तुरग्गाणो उमत्तोदर इति भावः. 5 ॥ गुरुणा दत्ता वि गमग्गेण गीतग्गय भाय निगिज्जग्गा

13 १ ॥ २४ अणुत्तंजियवृद्धकम्मद भवायानि. २ ॥ २५ गीग्ग' नीरोमण.

अरविददलनेत्तु
णद्वयस तद्गु धरिणि
घणवेत्त घणपात्तु
सुद देवपात्तु
पुणु मरुददात्तो वि
दिणयत्तु पियमित्तु
धम्मरुत्तु ज्ञेहि
ण जवपयत्तेहि
परमागमो सह
पियदसप्पा पुत्ति

अन्ता—जाणत्तवसत्ताणहु

सेद्धि वि पुत्तकलसहि

धणिवरु वि घणयत्तु ।
जयणेहि जियहरिणि ।
अण्णेत्तु दिणपात्तु ।
जिणधम्मि णीसत्तु ।
सिद्ध मरुददात्तो वि ।
सपुण्णसत्तियत्तु ।
हेणि जवहि पुत्तेहि ।
पसरतगंयेहि ।
रुहि पर धर ।
जेत्तु वि गुणजुत्ति ।

10

15

मरु महिवर उज्जाणहु ॥

सहु कयमत्तिपयत्ति ॥ ११ ॥

14

सहि वविभि मुनि मरिदयेविर
धरुत्तु समप्पि वि धरणिजत्तु
मेहरुत्तु सज्जु पाळियत्तु
धणि जायत्तु रिसि सहु ज्ञेहि
मयकामकोहविदसणहि
णद्वयस सुणिध्वेय रुद्व
कक्किक्किमलिककोक्किधणि
गुरु मरिदयेविर समेहरुत्तु
धय तिणि वि सासयत्तिपयत्तु
ते सिद्धा सिद्धसिद्धायत्तु

अन्ता—यिय अण्णेतानि विजयावर

सहु जग्गेहि सहु बहिभिहि

यिद्धजेवि बहिताधम्मु चिद्ध ।
दियत्तुत्तु हुत्तु करिवि विमत्तु ।
अरि मित्तु वि सारिद्ध णिहालियत्तु ।
मैणि मणिय समत्तिर्णकणहि ।
कत्तियहि समेवि सुणवणहि ।
पिप्पदसण जेत्तु वि पावहय ।
सुपियत्तुत्तुत्तु मरुदद्वयणि ।
धणयत्तु वि णासियमोहरुत्तु ।
मुक्का जग्गरणत्तेयमयत्तु ।
धणदेवार वि तेत्तु जि णिक्क ।

5

10

महिणिहिच्चत्तणु भावर ॥

जोदयत्तिणगुणकुर्हिणिहि ॥ १४ ॥

६ APS पदजस ७ B निणपात्तु ८ B निणयत्तु ९ B कन्निवत्तु १० B धणि वणहि ११ PS गुणजुत्ति

14 १ P पविद्ध २ AP कवेहि पुद्दु विमत्तु ३ ABS मणमण्णिय ४ ABP तण
B तिणु ५ A णदयसि ६ B विवदसणि ७ B किक्कि ८ A ककोळ P ककोळ
B ककोळ ९ B रंदि १ AP निणवत्तु B चहु ११ BP मरिद्ध १२ APS धणदत्तु
B धणयत्तु १३ B मरुत्तु १४ B अणल्लोप १५ P जग्गेहि १६ APS कुह्णिहि

14 ६ गयेहि धात्तु भैय

14 4 a णदण हि नवमि पुत्रे सह 11 a अणवणि कन्वाते विणवावर विनयत्तु
आवर 12 ६ कुह्णिहि भावे

15

पियदेहसमुन्मवणेहवस
जह अत्यि किं पि फलु रिसिहिं तवि
पयउ धीयउ महुं होतु तिह
फइवयदियहहिं सँव्वइं मयइं
सायंकरिं सुरहरिं अच्छियइं
तहिं वीससमुइं भुसु सुइं
हँइं पंयस सुइंइ तुह
धणवेवपमुइं जे पीणभुय

यत्ता—पियदंसण सहुं जेइइ
पुत्ति कौत्ति सा जाणहि

संभांसाणि चितइ नंदजस ।
ए तणुसुह तो आगामिभवि ।
विच्छेउ न पुणरवि होइ जिह ।
तेरइमउ सर्गु णवर गयइं ।
सुरवँरकोडीहि संमिच्छियइं । 5
णिवडंतहुं ओहुल्लियउं मुहुं ।
मेहिणि परिपाणहि चंदमुइ ।
इह ते समुद्विजयाइ सुय ।

किस हँइं तवणिइइ ॥
अवर मदि अहिणाणहि ॥ १५ ॥ 10

16

पहु पुच्छइ वसुदेवायरण
यहुगोइणसेवियणिवंडयहु
तहिं सोमँसम्मु णामेण दिउ
तँ वेयसम्मु णियमाउलउ
सत्तँ वि धीयउ दिण्णउ परहं
पाँदि विट्ठउ जखंतु जह
अण्णाणिउ वसु हँवतु हिरिहि
शुवसिहराऊउ तसियमणु
तलि आसीणा अखंतगुणि
परछायामगु णियच्छियउ

जिणु अक्खइ जाणि जित्थकरण ।
कुसुदेसि पलासंगाउ पयहु ।
इउ नंदि तासु तुउ पाणपिउ ।
सेविउ विवाहकरणाउलउ ।
धणकणगुणधंतहुं दियवरहं । 5
अइसंकदि विवाहउ विषल्लु बई ।
अणपइसणि गउ लज्जिणि गिरिहि ।
आवेवि जाइ जउ विवह तणु ।
तहिं संखणाम णिण्णाम मुणि ।
दुमसेणुं तेहिं आवच्छियउ । 10

15 १ A अण्णाणि णियच्छइ नंदं, P अण्णाणिणि पयइ नंदं २ A भम्भइ, ३ S सम, ४ PS १ कोदिहिं ५ P सम्मच्छियइ ६ P ओहल्लियउ, ७ S हुइ, ८ P मुइ

16 A सेवियणियडवहु, B १ णिवडवडो, P १ विवडवडो २ B १ याम ३ S सोमसम्मु, ४ B सच वि जि धीउ ५ P नंदं, S नदि ६ A वल्ल, ७ P भवतु, ८ B १ पहसिणि, P १ पहसर्णे, ९ PS आवेइ, १० B १ ठेणु जि तहिं

15 1 a पियदेहसमुन्मवणेहवस स्वपुक्केहवसा, b सणासणि सन्यासयुक्ता 5 a सायकरिं सुरहरिं ज्ञातकरविमाने 6 b ओहुल्लियउ ग्लान जातम्, b मेहिणि तव अन्धकवृष्णे. मेहिनी.

16 1 a आयरण पूर्वजन्मचरितम्, b जित्थकरण जित्तेन्द्रिय. 2 b पयहु प्रकट. प्रसिद्धः 6 b अइसंकदि प्रेक्षारुचनसमदै, विषल्लु बड्ड गतसामर्थ्यं बड्ड 7 a वसु इवतु वशो भवन्, 8 a तसियमणु भ्रूयुपातकरणे मीतमना.

गुरु अर्पेवहि कार्यछाय परहु

यसा—ता गियभाणु पयासइ
होतत सबउ दीसइ

कहु तणिय यह भाइय घरहु ।

ताइ मदारउ भासइ ॥
जो तुम्हइ पिठ होसइ ॥ १६ ॥

17

तइयमि अमि भोलवदिही
जो तुम्हइ जणु सीरिहरिहिं
सहु तणुछाहुछिय ओयरिये
अहिं सो अप्पाणउ किर धिबइ
उप्पेवउ दीसहिं कार भिउ
त गिह्णुगियि पणइगिहुक्खियउ
महु मामहु धूरुउ जेसियउ
हउ हुइहु गियणु यलरहिउ
गिह्णु गियणु कि करमि

यसा—मुणि पमणइ किं विचहिं
जो गिणवरतहु किआइ

वसुदेउ नाम राणउ हविही ।
मुययलतोळियपडिबलकरिहिं ।
सा वे वि तहिं जि रिसि सचरिय ।
अणुकपइ सल्लु साहु चमइ ।
किं विचहिं गिह्णुणइ किं धडिइ । 5
पडिसवइ कुकम्भुयलविस्सयउ ।
ओयइ पडिण्णउ तेत्तियउ ।
किं जीवमि परणिइइ गहिउ ।
इइ गिबडिबि वर तणु सपरेमि ।

अण्णउ महिहरि असेहिं ॥ 10
दुरिउ दिसाबलिं दिआइ ॥ १७ ॥

18

सम्माइ खयल्लु वि हियरपिअयउ
मणिआइ गिअल्लु परमसुहु
त गिह्णुगियि तेण वि तववरणु
उप्पणु सुकि गिरसियविसउ

पर तं मुणिवरहिं दुमुळियउ ।
अहिं कहिं मि ण दीसइ देहउहु ।
किउ कामकसायरायहरणु ।
सोल्लसायरपआउसउ ।

११ B अक्काइ १२ B अक्काइ

17 १ B आलदि १ B अहुहु १ B उवरिय ४ A उवेउ ५ A दीसइ B दीसइ
६ B गिह्णुणइ ७ B कुकम्भुयलविस्सयउ ८ B भूउ ९ B वडिण्णउ P पडिण्णउ १ B
दीसइ P दूउ ११ B पिअउ P गिह्णुउ १२ B वक्कमि १३ B विचहिं P वेचहिं

18 १ B के

11 ६ परहु पर्वता

17 1 ६ इविही मणिमति 2 a सीरिहरिहिं वलमज्जुअयो ६ करिहिं गये
3 ६ सचरिय सचलितो गयो 6 a पणइविहुनियउ सीलाम विना कुलित ६ कुकम्भुयल-
विस्सयउ उपलक्षित शात निजपापकर्म 7 ६ पडिण्णउ दत्ता इत्यर्थ 8 a गिह्णु अणुण

18 1 ६ निदानम् 4 a गिरसियविसउ निरस्तविषय

सहु मायरहिं समिद्धु जायाणाय जिहालर ॥
पहु समुदविजयकु मदिमदलु परिपालर ॥ धुवक ॥

1

पकहिं विणि आंरुद्ध करियरि
अंसइसणयणु णोइ कुलिसाउहु
ण भयाव सलवणु रयणायव
अमलवेहु जायर उगेउ इणु
आमरछसचिंरिचिरिसीहिउ
सो पसुंयउ कुमार पुरतरि
सो ण पुरिउ अं दिट्ठि ण दोरय
मणुउ देउ सो कासु ण भावर

जावर ससहर उरैउ महीहरि ।
अकुसुमसर ण सर कुसुमाउहु ।
अकवडगिलउ णोइ वामोयव । 5
जगसबोहकारि जावर जिणु ।
विविहादरणविसैपसाहिउ ।
हिंवर इइमणि परि वचरि ।
सा ण दिट्ठि जा तहु भं पराय ।
सचरतु तदणीयणु तावर । 10

धत्ता—का वि कुमार निवति येमि येमि पुलरार ॥

अलहती तहु विचु पुनरवि तिलु तिलु सिअर ॥ १ ॥

2

पात्तरार का वि निवविचि
का वि तरणि हरिससुय मेसुइ
सुइवगुणकुसुमहिं मणु वासिउ
गेइयसेण पविउ बेसचलु
काहि वि केसमार जुंउ वचणु
कालियकणर का वि वर जयर

चिप्पर ण अहिणवकांछविणि ।
काहि वि यम्महु यम्मइ सलुइ ।
काहि वि सुहु णीसासं सोसिउ ।
काहि वि पायइ यहु यणयलु ।
काहि वि कडियलसुसिउ पैयधणु । 5
विपविभोयजरवेय कपर ।

1 १ B आरुउ २ APS उवकमी ३ A तहसवणु जावर ४ B यामि ५ B उवाओ
१ AP विउ ७ B सिं ८ B विविहारण ९ B वसुदेव १ B omits ण

2 १ B निवविचि २ B 'काजिनिमि ३ AP जुय ४ P पदेणु 5T पयणु

1 3 b उइउ उमित 4 a असहसवणु पर न सहसने कुलिसाउहु इन्द्र 5 a
रयणायव सलुइ 6 a अकवडगिलउ कयवहिवा 6 a इणु सर्व 7 b पसाहिउ शुक्लासि

2 1 a पावेइअइ प्रतिवते ७ चिप्पर वरति काळविमि मेवमाव 2 a हरिससुय इय
धूणि यम्मइ मणीणि 4 b पावहु प्रयत्न 5 a पुउ शिवको वात ७ पयधणु परिधानम्

सिक्कैवंति कं वि चरणहिं गुण्यह
मयणुम्मायउं गयमज्जायउं
लोहलैलकुलमयरसमुकउं
काहि वि वउ पेम्मेण किलिण्णउं

कवि पुरंवि पियदइयहु कुण्यह ।
काहि वि हियउं गिरंकुसु जायउं ।
वरदेवरससुरयसुहिमुकउं ।
विउंणावेहु णियवहु दिण्णउं । 10

धत्ता—क वि ईसालुयकंत दप्पणि तरुणु पँलोइवि ॥
विरहहुयासें ददु मुय अप्पाणउं सोइवि ॥ २ ॥

3

तेगयमण क वि मुहआलोयणि
कडियलि धरमज्जारु लयप्पिणु
काहि वि कँडैतिहि ण उडुहलि
काइ वि चट्टयहत्थेइ जोइउ
चिनुँ लिहँति का वि तं झायह
जां तहिं णच्चइ सा तहिं णच्चइ
जा वोहइ सा तहु मुण वण्णइ
विहरतिहिं इच्छिज्जाइ मेलणु
णिसि सोवंतिहिं सिबिणइ दीसइ
णरणाहहु कयसाहुदाँ
वेव वेव भणु किं किर किज्जाइ
मयणुम्मसउ पुरणारीयणु
णिमुणि भञ्जारा दुक्करी जीवइ

धीखरेवि सिमु सुण्णणिहेलणि ।
आइय जणवइ हासु जणेप्पिणु ।
पिर्वडिउ मुसलधाउ धरणीयलि ।
रक्कैरकइ पिँहु ण होइउ ।
पत्तछेइ तं वेय णिकवइ । 5
जा गायइ सा तं सरि सुभेइ ।
णियमत्ताय ण काइं चि मण्णइ ।
मुज्जतिहिं पुणु तहु कइ सालणु ।
इय वसुपेउ जाव पुरि विलसइ ।
ता एय गय सयल वि क्खवारें । 10
विणु धरिणिहिं घट कैय धरिज्जाइ ।
वसुपेवहु उप्परि होइयमणु ।
जाउ जाउ एय काहि मि एयावइ ।

५ A विक्रमति, P विक्रमति ६ P चरणहिं क वि ७ ABP लोयलज् ८ B रसमय ९ S रहु
१० P वसुपे ११ A उडुहलि १२ A वडणावेहु १३ S पलोयवि

३ १ P उगयमण क वि मुहयालोयणि २ A मुहयालोयणि ३ BS कडतहि ४ B पिय-
दिय ५ B चट्टउ ६ B रकइ कय ७ P चिनु ८ A णिकवइ ९ P वहिं तहि १० A गायइ
११ S वसुपे १२ BP वसुपेवहु

7 a विक्रयति गच्छन्ती 9 a लोहलज् लोमस्य रस 10 a वउ पेम्मेण किलिण्णउ वपुः शुक्रेणार्द्रं
जातम्, b विउणावेहु दिगुणवेधनम् 11 ईसालुयकत ईर्ष्यायुक्तस्य मर्दुः कान्ता, 12 ददु दग्धा

3 1 a मुहआ लो यणि मुतालोकागनिमित्तम् 2 b जणवइ लोके 3 a उडुहलि उडुहले
4 a चट्टयहत्थे चट्टकहस्तया, b रक्कैरकइ दरिद्रमिमुकस्य भावने खपरे 5 a चिनु लिहति
चिन लिप्सती कपोले, b पत्तछेइ पत्तछेदविषये तमेव पश्यति 6 a जातहिं इत्यादि या तत्र नगरे
नृत्यति सा तस्याग्रे नृत्यति, b सरि ॥ इ स्वे स्वरमन्थे स्वयति 8 a मेलणु मार्गमन्थे मेलापकः,
b तहु कइ सालणु ईज्जन्तीना तस्य कया एव व्यञ्जनम् 10 b पय प्रजा, क्वारे कृत्तारेण.

यत्ता—ता पठरह रायन पठर पसाड करेपिणु ॥
पत्थिव रायकुमार येहैं हैंकारेपिणु ॥ ३ ॥

4

विणयरु वहेर धूले सनु मइलर
किं अण्णणउ अण्णु वरहि
करि वणकील विउल्लणवणवापि
मणिगणवद्धणिदधरणीयलि
सलिलकील करि कुयलववाविहि
सुवरारं पटिचण्णु मिरुत्तउ
पुणु मिउणमइसहारं पुत्तउ
पुरेयणणारीयणु मुह रत्तउ
पावरलोए मुहुं वधाविह
साहु वयणु स तेण पैरिक्खिउ

हुइविहि ललियगर जालर ।
वचव मुहुं किं बाहिरि हिउहि ।
हिउयकील करेहि वरप्रणणि ।
रमणीकील करेहि सत्तमपलि ।
स मिउणेवि वयणु कुलसामिहि । 5
गवकइवयविधिहि अलुत्तउ ।
पहुणा गियलेणु मुहुं मिउत्तउ ।
जोहंवि विहलंघल्लु गियत्तउ ।
जरयेंवयणु गिरोहणु पाविउ ।
मिबमदिपणिगमणे ओक्खिउ । 10

यत्ता—ता पडिहारजेहिं पइउ ताहु समीरिउ ॥
सरणिगमणु दिएण मुम्हइ राए वारिउ ॥ ४ ॥

5

तमो सो सुइहासुभो वृद्धमाणी
वरामो पुरामो गमो काळिकाळे
वसाधीसह देहिदेहावसानं

न केनापि विद्वा विणिगोच्छमाणे ।
अवचकुप्पएसे तमाहाल्लिणीलि ।
एविद्वा मसानं संसाण मसान ।

॥ 5 ॥ ककारेपिणु

4 १ AP 8 उहर २ AP 8 अण्णु ३ AP किं मुहुं ४ S विउले ५ B करेहि ६ ABP
पैगणे ७ S रमणीयकील ८ S om दिव ९ P मियुणमइ १ K गियल ११ AP पुरवर
णारी १२ S जोयवि १३ S विहलंघल्लु वरहउ १४ B वयण १५ AP गिरिक्खिउ

5 १ B मुहुं 2 S जोहं ३ BS मिबमच्छ ४ S अवचकुप्पएसे ५ S omits वसान

14 पठर व मनुष्प,

4 1 b हुइविहि डि अकिणीमसुलानां दुहाणा हहि 4 a मणिगणवद्धं रत्तमसूहवद्धम्
5 b कुलसामिहि राह 6 a पटिचण्णु अङ्गीकृतम्, 7 a मिउणमइसहारं निपुणमतिमित्रेण
b गियलणु निगल्लवधनम् 8 b विहलंघल्लु विहल 10 b जोक्खिउ आकलित, स्वमितम्
12 दिएण हितेन

5 1 a वृद्धमाणी उरुसाहंकर 2 a काळिकाळे राभिसमये 3 अवचकुप्पएसे अवहु
विषयप्रदो 3 a पीसह पीमत्तम्, 4 वसानं अवन्दम् वसानं सकुसुम् वसानं वसानम्

कुमारेण तं तेण दिहुं रचहं
महासुलभिण्णंगकंदंतचोरं
विहंडंतवीरेसहुंकारफारं
णहुंझीणभूलीणकीलार्त्तयं
नृकंकालवीणासमालसंगेयं
कुल्लुभूयसिद्धंतमग्गावयारं
घणं णिणिघणं भासियंइइयचायं

ललंतंतमौलं सिवामुक्कसइं ।
विवंभंतमज्जारघोसेण घोरं ।
पलिप्यंतसत्तच्चिधूमंघयारं ।
समुद्धंतणग्गुमवेयालरूयं ।
दिसाडाइणीदुग्गखलंतपेयं ।
दिज्जीडोविचंडालिपेयाहियारं ।
सया जोइणीचक्ककीलाणुरायं । 10

घटा—अकुंलकुलहं संजोप कुल्लसरीव उवेलविस्सयउं ॥

इय जहि सीसंहं तच्च कडंलायरिणं अविस्सयउं ॥ ५ ॥

6

जोइउ तहिं चम्मइसोहाले
तहु उपपरि आहरणइ घिसेइं
लिहिवि मरणवत्ताइ विसुद्धउं
सुललित सुइउ सयणोणंदिह
उगउ सुउ कुमार न वीसइ
कणयकोत्तपट्टिसकंपणकर
पुरि घदि घरि अवलोइउ उववणि
पट्टाणियउ पट्टचमरंकिउ

उज्झंततं मज्जल्लुउं वालें ।
रयणकिरणविष्फुरियविचिचिउं ।
हरिगलकंदलि पसु णियद्धउं ।
गउ अप्पणु सो कत्था सुवउ ।
हा कहिं गउ कहिं गउ पडु भासइ । 5
रायं दसदिह पेलिय किंकर ।
अवरहिं दिहुउ इयवउ पिउवणि ।
तं अवलोइवि मज्जयणु संकिउ ।

५ B "माल", ६ S विहिंउतं ७ A "झीणभूलीण, ८ B "उद्वं, 9 "उलीय, ९ A "रुव, १० ABP
णिककाल", ११ B "गीय १२ B कुल्लुभूय", Als कुल्लुभूय" on the strength of gloss in
B: कुल्लुचायंप्रणीतसिद्धान्तमार्गावसारम्, १३ A दिग्गिप्पाविचंडालपीमाहियार १४ A भासिय इइय-
चाय, १५ A अकुल्ल १६ P कुल्ल, १७ APB "लविस्सउ, १८ AP सीसहिं, १९ P कडलाइरिय,
S कडलाइरियहिं, २० A रमिस्सउ, PS अमिस्सउ.

6 १ B घेतइ, २ PS "विष्फुरण" ३ B "कडल", ४ AB णयणाणदिह, ५ AP कायइ
सो, ६ P वणे वणे.

4 b ललततमाल लम्बमानान्मालम्, सिवां भूमाळी 5 a "भिम्बगं मिलशरीरः, b विचमत्
प्रचरन् 6 a "वीरेसहुकार" वीरेसमन्त्रसाधकम्, ॥ a कुल्लुभूय" कौलिककथित, b दिजीं माझणजी,
"पेयाहियार पेय मद्य तस्याधिकार, यस्मिन् 10 a "अइइयचाय अद्वैतवाद " सर्वे ब्रह्ममय जगत् ".
अकुल्लेत्तादि कु पृथिवी लाति कार्येणादत्ते इति कुल्ल पृथिवीद्रव्यम्, अकुल्ल अस्तेनोवायुद्रव्यत्रय तेषा
सयोगे सति कुल्ल गर्मादिमरणपर्यन्तश्चैतन्यादय शरीर च, उवलविस्सयउ प्रादुर्भूत दृष्टम्, 12
सीसइ शिप्पाणाम्

6 1 a "सोहाले सुकोमलेन 3 b हरिगलकदलि अक्कण्ठे, 6 a "कंपण" कटारी, 7 b
पिउवणि इमधाने, 8 a पट्टचमरंकिउ मुत्तागे पट्टचमसुत्त, b संकिउ कुमारः कुत्र गत इति भीतः.

लेह लपयिषु जाहह भल्लि
रायह वाहाउण्णर जवणह
णवउ पय बिउ विप्पियगारी
णवउ परियणु जवउ जवरह

तेन वि सो शह सि उव्वेह्लिउ ।
विह्णह पयह लिहियह धयणह । 10
णवउ सुह सिवपवि मज्जारी ।
गउ वसुपयसाप्पि सुरवेरगार ।

यसा—ता पिउयंनि आहवि सयणहिं जियविच्छोरेहं ॥ ११ ॥

वह्णु सभूसणु पेउ हाहाकारिवि जोरेहं ॥ ६ ॥

7

ते' जव वपय सह परिवारं
सा सियपयि रुयं परमेसरे
हा किं जीविउ तिणुं परिगणियउ
हा पयाह किं किउ पेसुण्णउ
हा कुलधमलु केयं विदसिउ
हा परं विणु सोहह न वरंगणु
हा परं विणु दुक्कं पु० दण्णउ
हा परं विणु की हाव यवतरि
परं विणु की जणविह्णिउ पीणह
हा परं विणु की पराहिं सुहउ
हा परं विणु गियगोउत्तसकह
हा परं विणु सुण्णउं हियउल्लउ
छाररासि हूयउ पयिलोयउ
पजकीहिं मीणावसिमाणिउ

सोउ करति पुष्पकविवारं ।
हा वेवर परमहगयकेसरि ।
कोमलंयउ ह्येवहि किं हुणियउ ।
हा किं पुरि परिममहु न विण्णउ ।
हा जयसिरिनिक्कालु किं मिरसिउ । ६
वदविचजिउ न गयणगणु ।
हा परं विणु माणिगिमणु सुण्णउ ।
को कीलह संहहउ व सरवरि ।
कटुयकील वेव की जाणह ।
परं भावेक्कवि मयणु वि सुहउ । 10
को सुयवलु समुहयिजयकह ।
को रक्खार मेउ कउउल्लउ ।
एव वपुयंनि सो सोरेहं ।
वहावि सव्वहिं विण्णउ पाणिउ ।

यसा—वरिससपण कुमाव मिउह तुज्जु गुणसोह्णि ॥

15

जेमिसियहिं जरिहु एव यणिवि संयोह्णि ॥ ७ ॥

७ APS एव दिह्णर ८ B उहु ९ B सुवरगार १ P पिउवणु ११ B विच्छोहपउ १२ P विह्णु १३ B हाहाउ १४ जोहवउ

7 १ A तेन वि वंय २ B ववह ३ AS वणु ४ PS कोमलु. ५ B वववे. ६ B केम P केण ७ P हा हा सिहिं ८ B वव ९ A कउहउ १ S भावेक्कवि ११ P हियउल्लउ सुहउ १२ P हियउल्लउ सुहउ १३ A सो सोवउ १४ संयोहउ १५ B व्हायवि

10 a वाहाउण्णर वाष्पपूर्णानि 12 b सुरवरगह विव गत 13 विवविच्छोहउं जीवरहितम्.
14 दहु दण्णम् पेउप्रेत श्वम्.

7 १ a विणु दणवत्, b "वउ वपु शरीरम्. ५ b मिरसिउ निरस्त 7 b पुव नगरजन
12 b रक्खह कउउल्लउ रक्खि कउम्, धनुमन्त्रसमर्पणत् त्वयेव शक 14 a मीणावसि-
लि गितं मत्स्यैर्गुहं गच्छम्.

एतद्दि सुंदर महि विहरंत
दिह्नुं गंदेण वणु तर्हि केहउ
अहिं चरंति भीयर खणीयर
सीयविरहि संकमइ णहंत
णीलकंडु णबइ रोमचिउ
णतलें सो जिं णिरारिउं सेविउ
इय सोहइ उववणु णं भारहु
जहि पाणिउं णीयत्तणि णिवडइ
तहि असोयतलि सो आसीणउ
णं वणुं लयवडइत्यहिं विज्जइ
खल्लजलसीयरेहिं णं सिचइ
साहावाहीहिं णं आलिमइ
पहियपुणसामयें णव णव
पणविधि पालियपडरपियालें

विजयणयर सहसा संपत्तउ ।
महुं भावइ रामायणु जेहउ ।
चउदिउ उच्छलंति लफ्फणसर ।
घोलिरपुच्छुं सरामउ वाणर ।
अञ्जुण अहिं दोणें ससिचिउ । 5
भायर किं णउं कामु वि भार्यउ ।
वेल्लीसिंलणणउं रविभारहु ।
जडहु अणमइ को किर पयडइ ।
सूहउ दीहरपंथें रीणउ ।
पयलियमहुयेंमहिं णं रज्जइ । 10
णिवडियकुसुमोहें णं अथइ ।
परिमलेण ण हियवइ लग्गइ ।
सुंउसुसुसुसहिं णिग्गय पल्लव ।
रौयहु बज्जरियउं वणवालें ।

घत्ता—ओ जोहसियहिं वुत्तु जरतरेवरकयछायउ ॥ 15

सो पुत्तिहि वरइत्तु णं अणंगु सई आयें ॥ ८ ॥

8 १ ABS णदणं. २ A °पुसु ३ A दोणि. ४ P च्चु. ५ AP ण वि. ६ APS भाविउ.
७ B विज्जहिं. ८ P अण्णगइ. ९ P सीयासीणउ १० A वणल्यं. ११ BK °सुहयेंमहिं but
gloss m K मकरन्दद्योतै. १२ AP सुखइ खखइ, S सुखतसुखसइ. १३ B रायइ. १४ B
सववइ. १५ B आइउ.

8 3 a १ यणीयर राक्षसा उल्लास, b लफ्फणसर लफ्फणवाणाः सारसशब्दाश्च 4 a सीय-
विरहि शीतामावे धर्मं सति, पक्षे शीताविभोगे, सकमइ लब्धेप्रदेशे गच्छति गुफादिक मुक्ता, b सरा-
मउ वानरीसहितः, सरामचन्द्रश्च, वाजव मर्कट सुग्रीवश्च 5 a णीलकंडु भारतपक्षे द्रौपदीप्राता
शिलण्डी नाम, पक्षे ममूरः, b अञ्जुण वृषविशेष पार्थश्च, दोणें ससिचिउ पटेन वृक्ष. विक्र., द्रोणा-
चार्येण च बाणैरक्षुनः विक्र. 6 a णउलें तिरश्चा केनचित्, नकुलेन सहदेवप्राजा च, सो जिं स एव
अर्जुनवृक्ष. पार्थश्च, b मायउ मावितः रुचित 7 a भारहु भारइ महाभारतमेव वनम्, b रविभारहु
सूर्यदीप्तिप्रच्छादकम् 8 a णीयत्तणि नीचत्वे निम्ने स्थाने, b जडहु इत्यादि मूर्खस्य यथा स्त्री अनङ्ग
काम न प्रकटयति, तथा जडस्यापि वृक्षः अनङ्ग ईषत् शरीर मूल फलपत्रादिरहितत्वात्, जल मूर्ख, तेन
मूल प्रति गतम्, अन्यथा तृषित पुमान् स्वयमेव जल प्रति गच्छति, परंतु अत्र मूर्खत्वात् जल स्वयमेव
गतमिति भावः. 10 b °महुयेंमहिं मकरन्दकिन्दुमि. 11 a °सीयरेहिं शीकरे 13 a पहिय°
पयिकः, b सुसुसुसुसहिं सुसुसुसुसु. 14 a °पियालें राजादनद्वयेण. 16 पुत्तिहि पुत्र्याः
श्यामादेव्याः.

9

त निष्ठुनिधि मायुत सह रायुत
हरियवसवणेन रमणी
कामुत फतहि अयि विलमात
सिरिवसुषसामि सतुष्टु
जहि लयगचदणसुरदियजेजु
जहि बहुदुमदलवारियरविपर
णवमायदगोदि गजोष्ठिय
जहि हरिकरुदवारियमयगल
दसदिसिधहणिदिसमुसाइल
ओसहिदीवतेयदायियपह
जहि खरेहि लखिजेहि तकरहु

पुरि पदसारित रायजुवाणठ ।
सामापवि ताहु ते दिणी ।
थित कइययदिपहेर पुणु निगाठ ।
वेवदारवणु नवर पदठ ।
विसिगयकलकोरलकुलकलपेलु । 5
रुहुंइति आणाविह नहयर ।
जहि कइ कइकरेहि उपेष्ठिय ।
हरिवारिवाहाउलजलघल ।
गिरिकदरि वसति जहि गाइल ।
जहि तमाकतर्ममविलविषय छ 110
हरिणिहि विजइ कोमलकपलु ।

वृत्ता—तहि कमलायक विहु नवकमलाहि लछेभेउ ॥

वरणिविछोसिनिवार जिणहु मंगु न दिण्यउ ॥ ९ ॥

10

सीपलसगाइराययाइलकिळाकि
मसजलहरियकरमीयसमाकि
मदमयरल्लयपिरियवरकुलि
पकपल्लयकोलतवेरकोलि

कंजरसलालसचकालिकुलफाकि ।
वारिपेरतसोईतनवणाकि ।
तीरवणमहिसहुकतसहुलि ।
कीरकरककलरायहुलकोलि ।

9 १ दिग्देहि P^०दिग्देहि २ A^०वि P वने ३ S अल ४ S^०कलयल ५ A
वसुभति B अश्रुति ६ A^०गुद^० B मोदि Als^०गोदि ७ P दिग् ८ B^०तमवियलविषय
९ A ववरिहि १ BK सविज ११ B कणठ १२ A विजलिपि

10 १ AP कमलकाळ^० २ AP add क before वारि ३ BS omit क
४ AP वणकोले

9 2 a हरियवसवणेन नीलवेणुक् 6 b बहुजुंइति सन् कुर्वन्ति नहयर पक्षिणः
7 a गोदि समूहे गजोष्ठिय उल्लिखिता 8 b आउल मृतानि 10 b अवि
लविलय आविष्कारः ११ रम्या गणै 12 a उवरहि मिलै सविजइ वमह किमते 6 विजइ
मक्षते 13 वरणि विजलि विवाह मूर्तिवा

10 1 a सगाइ सगाइ जलचललितम्, सलि कि जलचलिते सरोवरे गजोष्ठ 6 कं
रसलालस कमलरसलमयम्, का कि कुण्ठे 2 b वारिपेरत^० जलचलिते नवणा कि नवीनपत्र
नाले 4 a पदल पवित्र 6 हककोलि कोमलहले

कंकचलचंचुपरिउंविषयिसंसि
अकरहदंसणपओसियरहंसि
ण्हंतविषयंतविहसंतसुरसत्थि

लच्छिणेउररुहुविषयकलहंसि । 5
वायहयवेविरपघोलियतंरंगि ।
पंतजलमाणुसविसेसहयहत्थि ।

घत्ता—करि सैरवरि कीलंतु तेण णिहालिउ मत्तउ ॥

ण्णवइ मेरुगिरिंदु खीरसमुद्धि णिहिउत्त ॥ १० ॥

11

अंजणणीलु णोइ अहिणवधणु
इल्लणपहरणिइलियसिलायलु
कण्णणिलल्लायधरणीरुहु
मयजलमिलियघुलियमहुलिहचलु
गुरुकुंमयलपिदियपिहुणहयलु
तं अबलोहवि धीरु ण संकिउ
आ पाहाणु ण पावइ मुक्कउ
करकलियउं विषलियगयदेइहु
संसारहणउं करइ सुपुसु व
एणि ससि जेव हत्थु आसंघइ
एणि चउच्चरणंतरिहि विणिग्गइ
वंतणिसिक्खिय मुहुं ण विषाणइ
सिउत्त वारणु जुवर्यणरिहं

करतुसारसीयरतिम्मियवणु ।
पायणिवाओणविषयइलालु ।
मज्झणरवपूरियदसदिसिमुहु ।
उग्गसरीरगधगयगयउत्तु ।
जियवलतुलियदिसामयगलवत्तु । ॥
वंहियहिसइं कुंजरु कोकिउ ।
ता करिणा सो गह्विउ गुरुक्कउ ।
उवरि ममइ तडिइहु व मेइहु ।
एणि करणहि संमोहइ धुसु व ।
एणि विउलइं कुंमयलइं लेइइ । 10
एधि इकारइ वारइ वग्गइ ।
काले अप्पाणउं संवाणइ ।
णे मयरत्तउ परमजिणिहं ।

घत्ता—गयवरसंधाकहु विहउ खेयरपुरिसं ॥

अधकविट्ठिहु पुत्तु उच्चापयि संहरिहं ॥ ११ ॥

15

५ A ०रउडुणि. ६ S ०पओसियं ७ ABPS ०पओलिं. ८ A गिण्हत्. ९ A ०वेसे हयहत्थे १० ॥ सरि.

11 १ B णामि. २ A ०णिवाय णमियं, BP ०णिवाय णमियं, S ०णिवाउणवियं.
३ B ०इ. ४ AP ०दिउविहु ५ P गल्लवु ६ S वहे वहे ७ A करकयलिउ, S करकलिउ. ८ S
०णरें ९ B उच्चाइवि १० A सह हरिहं

5 a ०परिउ विषयि विषयि ०परिउमितपदिनीजरो सत्थे, b ०रउडु विषय ०रेवेन उडुपित.. 6 a
अकरइ ०सूरयः, ०पओसियं ०प्रतोपित, ०रइमि ०चक्रवाके. 7 a ०इत्तं ०स्नान्त..

11 1 b ०तुसारसीयरतिम्मियवणु श्रीतल्लोअरेणार्द्राकृतवनधूमि 2 b ०ओणवियं
अवनमितम्, 4 a ०महुलिहचल्ल ०अमरै चपल, b ०गयगयउत्तु गत अन्यत्र गजकुलम्, ५ a
०पिहियं आच्छादितम्, b ०दिसामयगलवत्तु दिग्गजवत् 8 a करकलियउं शुष्काग्रेण रूहीत.,
9 a वसारहणउं पृथ्व्यारोहण, अन्यत्र वक्षोजति, b करणहि आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिभि. 10 a
हत्थु हस्तनक्षत्र शुष्का च. 12 a ०णिसिक्खिय निर्गत, b सदाणइ सम्मवप्नोति

12

णहयलक्ष्मणरयणमयगोउर
कुलपलवतहु वर्यसहायहु
एष सतामिसाल्लु विण्णवियउ
इहुँ सो चिउ जो णाणिहि जाणिउ
ए णिसुणेवि असणिवेयके
एषणवेयदेवीतणुसमव
विण्णा तासु सुहदातणयहु
गयवहुवियहिं पेम्मपसंतउ
तावगारपण्यरे जोइउ
भूमियरहु एम्महुवियेवहु
एत मणते णिउ नियरच्छइ

मिउ वेयहु धारावइपुउ ।
हरिसिउ असणिवेयसगरेयहु ।
विण्णमइहु एण विहवियउ ।
इहुँ तुइ दुहियावउ मइ जाणिउ ।
अवलोइयसुहिवयणससके । 5
सामरि णामे सुय बीणारय ।
पोह्नु पठणियपणयपसायहु ।
सो सुहउ जामच्छइ सुउउ ।
सुहि सुसु जि भुयपजरि होइउ ।
मामे णियसुय विण्णी पयहु । 10
सामरि सुवरि धारय पच्छइ ।

वृत्ता—असियसुणइयईय णियणाहु कुडि लमी ॥

पडिपनजहु अमिह समरसपहि मममी ॥ १२ ॥

13

असिजलसलिलहल्लयसिसें
सोहरेउ सउ सि विमुकउ
धरिणिइ पर णियउतु णियच्छिउ
तहि पहरतिहि वहरि पलाणउ

अंगारयण सुकंसणियगसें ।
पहरणकउ तइ सजुर हुकउ ।
पण्णल्लयविआइ वेडिच्छिउ ।
सुवउ यवणहु मयणसमाणउ ।

12 १ AP वाराव २ B हरण ३ AP लवणवहो ४ B इहु जि विह जो 5 एष
सो चिउ ६ B पइउ दुहिया ७ AP एणहणिमवहरयणिकपयवहो B पोह्नु पठणियपणयपसायहु
8 पोह्नु पठणियपणयपणयवहो Als पोह्नु पयणिकपयपसायहु against his Mes on the
strength of gloss प्रकृतित ९ B पमउउ ८ A तामयारय P वा अतारय १ ABPS
सुइ १ P इय

13 १ A 'सुउकन' BPS 'सुउकन' २ A सुकसियय ३ B पहरणकवि सजुर
४ P वरणि ५ B पडिच्छउ

12 1 a णिउ नीक 4 a जाणिहि जाणिमिहिबिच्छि 6 b सामरि कात्मकी नाम
7 a सुहदातणयहु वसुदेवस b पोह्नु प्रौढस पठणिय प्रणुवित 11 a नियरच्छइ स्वेच्छया
12 कुडि पभात

13 1 b सुकसणियगसें जलेन विजोऽन्तरा कुण्यो मयति २ a सोहरेउ सुमंदापुनः
b सजुर सपामे 3 a पइ वसुदेव

तरकुसुमोहदिसोहपसाहिरि
कीलमाण षणि मणिकंकणकर
ते भणति मुद्धचं णडियड
वाहुपुञ्जजिणजम्मणरिद्धी
तं णिमुणिवि तं णथेरि पलोइयं
चारुंदत्तवणिवरवइतणुवैह
अहिं गंधर्वदत्त सहं संठिय

णिवडिड चंपापुरवरवाहिरि । 5
पुच्छिन्न तेण तेत्थु णायरण ।
किं गयंगणाड तुहुं पडियड ।
ण मुणहि चंपापुरि सुपसिद्धी ।
सहमंडववहुविडसविराड्य ।
अहिं जहिं जोइज्जह तहिं तहिं सुँह । 10
महुखाय णावइ कलयडिय ।

वत्ता—अहिं वइसवइसुयाइ रमेणकामु संपत्तड ॥

जेयरमहिपरवंदुं वीणावज्जं जिस्सड ॥ १३ ॥

14

गंभि कुमांरं वि तहि जि णिविड्ड
धम्महवाणु व द्वियइ पइड्ड
इवं मि किं पि वाचमि संतीसव
ता तहु दोइयाड सुइलीणड
ता वल्लुपड भणइ किं किज्जइ
पही संति ण एम णिवज्जंइ
सिरिहल्लु पंभ पडं किं थवियडं
लक्खणरहियड अटमणहारिड
अक्खइ सो तहिं तहिं अक्खणणडं

कर्णइ अणिमिसणयणइ विड्ड ।
विहसिवि पडिड पहासइ तुड्ड ।
अइ वि ण वल्लइ सरठाणइ कड ।
पंच सत्त णव वइ वहु वीणड ।
वल्लुइइड ण पइड्ड लुज्जइ । 5
वासुइ पइड्ड पत्थु विरज्जइ ।
सत्थु ण केण वि मणि धितवियं ।
मेहिंवि वीणड णौइं कुमारिड ।
आलावणिक्कइ चाइ विराणडं ।

६ B भणत ७ KS वासपुन, ८ B चणउरि. ९ ABP भवर. १० A पलोइड, P पलोइड.
११ AP विराइड, १२ B चारुइत्त, P चारुइत्त १३ BP ०ठणुइड १४ BP वहु १५ B
गणव्यस सह १६ B रमणु १७ A ०विड्ड, P ०वैड्ड

14 १ B कुमार. २ A P कतइ ३ PS अणमिस् ४ S ०णयणहिं. ५ BP इड मि,
S इड वि, ६ A सरठाणइ. ७ A सरलीणड. ८ A दइसुइलीणड ९ S वल्लुपड १० AP
वीणावहु ११ A विरज्जइ १२ P धितवियड. १३ A तहु कुमारिड १४ A ०कड.

5 ० वि सोहपसाहिरि दिशस्तमूहसोमिने 6 a वणि वनमण्णे. 11 b कलयडिय कौकिल.
13 ० वड्डु इन्द.

14 1 b कणइ कन्वया. 2 b पडिड पथिक. 3 a तत्तीसव वीणाशब्द. 4 a सुइ-
लीणड कर्णलीना. 5 b वल्लइ वीणा. 6 b वासुइ वासुमिपि दोर., अथवा दण्डाग्रे तन्नीवन्वाभ्रयल्लु-
काड वासुमि. 7 a सिरिहल्लु इन्द्रक 8 b कुमारिड यथा सामुद्रकरहिता श्री मुच्यते. 9 a तहि
तस्या वीणाया, b आलावणिकइ वीणानिमित्तम् चारुविराणड अतिवीर्यम्.

यथा—इत्यिजायपुरि राउ विस्त्रियारि घणसंदणु ॥
तहु पठमोषर देवि विट्ठ नाम पिउँ जदणु ॥ १४ ॥

10

15

अथर पठमरहु सुव लहुयारउ
रिसि होयपिणु मृगसपुण्णहु
ओहिणारु तावहु उप्पज्जउ
एसहि गयउरि पयपोमाइउ
ता सो पथतेहिं गिरुद्धउ
तेण गुरु वि ओहीमिउ सखहु
संदेसिवि रोमचियफाप
मति बुत्तउ नुद्धि करेज्जहु
काळें जतें मारणकामे
खहु पिसिचयें जिजवरमणे

जणुणु जविवि अरहंतु महारउ ।
सहु जेहुं सुपण गउ रणणहु ।
विट्ठउ जणु बह्मोषमिरणणउ ।
करर रबु पठमरेहु महाइउ ।
तहु वलिं नाम मति पविबुद्धउ । 5
बुद्धि माणु मलिउ परचक्रहु ।
मणि मणि वर बोद्धिउ राप ।
कहिं मि काळि महु मणिउ वैज्जहु ।
आयउ सूरि भैरवण नामें ।
पुंरणाहिरि पित कौमोसमों । 10

यथा—बलिणा मुनिवद विट्ठ सुयरिउ अवमानेपिणु ॥

इह पप इउ भासि पिउँ विवाह जियेपिणु ॥ १५ ॥

16

अथयारहु अवयउ ररज्जउ
पलहु खलउणु सुद्धि सुद्धिउणु
तावसद्धेवं गिवसउ गिल्लवि
एव मणेपिणु गउ सो तेसाहिं

उवयारहु उवपाउ जि' किलाइ ।
ओ व करर सो गियमिवि गियमणु ।
इउ पुणु अंजु अंजमि किं बुद्धणि ।
अच्छर गिवर गिहेलणि जेसाहिं ।

१५ B पोमाव १६ A गियवणु.

15 १ ABP मिम २ APS परिपुण्णहो B उप्पज्जहो ३ A अवहिणानु ४ A मावहिं
मिणउ A 5 मावविहिणउ ६ B पयपहु ७ B पविद्धउ ८ P ओहामिव ९ B परचक्रहो १ P
संदेसिवि १० APS अरुणु 11 B पुरि १२ P कौमोसमों १३ B वेणु

16 १ AP वि २ P बुरणु ३ B कप. ४ B उज्जु खवमि न इणु ५ B खममि
अणु ६ B सो गउ

10 वणसदणु मपरय 11 विट्ठु विणु

15 1 b जणु मेवरण 3 b मिइण्णउं मिलम्. 4 a पयपोमाइउ प्रजाप्रवर्धित;
b महाइउ महदिक 5 a वचतेहिं सज्जमि 6 a बुद्धवि शम्भय पुनर्वसुपति विरक्त 9 a
मारणकामे मणिणा मारणावाञ्छनेन इति खम्भ 12 एए एतेन सूरिणा विवाह विवादे

16 2 b गिवमिवि वण्ड निजचितम्

मणिउ णवंतं पइं पडिवण्णवं
जं तं देहि अज्जु मइं मणिवं
ता राएण वुत्तु ण वियण्णमि
पडिभासइ वंभणु असमत्तणु
दिण्णवं पत्थिवेण ते लइयवं
साहुसंघु पाविहं रुद्ध
सोत्तिपहि सोमंवे' रसिज्जइ
भक्खिअवि जंगलु अहुवियइहं

औंसि कालि जं पइं वरु दिण्णउ । 5
अइ जाणहि पत्थिव ओलण्णिवं ।
जं तुहुं इच्छहि तं जि समप्पमि ।
सत्त दिण्णां देहि रथत्तणु ।
रोसें सन्नु अंगु पइउंइयवं ।
सुंगवहु महु चउदिह पारद्धउ । 10
सौमवेव सुइसुमहुइ गिज्जइ ।
उप्परि रिसिहि णिहत्तइ इहुइ ।

घसा—भोजसरावसमूह जं केण वि ण वि छित्तं ॥

तं सवणं सीसग्नि अणउच्छिद्धं विसतं ॥ १६ ॥

17

सोत्तर पूरिपां सुहंवां
अणुविणु पयडिपमीसणवसणं
तहि अवसरि बुद्धिपरिचत्ता
णिसि णिवसंति महीहरकंदरि
तेहि विहि मि तहि णहि पवहंतं
तं तेवहु बोद्धु ओपपिणु
किं णक्खसु भडारा कंए
णयडरि वलिणा मुणि उवसग्गे
सज्जणघट्टणु सव्वहु भारिउं
पुच्छइ पुणु वि सीसु जमवतइ

बहुलपरेण धूमपण्णारं ।
तो वि धीर रुसंति ण पिसुणहं ।
अण्णेण तणय ते औहिं तवत्ता ।
भीरुभयंकरि सुयकेसरिसरि ।
सवणरिक्खु दिहुउं फंपंतं । 5
भणइ बिहु पणिवाउ करेणिणु ।
तं णिसुणेवि अण्णमुणि अपइ ।
संताविय पावे भयैमग्गे ।
तेण रिक्खु थरहरर णिरारिउं ।
णात्तर कैव उवइउ संतहं । 10

७ A adds after ॥ ७ बुद्धिदाणु आणदपवण्णउ, B reads for ७ ७ बुद्धिदाणु आणदपउण्णउ.
८ B राइचणु ९ ABPS पच्छइयउ १० AP मिगवहु ११ A ओमहु. १२ APS सामवेउ.
१३ A सुइमहुउ, B सुइमहुरे. १४ Als विच्छित्तं.

17 १ A सुहंवां २ B पीडियं ३ B बुद्धिसं. ४ P जणय. ५ A जित्ति तवत्ता,
B जहि ते ६ AP अणुण मुणि ७ A इयमग्गे ८ B सव्वउ

8 a असमत्तणु असमत्त मिण्णाहहि 9 ७ पइउंइयउ प्रच्छादितम् 10 ७ महु मसो यर.. 11 a
सोमहु सोमपानम् 12 a जगछ मावम्, अहुवियइइ वक्खणि. 13 छित्तं स्तुष्टम्,
14 सी सग्नि मस्तकादे

17 1 a सुहंवां सुसन्निपेयकेन, ७ बहुलपरेण बहुलपरेण. 3 ७ जणण मेघरय., तणय
विणु 4 ७ सुयकेसरिसरि भुविह्मन्ने ५ a पवहंतं मच्छा 9 a सज्जणघट्टणु साधुकदयनम्,
सव्वहु भारिउ सर्वपा कष्टभूतम्.

पक्षा—घण्टहरिसिखा उचु तुम्ह विरचयविरिदिर ॥
 वासर रिसिखसम्भु भवससार व सिखिर ॥ १७ ॥

18

सलजेणवयमभ्युवभूवै
 गिलवणिवांसु गिरगालु भगदि
 त गिमुणेप्यिणु लहु गिगउ मुनि
 मिसियैकमदलु सियलसिधवध
 मिदुवाणि उवधीयविदुसणु
 सो यवणरणादेण गियच्छिउ
 किं हय गय रउ किं अणणर
 कयदविप्पु भासर महिसामिदि
 त गिमुणिमि बलिणा सिद भुणियउ
 वाय तुहारी हरवै मणी

छिदैहि जाहवि वावणैरुवै ।
 पच्छर पुणु गयणगणि लग्गदि ।
 रिय पदतु कियभोकारुणुणि ।
 इमवडमणिपलयकियकद ।
 देसिउ कासारवणिवसणु । 5
 मणु मणु तुई किं विज्जेउ पुच्छिउ ।
 किं घयलसर दव्वणिहाण ।
 मिय कम तिणिण देहि महु मूमिदि ।
 हा हे दियवर किं पर मणियउ ।
 लर चरिसि मंडपिप्पिदि कोणी । 10

पक्षा—ता विदुहि बहतु लमाउ मणु गहतति ॥

मिदियउ महरि १ पाउ पणु बीउ मणुउसरि ॥ १८ ॥

19

तहयउ कम उचिक्केणु जि अच्छर
 सो विक्काहरतियसहि भविउ
 ताव सेसु घोसावधीणर
 गवयारउ जियेमाइसहोयउ
 मारुं आहसउ दियकिंकद

कहि विक्काउ तैहि धसि ण देच्छर ।
 पियवयणेहिं कइ व आउचिउ ।
 ऐवहिं विण्णर मल्लपरिहीणर ।
 तोसिउ पोमरुं ओरुसद ।
 विण्डुकुमाउ कामर भमवकद । 5

18 १ A लख २ P अचमुवभूवै ३ B छिदैहि ४ BS वामण ५ AP भिवेसु ६ A
 भोकारुणुणि ७ P रिसिख ८ B किं हय ९ P दिग्ग १ A देहु महु ११ A मच्छतिदि
 १२ मडपिदि १३ A मदिदि १४ B मणउसरि

19 १ BK उचकेणु २ BPAls उहो वसि ३ S मानवहो

12 सिद्धिह मुन्या यथा लताये नक्षत्रि

18 1 a सलजेणवयमभ्युवभूवै सलजेकानामलवदुतभूतेन 2 a गिलवणिवांसु
 पणनिवांसु गिरगालु नि प्रतिपण्य, 3 b रिय पदतु वेदकना पदत्त 4 a मिसिय
 ऋषीणामासर्न
 इषी 5 a मणिवकद 6 a यवणरणादेण नवीनराठी बलिना 11 विदुहि विण्णो मुनेः

19 1 a उचिक्केणु उचिक्के उचिक्के 2 b आउचिउ उचिक्के 4 a गवयारउ वयं

अच्छड जियउ वराउ म मारहि
रोलें चंडालतणु किछइ
एणें जि कारणेण हयहुम्मा

रोसु म हियउल्लइ वित्थाराहि ।
रोलें भरयविवरि पइसिजइ ।
कयदोसइ मि खमति महामर ।

घत्ता—एम भणेपिणु जेहुँ गउ गिरिकुहरणिवासहु ॥

मुणिवरसंघु असेसु मुक्कउ दुक्ककिळेसहु ॥ १९ ॥

10

20

अल वि बीण तेसु सा अछइ
तो गंधर्वदत्त किं वायइ
अणिणा तं' निमुणिवि विहेसतें
गय गयउइ वल्लेइ पणवेपिणु
वियळियहुम्मयपंकविलेवहु
सां कुमारकरसाडिय वल्लेइ
सत्तहिं वरसरेहिं तिहिं' नामहिं
असैंहं सउ बालीसेकोत्तव
तीस वि नामराय रत्तोंसउ
एकवीस मुक्कणैउ समाणइ

अइ महु आणिवि को' वि पयच्छइ ।
महुं अम्माइ पर वयणु णिवायइ ।
पेसिय पियपाइक तुरतें ।
मँगिय तव्वंसिय मणु लेपिणु ।
आणिवि टोइय करि वसुपवहु ।
सुइमेयहिं बावीसहिं छज्जई ।
अट्टारइआइहिं सुइधामहिं ।
गीइउ पंच वि पयइइ सुवइ ।
बालीस वि भासउ छ विहांसउ ।
एण्हणं पण्णासर ताणहं ।

10

४ APB रोलें सत्तमहिं पाविजइ ५ A एण वि. ६ AP महावर. ७ AP विहु.

20 १ S का वि. २ B त मुणिवि विवसतें ३ A पवसतें. ४ A बीणा पणं ५ A मणिय तव्वंसिय बीण छपिणु, S मणुपेणु, Als तव्वंसियमणुपेणु (तव्वंसिय+म+अणुपेणु). ६ P 'हुम्मा' ७ A आणिय. ८ S वो. ९ AP छज्जइ १० AP वज्जइ ११ AP बिहिं नामहिं, S बहुरामहिं १२ S असहिं. १३ A बालीसेकुत्तव, B बालीसेकुत्तव, S बालीसेकोत्तव. १४ A गीउ पंचविहु. १५ S रत्तयसव. १६ S विहासव १७ P मुक्कणइ. १८ A एकणइ पण्णास जि, II एकण वि पण्णासइ

8 b कयदोसइ मि कुतदोषाणामवि, महासइ मुनयः.

20 1 a तेसु गवपुरे 2 b वयणु णिवायइ वदन अणन करोति 4 b तव्वं विंय तद्वसो-
सजनराणाम्, मणु लेपिणु मन. सतोप्य 6 b छज्जइ जोमते 7 b अट्टारइआइहिं शुद्धा जातिः,
दु.करकरणा जातिः, विषमा इत्याद्यष्टादशजातिभिः ॥ a असइ अष्टादशजातिषु ययासमव एक द्वौ...
पञ्च इत्यादय अथा, एव १४१ अथा, b गीइउ पंच वि शुद्धा भिक्षा वेसरा गौडी साधुरणिका इति
पञ्च गीतय 9 a तीस विगामराय शुद्धाया सत्त आमराया, भिक्षाया पञ्च, वेसरायामष्टी, गौड्या त्रय,
साधुरणिकाया सत्त, एव त्रिवत्, b बालीस वि भासउ बइ रागा टक्कादयः, टक्कागे द्वादश भाषा,
पञ्चमरागे दश, हिन्दोलरागे तिस्रो भाषा, मालवकौशिकरागे अष्ट, बह्वरागे सत्त, ककुत्तरागे पञ्च.
10 a एकवीस मुक्कणउ मय्यममोद्धवा सत्त, बह्वरागोद्धवा. सत्त, निषादरागोद्धवा सत्त.

यत्ता—तद् वापताद् एवं धीर्धो मुरसखोम्भत ॥

न वममहसक विपस्तु मुददि हियवह सम्भत ॥ २० ॥

21

मयणह जाहह कण्ठदि सुखियह
ततीरवतोसियगिधवाणह
समुद तवणु सुखिं ससुरें
पुणरवि सो विजाहरदिणह
मणहरलक्ष्मणवधियगसत
राठ हिरण्यवम्भु तहि सुम्भह
सासु कत नामें पोमावह
रोहिणि पुसि जूति न मयवह
साहि सयवरि मिलिय परेसर
ते अरसपपमुह भवलाह
तहि मि लेण वणायपदिमलें
माल पविधिय उद्विउ कलपल
अरसिधह भोणह कयविग्गह
तेहि हिरण्यवम्भु सभासिउ
मालमाल न कइगलि बज्जह

यत्ता—ता पेसाहि केहु धूय मा सयहि धनुमुणि सर ॥

वह अरसमि निरुं धुव पावहि वदवसपुव ॥ २१ ॥

22

त गिहणोपिणु सो पविजंवर
जो महु पुसिदि चित्तहु वयर

अवबोक्कह वर धीरे न कपह ।
सो सहरें किं देसिउ दुवह ।

११ APALs धीणासक सुइ

21 १ AP पविहई २ P गीहण ३ A वरि ४ A पदकाह ५ A मुवणहो
B मुवणहो ६ B वरसव ७ K वरसव ८ B वरसव ९ B वरसव
S वरसव १० A आपव ११ APS आपव १२ BS वरसव १३ Bb वर

22 १ PS गिहणोपि सो वि २ A कवीर BPS वरवीर ३ S वर

21 ३ a ससुरें देवै सविनेन ४ ससुरें ससुरेण चारुत्तन ५ परदुय कोकिल ११ a
तहि मि सयवि वणाय वनगमा ६ सकल ओसलें पदवादिगानेन १४ b देसिउ
पयिक १५ a कइगलि वानवत्त ६ विरज्जइ पुष्पवि वरसव १७ वद लल्लुदे, मूर्ख

22 १ b कोकह छायानाम् (अयुवेम्)

पहु तुम्हइं वि धिट्ट परयारिय
ता तहिं लगाइ रोहिणिर्लुचइं
धिय जोयति^१ देव गयणगणि
कचणविरइइ रहवरि चडियउ
विधत्ते^२ सहस त्ति परिविन्नउ
जे सर घल्लइ ते सो डिंदइ
बंधु जगि ण होइ निव्वच्छलु
दिग्गैपत्तिपत्तेहिं विट्टसिउ
पडिउ पयतरि सउरीणाहें
अकखराइ वाइयइ सुसत्ते
जणउवरोहें पइं घरि घरियउ

अज्ज ण जाहें समरि अविधारिय ।
महिबइसेण्णइ सहसा कुद्धइं ।
अण्णहु अण्णु मिडिउं समरंगणि । 5
णववरु णियमाइहिं अभिाडियउ ।
तेण समुहविजउ ओलक्खिउ ।
अण्णुं तासु ण उरयलु भिंदइ ।
सुइरु णिहालिवि जउवैइभुयबलु ।
णियणामंक्कु बाणु पुणु पेसिउ । 10
उच्चाइउ अरिमयउलैवाहें ।
वियलियगाइजैलोल्लियणेत्ते^३ ।
ओ विरु विहिवसेण णीसरियउ ।

घत्ता—सवच्छरसइ पुणिण आउ ऐउ समरंगणु ॥

हउं वसुएवकुमार देव देहि आलिगणु ॥ २२ ॥

15

23

जइ वि सुवंसु गुणेण विराइउ
आवइकाले जइ वि ण मज्झइ
भायर पेक्खिवि पिसुणु घ वंरुउ
णरवरु रइवराउ उत्तिण्णउ
एकमेक्क आलिगिउ बाइहिं
भाय महत्तु णविउ वसुएवें
हउ पइ भायर सगरि णिजिउ
अण्णहु चावसिक्ख कहु पही

कोडीसरु णियमुट्ठिहि माइउ ।
जइ वि सुहउसंघट्टणि गज्जइ ।
तो वि तेण वाणासणु मुक्खउं ।
कुंमरु वि संसुहु लहु अवहण्णउ ।
पसरियकरहिं णांइ करिणाइहिं । 5
जंपिउ पहुणा महुरालावें ।
बंधु भणंतु ससुभैहु लज्जिउ ।
पइ अम्मसिय धुरंधर जेही ।

४ P जाहु ५ P तहो ६ S गेहिणि^०, K गेहिणि^० in second hand. ७ B जोवत्त, S जोयत्त.
८ AP लग्गु ९ S सबरगणि. १० B विद्धत्ते, P विवत्ते. ११ APS अण्णु १२ B जोवइसुयं,
P जोयइ. १३ BAs. दिव्वपत्ति^०, P दिव्वपत्ति^०. १४ B 'मियउल' १५ B 'वाइम्मोल्लियं'.
१६ A 'गत्ते'. १७ P एव.

23 १ B सुवत्त. २ APS 'कालए' ३ S ज वि ४ P कुमार, S कुवर ५ B णामि.
६ APS माइ. ७ A सभूयह. ८ B कहिं, P कइ

3 a परयारिय पारदारिका 6 b णववरु वसुदेव, णियमाइहिं समुद्रविजयादिभि सह. 9 a
निव्वच्छलु नि स्नेह, b चउवइ^० यदुपत्ति. 10 a दिव्वपत्तिपत्तेहिं दिव्वपत्तिपत्तै 11 n
सउरीणारें समुद्रविजयेन, b 'मयउलवाहें मृगकुल्लपावेन 12 a सुसत्ते सत्त्वसाहस्युक्तेन,
b 'वाइजलो लि यगेत्ते बाण्णजलद्विजेण 13 a घरि घरियउ बहिगन्तु निविद्ध. 14 एउ एषः.

23 1 a णरवरु समुद्रविजय. 7 b ससुअहु त्वसारये सकखात्

पर हरिवल्लु वण्य उहीविड सुखं महु भर्मफलें मेलाविड ।
 मल्लं मज्झ परिपुण्य मणोरह यथ भियपुरवव वस वि वसारह । 10
 सेयरमहियरणारिहं माणिड थिड वसुपुं रायसमाणिड ।
 सखु नाम रिसि ओ सो ससिमुह महसुक्कामव रोहिणितणुह ।

धसा—मरहजेसैमूवपुञ्ज जवमु सीरि उण्यणउ ॥

पुण्यततेयाउ तेण तेउ पडिणणउ ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणाळकारे महाकायुण्यतविरचय महा
 मण्यभरहाणुमणिय महाकळे सेयरमूगोवरकुमारीसमो समुह
 विजयर्षेयवसममो नाम तेसौसीतिमो परिच्छेड समसो ॥ ८१ ॥

१ AP पुण्यल्ले १ BP मल्ल मज्झ ११ B महुपवराउ १२ A P "सेचि भिव" १३ S
 लयर १४ A "मसुदेवसमो कलदेवठणवी १५ P ववावीमो S वीवावीतिमो

10 ८ दशरह दशाहं समुहविजयदय 14 ते याउ तेजसोऽप्यविक्रम,

गयणिदे भणिडे रिसिदे सोत्तसुहाइ जणेरी ॥
सुणि सेणिय जिह जिणजाणिय तिह कह कंसह केरी ॥ धुवकं ॥

1

धावतमहंततैरंगरंगि
पेफुलियफुल्लवेइल्लवेहिं
तहिं तबैसि विसिद्धु वसिद्धु णामु
सुणि भइवीरगुणवीरसण्ण
बोलाविउ तावसु तेहिं एव
तवहुयवहुजालउ बिथरंति
विणु जीवइयाइ ण अत्थि धम्म
विणु सुक्खिएण कहि सग्गमणु
पडिबुद्धु तेण वयणेण सो वि
सुणिवरचरियाइ तिप्पवइ चरंतु
उयवासु करइ सो मासु मासु
गिरिवरि धरंतु अश्वत्थिहु
तैं भसिह बोलाउ जिह गिरीहु
वत्ता—ओसारिउ णयव गिवारिउ मा पव करउ पळोयणु ॥
सविवेयहु साहुहु एयहु हउं जि करेसमि भोयणु ॥ १ ॥

गंगागंधावईसरिपसंगि ।
कउसिय णामें तावसह पडि ।
पंचगि सहर गिद्धावियकामु । 5
अण्णहिं विणि आया समियसण्ण ।
अण्णणें अण्णउ खवहिं कैव ।
किमिकीइय महिणीइय मरंति ।
धम्मं विणु कहि किर सुकिउ कम्म ।
किं करहि गिरायउं देहवमणु । 10
गिग्गंथु जाउ जिणविक्ख लेवि ।
आइउ महुंरहि महि परिभमंतु ।
देहंति" ण दीसइ रहिह मासु ।
रिसि उगसेणरायण विदु ।
लभइ कहि पइउ सवणसीडु । 15

2

जोयंतहु भिकखुहि पिंडमणु
मयगिल्लगहं दिडियदुरेहु

पहिलारइ मासि हुयासु लणु ।
धीयइ कुजइ ण कालमेहु ।

1 १ S गयेदे २ B कसह ३ AP °तरगममि ४ AB °सरिसुसगे, P °सरिससगि.
५ II पफुल्लफुल्ल°, ६ AB °वलि ७ A तवविद्धु वसिद्धु, B वसिद्धु विसिद्धु. ८ A अवहुय°. ९ AP
मासा, B जालइ १० B महुइ ११ A देहेण ण दीसइ. १२ AP तवहु.

2 १ B पिह २ S पहिलए ३ BPAls. °मह°

1 1 ग य णि दे गतनिन्देन कयोन्नेण, सोत्तसुहाइ कर्णसुत्तानि 3 a °रगि स्याने 4 b
कउसिय कौशिकी. G b समियसण्ण समित्तचु सवौ 12 b महुइ मयुरायाम् 16 ओसारिउ
निपिदो लोक 17 सविवेयहु सविवेक्ख सवो

2 1 a पिंडमणु आहारमार्गम्, b हुयासु लणु राजमन्दिरेऽमिलम्. 2 a मयगिल्लगहु
मदारकपोलः, दिडियदुरेहु भान्तभ्रमर, b धीयइ द्वितीये मासे.

मिदं दत्तं हि दुष्टमिच्छेद्
 पटु भतत कजपरपराह
 तद्गु तिग्मिण मास गय यम आम
 पर वारह सार पादाह देह
 भुजाविठ भुजकह दुषस्तु तिकस्तु
 त गिह्नुगिणि रोखदुयासमेन
 मजीररावराहियपयाउ
 सप्त वि मजवि भो भो वसिह
 किं उगासेणकुलपल्यकालु
 किं महुद अलणजाओलिजलिप
 तर ववह विपवद दिण्यगुह्नु
 कडिस्तुत्तपयोडिरकिंकिणीउ
 इपक वि महिमवलि ह सि वरिह

मत्ता—मुनि हुम्माह विपमनि तम्माह उगासेणु भाहसपमि ॥

कुलमेहणु यपह वरुशु होहवि पटु सि वधमि ॥ २ ॥

तद्वयह भारेण जरणाहलेहु ।
 द्वियउल्लउ न गहउ पिह्वयराह ।
 केन वि पुरिलेण पर्वत्तु ताम् । 5
 पट्टउ वि केन भण्णह विवेह ।
 हा हा राप भारियउ भिक्खु ।
 पञ्चलिउ तवसि कुम्मिउ मणेण ।
 तवसिउउ भापउ देवयाउ ।
 इवन्निम्वत्तउहुहउतिह । 10
 पापउहुं पिभिउंहुकियकरालु ।
 इक्कंआलहु तुह महिचलयपुडिय ।
 जम्मतरि पेसथु करहु मज्झु ।
 त इच्छिवि गहयउ जक्खिणीउ ।
 पुणु रोसणिपाणवसेण णडिउ । 15

3

मुह सो पोमावरागमि यहु
 पिपदियपमाससडाउयाह
 णउ भक्किउं भत्तारहु सईह
 कारिमउ विणिमिउ उगसेणु
 भक्किउ विपयमवहु हेमाहु
 अवलोहउ ताप कुरदिदि
 कसियमंजुसहि किउ अथाहि

न निर्वेतायहु जि भक्काउवहु ।
 झिलतिपाह कुलठियमुपाह ।
 शुद्धेहि मुणित पिउणह मईह ।
 कोडिउ न सीद्विणिप कोणु ।
 उण्णणउ पुणु सगोत्तणाहु । 6
 विहणेककामु उणिण्णमुट्ठि ।
 थळिउ कालिदीजलपवाहि ।

४ BP निव° ५ PS भावउ ६ B पवु ७ B विपुववि ८ B वृमिण P इमिउ ९ B हो हो
 १० B निववदुसय° ११ ABP °वाओकि° १२ B दक्काळ° १३ A कुलमदणु

3 १ A तापहु विपकाउवहु B °तापहो जि अकाळ° ६ °तापहो अक्काळ° १ B ठो
 काडिउ न सीद्विणिप ■ काडिउ

3 ६ जरणाह° जरासेप 4 a भवउ विस्मय अकुळितो वा ६ निहयराह निहयराह मुनो
 ७ ६ विवेह विवेकी 8 ६ कुम्मिउ उत्तपवि 9 a मंजीररावराहियपयाउ वृपुरवन्द्योमिउ
 पादा 10 ६ तिहउत्ता 11 ६ पापउहुं प्रकटीउरुं 12 a महुद मपुराय ६ दक्काळहु
 दयेयाम 15 a इवउ कुवि ६ निवाण विदान्म, 16 उगमाह लिपेने अहसंभमि वज्झयामि

3 2 a पिपदियव° मंजुदक्क, 3 ६ मुविउ कतो रोहद निउणह पिपुणवा 7 a
 कसियमंजुसहि कास्यमज्झयाम् अथाहि अत्ताप (अपापे)

मंजोर्यरीइ सोमालियाइ
 कंसियमंजूसहि जेण दिहु
 कोसंविर्पुसिहि पत्तउ पमाणु
 निष्ठु जि परदिभइं ताडमाणु
 गउ सउरीपुइ वसुएवसीसु
 असिणा जरसिधैं जिनिवि वसुइ
 एकहि दिणि अथाणंतरालि
 मइं वहुविहपरमडलियैं जिउ
 पर अजि बि णउ सिज्जइ सबणु
 पोषणपुरवइ सीहरहु राउ

घसा—जो जुज्जइ तहु बलु जुज्जइ वरिवि निवंधिवि भाजइ ॥

राकुच्छरैं णं अमरच्छर मेरी सुय सो माणइ ॥ ३ ॥

पालिउ कल्लोअलयालियाइ ।
 तेणं जि सो कंसु मणेवि घुहु ।
 णं कलिकयंतु णं जाउहाणु । 10
 घाँडिउ तापं जायउ जुवाणु ।
 जायउ णाणापहरणविहीसु ।
 निष्ठुविय वइरि सुहि निहिय ससुइ ।
 थिउ पभणइ सो गायणरवालि ।
 धैरणि वि तिसंउ साहिय विचित्त । 15
 णैउ पणवइ णउ महु देइ कप्पु ।
 रणि दुज्जउ रिउअलयाहवौउ ।

4

अण्णु वि हियइच्छिउ देमि देसु
 हय मणिवि णिधं कविहसियाइ
 सपलइ मंडलियइं पत्तिवेषण
 एकैण एकु तं घितु तेसु
 जोइउं बाइउ तं वइरिजूस
 पक्खरिय सुय करि कयवसोइ
 णीसरिउ सणि व कयवसविहि
 सहुं कसैं रोहिणिदेविणाहु
 परमंडलु विखंतलु जाइ

सुइ करउ को वि पत्तिउ किलेसु ।
 आलिहियइं पत्तइं वेसियाइ ।
 गय किंकरवर वसविसि जवेण ।
 अच्छइ वसुएउ कुमाव जेतु । 5
 देवाविउ छहुं संगोमत्तु ।
 मच्छरिफुरंत भारुइ जोइ ।
 अंधयकैविट्टिसुउ वइरिविहि ।
 णं ससिमंडलहु विरुइ राहु ।
 पहि उप्पहि वलु कथ बि ण माइ ।

३ B मशोवरीइ ४ B कल्लालिय ५ AP वेण वि ६ AP कोवणिषवरे ७ S घाडियउ ८ AP वसुदेव°. ९ P जरसिधैं, S जरसिधैं. १० A ससुइ. ११ S मडलिय. १२ S वरणी विलउ १३ AP पयपणवइ. १४ S °वायु १५ APS °कोच्छर.

4 १ P अण्णु मि. २ P हियइच्छिउ, S हियउच्छिउ ३ APS वसुएव°, ४ S वेरिजूस. ५ PS AIs सणाहत्स. ६ B AIs मच्छरपूरिय ७ AP अक्कविहीसुउ ८ B वहरविहि ९ S रोहिणी°.

10 b कलिकयंतु कलिकालयम., जाउहाणु राखस. 11 b घाडिउ निर्घात्रित 12 b °पहरण-विहीसु प्रहरणैर्मानक 13 b वसुइ वसुखा स्थापिताः सुहृद 16 b कप्पु दण्डः कर. 17 b °अलयाहवाउ मेख्य वात 19 रइकुच्छर मनोहरसतिकौतुकोत्पादिनी

4 2 a णियक° स्वविहैन, b पत्तइ लेखा. 5 a जोइउ दहम् 7 a सणि व शनिप्रहवत्, b वइरिविहि शत्रूणा विहि पापवतीवत् 9 b पहिउप्पहि मार्गे उन्मार्गे च.

घटा—यस्यकेसरकरवदमांस्तुहरिकर्षिं रहि चट्टियत ॥ 10
अयलपट्ट कुर्तुं महामह वस्तुपञ्चमं भूमिभट्टियत ॥ ४ ॥

5

सउहरेप सगामि बुत्त
भावादिह सो घयधुवमाण
वस्तुपञ्चमस भूमयमीस
यस्तुहरेद सीसह भित्तुभंति
भवति बलंति बलति घति
अतरे लयतह सलललति
महि भिविडमाण ह्य हिलिहिलति
वट्टोद्व वट्ट मारिभि मरति
पल्लुद्वर गिरां गहि मिलति
पहरणह परतह घयभयति

हरिमुत्तसित्त ह्य रंदि गिउत्त ।
वल्गवट्टिउ रिदं जपाशु जाणु ।
लम्मा परैवलि उज्जायसीस ।
थिग थाहि थाहि हणु हणु मणति ।
पहसति रंति पहरति थति । 6
रत्तह पवहनह झलललति ।
सरसत्तिय गयवर गुल्लुगुलति ।
जीविउं मुयंत गर हुकरति ।
मूयह वेयालह किलिकिलति ।
विच्छिन्नह कवयह जिगिजिगति । 10

घटा—यहस्तु सामाकतहु सीहरेण भिवेह्य ॥
सर दाहण वम्मयियारण कचयपुल्लविराह्य ॥ ५ ॥

6

यपारह वारह पलवीस
तेण वि तहु तहि मगण भिमुक्त
वे धीर वे वि भासण बुक्क
परिमदयल्लु मुयवल्लु कल्लति
ता सुहरेदसमुम्मह वप्परेवि

पण्णास सट्टि बावीस सीस ।
रह बाहिय औणिधल्लुसचल्ल ।
ण अयसागर मज्झायमुक्क ।
अवरोप्पह किळं कौतहि हुल्लति । 6
रवि विवणुदभतरि परसरेवि । 10

१ P मासुव ११ B कट्टिउ १२ P कुविउ १३ AP रणे भिट्टियत

5 १ AP सउहरे कट्टु लयामकुव 8 सउहरे व सगामे २ A रहरे गिउत्त ३ B भावा
दिवि ४ 8 तहि ५ 8 अलले ६ BPA ७ पल्लति ८ B गयह लुचतह ९ APS भिवडमाण
१ AP कवयह

6 १ BS धोणीकुत्त २ AP मल्लयल्लुक्क ३ ABPS विर ४ A सुहरे सउमट्ट

10 हरिकट्टिउ विणुहरेयोपरि

5 1 a सउहरेप सुमदापुणेण 6 हरिमुत्तसित्त विहल्लुसित्ता अथा रणे वट्टा 2 a सो रय
३ 6 उज्जायसीस उपाध्यायिध्वी 5 a चवि प्लवणति 7 6 सरसत्तिय यस्तुपञ्चमुक्ताः 11 सा मा
कतहु वस्तुदेवस्य निबयपुराणमुदीकान्तस्य विवेहव ह्या

6 5 a वप्परेवि पल्लवित्ता

पवरंगोवंगदं संवरेवि
उल्ललिवि धरिउ सीहरहु केम
आवीलिवि बद्धउ वंधणेण
णिउ वाधिय अद्धमहीसरासु
तं पेक्खिअवि रापं वुत्तु पं

चवलाउहपैरिवंचणु करेवि ।
कलें केसरिणा हत्थि जेम ।
जईजीउ व जीयँसाधणेण ।
अहिमाणु मुवाणि णिव्वहु कासु ।
वसुपव तुज्जु सम जेय देव । 10

घटा—साहिज्जइ केम धरिज्जइ एहु पयंह महावल्ह ॥

एहुरुदं जिह णहु चदं तिह पदं मंडिउं णियंकुलु ॥ ६ ॥

7

को पावर तेरी वीर छाव
लइ लइ जीवंसजसजणिहाण
ता रोहिणेयजणणेण वुत्तु
हउ णउ गेण्हमि परपुरिसयाव
रायाहिराय जयलच्छिगेह
एहु पुच्छइ कुलु बक्खरइ कंलु
कोसंभीपुरि कल्लालणारि
सहि तणुवहु हउ अणंतवंह
मुक्खउ णियमार्णहणियाह
सूरीपुरि सेविउ आवसुरि
सहुं गुरुणा जाइवि धरिउ वीर
तं सुणिधि णरिदं सीसु बुंणिउं

कालिदियेणसईदेहजाय ।
मेरी सुय संतावियजुवाण ।
परमेसर परजपणु वल्लुत्तु ।
एयहु कलें किउं वंधणाव ।
दिज्जउ कुमारि एयहु जि एह । 5
णउ होइ महारउ सुहु वसु ।
मंजोयैरि णामें हिययहारि ।
परहिंभमुंदि वल्लंतु दंहु ।
मायई दुपुत्तणिधिवणिगयाह ।
अम्मँसिउ मई वि धणुवेउ भूरि । 10
अवल्लोयहि पासकियसरीर ।
एयहु कुलु एउं ण होइ भणिउं ।

घटा—रणतंसिउ भिच्छउ अत्तिउ एहु ण पैर मौंविज्जइ ॥

कुलु सम्बहु णरहु अउव्वहु आचारेण मुणिज्जइ ॥ ७ ॥

५ AB परवचणु ६ B जहु. ७ AP कम्मणिवणणेण ८ APS पेक्खिअ ९ A णिययकुलु

7 १ P °सय° २ PS कठ ३ B मजोवरि ४ AP °पाण° ५ PS मानाप, ६ S
सठरी°. ७ A अन्मासिउ. ८ BSAle वीर ९ S पुणीउ १० A रणतठिउ. ११ B पर.
१२ AP चित्तिज्जइ

6 a °अगोवराइ अङ्गोपाङ्गानि 8 a आनीलिवि आपीक्ष्य, b जीयासधणेण जीविताशया
भनायया च 11 एहु सिंहयसः.

7 1 b कालिदियेण° कालिदयेना जरासधया रात्री. 3 a रोहिणेयजणणेण बलमद्रपिवा
वसुदेवेन 4 a °पुरिसयाव पौरुषम्, b एयहु सिंहयस्य, वंधणाव कन्धनम् 8 b °मुक्ति मस्तके 9 a
°अद्विग्याह उद्विग्या 10 a पावसुरि वसुदेव 11 b पासकियसरीर बन्धनचिह्नित
13 रणतत्तिउ रणचिन्ताशुक्र, पर अन्वी त क्षत्रिय विना 14 अउव्वहु अपूर्वस्य अज्ञातस्य,
आचारेण आकारेण आचारेण वा

8

इय पडुणा मणिवि किलोवरीहि
 तैं जाईवि महुमारिणि पडुसें
 किं भासियार बहुयेइ कहाइ
 सुयणामें कपिय जणनि केव
 सा बितइ जउ सबरइ विनु
 हकारउ आयउ तेण मज्जु
 इय बैविनि जलिय अयथरहरति
 वियहेहि पराइय रायवाहु
 रायण भणिय तैं तबउ तबउ
 ता सा मासइ भयभावंछइ
 ओहंछइ एषहु तणिव माव
 कलियारउ सरसवि सिंधु हणतु
 मेरउ न होइ मुकउ गुणेहि

वेसिउ दूयउ मज्जोयगीहि ।
 पर कीकाइ पडु बहुयधुजुते ।
 अचछइ तेरउ सुउ तहि जि माइ ।
 धवर्जवीलिय वणवेछि जेव ।
 किउ पुसैं फार मि मुचरिपु । 5
 वज्जउ भारिऊउ सो जि वज्जु ।
 मंजूस लेवि पहि सर्वरति ।
 दिहउ गरमइ साहियदिसाँसु ।
 इहु कसवीउ जगि अंमियपणउ ।
 फाळिदिहि मर मज्जूस लख । 10
 इउ मुम्बइ सुदिनिमिपु भाव ।
 जीणिउ घराउ विपिउ बवतु ।
 जोइय मंजूस यियकफणेहि ।

वक्ता—तहि अचिउ पडु थियेच्छिउं अयसिरिमाणिमिमाणिउ ॥

सुहविदिहि गरमइविदिहि अचिउ लोप जाणिउ ॥ 6 ॥

15

9

पवकगलेणपोमावईहि
 इय बहयउ जाणिवि मुहु पाहु
 ससुरेण मणिउ वरवीरविनि

सुउ कसु पडु सुमहासईहि ।
 जीवजस विष्णी किं विधाहु ।
 जा दवई सा मगहि धरिनि ।

8 १ B जोयहि K जोइहि in second hand १ A पडु। B पडु P पडउ १ AB
 पडु ४ AI बहुइ ५ AP भविनि ६ A उचरति ७ AKP दवाउ but gloss in K जाविउ
 दिशामुक् ८ P मणिउ ९ A इह BAs को AIs considers तउ in K a mistake in
 PS for कहु १ B अगजनि ११ P मक्ताव ११ A एइ अचछइ P एइएइ
 ११ B विरच्छिउ

9 १ B पडमावईहि २ B जाणवि ३ B कउ ४ A बहुनीरविनि B बह वीरविनि
 ५ A बहइ ता ६ B वरति

8 2 a जाइवि मिच्छिवा महुमारिणि कल्लावी (मवविच्छिवा) b बहुयधुजुत बहु
 कुटुम्बकुका 3 b साहियदिसासु अविदिसासु 9 a तउ तबउ तणउ तव वरवी तनय
 11 a ओहंछइ एषा मज्जु विहति b सुदिनिमिपु हचान्त कफिहम् 12 a कलियारउ
 कलहकारी सइवि मिच्छिने माळववाणाम् 15 भविउ सैन, लभेनुपुम्

जामायं वुत्तु गिरुत्तवाय
महिमंडलसहिय महाभडासु
सहुं सेण्णो उगयधरणिपसु
अविणीयजीर्यजीविउ हरेतु
वेदिय मडुराउरि दुद्धरेहि
अट्टालय पांडिय दलित कोट्टु
अक्खिउ णेरहि गभीरमाव
जो पइं कालिदिहि धित्तु आसि

महुं मडुर देहि रायाहिराय ।
सौ दिण्ण तेण राएण तासु । 5
णियवसहुयासणु चलित कंसु ।
दिवेसेहि पत्तु मच्छर वहतु ।
हत्थिहिं रदेहि हरिकिकरेहि ।
साडिउ पुररक्खणणरमरट्टु ।
आयउ तुज्झुप्परि पुत्तु देव । 10
एवहि अबलोयहि णियभुयासि ।

अत्ता—आयणिनि रिउ तणु मणिनि दाणु देतु ण दिम्मउ ॥
संणज्झिनि हिणइ विरज्झिनि उगसेणु पडु णिग्गउ ॥ ९ ॥

10

संखोइयणाणावाहणाह
करमुक्कसुलहलसव्वलाह
घोलेतभंतमालाअलाहं
पडिदित्ततल्लुपमयमलाहं
सोडियसरसमुसाहलाहं
णिब्रहंतहं मुच्छाविमल्लोहं
अहूंसहयणवेयणसहाहं
वरिसावियवेहवसांवहाहं
अबलोइयकरभणुगुणकिणाहं ।
ता उगसेणु धोहियगईदु
घोह्माविउ रुसियि तणउ तेण
गम्भर्ये अज्जउं मज्झु मासु

जायउ रणु बोहि' मि साहणाहं ।
वृद्धरियाउविंयकुंतलाहं ।
पेवहंतपहरसंभवजलाहं ।
असिवरदारियकुंभत्थलाहं ।
वोसंडियकमकडियलगलाहं । 5
णारायणियरछाहयणहाहं ।
भडमिउडिभंगभेसियणहाहं ।
णीसारियणियणरवइरिणाहं ।

आइउ सेहुं गिरिणा णं मइदु । 10
किं जाएं पइं णियकुलबहेण ।
तुइं महुं हयउ णे तुंमि हुयासु ।

७ AP वा ८ B जीव'. ९ ABPS दिवरेहि १० B वाडिय ११ A साडिउ पुररक्खणु गरमरट्टु, BAls गिद्धाडिउ पुररक्खणमरट्टु, S साडिउ पुररक्खणमरट्टु १२ A चरेहि.

10 १ APS बोह मि २ S read from here down to line 10 the text in a confused manner ३ S लोत्त', K लोत्त' in second hand ४ B पवत्त' ५ BAls. पाडिय'. ६ A 'सरत्त' ७ 'मिमलाह ८ S इय दुसह'. ९ AP 'वसाववाह १० AP वाडियि गपदु. ११ AP ण सहु गिरिणा मइदु १२ AP पुत्तु हुयासु

9 4 a गिरुत्तवाय एत्तवाक् लम् 6 a उगयधरणिपसु उच्छ्रितभूधुलि. सेन्यरामनात् 7 a अविणीय' घनव. 8 b 'हरि अथा 9 a कोट्टु साल प्राकार, b साडिउ पातित

10 11 b 'पहरसमव' प्रहासेत्तनाम् 5 a 'सरत्त' सरधिराणि 6 b नाराय' वाणाः 7 a 'वणवेयण' मणवेदना. 10 b मइदु सिंहः 11 b जाए जातेन उत्तजेन 12 b दु मि वृक्षे.

यत्ता—विधत्ते समरि कुपुर्णे उम्मेसेषु पथारिउ ॥

ओ पेहुर पाणिह घट्टइ सो महु वप्पु वि वहरिउ ॥ १० ॥

11

बोह्लिअइ ययहिं काइ ताव
गज्जतु मडतु गिरिदैतु
पहरणइ गिरिदैतु पहरणेहिं
णहयलि हरिसाविउ अमरराउ
पसिगयकुअत्थलि पाउ देवि
असिघाउ दैतु करि धरिउ ताउ
आवीलिवि भुययलएण कहु
हेत्थु जि पोमावइ माय धरिय
इय भणिय वे वि ससिकतकसि
असिपज्जि पिपरइ पावएण
यिउ अय्युंयु पिउलअवीलिवि
लेहिं अविअउ जिह उम्मेसेषु
पई विणु रजेण पि काइ मज्जु
तो महु णरमज्जिबिउ विरयु

पेरिहअउ पठर वे देहि धाय ।
ता चोहइ मायगहु मययु ।
पहरतहिं सुयज्जणेहिं तहिं ।
उड्डिवि कसें गियगययराउ ।
पुरिमासणिअमरसीह लुंणिवि । ॥
पचाणणेण ण मृगु वराउ ।
पुणु दीहणायपसेण महु ।
किं तुहु मि जणणि अल कुरवरिय ।
गिहियइ गियमदिदि गोउरति ।
विरमवसवियमलभाषण । 10
लेहाराउ पेसिउ गुहहिं पासि ।
रणि धेरिवि गियअउ ण करेणु ।
अइ वयणु ण पेअमि केहिं मि तुणु ।
आवेहि देव उड्डियउ इत्थु ।

यत्ता—तै वयणे रजियसयने सतोसिउ सामावइ ॥

15

गउ महुइ विवलयविहुरि सीउं तासु मणि भाषइ ॥ ११ ॥

12

कोप गाइअइ धरिवि येणु
तहु तणिय धूयं तिहुयणि पसिअ

ओ पिसिउ जामे देवसेषु ।
सामा वामा गुणगामणिइ ।

11 १ P परिहय ४ परिहय २ S गिरि १ B चोवउ ४ APS गिरिवि ५ AP
सीउ लेवि ६ BP गिरु ४ मि ७ S "वलेण ८ S इह मणि ९ P मदि" १ APS अय्यु
११ B धरि १२ APS कइ व १३ B ता १४ B ओडियउ P ओडियउ १५ B तासु सीउ

12 १ B चीय २ B तिहुवण

11 1 b परिहअउ शीमम्, २ पुरिमासणिअ अमरमज्जस्य 6 a ताउ पिता उम्मेन
7 a आवीलिवि आपीअ 9 a ससिकतकसि चन्द्रकाउमनोहरे ६ गोउरति गोपुराङ्गणे
11 a पिउलअवीलिवि सिउलअवीलिवि 1४ b उड्डिवउ इत्थु प्रार्थनानिमित्त उर्ध्वीकृत
15 सामावइ वहुदव 16 सीउ गिय कस वसुदेवस मनसि येचने

12 1 b पिसिउ कसस्य पितृस्य देवसेन २ b तासु वणिध धूय (हरि) कुवचोत्सवा
देवसेनेन पोषिता देवकी इति मारुते प्रसिद्धम् ६ वामा मनोहरा गुणगामणिइ गुणसमूहजिवा

रिसिहिं मि उक्कोइयकामवाण
सा गियसस गुरुदाहिण भणेवि
सुहुं भुंजमाण गिसिवासरालु
ता अणहिं दिणि जिणवयणवाइ
पिउवधाणि चिरु पावइउ बीई
चरियइ परहुं मुणि दिहुं ताइ
इक्खालिउ देवइपुण्फचीरु
जरसघकंसजसलंपडेण
होसइ एउं जि तुइ बुक्खडेउ

देवइ णामें देवयसमाण ।
महुराणाहें दिण्णी थुणेवि ।
अञ्जति जाव परिरालइ कालु । 5
अइमुसउ णामें कंसभाइ ।
णिप्पिहुं आमेहिंवि गियसरीरु ।
मेहुणउ इंसिउ जीवजसाइ ।
जइ जंपइ जायकसायहीरु ।
मारेवा एउं कप्पडेण । 10
मा जंपहिं अणिवद्धउं अणेउ ।

धत्ता—इयसोत्तउं मुणिवरबुत्तउं भिसुणिधि कुसुमविलिप्तउं ॥
तं जीवरु सज्जणदिहिइरु मुद्धइ फौंडिवि चित्तउं ॥ १२ ॥

13

रिसि भासइ पुणु उज्जियसमंसु
ता जेल्लु ताइ पाएहिं हुण्णुं
तुइ जणणु वणिवि रणि ददभुण
गउ जइवरु पासु विलींलियासु
पुच्छिय पिण्ण कि मल्लियवयण
तां ता पडिजंपइ पुण्णवुत्तु
णिहणेव्यउ तें तुहुं अयरु ताउ
ता वितइ कंसु भिससिपाइ

कण्हें फौंडेयउ वम कंसु ।
पुणरंवि मुणिणा पडिवयणु विण्णु ।
मुजेवी मंहि एयहिं सुएण ।
जीवजस गय भत्तारपासु ।
किं वीसहिं रोत्तारत्तणयण । 5
होसइ देवइयहिं को वि पुत्तु ।
महिमउलि होसइ सो जि राउ ।
अलियइं ण होंति रिसिभासियाइं ।

१ B उक्कोइय काममाण, PS उक्कोइयकुसुमाण ४ BP भुजमाण ५ A अञ्जतु. ६ AB परिगलिय°, 8 पडिगलइ. ७ BPS चीर ८ APS आमेहिंवि° ९ A जरसिंवि°, P जरमंवि° १० A मारेवा ११ S फालिवि.

13 १ PS फालेवउ २ P जुणु. ३ P पुणुरवि ४ S भुजेवि मही ५ AP विनासि आसु. ६ P मल्लियवयण. ७ A सा पडिजंपइ तुइ पुण्णवुत्तु. ८ S णीससिपाइ

१ a उक्कोइय° उत्तादित. ४ a भियसस निजभणिनी, b महुराणाहें कसेन 5 a गि सि वा सरा लु रागिदिवसयुक्त. काल. 7 b आमेहिं वि गियसरीरु शरीराणा मुत्ता 8 b मेहुणउ देवर अति-युक्त. 9 a देवइपुण्फचीरु देवकीरत्नवत्तवत्तम्, b जइ यति., जायकसायहीरु जातकपायशाल्य. 11 b अणेउ अण्ये चच. 12 इयसोत्तउं इत्तम्भम्, कुसुमविलिप्तउं रत्नस्वत्वरत्नेन लिप्तम्

13 1 a उज्जियसमंसु स्वकोफामलेया 3 b एयहिं सुएण देवक्या. पुजेण 4 a विला-सि यासु पथितवान्त्तम् 7 a ताउ तावो जणसव.. ॥ a गिसिपाइ रुपवत्तानि

यत्ता—विघटं समरि कुपुत्तं उन्मत्तेषु पञ्चारिड ॥

ओ पेत्तुह पाभिर वत्तुह सो महु वप्पु वि वहरिड ॥ १० ॥

11

योत्तिज्जइ पयहिं काइ वाय
गज्जतु महुत्तु गिरिदंतु
एहरणर गिर्योरिय पहरणेहिं
णइयळि हरिसाविड ममरराड
एडिगयकुंभत्थळि पाड देवि
मसिधाव रंतु करि धरिड ताड
भायीळिवि भुयवळण्ण कहु
तेत्थु जि योमावइ माय धरिय
इय भाणिय वे वि ससिकत्तकति
मसिपज्जरि पियरइ पाययण
चिड मळुंणु पिडलळ्ळीविळासि
ळेहिं भविण्ड जिह उन्मत्तेषु
पइ चिणु रजेण वि काइ मज्जु
तो^१ महु णरमपजीविड गिरत्थु

वेरिड्ढ पडर दे देहि धाय ।
ता वीरिड मायगहु मयगु ।
पहरतहिं सुयज्जणेहिं तहिं ।
उडिवि कंसे गियगववराड ।
पुरिमासगिळमइसीसु छुंणिवि । ८
पञ्चाणणेण ण मृगु वराड ।
पुणु दीहणायपौसेण वहु ।
किं तुहु मि ज्जणमि जळ कुरचरिय ।
जिहियर गियमदिदि भौडरति ।
विरमयसक्खिमळभाययण । 10
ळेहारड पेसिड शुवहिं पासि ।
रणि धंरिदि गियवड्ड ण करेणु ।
जइ वयणु ण पेच्छमि कैहिं मि तुज्जु ।
भावेहिं वेव उडियंउ इत्थु ।

यत्ता—तं वयणे पज्जिमसयणे सतोसिड सामावर ॥

गळ महुत्तहिं गियज्जियविहुरहिं सीसुं वाहु मणि भावर ॥ ११ ॥

12

छोप गीहज्जइ धरिवि येणु
तहु तणिय धूयं तिरुयंणि पसिख

ओ पिसिड जामे देवसेणु ।
साभा बामा गुणगामणिइ ।

11 १ P परिहत्थ S परिह २ S गिरि ३ B चोयड ४ APS गिरावि ५ AP
वीडु लेवि ६ BP गिरि S गिरि ७ S "वाले ८ S इह मणि ९ P मदि १ APS वप्पु
११ S धरि १२ APS कइ व १३ B वा १४ B जोडिवड P ओत्तिमड १५ B तहु वीड
12 १ B वीय २ B तिरुवण

11 1 ८ परिहत्थ सीसु, ३ पुरिमासगिळ" अणसनत्थ 6 a ताड सिता उन्मत्तेन
7 a भायीळिवि भायीळ 9 a ससिकत्तकति चक्रकत्तमनोहरे ८ भौडरति गोपुष्पाङ्गणे
11 a पिडलळ्ळीविळासि गिरिज्जमिळिजे 1४ ८ उडियड्डइ सु मायंनानिमित्त उर्ध्वीकृत
15 वामावर वहुदव 16 वीडु गिरि कइ वहुदेवत्त जनसि रोक्के

12 1 ८ पिसिड कक्कस भिण्ण देवसेना २ ८ तणिय धूय (हरि) कुस्सेयोत्तना
देवसेनेन पोथिवा देवकी इति भावे प्रथितम् ८ वाय म्मोहण गुणगामणिइ गुणसमूहकिंभा

रिसिदिं मि उकोडैयऊममण
सा गियसम गुरुदादिण भणेवि
सुहु भुजमोण णिसिवासरालु
ता अण्णादि दिणि जिणवयणवाइ
पिउवधाणि चिरु पावडउ चीधं
चरियइ पड्डु मुणि विट्ठु नाइ
इक्कमानिउ देवदण्णकीर
जंरसधरुसजमण्णणेण
होसइ पउ जि तुह दुक्कणंउ

देवउ णामं देउयममण ।
महुगणाहं दिण्णा गुणपि ।
अण्णनि जाय पंगिमण्ड कालु । 5
अइमुसउ णामं कम्मभाइ ।
णिप्पिहु अमिहिरि गियमगीर ।
मेहुणउ णमिउ जीउज्जाइ ।
अउ अउ जायवमयहीर ।
मोवेो ण कएउण । 10
मा अण्णि जणरउउ अणउ ।

घसा—द्वयमोक्षउ मुणिरवुत्तउ णिमुणिरि कुमुमविदिनउ ॥
त चीवरु मज्जनसिद्धिउ मुउउ फौडिरि गिनउ ॥ १० ॥

13

रिसि भामइ पुणु उज्जियममनु
ता चेलु ताइ पाणदि हुण्णु
तुह जणणु हणिवि रणि इदभुण्ण
गउ जायव वासु विलानियासु
पुच्छिय पिण्ण किं मलिजययण
तां ता पडिजंवा पुण्णजुनु
णिहणैवउ तं तुह अवउ ताउ
ता चितर कसु णिससियाइ

कणं फौडउ उम राउ ।
पुणरेवि मणिणा पडिवयणु विण्णु ।
भुजंजी मंदि वयदि मुण्ण ।
जीयजम गय भत्तारपासु ।
कि दीमदि रोसाग्नयण । 5
होसइ देउयदि कां नि पुनु ।
महिमउलि होसइ मों जि राउ ।
अमिउ ण होति रिनिभामियाइ ।

१ B उकोयइ काममण, 1^{१०} उकोडैयउमुममण, ४ B¹ भुजमणु ५ १ अउ ६ १ 13 पारगणियं,
8 पडिगण्ड = BPS धीक ८ A¹ १० अमेडिउ ९ A १० विउ, 1^१ १० गण १० A मोवेो
११ S फालिदि.

13 १ PS फालेउ २ P पुण्ण, ३ P पुण्णवि ८ १ पुजेवि मही ५ A¹ निवादि
भासु, १ P महियवयण, ७ A सा पडिजवउ गु पुण्णजु ८ १ जीवसियाइ

8 a उकोडैय^० उत्पदित. 4 a निवसस निजममिनी, 6 महुगणाहं कवे १ a णि सिवागरासु
राविदिवसुक्क, काल 7 b आमेडि वि निवसरी क अराराआ मुत्तस, 8 b मेहुणउ देवर अति-
मुक्क, 9 a देवदण्णकीर देवकीरवउसायअम् 6 अइ यनि, जायकमयहीर क जावरपायवस्य.,
11 b अणेउ अडेप कव, 12 द्वयमोक्षउ एतर्णम्, कुमुममि लिउउ उअउलारकेन लिउम्.

13 1 a उविस वसमसु लकोपमयेउ 3 b एयदि सुएण देवका, पुणेण, 4 a विला-
सि पासु यविताअम् 7 a ताउ तातो अराकवः 8 a णिस सिवाइ गुमवसावि

गिहुड वि पवण्णर कहुँ तेसु अज्झइ वसुपउ गरिउ जेरु ।

धत्ता—सो भासइ शुक्ल पयासइ सँगुहहि खयमवैजरियउ ॥ 10

हरितदणु कयकडमहणु जायडु मइ रवि धरियउ ॥ १३ ॥

14

तइयहु मेहु नुसिखि मणमणोच्च
आय केण वि अगदमपण
इय वायागुत्तिअगुसपण
जइ वर पडिवज्झहि सामिसाछे
णाडीपएसविलुलतणालु
त त हउ मारमि म करि रोसु
ता सखयवणपालणपरेण
वउ शुव पणवेप्पिणु वरडु सीसु
बदकतइ सत्तसपाइ जासु
मइ जाणेव्वंड बेयणवसाहि

वर विण्णउ अवसर तासु मज्झ ।

इउ गिहणेज्जउ ससहिमपण ।

भासिउ रितिणा अइमुत्तपण ।

परवलवसवहुणवाहुडाल ।

ज ज होसर देवइहि गालु । 6

जइ मण्णहि गियवायाविलेसु ।

त पडिवण्णउ रोहिणियरेण ।

माणिनिइ पवोच्चिउ माणिणीसु ।

बुक्कासु न पुसइ तुणु तासु ।

बुक्केण तणय होहिति जाहि । 10

धत्ता—सुय मारिवि पुज्जण धीरिवि जाइ म द्वियवउ सल्लहि ॥

हो भौं हो महु गेहें ठेभिं विपैख मोकल्लहि ॥ १४ ॥

15

परताणु पाठणु बुण्णिरिक्खु
मइ मेल्लहि सामिय सुयमि सगु
वसुपउ भणइ इलि मुणमइति

किइ वेक्केमि डिमइ तणउ बुक्खु ।

अणसिक्खइ मिक्खइ जयमि अगु ।

वइ मज्झु तुहारी गिसुणि कति ।

१ B गिहुड जि P गिहुयउ जि १ APS राउ ११ A वसुपउ B वसुपहि १२ A मयज्ज
रिउ B भयज्जहि १३ B हरिदणु १४ B कयकड

14 १ P वइ १ P मही मणोच्च २ A अगुसपण ४ A अगुसपण ५ P सामिसाछ
६ B दल्लवण ७ P पवेहे ८ AP रोसु ९ B जणवेज्ज in second hand
१ A ठेभि ११ P दिस

15 १ A सिल्लावणु २ A मारणु BP वरडु ३ B विक्कमि PS वेक्केमि ४ B
मिल्लहि ५ AP विक्कइ

9 a गिहुड वि निमूतोऽपि, विनीतोऽपि 10 खयमवज्जरियउ खयमवज्जखुको जात 11 हरिउदणु
सिहरय कयकडमहणु इउकटममज्ज

14 2 b वउ विमपण मणिणीपुणेण 3 a वायागुत्तिअगुसपण ववोगुत्तिरहिणेन 8 a
सीसु वसु; 6 माणिनिइ देवका माणिणीसु मानवतीना सीया स्वामी वसुदेव 9 a वर
कंतइ वरलीणाम्,

15 2 a सुयमि सगु मुक्कामि परिग्रहम्, 3 b कति हे मां

जइ सिमु पर्यहु मारहुं ण वेमि
हम्मंतउ बालु सलोयणेहि
सलिलंजलि रयरससुद्धु देहुं
दइववसें दइयादइयएहिं
णैउ पुत्तुप्पत्ति ण तासु मंसु
इय ताइं विपणिवि थियइं जाव
णियंविचि सज मुणि परिगणंतु
वहुंवारहिं मुंक्क णमोत्थुवाय
भुजिवि भोगणु तथेपुण्णवंतु

तो हवं असणु जणमल्लि होमि ।
किह जोएसमि दुहभायणेहिं । 5
तवचरणु पहायइ वे वि लेहुं ।
अम्हइं दोहिं मि पावेइयएहिं ।
मारेसइ पच्छइ काइं कंसु ।
वीयइ दिणि सो रिसि दुक्कु ताव ।
वळएवजणणभवणंगणंतु । 10
पडिगाहिउ अइवर घोय पाय ।
मुणिवर णिसण्णु आसीस देंतु ।

वत्ता—मुणि जंपिउ किं पैइं विण्णितं पहरंमंसुरि पवोसर ॥

घरि जं सर डिंभु जणेसर तं जि कंसु पँहयेसर ॥ १५ ॥

16

मइं तहु पडिबण्णं पउ ववणु
होहिंति ससहि जे सत्त पुत्त
अण्णत्त लोहेपिणु बुद्धिसोकखु
सत्तमु छुउ होसइ वासुपउ
जं एम भणिवि जिणपयदुरेहु
तं दो^१ वि ताइं सलोसियाइ
कालं जंते कयगँभछाय
इइणइ देवें णइगमेण

ता पडिजंपइ गिम्माहियमयणु ।
ते ताइं मज्झि मलपडलवत्त ।
छइं चरमदेह जाहिंसि मोक्खु ।
जरैसयहु कंसहु धूमकेउ ।
गउ ॥ ति वियंवर मुक्कणेहु । 5
पं कमलइं रथियरवियसियाइं ।
सिसुजमलइं तिणिण पस्य माय ।
महियपुरवरि सुहसंगमेण ।

वत्ता—थिरचित्तिहि जिणवरंभत्तहि वररणयणंपरिद्धिहि ॥

घणथणियहि पुंत्तियणियहि वविणसमूहसमिद्धिहि ॥ १६ ॥ 10

१ A एहो ७ BPS रहलं ८ B तवचरणु ९ B पहाय, K पहायै but gloss प्रभाते.
१० B पवइयएहिं ११ S ग य. १२ A भियविचिसज. १३ A वहुवरहिं वि. १४ P विमुक्क.
१५ A णवपुण्णवत्त १६ P पर किं १७ B पइयेसरि. १८ A णिहयेसर.

16 १ AP पुत्त सत्त २ AP अण्णत्त ३ A बुद्धिसोकखु, P बुद्धिसोकखु, S वड्डिसोकखु.
४ A छवजदेह. ५ BS जरैसयो ६ S वे वि. ७ A कयगमछाय. ८ B सुहिसंगमेण. ९ A
मचित्ते. १० PS रिद्धे ११ K पुत्तियणियहि.

5 a स लो यणे हि स्वनेने. 6 a रयरससुद्धु रतरसौख्यस्य, देहु दातुम्, b लेहु यहीम्. 7 a
दइयादइयएहिं वधुवेरे. 8 a तासु पुत्तस्य. 10 a सज रहस्यया वृत्तिपरिसंख्यानम्, b °मव-
गणहु °मासुगमप्ये. 11 a वहुवारहि पुन. पुन.. 13 पहरणसरि वसुदेव. 14 सइ सती देवकी.

16 2 a ससहि त्वमुदेवक्या, b ताइं तेषा सप्ताना मध्ये 5 a °दुरेहु अमर. 6 b रवि-
यर° रविकिरणा. 7 a °छाय शोमा.

17

धेयिपरसुधाहि ते विषय तेन
 बालह सुरवेडव्यणकयाह
 अफालह सिलहि ससकु इ ति
 अण्णहि दिणि पंकयधयणिवाह
 करिरससिर्तु रंजतु धोर
 मदिहपसिहरां समावहंतु
 उयैयतु भाणु सियमाणु भवव
 निधरण्डु अनिखडं तार विहु
 हलि गिमुणि सुमनकैलु ससहपासि
 नहमुसमहारिसिवयणु हुळ
 गिण्णामेणामु ओ भासि काकि
 थिड जणभिरपरि संपण्णकुसलु

वेहाविड गियजीवियवैसेण ।
 मधुरादित जह मारह मयार ।
 न वियाणह अप्पाणहु मयिसि ।
 थिसि देविह मठलियणयणियाह ।
 विट्ठल सिविणह केसरिकिसोव । 5
 भवलोह गोरह डेकैरतु ।
 सर कुल्लकमलु परिअमियममव ।
 तेण वि गियअफलु ताहि सिहु ।
 हरि होसर ठेर गम्भयासि ।
 ता मेळिवि सणु महासुळ । 10
 सो देव भाड गयणतराडि ।
 सुहं जणह पाह गवणळिणि भंसलु ।

यथा—सुच्छायह शीहिरि आयह जाअमि वेणिं वि काळिय ॥
 किं जलमुह भवर वि उरवह पुरलोपय गिहालिय ॥ १७ ॥

18

किं गम्भमावि पहरिड वपणु
 किं पैयड सरतिवलिड वयाड
 सिधुभययवेहि किं भरिड पेहु
 किं जायड गिहु मयच्छिकाड

न नं जसेण भवळियड मुबणु ।
 न न रिडजयकीहुव हयाड ।
 न न बुधियकुळधर्णैसिहु ।
 न न हुडं मणमि भूमिभाड ।

17 १ P बणे १ B ० कितेन १ B ० तित ४ B विकरंत. १ B उवपणु १/A पुष्ककमल
 ७ A उवणु उणवव P विविणकल 8 सुरणकल ८8 गिणलु नाम १ P A १ वणु १ P
 सुयच्छाय ११ B बाहिर १२ 8 वेणि वि

18 १ 8 गम्भमाव २ B किं ताड उवपतिव in second hand ३ 8 ० वणु ४ 8 गिह

17 1 6 वेहाविड वलिड 3 6 मयाह मृतान्पि 3 a सरकु समय 7 a थियमाणु
 चन्द्र 8 6 गिअफलु निअफलु 9 a हुळककल स्वअफलु ससहपासि चन्द्रवदने 10 6 महा
 हलुळ महाशुळ स्वै सुल्ला 12 a संपण्णकुसलु परिअंकुयल 13 सुच्छायह बाहिरि आयह
 शुधु छाया वहिर्निगंथा वेणि वि सणु (कसनयल्लो) खनी व कण्णपुरी जाती

18 2 a उहतिवलिड तला उदरेसा 3 a पेहु उदम् 6 कुळधणविसहु कुल-
 धनसम् 4 a मयच्छिकाड मुयच्छाः शरीम् 6 भूमिभाड भूवदेशोऽपि कान्तिमान् आव-

किं रोमराइ णीलसु पत्ते
 सीयल्लु धि उण्डु किं जाउ देह
 किं माय समिच्छइ नृचंपहुत्तु
 किं मेइणिमक्खणि इच्छ करइ
 किं दुक्कउ तैहि सत्तमउ मासु
 किं उप्पण्णउ मदिउ विरोउ

णं णं खलकिंसि सिर्यंसवत्त । 6
 णं णं किर पुत्तपयाउ एहु ।
 णं णं तैत्तणुजायंहु चरित्तु ।
 णं णं तें केसिउ धरणि हरइ ।
 णं णं अरिवरगलकालपाहे ।
 णं णं पडिभइकामिणिहिं सोउ । 10

घत्ता—वृणुमद्गु जणित जणद्गु जणणिइ भरद्देसर ॥

सपर्यायै कतिपदावै पुष्पदंतभाणिहिइरु ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकाइपुष्पदंतविराए
 महाभण्यभरद्गुमणिण महाकव्ये खँसुएवजम्मणं
 णाम चउरासीमो परिच्छेउ समसो ॥ ८४ ॥

५ BP पत्तु. ६ BP सियत्तु चत्तु. ७ AB णिव°, P णिव°. ८ APS त तणु° ९ A °जायउ.
 १० S पैयत्तु. ११ A णदे १२ AP °कालवासु. १३ AP सपदावै. १४ A कसकण्डउप्पत्ती; S कस-
 कण्डुप्पत्ती. १५ S चउरासीमिमो

6 ऽ विमसवत्त भेत्तसरहिता 7 a नृचंपहुत्तु छत्रचमरसिंहासनाविक दौहिद वाच्छति. 8 a मेइणि-
 मक्खणि दोदलकयशम्भुसिकामण्णे. 10 a मदिउ विण्णु, विरोउ सेगरहिताः.

केसंठ कसकतणु वसुपयें इयधिवसइ ॥
उवाहवि छइ सिरि काठवइ अ कंसइ ॥ सुवक ॥

1

हुवई—ण हरिसंखंसणवजलइव णं रितणपणतिमिरंओ ॥

ओहउं वीवपण हरि मायइ ण जगकमलमिहिरओ ॥ ६ ॥

कण्डु मासि सत्तमि सजायउ
हउ जाणमि सो वइयें मोहिय
छइयउ बाहुपउ वसुपयें
गिसि सचलियं छत्तमणिपयें
अमाइ हरिसियसिमिरविहगिहिं
को वि परोइउ अमरविसेसउ
वैयमचोईं आयपयेंकुइ
अमककमाइइ गावविहण्यइ
कुलिसापसबकयकियपाय
छत्ताकफिउ को किर जिमई
माइइ सीरि ससि व सुइइसणु
ओ जीवजसयविहोयणु
सो गिमाउ तुइ सोककअथेरउ

मारणकखिउ कसु ण भायउ । ६
महिवइलकखणलकखपसाइउ ।
अरिउ वारिबारणु वलपयें ।
अ विवाणिय गिह कुंर इयें ।
वचइ वसइ कुरताहि सिंगहिं ।
काकहि काकिहि मगपंयासउ । 10
अमाइ माइयवरणुइइ ।
विहडियाइ णं वहरिहि पुण्णइ ।
बोहिय सुमैइउ महुराय ।
को गिसिसमइ हुवारइ अमई ।
ओ तुइ गिविहंमियलविहसणु । 16
योमावहंकरममिह्लावणु ।
उमसेण वुंअ अछइ सेरउ ।

असा—एव मजत गय ते हरिसं कहि मि अ माइय ॥

अयइओ जीसरिबि अठमाइइ अ ति पराइय ॥ १ ॥

1 १ PS केसु २ B उवाहव ३ AP हरिवकवपयं ४ P तमरओ ५ B जोवउ
६ B आइउ ७ B बाहुपउ ८ B सचरि ९ AP पयामिउ १० A मणु पयामिउ, BP मण
पयामिउ ११ P बोहय १२ A आवककुइय B आवककुइय १३ A समइउ १४ A गिमाउ
१५ A अमाइ १६ B गिवजसिय १७ AP विहोयणु १८ ABPS करिमई १९ AP
गिव B गिउ

1 1 इयणि ववसइ इतनिजजसण कवस्य समइउ इव ४ वीवपण वीपतेअसा; मिहिरओ
“इयें 7 ६ वारिबारणु अमई 8 ८ छत्तमणिपयें अमककपया ६ इयरे फेन 9 ९ विहगिहि
“विमज्जे विनायके” ६ वसइउ वसम 10 ६ काकहि काकिहि कुणाया रात्री मयापयासउ मार्ग
प्रकाशक 11 ९ वैयमचोइइ वैयमचोइते आवककुइइ आपदाविनायके 12 ६ महुराय
उमसेवेन 13 ६ गिविहंमियल यादमूलक 14 ९ जीवजसयइ” कंस ६ करममिह्लावणु
अग्निनीमोचक 17 ६ सेरउ (स्वैर) मोनेन

2

दुषई—ता कालिदि तेहिं अवेलोइय मंथरवारिगामिणी ॥

णं सरिरूवु धरिवि यिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ॥ छ ॥

णारायणतणुपहपंती विव	अंजणगिरिवरिदकंती विव ।	
महिमयणाहिरइयरेहा इव	बहुतरंग जरहयदेहा इव ।	
महिहरदतिदाणरेहा इव	कंसरायजीवियमेरा इव ।	5
बसुहणिलीणमेहमाला इव	सौम समुसाइल बांला इव ।	
णं सेवालवाल दधन्नालइ	फेणुप्परियणु णं तहि घोळइ ।	
गेवपरंतु तोड रत्तबर	णं परिहर बुयहुसुमहिं कण्ठुव ।	
किंणरियणसिहरई णं दावइ	विन्ममेहिं णं संसेउ भावइ ।	
फणिमणिफिरणहिं णं उंजोयइ	कमळच्छिहिं णं कण्ठु पलोयई ।	10
मिसिणिपसधाळेहिं सुणिम्मळ	उब्बाइय णं जळकणतंतुल ।	
खलखलति ण मंगलु घोसइ	णं माइवडु पक्खु सा पोसई ।	
णड कासु वि सामण्णहु अण्णहु	अवसें तुसइ जवण सवैण्णहु ।	
यिहिं भाईहिं थळउ सीरिणिजलु	णं धरंणारिविहत्तउं कज्जलु ।	

घच्चा—दरिसिउ ताइ तल्लुं कि जाणहुं णाहुडु रसी ॥ 15

येमिक्कवि महुमहेणु मयणे णं सैरि वि विगुंती ॥ २ ॥

2 B पविलोइय २ P सरिरुउ. ३ AP read 4 b as 5 a ४ A जळहरदेहा, P जळ-
 भवेला, AP read 5 a as 4 b ५ A सोम ७ AB माला इव ८ AP रत्ततय रत्तबर ९ AP
 कण्ठुइ, B कण्ठुइ १० A भउइउ ११ B उजोवइ १२ B पलोवइ. १३ A उबायइ. १४ P
 पोसइ १५ A समुण्णहो १६ BS भावहिं १७ A फणारिहिं हिंसउ, P फणारिविहिंसउ. १८ A
 तणु १९ A महणु ण मयणेव व सरी विव गुत्ती २० P ण व सरि वि २१ B विगुत्ती.

2 घणसमजोणि जामिणी कात्यानि 4 a महिमयणाहिरइयरेहा इव भूमे कत्तूरिका-
 रेहा इव, b जरहयदेहा बुद्धावरयया वलीयुक्तदेहा. 5 a महिहरदति गिरिरेव गज, b मेरा
 मर्यादा 6 b साम श्यामा समुसाइल नदीमध्ये शुक्लिकाया मुक्ताफलाणि वर्तन्ते 7 a सेवालवाल
 शैवालमेव केशा, b फेणुप्परियणु केन एव उपरितन वल्लम् 8 a तोड तोय जलम्, रत्तबर रत्त-
 वल्लम् ॥ विन्ममेहिं जलभ्रम भ्रान्तिश्च, ससउ सदेह 10 b कमळच्छिहिं कमलनेत्रैः. 13 b
 ज व ण यमुना सदयवर्णस्य हरेरेव तुप्यति कृष्णवर्णत्वात् महत्वाच्च 14 b विहत्तउ विभक्तम् 15 तल्लु
 नामि अध प्रदेशश्च

3

दुर्ग—एह उत्तरिबि जाव थोवतइ अति समीहियासए ॥

दिट्टइ जहु तेहि सो पुच्छिउ निह्नुहिउ समासए ॥ ७ ॥

महु कंताइ देवय ओलगाय
देविर दिण्णी सुय किं किअइ
जइ सा तणुइहु पडि महुं देसाइ
वं तो गधधूषेचरकुल्लइ
हेमि ताम आ देवि गिरिफन्नामि
काइ लइ लच्छिविडासरपण्यइ
भंति' म करहि कार मुहु ओवहि
ता हियतल्लइ जहु विण्णइ
हेमि पुत्तु किं पडरपळाई
पम मनेपिणु मणिय बाली
साइ विहु साणई भंई
हुइ लंकयत्थइ गउ सो गौउहु

धूय ज सुइइ पुत्तु जि मगिय ।
सहि केरी लइ ताहि जि विअइ ।
तो पणइणिहि भास पूरेसइ । 5
चारुभक्करुवोइ रल्लिअइ ।
ता इलहेइ मणइ सुणि भक्कमि ।
पहु पुत्तु हुइ देविई विण्णउ ।
मेए करि तेरी सुय होयहि ।
जरयेसेण भकारी अंपइ । 10
परिपाळमि सणेइसम्भाई ।
बळकरं कमलि कमळसोमाळी ।
मेहु व आळिगियउ गिरिई ।
अण्य तणय पडिभाया राउहु ।

पत्ता—सुय लणससिबमण देवइहि पुरउ गिधेसिय ॥

केण वि किहरिण जरणाइहु वत्त समासिय ॥ ३ ॥

4

दुर्ग—पुरणइइस कस परपरिनिविलविरहारहारिणा ॥

जाया पुत्ति देव शुद्धपरिबिदि वररिणि मलयदाहणा ॥ ७ ॥

3 १ A सुवर १ BP 'धू' १ B 'लमाइ' ४ B विण्ण ५ A omits म and reads
कोहि for करहि ६ AP मनेपिणु ७ PB वरकरकमलि ८ Als शुक्कयत्थ against Mas
९ AS जणय तणय

4 १ A 'पल्लवदाहणा' P 'पल्लवदाहणी'

3 1 ओवतइ इतीकमवसरम् समीहिनासध नान्तिवनाभ्यु 2 जहु मन्दगोप निह्नुहिउ
निष्पटम् 3 a पडि महु मा प्रति 4 पणइणि हि क्योदाना 7 a इलहेइ इलहेति बलमइ
11 a पडरपळाई प्रजुप्रकापेन 12 b कमळसोमाळी कमळत् कोमळा 13 a विहु विण्णुवाहु
देव ; साणई सहयेण 14 जरणाइहु कलस

4 1 पुरणइइस हे नगरगनसुई हरहरिणा हे हरहरिण, 2 मलयदाहणा वसुदेवेन
इति वीराणिकी वरा

तं गिस्नुणेपिपणु णरवइ उट्ठिउ
 तेण खलेण दुरियवसमिलियहि
 तलहत्थे सरलहि कोमलियहि
 रुद्धे विणोसिवि सुद्धु रउहे
 सरसाहारगासापियवायइ
 हूरे णवजोव्वणसिगारे
 सुव्वयसंति सधम्म समीरइ
 णासामंगे रुद्धे विणट्ठवं
 णिगगं गय वयधारिणि होईवि
 धोयैइ धवलधरं गियत्थी
 कुसुमहिं मालिय केउहिं मि पासहिं

आइवि ससहि णिहेलणि संठिउ ।
 जुह जायहि णं अंचयकलियहि ।
 चप्पिवि णासिय दिह्मिदिलियहि । 5
 भूमिभवणि घट्ठाविय खुहे ।
 तहिं मि धीय वट्ठारिय मायइ ।
 भजइ ण ट्ठे सति धणमारं ।
 आव जाइ सुदेरि तउ कीरइ ।
 जाणिवि सा दप्पणयलि दिट्ठउं । 10
 थिय काणणि ससरीर पमोइवि ।
 जिणु ज्ञायति पलवियहत्थी ।
 पुज्जिय णाहलसंभेरसहासहिं ।

अस्ता—गय ते गियभवणु ऐकली कण्ण गिरिञ्जिय ॥

अरिहु सरंति मणि धणि भीमं वग्गं भविस्सय ॥ ४ ॥

15

5

पुव्वं—गय सा गियकएण सुरवरघरं अमल्लिणमणिपविसयं ॥

उव्वेरियं केहं पि अलियल्लहि तीप करंणुल्लियं ॥ छ ॥

तं पुज्जिउं णाहलकुल्लवालं
 अंगुलिपाउ दाहि संकप्पिवि
 गंधकुल्लवदयहिं मणमोहे
 हुग्गं विंझवासिणि तहिं हूरे
 पचहिं केसउ माणियमोयहिं

कुहियउं सडियउं जंते कालं ।
 लक्खेउलोहं विरइउं थप्पिवि ।
 पुणु तिसुल्ल पुज्जिउं सवरोहे । 5
 मेसइं महिसइं णं जमदूरे ।
 णं जौइवि दिण्णु जलोयहिं ।

१ P दिण्णेदिलियहो ३ P रुउ. ४ S विणासवि. ५ B दसति ६ AP सुधम्म. ७ A सुदव.
 ८ P रुउ. ९ S जाणवि १० B णिगगं सावयं ११ S होयवि. १२ S पमायवि. १३ A
 धोइयववलधरं १४ B चउइ मि, S चउहु मि. १५ BP3 'धवरं' १६ B एकली.

5 १ A 'धरममल्लिणं', B 'धोर अमल्लिणं', P 'वव धरममल्लिणं', S 'धरममल्लिणं'. २ B
 उट्ठारिय. ३ PS कहिं पि ४ B कुल्लवालं, P कुल्लालं ५ S लकुव्वं ६ BP 'लोहे'. ७ P विरइय.
 ८ AP गधधूयचवं, BS गधपुण्णचवं. ९ S केसवु १० P आयवि

3 b ससहि मगिन्या देवक्या 4 b जायहि आतमात्राया., b दि लि दि लिय हि बालाया..
 7 b तहिं मि भूमिमध्येऽपि. 11 b ससरीर पमाइवि निव्वारीर भुत्त्वा कायोत्तरेण स्थिता.
 12 a गियत्थी परिहिता 13 a मालिय वेष्टिता.

5 1 गियकएण पुण्येन, सुरवरघरं स्वर्गम् 2 अलियल्लहि व्याघ्रात् 3 a तत् व्यङ्गुलम्;
 *कुल्लवालं कुल्लालक्रेन, b कुहियउं कुयितम् 4 b यप्पिवि स्थापयित्वा.

णं मंगलणिहिकलसु मणोह
ण यणघट्ट तमालवलोह
दामोयद दुग्धियर्चितामणि
अरिणरमद्विहिरिदसोवामणि
पविउलभुर्दणमोहदिणमणि
विर्धेण गाह पसारियहत्थहिं

सुहिकरकमलह न इदिदिह ।
छत्रह मोहउ माहउ जेहउ ।
समरगहीरवीरचूडामणि । 10
अणयसियरणकरणविज्जामणि ।
जियेयि पुसु हरिसिय गोसामणि ।
पद्मोवगोवाडिणिसत्थहिं ।

यत्ता—गाहउ कर्त्तरवहिं आलविउ उलियात्तावहिं ॥

बहउ महुमहंथु करगथु जेम रसमावहिं ॥ ५ ॥

18

6

जुधर—धुलीपूस्तेण कंसुजसरेण तिमा मुरारिणा ॥

कीलारसवलेण गोवाळपगोधीदिययहारिणा ॥ सु ॥

एगतेण एउतरमत्ते
महीरउ सोविधि आबहिउ
का वि गोवि गोविंहु छमी
एयहि मोर्लु देव आलिगणु
काहि वि गोविहि पडरु वेळउ
मूळं जलेण काह पप्पालह
एण्णरसिञ्चिउ छायावतउ
मैहिसलिंभंउ हरिणी धरियउ
दोहउ दोहणहत्थु सभरीर
कत्थह भगणमवणत्थुउउ

मयउ धरिउ भमंतु भणत्ते ।
अहविरोलिउ दहिउ पलोहिउ ।
एव महारी मंथणि भग्गी । 5
न तो मा मेळहु मे प्रणणु ।
हरितणुतेय जायउं कालउ ।
गियजउथु सेहियहिं वप्पालह ।
मैयहि समुहु परिधावतउ ।
यें करणियवणाउ गीसरियउ । 10
सुह नुर माहय कीलिउ पूर ।
बोलेवत्थु बालेण पिरुहउ ।

११ S माहउ माहउ ११ B adds after 11a अनुविणु परिणिवउह सुहियणमणि ११ A भवणमो

१५ P गियवि १५ APS वेणह १५ BP कत्थवेहिं १७ A महमहणु

6 १ A दसुहं १ B कसुहं २ P आबहिउ ३ A मयिणि ४ मयणि ५ B सुह
५ A मा मेळउ वरणणु P महु पणु ६ मेळउ मे प्रणणु. ७ P पडरु ७ A मूळं ८ B का वि
९ AS उहियह P उहियहु १ P मायय. ११ ABPS महियिं १२ BP सिञ्चिउ १३ AP
सिणुणा १४ P णउ करवणाउ १५ P चवळ कउ

8 b इदिदिह भमउ 9 a दलोहउ पवत्थुह ७ माहउ उहमीमत्ता 12 b गोवाणि गियोदा

6 4 a महीरउ छेहमव अंथु (जोहणु आंहु) आबहिउं भग्ग, 5 b मयणि
दविमाण्डम् ॥ a मूळं मूलां 9 a वप्पारसिञ्चिउ दुग्धवादेवत्थु छायावतउ सुपावाउ ७ मायहि
महिष्णा 10 a विठेवउ शिउ. 11 a दोहउ गोवाळ 12 b बालवत्थु उर्णक

शुंजाहोदुरयैरयैओणं

कत्यह लोणियपिहु गिरिक्खित्त

घत्ता—यसरियकरयैलेहिं सद्धतिहिं सुहंसुहकारिणिहिं ॥

महिह भियहिं थिय घरयम्मु न लग्गह पारिहिं ॥ ६ ॥

मेह्हाविउ दुप्पत्तेहिं उंसोणं ।

कण्हें कंसहु णं अज्झ भक्खिज्जं ।

15

7

दुवहं—णउ भुंजंति गोघ कयससय पिज्जियणीलमेहं ॥

केसयकायकंतिपविल्लित्तं दहियहं अज्जणाहं ॥ छ ॥

अयभांयणि अर्धलोहवि भावह

भियपटिबिंदु विहु योह्हावह ।

हत्तर णंदु लेणिणु अवउडह

तहु वरयल्लु परमेसउ मंडह ।

अम्माहीरणेण तंविज्जो

जिहंघइयउ रंरियंविज्जह ।

5

हल्लव हल्लव जो जो मण्णह

तुज्झु पसारं होसह उण्णह ।

हल्लहत्तरभायर बेरिअगोयर

तुहं सुहं सुयहि देव दामोयर ।

तहु घोरंतहु णदर्यल्लु गज्जह

सुत्तविउंहु ण केण लहज्जह ।

पुहण्णाहु किर कासु ण वल्लहु

अल्लउ थर सुरह मि सो बुल्लहु ।

वियलियपयकिलेससंतावें

पसरंतें तहु पुण्णपदावें ।

10

णंवहु केरउ गोउल्लु णंवहें

महुरहि पारि मसाणह कंवेह ।

महि कंयह पडंति णपक्खत्तां

सिविणंतरि भग्गहं वुंवल्लत्तां ।

घत्ता—णियंवि अलति दिस कसैं विणयण भियच्छिउ ॥

जोइससत्यणिहिं विउ वरुणु पैम आउच्छिउ ॥ ७ ॥

१६ AB "शितुउ. १७ APS "पओयए. १८ APS जओयए. १९ A "करयल्लु सद्धतिहिं.
२० P "सुहिसुहं" २१ APS "कारिहिं.

7 १ B "भावणि २ P अवलोयवि, S अवलोवह. ३ AP णविज्जह. ४ AP परिअदि-
जह ५ A1' वहरियगोयर, S वहरिअगोयर. ६ A णक्ख. ७ APA1b. सुचु विउहु, B उहु विउहु.
८ B केण वि णज्जह. ९ P सुहसुहं १० P णदउ. ११ P मसाणहि १२ A कदउ. १३ ABP
णियच्छत्ता. १४ P णियवि १५ A जाउ

13 a गुंजाहोदुरययपओए शुंजाकृतकन्तुकप्रयोगेण. 14 ॥ लोणियपिहु नवनीतपिण्डा.
10 महिह विष्णी कुण्णे इत्यर्थः.

7 2 दहियह गोषाः कृष्णवर्णदधिनि कृतसदेहाः, अज्जणाहह कज्जलिमानि. 3 a घय-
मायणि घृतमानने निजप्रतियिम्भ विलोकयति. 5 a अम्माहीरणेण जो जो इति नादविशेषेण, तदिज्जह
निद्रा कार्यते, 6 जिहंघइयउ निद्रातुम्भः. 8 b सुचल्लिउहु अयमानन्तर उत्थित जाग्रतुं सन्. ण केण
सइज्जह केन न थपते अपि तु सर्वेण गच्छते, अथवा मायाप्रधानत्वात् न केनापि शस्यते. 10 a वियलि-
येत्ता दि विगलितप्रगाद्धेयसत्तायेन. 11 a णदह वृद्धिं प्राप्नोति. 13 भियवि इत्थं. 14 जोइससत्य-
णिहिं णोत्तिप्पणाज्जपवीणा, विउ विमः, आउच्छिउ वृष्टः.

8

दुपार—मनु मनु चक्कयन जइ जाणसि जीवियमरणकारण ॥

मह कह विद्विषसेण इह होही असुदसुहावपारण ॥ छ ॥

कि उप्पाय जाय कि होसइ
मुज्जु जराहिव बलसपुण्येउ
ता चितवइ कसु इयछावइ
इउ जाणमि सससुय विधिवाइय
इउ जाणमि महिवइ मज्जरामय
इउ जाणमि पुरि महु षउ पालइ
इय चित्तु आम विहाणइ
सध्याहरणविहसियगउउ
ताउ भणति भणहि कि किजइ
को मारिजइ को बसि किजइ
इरि बल मुणवि कइसु को जिणइ

तं विमुणिवि मिम्मिचित्ठे घोसइ ।
गरुयेउ को वि सत्तु उप्पण्णउ ।
इउ जाणमि भससु रिसि जायउ । 5
इउ जाणमि महु अत्थि ण दाइय ।
इउ जाणमि अर्हइ किर को पइ ।
जवर कालु क किर ण गवेसइ ।
तिलु तिलु छिनेइ द्वियवइ राणउ ।
सो तहि देवपाउ सपत्तउ । 10
को वधिवि पधिवि भाणिजइ ।
किं वसि करिवि वसुइ हुइ दिजइ ।
को लोहिवि इज्जबहिवि भिण्णइ ।

बधा—भणइ जराहिव रिउँ कहि मि पत्तु महु मच्छइ ॥

सो तुम्हैर हणइ तिह छिउँ अमण्यरहु मच्छइ ॥ ८ ॥

15

9

दुपार—कहियं देवपाहिं ओ वसधिल्लमि बलइ बालमो ॥

सो परं देव ण भति क विवसु वि मारइ मच्छाउल्लमो ॥ छ ॥

जाणिइ अरिबारे

ता तहिं बबसदि ।

कसापलै

मायावेसै ।

बल मायाविणि

धारण ओइणि ।

5

8 १ A बाणसु २ A महु कहना भविस्सिही विच्छिउ अमुहरणावपारण P मह कहना
भविस्सिहीदि निणउउ अमुहरणावपारण १ AS नेमिचित्ठ ४ AB उप्पण्णउ ५ B गरुयेउ S गरु-
य ६ S बाणवि throughout ७ AP अर्हइ को किर पइ ८ ABPS किं किर ९ A
छिजइ, १ A ता चरवि देविउ मिमनेउउ ११ A करहि वि दिजइ को मारिजइ P करेहि विहिं
जइ को मारिजइ १२ AP रिउ पत्तु कहि मि S रिउ कहि विपत्तु १३ A तुम्हैर हणइ १४ S जिय

9 १ ABP निव

8 2 अवकारण अवतार 3 a उप्पाय उलाता 6 a उल्लसुय भगिन्या पुत्री
६ दाइय दायाद 7 a महिवइ जलण 8 a पुरि महुत

9 4 b मायावेसै मनुवेण कसोदासनेण 5 a बल कसुका ६ ओइणि अन्तर

वच्छरवाउलु
जयसिरितण्डु
पासि पवणी
पभणइ पूयण
पियगरुडद्ध
दुद्धरसिल्लउ
त आयणिणवि
खुयपयपंडुरि
हरिणा णिहियउं
णं ससिमंडलु
सुरहियपरिमलु
सियकलसुपरि
कहुणं खीरं
जणणि ण मेरी
जीवियहारिणि
अल्लु जि मारमि
इय चित्तं
माणमंहत्तं
लच्छीकत्तं
वत्तंदि पीडिय
विट्ठि^१ तजिय
अणु वि ण मुक्की
अलहि रसतहि
भीमं धालं
लोहित सोसित
दाणवसारी
हियरुहिरासव

गय तं गौडलु ।
णवमहु कण्डहु ।
अ त्ति णिसण्णी ।
हे^२ महुसूयण ।
आउ यणद्धय ।
पियहि यणुल्लउ ।
अंगउं मणिणवि ।
वयणु पेओहरि ।
राहुं गहियउं ।
सोहर यणयलु ।
णं णीलुप्पलु ।
विभिउं मणि हरि ।
जाणिय खीरं ।
विप्पियगारी ।
रक्खसि वईरिणि^३ ।
पलउ समारमि ।
रोसु वइत्तं ।
भिउडि करत्तं ।
देवि अणत्तं ।
मुट्ठि ताडिय ।
थामे णिजिय ।
अहंदि चिलुक्की ।
सुण्णु हसंतहि ।
कयकल्लोले ।
पलु आफरिसिउं ।
अणइ भडारी ।
मुह मुह केसव ।

25

80

१ AP अहो १ P पयोहरे ४ P राहु व ५ S विट्ठिउ ६ P वयरेणि, S वेरिणि ७ A
adds after 20 b वूरविमारिणि, मायाओइणि, B adds it in second hand ८ S
मारवि, समारवि ९ P माणइ मत्तं १० B दनिहि ११ BP मुट्ठिहि, S म-
१३ AP राणु वि १४ P पदेहि १५ AP तहि अणइतहि

७ वच्छरवाउलु तर्जनयन्दुक्तम् 7 b णवमहु कण्ड
राघमी 10 b यणद्धय दे पुन 11 a दुद्धरसिल्लउ
पाण्डु 11 b राहु गहियउ राहुणा गहीतम् 24 b देवि सी ।
25 a गलहि रसतहि दुर्जनाया अन्द कुर्वत्सा . 32 a हियरुहः

७ b थाम वलेन.
राखव हवरकमय

जदान्वज
 कसु न सेवमि
 जहि तुहु अच्छहि
 तहि णट परसेमि
 भेहि जगहण ।
 रोसुं न दावमि ।
 कील समिच्छहि ।
 छेनु न गवेसमि ।
 यत्ता—इय कयति कलुषु कह कह व गोविंदे मुक्ती ॥
 गय देवय कहि मि पुणु जदविनीसि थ दुकी ॥ ९ ॥

30

10

दुपर—वरकांडलियवसरवहरिण गार्हयगेयरससय ॥

रोमयंतैयकयोमहिसिउलसोहियपयसय ॥ ५ ॥

अणेहि पुणु दिनि	तहि निर्यपगणि ।	
जणमणदारी	रमर मुरारी ।	
घोहर नीर	छोहर नीर ।	5
भजर कुम	पेछर डिम ।	
छोहर महिय	चककर दहिय ।	
कहर बिधि	घरर कलधि ।	
इच्छर केहि	करर पुयोहि ।	
तहि भयसरय	कीलागिरय ।	10
कयजणराहे	पकयणाहे ।	
रिजणा सिद्धा	देवी दुद्धा ।	
अयर घोरा	सयदापारा ।	
पचा गोई	गोघरैरु ।	
अकचलंगी	दलियमुयरी ।	15
उपरि एती	पलठ करती ।	
विद्धा तेण	महुमहेणेण ।	

१५ B दोह १६ S परसवि १८ S दुच्छ समासवि १९ APS उरिंदे २ APS णिवाहु

10 १ A "कारलेय" BS "काहिल" २ AP गार्हयगोवरसय ३ B रोमयकयदुलगी
 ४ P "महिचोठळ" B "महिसिठले" ५ A अण्णहि मि दिने P अण्णमि दिने ६ AP नियमवणे
 ७ PS छुर ८ A कलधि ९ B केही १० B दुवाली P उवालि ११ S गोपह १२ BS यती
 १३ A महमहेणेण

10 1 वसरव वहरिण येनुवदविने गेवरससय गेवरससते 7 a महिय मयितं
 सफ़्म, 8 a चिधि अमिम, ८ चळधि चर्ला प्वाळाम्, 9 a केलि कीलाम्, ८ दुवालि गुहार (T)
 11 a कयजणराहे हवन्नयोमे 14 a मोह योदुल्ल, 15 चकचळगी धनेण चळगरीरा 16 a
 एती भागच्छटी ८ पलठ प्रलथी विनाथी मरकम्,

रौप्यं पद्मया
 रविकिरणार्वाहि
 इदार्वाणि
 दिदिचोरेण^{१०}
 पवलवललो
 उह्वेल्ल
 सीयसमीरं
 सिमुकयछाया
 ता सो दिव्यो
 इय सहतो
 तमुह्वेल्ल
 णवकयकण्डहु
 जाणियमग्गो
 अरिबिज्जाण
 ता परिमुक्कं
 मारुपयवल्लं
 अग्गे धुलिय
 कीलतेण
 वल्लवतेण

गौसिवि विगया ।
 अवरेदिणावहि ।
 पियेचारिणि ।
 देद्वोरेण ।
 वद्धो वालो ।
 गिहियेउ गिल्ल ।
 सीरिणितीर ।
 विगया माया ।
 अग्गो अग्गो ।
 पेरियहुतो ।
 पेरियणियपुल्ल ।
 जयजसतह्वहु ।
 पण्हंइ लग्गो ।
 मयणयराण ।
 गियेउ दुक्कं ।
 तरुवरुयल्लं ।
 भुयपडिखलिय ।
 विह्वसतेणं ।
 सिरिकतेणं^{११} ।

धस्ता—होदवि तालतरु रगतहु पहि तडितरलइ ॥

रपेजसि केसवहु सिरि धिवर कडिणतोल्लेहलइ ॥ १० ॥

१४ P वाएण हवा. १५ P नातेवि मया. १६ P किरणरहे. १७ P अवराग्मि
 १८ AP नदाणीए १९ AP पियवरणीए २० A दहिचोरेण. २१ A दद्वोरेण २२
 उहुक्कल्ल, S उहुक्कल्ल २३ P गिहियो, S गिहो २४ AP परियदतो, B परिअहतो, S
 यट्ठो. २५ B तमद्वुल्लं २६ A पयल्लियं, B पयणव २७ A धणवतण्हो, P अणपयण
 २८ A' सहसा कण्हो २९ AP पञ्चा ल्पग्गो ३० AP साहगुक्क ३१ II सिरिकतेण ३२
 रक्खसे ३३ P'S ताउह्वल्ल

10 a रवि किरणावहि किरणाना पये मार्गे आधारे इत्यर्थ, b अवरेदिणावहि अवरदिन
 20 a इदार्वाणि यथोदया, b सियचारिणि अर्वा सह गतया 21 a दिदिचोरेण धृतिविना
 25 a सिमुकयछाया पुत्रवन्धना कृतशोभा. 27 b परियहुतो आकर्षन् 29 a णवकयक
 नवीनपुष्पवृक्षरूपस्य 35 a शुलि ॥ पतितम्, b भुयपडिखलिय भुवाम्या वृक्षस्य स्तलितम्.

दुवर्ग—सिरिरमणीविलासकीलापरि वच्छुबळे घटतर ॥

न भरिपरसियाह विहिलुकर दसदिसिबंदि पढतर ॥ ५ ॥

तार हच्छेय	सो पडिच्छेय ।	
पंजळीयरो	कीळप्यायरो ।	
गयणससुय	बाह सिंदुरें ।	5
सा महारवा	तिर्यमेरवा ।	
पुछिलाळिरी	कण्णचाळिरी ।	
घाह्या खरी	बिभिर्नो हरी ।	
उल्लतिया	नहि मिळतिया ।	
वेपवतिया	दीहवतिया ।	10
उधरि पतिथो	घाउ दैतिमो ।	
अवधासिणा	आपवेसिणा ।	
भाह्या करे	धारिया छुरे ।	
मेहसगहे	मामिया गहे ।	
छुहु चाबिरी	कसकिर्केरी ।	15
तीर ताडिभो	महिहि पाडिभो ।	
ताळवकभो	पुणु विवकभो ।	
अगि न माहभो	तुरउ धाहभो ।	
गहिरहिसिरो	जीवहिसिरो ।	
ककिर्गोणो	मोह बुळणो ।	20
हिलिहिलंतभो	महि दळतभो ।	
कालचोहभो	पहुं जोहभो ।	
कच्छिधारिणा	बिचधारिणा ।	
सुखिणपिजरे	बाहुपजरे ।	
सुहिवि पीलिभो	मॅपजि बालिभो ।	25

11 १ A विळावि २ A वृहस्पत ३ P हच्छि ४ P पडिपच्छि ५ S सेदुय
६ A मिचमहरवा B लिम्ब महरवा ७ B पुच्छ ८ S विदिभो ९ B मिनिविधा १ BP
यतिया ११ B दतिवा १२ AP छुवचाविरी १३ P छेळरी १४ B वकिवा १५ B नाव
१६ A सो पराहभो १७ AS गवण

11 0 पढतर पठलि २ विहिलुकर विवाया छेदिकानि ३ ६ सिंदुर कडुके श्रीभारत
6 a महारवा महायन्दा खरी 11 ६ घाउ प्रहरम् 12 ६ बापवे विधा बापवेनेन 14 a मेहस
गहे मेधानां संप्रहो यत्र भाव्यो 10 a चाबिरी चरणवील 18 ६ तुरउ अथ 19 a गहिर
हिसिरो गम्भीरदेवारव्युक्त 25 a सुहिवि विन्ना बाहुमणे

मोडियो गळो
रणि ह्यो ह्यो

पत्तपच्छलो ।
णिमाओ गओ ।

घत्ता—ता असोय मणिय अइपुलिर्णइ पाणियहारिहि ॥

णंदणु कहि जियइ जायउ तुम्हारिसणारिहि ॥ ११ ॥

12

दुवई—मरुहपमहिरुहेहि पहि चाणिय गइह मुरय चूरियो ॥

अवरु उदूरेलमि पां वडउ जाणहुं वालु मारियो ॥ ७ ॥

घाईयं तासुं जसोय विसदुल
पडउ उक्खेलु मेळिभिं घल्लिउ
फणिणरसुरह मि अइमइसइयउ
किं दरेण किं मुरए वडउ
अण्हिं दिणि रच्छहि कीलंतहु
बुहु भरिदुदेउ विसवेसैं

सिगजुयलसंचांलिपगिरिसिलु
सरवरवेहिजाळविलुलियगलु
गजिंवेवपूरियभुवणतर
ससहरकिरणणियरपंदरयक
किर मइ गिचिईं देइ आवेपिणु
मोडिउ कहुं कउ ति पिसिंदहु

करवळजुयलपिहियचलथणयल ।
महु जीविणं जियहि सिद्धु योळिउ ।
हंरि मुहि बुगिबि कडियलि लइयउ ।
मायइ सयलु अंगु परिमटुवं ।
वालहु धौलकील ठरिसंतहु ।
आइउ महुरावडभाएसैं ।

सरसुरंगउक्खवधरणीयलु ।
कमणिवायकंपाविपजळयलु । 10
ईरवरवसहुणिघहकयभयजक ।
गुरुकेलाससिंहसोहाईव ।
ता कण्हें भुंयदइं छेपिणु ।
को पडिमहु तिजगि गोविंदहु ।

घत्ता—ओहामियधवलु ईरि मोर्वलि घवळंहि गिजइ ॥

धवलाण वि धवलु फुलधवलु केण ण धुयिजइ ॥ १२ ॥

15

१८ B पुलणए.

12 १ B Als. उदूखणमि, P उदूखळमि. २ B चाबिय. ३ A ठाम, ॥ ठाम ४ B चित्तुल्ल, P चित्तुल, S दुधुल ५ B "गुवळ" ६ B "गणयल्ल. ७ S ओक्खल्ल ८ P महेवि. ९ BP जोएण १० A हरिमुहु बुगिबि. ११ AP वालखेल. १२ PS आवउ १३ AP "सचाळिरिथिरिल्ल. १४ A "गुरागुरयधरणीयल १५ A गजगरव" १६ A हयवर" १७ P पुइ केलाउ", BAls. गिरिनेआउ" १८ S "सिहरि" १९ B सोहावक २० J' णिवड. २१ PS "दइहि. २२ A कयु. २३ P हे. २४ B गोउल" २५ B धवलिहि

26 ७ पत्तपच्छलो प्राप्तपश्चात्ताम पूर्व, पश्चात्तलो मोटिन. 28 णइपुलिणइ नदीउटे, पाणियहारिहि पानीयहारिणीमि खोमि

12 1 मरुहयमहिरुहेहि वायुतादित्तुसै. 4 ७ महु जीविण मम जीवितेनापि त्व जीव दीर्घकालम् G ८ मुरए अंघन ९ ८ अरिदुदेउ अरिहनाम राक्षस, विसवेसैं नृपमवेण, ७ महु रा- वइ" वस 10 ७ कमणिवायं चरणनिपातेन 11 ७ हरवरवसइ" स्वस्य रूपम्. 12 ७ गुरुं गरिष्ठ. 14 ८ विदिदहु रूपमपानस्य 15 ओहामियधवलु तिरस्कुतवृषम्, धवल ॥ धवलगोते,

13

दुषई—सा कलयलु सुणति गोवालहं पञ्चजलोद्वाहिणी ॥

सुयविलसित मुञ्चति निम्माय नियगेदु अवगोहिणी ॥ छ ॥

मणइ जणणि ण तुआलिहि चायउ

किह पलहु मोहिउं ओत्तरियउ

हरिहरसहहिं सई सुउ जुज्झइ

केचिउं मइ कुमार सतावहि

तेयवतु सुउ पुत्त निरुत्तउ

परमहि मइकोहिहि आइइउ

महुरापुरि धरि धरि धम्मिआइ

सइ देवइमापरि उल्लिख

गोमुहकूवउ सहउ वट्ठी

खलिप णवगोहिं सइ आइं

पुपु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ ।

वइवसें सिउ सई उव्वरियउ ।

अणु ओवेइ मइ हियवउ उज्झइ । 5

आउ ऊहुं धरु ओल्लिउ भावहि ।

रक्खहि भण्णाणउ करि हुत्तउ ।

आहुवलेण वालु जणि रुढंउ ।

णवगोहिं पत्थिवहु कहिअइ ।

पुत्तसिणेइं केणु वि ण संठिय । 10

ओयइ मिउ मडिभि बीसत्थी ।

सइ रोहिणिउण्यण चइइं ।

यत्ता—मायइ महुमहणु बहुगोवइ मणि निरिक्खिउ ॥

वयपरिवेदिपइ कलहसु जेम ओल्लिखउ ॥ १३ ॥

14

दुषई—हरि मुयमुपलदलियवानवबलु णवजोव्णविपारमो ॥

उगयपठरपुल्लय पडइण्ठे वल्लुपवेण ओरमो ॥ छ ॥

मायव सिउकीलारयउगिउ

मुयमुपलउ पसरतु निरुत्तउ

इल्लरेण विट्ठिइ मालिगिउ ।

जायव हरिसें अणु सिणिअउ ।

13 १ A अणणि आलिहि ओ जायउ १ P वहु B वहु १ P मोविउ टाय ४ PS

इयत्त ५ AS ओवइ P ओवउ १ B आइ धरि ७ ABP add after B ७ केसु ण जाणइ किं मणि मूढउ k gives it but scores it off BP add further वयविरमाणु (B माणणि) जायउ पोटउ ८ H पुत्तसिणेइं १ AP कई मिण वठिय १ P गोमुहु कु वि वउ B गोमुहु कूवउ ११ APS ओउउ

14 १ PS 'हुपल' १ P ओवण' ३ P वहुदेवेण ४ APS 'हरिगिउ

13 2 मुणति ज्ञातवती 3 ७ पुपु इत्यादि मम गये लं रखस यवोत्तम 4 ८ ओत्तरिय पउ सुद्धा आमत 6 ७ आहु गुच्छाव भावहि वेतसि आमत 8 ८ परमहि मइकोहिहि मइ कोटया परमप्रकये 11 ८ गोमुहकूवउ सर्ववीर्यमयो गोमुहकूय, गोमुहकूप किमपि मिथ्याजनम्, सहउ सहताम् वट्ठी उपोषिता 12 ७ चइइं पन्द्रामेन 14 वयपरिवेदिपउ वकपरिवेदिप

14 ३ पडइण्ठे शीघ्रम्, B ८ रवरंमिउ रवोप्रसिउ

चित्तिवि तेण कसेपेसुण्णउ	आलिगणु वेतेण ण दिण्णउं ।	5
गाढसिणेहवसेण णयंतइ	आप्पाविय रसोइ गुणवतइ ।	
गंघकुल्लदीवंड सजोइउ	भोयणु मिट्ठउं मायइ दोइउ ।	
अल्लयदलइहिओल्लियकूरहिं	मडयपूरणेहि धियंपूरहिं ।	
णाणाभरुखविसेसहि जुत्तउं	सरसु भाविभूणाहें भुत्तउं ।	
सिरि णिवद्धेहीदलमालइ	कवणदंड दिण्ण गोवालहं ।	10
सुपेहइं मउदेवगइं वत्थइं	भूसणाइं मणिकिरणपसत्थइं ।	
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ	तणयहु उंप्परि यीहें सवतिइ ।	

घत्ता— पोरिसरथणणिहि गुणगणविमोवियवासंउं ॥

कुलहरलच्छियइ ण सरं अहिसित्तउ केसउं ॥ १४ ॥

15

दुवई—दीसइ णदणंउ पागयणु जणणीदुइसित्तओ ॥

णोइ तमालणील्लु णवजलइव ससहरकरविलित्तओ ॥ १५ ॥

कामधेणु णं सरं अवइण्णी	गलियथण्यणि जणणि गिसण्णी ।	
आव ण पिसुणु को वि उवेल्लक्खइ	ता तहिं संकरितणु सरं अक्खइ ।	
खल्लियणि भुक्खासमरीणी	उववासेण पमुच्छिप राणी ।	5
तेणियं भणिवि भुपहिं समत्थिउ	दुक्कलसु देविहि पल्लत्थिउ ।	
हरि जोइवि णीवतहिं णयणहिं	मणि आणदु पणच्चिउ सयणहिं ।	
संवलाहणमिसेण सफालिवि	आउच्छणमिसेण सभासिवि ।	
भोयणाइ होइवि संतोखहु	गयइं तारं महुत्ताउरिवासहु ।	

५ B कहु. ६ P नमतइ ७ P "दीवय", S दीवइ ८ A मडियं. ९ ABS धियक्खहिं
१० A भाउभूणाहें, BK भाइभूणाहे ११ B सुम्हर, PS सण्हर. १२ P उप्परे. १३ B खौर.
१४ S "विग्हाविय". १५ S वासउ १६ S केवउ

15 १ B णदु णहु. २ B णमि ३ B "यणयलि. ४ B ओलक्खइ ५ A तिं इय भोएवि.
P तें इय भोएवि. ६ BAIs. समुत्थिउ ७ A omits this line. ८ BS जोयवि ९ A omits
8a. १० A भोयणाइ. ११ P होयवि

0 a ण वतइ नतया मात्रा. 8 a अल्लयदलं पत्रमाजनम्, "दहिओल्लियं दधिमिधे: 0 b
मा वि भूणाहें भविष्यद्भूनाधेन. 11 a सुण्हर सुहमाणि.

15 1 णदणहु नन्दस्य आनन्द. 3 b गलिययण्ययणि गलितस्तन्यस्तनी 5 a सुक्खा-
समरीणी क्षुधाभ्रमभ्रान्ता. 6 a तेणिय मणि वि तेन सीरिणा इय इदं भणित्वा, b समत्थिउ उद्धुतः
उच्छित्तः, c देवि हि देवस्युपरि 7 a णीवतहिं णयणहिं आप्पायमाने शीवीभवन्निमैधे,
b सयणहिं स्वनेनेपु मनसि. 8 a सवत्थहणमिसेण विलेपनच्छन्ना, b आउ उउणं वय गच्छामः
इति पृच्छा.

काले अंतं छन्दः पञ्च

आसादागमि आसारत्तः ।

10

वृत्ता—हरिपद पीयूषतः वीर्य अनेके तं सुरधनुः ॥

उपरि पञ्चोदरः न बहलमिह उपरिधनुः ॥ १५ ॥

16

दुर्गा—विद्वदं इवचाव पुणु पुणु मेह एयिरहिपवमेयहो ॥

अन्यारमयवेति न मनसतोरेण अहमिकेयहो ॥ सु ॥

अनु अन्तः	अन्तः अन्तः ।
हरि भर	हरि भर ।
तदपदः	तदि पदः ।
धिरि पुनः	सिद्धि पदः ।
मह वर	तद पुनः ।
अनु अन्तः वि	गोडनु वि ।
नित एधित	अपतसिद्ध ।
अपतर	किर भर ।
आ लव	धिरमाव ।
अरिण	अरिण ।
अन्तः अन्तः	अन्तः अन्तः ।
अन्तः	अन्तः ।
सुरपुर	सुरपुर ।
मिरपदि	अन्तरि ।
महिरव	विद्विरेव ।
तमजवि	पापविरे ।
महिविप	अग्निमिप ।
कुण्डुवर	विपु सुपद ।
परिपुनः	अन्तः अन्तः ।
अन्तः	हरिपदः ।

5

10

15

20

११ APS नोन सुतरणु

16 १ AP अन्तः अन्तः २ S अन्तः अन्तः ३ A अन्तः अन्तः ४ P अन्तः अन्तः ५ AB अन्तः अन्तः

10 a अन्तः अन्तः ११ व अन्तः अन्तः १२ व अन्तः अन्तः १३ व अन्तः अन्तः १४ व अन्तः अन्तः

16 १ अन्तः अन्तः २ व अन्तः अन्तः ३ व अन्तः अन्तः ४ व अन्तः अन्तः ५ व अन्तः अन्तः ६ व अन्तः अन्तः ७ व अन्तः अन्तः ८ व अन्तः अन्तः ९ व अन्तः अन्तः १० व अन्तः अन्तः ११ व अन्तः अन्तः १२ व अन्तः अन्तः १३ व अन्तः अन्तः १४ व अन्तः अन्तः १५ व अन्तः अन्तः १६ व अन्तः अन्तः १७ व अन्तः अन्तः १८ व अन्तः अन्तः १९ व अन्तः अन्तः २० व अन्तः अन्तः

तडाई	णडाई ।	
कापरई	वणयरई ।	
पडियाई	रडियाई ।	25
धित्ताई	चत्ताई ।	
हिंसाळ-	चंडाळ ।	
चंडाई	कंडाई ।	
तावसई	परवसई ।	
हरियाई	जरियाई ।	80

घसा—गोवद्वर्णपरेण गोगोमिणिमाह व ओइउ ॥

गिरि गोवद्वर्णउ गोवद्वर्णेण उच्चाईउ ॥ १६ ॥

17

दुवई—ता सूरसेपरेई दामोर्य वासारसंघणो ॥

गोवद्वर्ण भणेचि हकारिउ कयगोजुहवद्वर्णो ॥ छ ॥

कर्णै बाहुद्वंदपरिपरियउ	गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।	
अलि पवहंसु जंतु ण उवेक्खिउ	धारावरिसे ^५ गोउल्लु राक्खिउ ।	
परउवयारि सजीविउ दैतहं	दीणुद्वरणु विहसणु संतहं ।	5
पविमल किस्ति भमिय मैहिमंडलि	इरिणुणकह हई आहंडलि ।	
कालि गलंतइ कंतिइ अहियई	कलिमलपंकपडलपविरहियई ।	
महुरापुरवरि अमरहिं महियई	अरहंतालइ रयणई णिहियई ।	
तिण्णि ताई तेलोक्कपसिउइ	रघटंकारवेइसुहणियई ।	
तं रयणसंघं कहिं मि णिरिक्खिउ	पुच्छिउ कंसं वरुणं अक्खिउ ।	10
णायामिज्झ विलहरसयणं	जो जलयर आकरइ वयणं ।	
जो सारंगकोडि गुणु पावइ	सो तुज्झु चि जेमपुरि पडु दावइ ।	

१ B वडियाइ. ७ AP रत्ताइ. ८ A रडियाइ ९ A गोवद्वर्णपरेण, P गोवद्वर्णवरेण. १० A उच्चायउ, S उच्चारउ.

17 १ S दामोर्य. २ D वासारसु ३ S परिवरित. ४ A उवेक्खिउ, BP उवक्खिउ. ५ P ^५वरिहो, Als. वरिहं against Mas ६ A पवहमडलि. ७ S हुरै. ८ AP ^{१०}परिहियइ. ९ S रयणत्तिउ १० BS गुण ११ P ^{११}पुरे.

26 S चिचाई क्षितानि 30 a दरियाइ भय प्राप्तानि, ॥ जरियाइ ज्वस्ताप.. 31 गोवद्वर्णपरेण वेनुद्विकरेण, गो गो मि णि^{१०} शू लक्ष्मीय

17 4 a उवेक्खिउ निराद्वयम्. 7 a कंतिइ अहियई कान्त्वा अविकानि. 8 b अरहं-
तालइ जिनमन्दिरे 9 b स्व^{१०} शाल, °टकार^{१०} वनु, °देहसुह^{१०} नागवय्या. 10 b वरुणं नैमित्ति-
केन विप्रेण 11 a णायामिजइ न डु खीक्खियते, b जलयर शस 12 a सारंगकोडि गुणु पाव-
धनुश्चटपपति.

यसा—उगसेणसुयण विदुरधैरासि तारिज्वड ॥
तेषु यसादिवाह अरसिधु समरि मारिज्वड ॥ १७ ॥

18

युयर्—पत्तिथ कस कुसलु जड वेकसमि पत्ता मरणदासरा ॥
पूयण विथडसयडजमलकुणतलवरदुहियदयवरा ॥ ४ ॥
जिसा जेण गदगोवालें पदिमडमयणदपुत्तालें ।
जाडहाणु पडु मणिथि य मारिड जेण अरिदुवसहु भोसारिड ।
कुलकंडवविडविदिण्णासि सत्त विथड वरिसतइ पाकेसि । 5
गिरि गोवडणु जे वेवहाड सो आणमि मुम्हारड दाहड ।
जीविड सहु रजेण हरेसइ इवहु पोरिहु काइ करेसइ ।
त मिसुणिथि गिथदुविसहायं पुरि डिडिमु देवाविड राय ।
ओ कणिसयणि सुयड धणु पावइ संयु ससातें पृथिनि दावइ ।
तहु पहु वेई वेसु दुहियइ सहु तीं धावयड गिथहु सर्ग महु महु । 10
यसा—यसदिहल वत्त गय मडलिय भलेस समामेय ॥
य गणियारिकय दीहिरकर मयमेसा मेष ॥ १८ ॥

19

युयर्—भाणु सुभाणु याम विसकयर वरजरसिधणइणा ॥
सपत्ता तुरंत जडपावडि थिय कचिर्वससदणा ॥ ४ ॥
भरिकरिदतमुसलहय कलुसिय अर वि थो वि मरदिवाहि विथसिय ।

१२ ABPS विदुरासि १३ PS मरलेहु १४ B मारेवड

18 १ AP 'जुलतकल' २ B मितड ३ A कय' P 'कर' ४ B पावति
५ AP जेणवापड ६ B बाणमि ७ P गहो ८ A वेसु वेइ ९ B दुहिय १ BAla ता बाहय
गिथ होसइ महु महु ११ B समामेय १२ P दीहिर १३ AP मयमच १४ B गय

19 १ PS मरले' २ AP जडपावडे ३ A कचि' ४

13 विदुरधैरासि दु सान्धकारमेणि

18 1 पत्तिथ मनीति कुड २ जमलकुण सादरीहलपुम्मा, उक ताडहल 'सर
दुहिय मदेमी 4 a जाडहाणु राखलो'रिड 5 a कडवविडवि कदम्बहल ७ a पावइ
नामपति 10 a दुहियड सहु पुम्मा वर ६ गिथहु जणाना निवइ सयहु मय मय इति मणन्, मे सर्व
मविष्मतीति वाञ्छया 12 गणियारिकय इतिन्वा कुटे

19 1 भाणु दुभाणु भानो पुन सुभाड विसकयर रूपमरुन्वी २ जडपावडि यमुना
तटे ससदणा स्वरया

कौली कंतिह जइ वि सुहावइ
जइ दि तरंगहि चंदेलहि वचइ
जइ वि धीरि वेष्टीहर दावइ
पविउलु दिहुं सिचिहँ पमुकउं
तणकयवलयविहसियधिरकर
ससुसिरवेणुसइमोहियजणु
कूरणिवधणवेदियकंदलु

तो वि तंव जणघुसिणँ भावइ ।
तो वि तुरंगहं सा ण पडुवइ । 5
तो वि ण दूसहं सपय पावइ ।
गोवविर्दुं साणंदु पडुक्कउ ।
वर्णकणियारिकुसुमरयपिंजर ।
काणणधरणिघाउमंडियतणु ।
कंदलदलपोसियमहिसीउलु । 10

वृत्ता—गुंजाहलजडियदइयविहत्थु सचछिउ ॥

महिबइतणुरुहेण आसणु पडुक्कउ वोछिउ ॥ १९ ॥

20

तुवई—भो आया किमत्थु किं जोयइ दीसइ पवैर हुजया ॥

पमणइ णंइपुत्तु के तुम्हई कहि गंतु समुजया ॥ क ॥

अम्हई णंदगोव कुड बुत्तउ
मणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ
धइ आपसहुं महुणपट्टणु
तहि विरपवि सरासणवेण्णु
पुल्लयवसेणुगयरोमंभुय
हुवं मि जौमि गोविंदे भासिउं
तवणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ
तं णिंसुणेपिणु वालें वालउ

आया पुच्छहुं भणहुं णित्तउं ।
अइमहीसर रिउसधारउ ।
संखाऊरेणु फणिदल्लवट्टणु । 5
कण्णारयणु लएसहुं वणधणु ।
तं णिंसुणिवि जीयंतं णियभुय ।
करमि तिविहु अं पई णिहिसिउं ।
हालिउ किं नृबधीयउ माणइ ।
जोयउं कंसिहु अयसु थ कालउ । 10

वृत्ता—माहवपयकुंयेलु उरिहँ सुभाणुं रत्तउं ॥

विसकरिकुंमयलु सिंदूरं पावइ छिसेउ ॥ २० ॥

४ B कालिप. ५ S चवल पवचइ ६ APS वीरेली. ७ AP विमिउ ८ B गोववडु
९ A वरकणियार, BP वणकणियार १० B इइल्लु.

20 १ AP परमदुजया. २ B मणहि, P मणइ. ३ S सखाजोरणु. ४ S फणिदल्ल. ५ A
सरासणकण्णु. ६ AP णियतें. ७ S आवि. ८ ABP णिवधूमउ. ९ APS जोइउ. १० A कतिहि
अजसु. ११ AP लुक्क. १२ P ओदिह १३ A लिचउ.

४ a सुहावइ गोमते, b त व ताम्रा रत्ता 6 b दूचइ सपय वखाणा शोभाम् 8 a तणकय
तणकतम्, b °कणियारि° कर्णिकारवृक्ष 9 a ससुसिर° सच्छिद्र., b °पाउ° गैरिकादि.
10 a कूर° ईश्वर, °कंदलु मस्तकम्, b कंदलदल° वल्लीपत्रे 12 महिबइतणुरुहेण चक्रिपुणेण.

20 2 समुजया समुजताः 5 a वड मूलं 6 b लएसहुं अदीप्याम्. 8 b तिविहु तिविध
कार्यम् 9 a विहि जाणइ कन्वा लमे न वा लमे इति विविरेव जानाति, b हा लिउ कर्षको गोपः.
10 a वालें चरिः (ब्राह्मण-) पुत्रेण, बालउ कृष्ण, b जयसु अपकीर्ति, 11 सुभाणु सुमानुना.
12 छिसेउ स्पष्टम्.

दुष्टे—वृष्णसणिहाइ कइतइ विरयबद्धाई ॥

जपसइ वसुह जाइ मुहपकयपविजोयभविळासइ ॥ ६ ॥

अथ पुणु लम्बजहि समर्थ
ऊरुव बहुसोहमापवित्तित
मयननिधिदिगियु व कइयलु
मज्जपसु किहु पिसुणपहुसै
पल्लिरेहकिउ उयव सुपत्तलु
दीह पाहु पालियणिमवपसई
हारेण वि विणु कहु वि रेहइ
सुहु सुहुसुहु जमसुहु पडिपसुहु
कणजुवेसु कयकमळहि सोहइ
केल कुविक बुहुइ मता इव

वारवमारोहणकिपेजोगाउ ।
विवमयकतुंयसुलणयपित्तित ।
सोहइ सुययहु मइ वि ममेहलुं । ६
बाहि गहीर हिवयगहिरसै ।
विरहिणिपणइणिसरणु व उरयलु ।
कालसथु जावइ पडिपसुहु ।
पहुवसु मालयलु समीहइ ।
सज्जणपुज्जणइ भवइणउ । 10
व लच्छीइ सविधु पसाहइ ।
मइ परमजहाणि कता इव ।

मसा—तै तहु माहवहु जो जो पर्येसु भवलोइउ ॥

सो सो तहु नि सहु उवमोणविलेसु पंहीइउ ॥ २१ ॥

दुष्ट—वित्त सौ सुभासु सामणु व पहु मही महामही ॥

जिज्जउ गयव करेव त साहसु रमणीरमणसुपही ॥ ६ ॥

भाणि व भवरेण इकेपिणु
जिणपरसुरविलि जयकीमंदिदि

गय ते त पुरु कणहु कयपिणु ।
वहि मितियइ गेरणिपदि गिरतरि ।

21 1 AP वसुहपासुह Als वसुहपासुह² against Mas and against gloss
२ P समणउ ३ B कि व ४ B कहु³ P कहु⁴ ५ B जयेसु ६ B मवसु ७ B पाही
गहिर ८ B सुहु सुहु सु P सुहु सुहु सु K सुहु सुहु ९ P ६ सुहु १० P पवेहु ११ B
उनमाण १२ A महीइउ P व दोइउ

22 1 P निजइ २ P कइ ३ APS कयिक⁵

21 1 वसुहपासुह कन्तिमुकानि विरइवचदहासइ चत्तितिरस्काराणि २ वसुह पुथिया
मुहपकयपविलोयवविळासइ मुलकमणविलोके आदर्यो इव ३ ६ किण मत्तमन्नि ४ ६
विवमण जीवितम् ५ ६ ममेहइ मेललपितम् ॥ ६ ॥ सिमुजपहुसै कइय प्रमुवचिन्ता
६ हिवयगहिरसै हदयगमीसने ८ ६ निववकसइ निवपसामम्, 10 ६ इत्यादि मुल
सज्जनानां सुलमुल सुमनुक वा सुत्तानां वयमुलपामम् 11 ६ कयकमळहि कुतै धूतेरवसितै कमलै
12 ६ मइ मति 14 ६ सोइत्यादि उपमाने उपमेवे च लक्षणमेव, लक्षणमवयव नास्ति

22 ॥ निमउनीयाम्, 3 ६ भवरेण नकेव इकेपिणु कपिला

दिट्टी पायसेज दिट्टुं घणु
गोविंदं मैयवंत सुदुम्मह
पडिय भुयंगमजतै पीडिय
ता हरिणा फणि तणु व विययिउ
लहउ संखु णं जसतकवरफलु
दीसइ धवलु दीहु णं मउलिउं
अरिवरकिचिवेह्लिकंदो इव
मुदणीलुप्पलि हंखु व सारिउ
पेच्छालुंयमाणेवउलु पुलइउं

दिट्टु पंचयणु गुरुणीसणु । 5
दिट्ट चडत पुरिस णाणाविह ।
फेणताडिय अच्छोडिय मोडिय ।
कुप्परकरकडिवेसैं चण्डिउ ।
उरसरि तासु अहिहि णं सयदलु ।
णावइ कालिदाद्रहि विलुलिउं । 10
करंराहुं धरियंउ चंदो इव ।
केसवेण कंउउ आऊरिउ ।
पायंगुट्टएण घणु वलइउं ।

घन्ता—पह्लु ण चाउ जमि अणु वि जयममों आयउं ॥

गुणणवणें सहइ सुविमुज्जवंसि जो आयउ ॥ २२ ॥

15

23

बुधई—बिसहरसेयणरावजीया।रवजलैरुहरवपकरियं ॥

भुवणं ससरि सवरिगिरिवलयमहो गिहिलं पि जूरियं ॥ छ ॥

विहडियफुडियपडियधरपंतिहि
खरखुरइणणवणियमभुयंगहि
कण्णदिण्णकरणरहि मेरंतहि
पउरहि महिमंबलि घोळतहि
हल्लोहल्लिउ गयउ ता पैके
पूरिउ संखु जलहिगअणसउ
अहि अकतउ चाउ खडाविउं

मुडियालाणजंभगयइंतिहि ।
चउंदिसिवहि गासंततुरंगहि ।
हा हा पउं काई पलवतहि । 5
धावतहि कंदंतकणंतहि ।
कंसहु वत्त कहिय पाईकें ।
परमारणउ मयदेभयंकउ ।
पट्टणु तेण पिणायं ताविउं ।

४ A मयवति. ५ AP कबताडिय, K कभिताडिय. ६ P अच्छोडिय. ७ AP कोप्परकरकडियल-
सचण्डि, 8 कोप्पर ८ AP कालिदिह. ९ AP फिर राहु व. १० PS धरिउ. ११ A कंडउ
ओसरिउ. १२ B पिच्छालुव. १३ A मानव अवलोइउ

23 १ A "सयणचाव. २ AP "बद्धरसवपूरिय, B "जलरुहरवपूरिय ३ BP वउरिउ.
४ P इरतहि. ५ AP एफहि. ६ AP पाइफहि. ७ ABPS "गज्जण". ८ AP पईहु भयकउ, BS
मयपु भयकउ, Als. मयपमयकउ.

5 b पचयणु शसः, गुरुणीसणु महासुन्द. 7 a भुयंगमजतै सर्पवन्नेण, b अच्छोडिय आस्फ-
लितः. 9 b तासु तस्य इहेदवतनागे शरः स्थित, क इव ? अहे. वप्रस्य मध्ये कमलमिव 10 b
°प्ररि हृदे. 11 b करराहु इस्तराहुणा 12 a सारिउ स्थापित 13 a पेच्छालुय° प्रेक्षका..

23 1 "सयणराव" शम्पाशब्द, "पूरिय प्रपूरितम् 4 a "वणिय" वणितानि. 5 a
कण्णदिण्ण करं रौद्रशब्दत्वात् कर्णौ कराम्या शणितौ 6 a पउरहि वौरैः 8 a "मजण" तिरस्कृत,
b मयदभयकउ सिंहवद्वयानक. 9 a अकतउ आकन्त.

कालपण कालु व आहवें

मैपसिद्धेण सुमानुहि मिचें । 10

घत्ता—मिसुणिवि ठ वयणु जीवजसवी तहु अक्खर ॥

वहरिठ लहु मर एवहिं मारमि को रक्खर ॥ १३ ॥

24

हुवई—ईय पमणु लेंतु करवालु सेंसेणु सरोसु निग्गमो ॥

ता रोहिणिसुएण अवलोहउ मायः अित्तिग्गमो ॥ सु ॥

फणदलि वेहणालि फणिपकह

अच्छर भायरं मुकउ सकर ।

सखें ण चवेण पयासिउ

सावणमेहु व वळए भूसिउ ।

सो सकरिसणेण सभासिउ

मुहु दुग्ग्यासणाइ किं वासिउ । 5

किं भोमो सि पउ किं रक्ख

गोउलु तेरउ भिछाहिं छरवउ ।

मियसुईदत्तेयपरिमरियउ

त मिसुणिवि पुराउ जीसरियउ ।

यसईविंवळेकारविसइहिं

छगउ गोवउ गोउलवइहिं ।

भवराहिं यपि पहेण मुरताहिं

कपियदेहपाहिं सैयमतिहिं ।

सुपयिउतु पिरहिं समरंरिउ

अपिउं जाउ सकु भैत्तरिउ । 10

यिसहरपरसवणयलु मिसुमिउ

त मायणिवि पुसविममिउ ।

णहुउ कहिं मि रायभयतासिउ

गोउलु अण्णराहिं भाषासिउ ।

यव भायउ रोमविमगसई

अवसइउ हरिसुंयणेसई ।

घत्ता—मायर भयिउ हरि णउ मुकउ पुतु हुंवाखिउ ॥

वरिवसयणपलि किहं वडिपउ हिंभयकेसिइ ॥ १४ ॥

16

१ P काष्ठएण काष्ठए १० A अविच्छिन्न

24 १ B एम मणु ३ इय मणु २ B सलेतु ३ AP मणर ४ ४ AP मेहु व वाधे
 भूविउ ५ P आयो सि ६ B सुइउ ७ ABS कलहव ८ B विवरहि ९ A मयमति BK
 छयमतिहिं and gloss in K उत्तमयउवदेह 1३ ययमति Als मयमति against Mas
 १० AP चयिउ ११ B जाओरिउ ११ A मयउ ११ A हरिमंडुव P हरि मंडुव १४ A
 मेउउ १५ P दुपाछि १५ AP क

10 a काष्ठएण कृष्णवर्णेन आहवें आपावनेन 11 उहु सुत्तए

24 2 त्रिचिन्मिजो त्रिचिन्मिज ३ a प्रचदलि फणा एव पत्र, शरीरमेव नाके रूप
 एव कमल तप 1 b वलए चउरुल्लेने ३ b त्रिचदहिं लुहावा ४ वदहिं माते ० a अवरहिं
 अन्यगो ४ वयमति हिं त्रिचिन्मिजो उत्तमयउवदेह 12 a चउउ न्णो नन्दगोप तासिउ
 वासिउ 15 पदिउ वारिपो सता

25

दुर्घई—जंदे नंदेजिजु थियजंदेणु ससणेहे णिहालिओ ॥

पाहुणयाइ जाहुं सुयवंधुहुं इय चजरिवि चालिओ ॥ छ ॥

साचग्गाइ पारखु णिहेलणु

मिलिय जुवाण भजेय महोवल

को चि ण सचालई जे यामे

उच्चाइवि सुरकारिअरचंडाई

अरिवरणरणियरे परियाणिव

भाउ जाहुं हो पुत्त बहुआइ

एव भजेपिणु कण्हपयावै

मलचज्जिइ महिदेसिं समाणइ

आणिचि गोविंदु वि गोविंदु वि

यसा—सुपसिउउ भरहि सो णंदगोहुं गुणराईहि ॥

पुप्फयंतसेमहि धणिज्जइ वरणरणाराईहि ॥ २५ ॥

तैहि मि परिट्टिउ महिवहरअणु ।

पायपहरकंपाविधमहिथल ।

ते महुमदपे जपसिरिकामे । 5

पत्थरसभेपिहियसुयदंडाई ।

जंदगोउ लहु जणणिइ णीणिउ ।

गोउल्ल सुणणउं सुइय ण सुआइ ।

वरिसुक्काई ताइ भयभावै ।

पुणरवि तेत्थु जि ठाणि विराणइ । 10

थिवई तां वंडु जि अहिणविधि ।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविराए महा-

भअभरहाणुमणिण महाकवे णारायणवैलकीलावणायं याम

पंचासीमो परिच्छेउ समसो ॥ ८५ ॥

25 १ AP नंदेजि २ B ससणेहे ३ A महिवह तैहि मि परिट्टिउ रक्खणु ४ A महामउ. ५ A 'णहयल ६ AP सचालइ थिययामे. ७ B 'यम'. ८ A पद सुक्काइ. ९ B महिदेस'. १० A देउ जि, BS दइउ जि. ११ B जंदगोहुं, P जंदगोउ, B जंदगोउ, Ab जंदगोउ 13 P पुणदव'. १४ A वालकीटा १५ B पंचासीतित्तमो.

25 1 नंदेजिजु वर्तमान 2 पाहुणयाइ प्रापूर्णका वय गच्छाम. 3 a णिहेलणु मार्गमध्ये आवाह. 5 a ते पायाणसग्गा 7 b णीणिउ प्रेरित. 10 a यमाणइ उच्चनीचरहिते, b चिराणइ पूर्वस्मिथिनस्थाने 11 a गोविंदु हरि, गोविंदु गोसमूहः, b दइउ दैवम्. 12 नंदगोउ गोकुलम्, १४ हि गोमाथुके.

षडरि जलोपदि पुत्रु इय फलं मणि परिलिख्यत ॥
कमलाहरणु रउडु तं अदु वेसणु विख्यत ॥ धुयक ॥

1

सिद्धिबुल्लिख्यत
तं मणित पुत्रु
अहि गरलगाहि
जलणासरतु
जार्थवि जवेण
आणहि धराइ
ता पुत्रु कणइ
अहि धीणसरतु
अहि राउ इअइ
कि धरा मणु
इउ काइ करमि
फणि सुडु चह
को करिण छिअ
अणअणअणति
उप्पणसोय
मडु पणु पुत्रु
मा मरउ वाडु
इय आ ससति
पियरइ रसति
अल्लिकायकति
धमणइ उविडु
अल्लिणाइ हरमि

गठे रायदूत ।
मा होहि मडु ।
चिअसर मडाहि ।
त तइ तुरतु ।
कयजणखेण ।
इदीयरार ।
खिरकमडु पुणइ ।
तहि पुत्रु मरतु ।
अण्णाउ कुणइ ।
तहि विगयणणु ।
उइ जामि मरमि ।
त कमलसइ ।
को मीरे चिअइ ।
हुअअहि जलति ।
कअइ अलोय ।
अदिमुहि चिहिनु ।
मंड गिअउ काडु ।
दीदर ससति ।
ता विहिअसति ।
रणि धीअ मति ।
चिहिअवि फणिडु ।
अल्लकील करमि ।

5

10

15

20

25

अथा—इय मणिपि गठ कण्डु संभाइउ जलणासरखक ॥

उप्पणफडियिअणु जमपाडु व धाइउ चिसइव ॥ १ ॥

1 १ P सुबलिय मूठ १ P गव ३ APS आहनि ४ A विगयमणु ५ ABP लप-
६ B मिलिठ ७ B दीदर ८ A खणीअ मति ९ खणीअ मति १ APS चिहिणेवि १ B मणेवि
११ P संभाइउ १२ A विहडु

1 1 परि लिख्यत इत्यम् 3 a वि हि बुल्लि मूठ अमिगालामूठ 6 a चरं तु इदमप्ये
7 b कयजणखेण तत्र इदं लोकोक्ताइतेन सर्वत्र भवोसादनार्यम् 9 a कणइ कन्दति 12 b
विगयमणु गणनायैव 15 b वेप कता 19 b मद गाम् 21 b वि हि य स ति कृतान्तिः

2

णं कंसकोवहुयैवदह धूसु
 णं ताहि जि केरउ जलतरणु
 सियदादाविजैलियहिं फुरंतु
 हरिसउहुं फडंगुलिरयणणसंहु
 ण दंडदाणु सरसिरिइ मुहु
 फणि फुफुयंतु चहु जुज्जलोलु
 दीसइ हरि वेहि भसलउलकालु
 तणुकतिपेरजियघणतमासु
 सिरि माणिवाइ विसहरवरासु
 तंवेहि " कुसुममणियरेहि तंहु
 बाहि पुलिउ भंगि महुसूयणासु

णं षडतरणीकडिसुत्तदाम् ।
 ण कालमेहु दीहीकयंगु ।
 चलजमलजीहु विसलध सुयतु ।
 एसरिउ जमेण कव घायदम्बु ।
 गैवयउ फणहु पासि दुहु ।
 णं तिमिरहु मिलियउ तिमिरलोलु ।
 णं वज्जणीगिरिवरि णवतमालु ।
 णकपइ फुरति पुरिसोत्तमासु ।
 दीसतइ दैति व वेहेणासु ।
 णं सरिवेहिहि पल्लउ पल्लु । 10
 ण कैत्युरिरेहाधिलासु ।

घत्ता—विसहरघोलिरदेहु सरि भमंतु रेहइ हरि ॥

कच्छालंफिउ तुगु णं मयमत्तउ दिसकरि ॥ २ ॥

3

फणि दाढाभासुइ फुफरंतु
 फणि उरुफणाइ ताडइ तड ति
 फणि वेहइ उखेहइ णणतु
 फणि धरइ सरइ सो घासुणउ
 इय विसमजुज्जलंसमहु सहिवि
 पीयलवासं हुउ उत्तमंगि

महुमहणु वं जुज्जइ हुंकरंतु ।
 पडिपलइ तलपेइ हरि छड ति ।
 फणि लुचइ वंचइ लच्छिकतु ।
 णउ वीहइ सप्पहु गदडकेउ ।
 दामोवरेण पत्थाउ लहिवि । 5
 मणिकिरंभसिहासंताणसंगि ।

2 १ S °द्रुपवदो २ B ° विजलियहिं. ३ S ° जवल्. ४ B ° छम्बु. ५ A दंडयाणु
 सरसरिपमुफ. ६ BP गयवेयउ. ७ S कसहो पासु. ८ A पुफवतु, PS पुफुपतु ९ A देहि ण
 भसल्, P देहए, S देहे. १० S अजगिरि°. ११ S °परिअय° १२ B पुक्को°. १३ B देहभासु
 In second hand, P वीहणासु १४ S णतेहिं १५ P कुसुमणियरेहि. १६ A सरपेलीपलवपल्लु,
 S सरिपेल्लिउ. १७ S पल्लु १८ B कत्थूरिय°

3 १ AP वि. २ P °फडाए. ३ A तडप्पय. ४ S सरइ धरइ. ५ P जुण्ण समहु.
 ६ APS उत्तिमंगि ७ A °किरणसहासं वेण सधि

2 २ b दीहीकयगु दीर्घाकृतशरीर 3 a सिय° अता 4 a हरिसउहु हरिसमुत्तम्,
 कडगुलिरयणणकहु फटमा अङ्गुलिमट्टयनय. 7 a इहि हुदे. 10 a तवेहिं ताप्पे, कुसुममणि-
 यरहिं पुष्परागमणिकरै. 12 सरि जळे. 13 कच्छालं वरत्रा

3 2 a उरुफणाइ गरिछफणा. 5 b पत्थाउ लहिवि प्रस्ताव प्राप्. 6 a पीयलवासं
 पीतवलेण घासुदेवेन, b ° सिहासताणसणि ज्वालसमुत्तसणे उत्तमाद्दे.

गड पासिवि विवरतरि पड्डु
जळि कीलर भमरगिरिंदधीक
विहडियसिपिडंडसमुग्गयाह
भीणउलर भवरसमधियाह

अयसिरिह विहूसिड झ सि पिहू ।
कळोलुपीलिपविडंडलीक ।
मुसाहलर इसविहू गयाह ।
ण सत्तुहुंइयर दुत्थियाह । 10

यत्ता—उडिवि गयणि गयाह कीळतड्डु इरिह ससंडड्डु ॥
विहूह इसउलर अट्टियर यार् तड्डु कसड्डु ॥ ३ ॥

4

भसळउलर यडविहू गुमुगुमति
कण्डड्डु तेय जाया विणीय
कमलार अलीडर तेण कैव
हरियर पीयर छोदियसियाह
पयपभमड्डु मल्लिगगयाह
पडिबबळभिषकरपेल्लियाह
णल्लिगार गियेण निहालियाह
अण्णहिं विणि सुयबळदुईगाव
परजीविषहारणु मतगुगु

ण कसमरणि यषय ययति ।
रयति कक ण पिमुण भीय ।
खुडियर अरिसिरकमलार जैव ।
मड्डुपुण्णारड्डु पेसियाह ।
अलविहिणा सुकयार य हयाह । 5
यदार् यरगणि मल्लियाह ।
ण गियसयणर डम्मलियाह ।
इकारिय सयळ वि यदगोय ।
यारउड राय मल्लजुगु ।

यत्ता—कंसड्डु गाड सुयंतु तिम्बकोवपरिणामे ॥ 10
हल्लिड डेउ मुरारि ण केसरि गययामे ॥ ४ ॥

5

संधलिप यदगोवाल सयळ
विपार्लकुलबळअकेस

दीहरकर ण मायग पवैळ ।
उडुत थर्त अमयूयवेस ।

८ A शुवठिरिद ९ APS उयेल्लिव १० AP विठण्णीर ११ PS विठविप १२ A विपिडळ १३ P इवरसि १४ B कुडयर P कुडयर

४ १ AP मड्डुपुण्णार P मड्डुपुण्णार २ A निवळियाह B निवळियाह ३ ॥ शुव
४ P ऊड ५ AP कुणतु विव तिम्ब ६ A चळिड मुरारि सगोड ण P चळिड मुरारि सगोड ण
५ १ AP ता चळिड २ AP चळ ३ A फर ४ P विवडळ ५ P उड

9 a विहडियर सुट्टियानि 11 वसवड्डु मणसमुक्क 12 अडिवर अरपीनि

४ 2 ६ कक वरा ३ a अलीडर अट्टियेन ५ a पयपभमड्डुह खानप्पुनानि अळप्पुनानि
५ ६ सुकयार पुण्णानि 10 पाडेनाम 11 यवनामे यवनाम

5 2 a विमड्डु विकट्टियानि

सिद्धरधूलिधूसरियदेह
कालाणल कालकयतधाम
बलतोलीयमहिमहिहर उडह
सणिदिट्टिविट्टिविसविसहराह
कयभुयरव दिसि उट्टियणिहाय
खलमलणकवज्जम जमदुपेच्छ
रत्तच्छिणियंच्छिर मच्छरिह

गज्जिय णं संक्षारायमेह ।
मसलउलगरलघणजालसाम ।
मज्जायरहिय णं ययसमुह ।
रणि दुण्णिगवार अरिहरिणवाह ।
पहुपडहसरकाहलणिणाय ।
अयलच्छिणिधेसियवियडवंच्छ ।
मट्टंरापुरि पत्त महल मह ।

घत्ता—सो त रोलविमहु उव्वगणसंचालियघर ॥

10

गोघयविट्टं निपधि आरुसिवि घायंउं कुंजर ॥ ५ ॥

6

मंडल्लियगंहु
सरासणयंसु
घणंजणघण्णु
विसारायमिंहु
महाकरि तेण
पडिच्छिउ पंतु
सिरणि तड चि
भण गयस्स
घलेण समत्थि
विरेहइ चारु
रिउस्स पयंहु
पवासिउ वीहु

पसारियमुंडं ।
सयापियपलु ।
समुण्णवकण्णु ।
धरायरतुगु ।
जसोयतुण ।
णियंदिवि वंतु ।
येओ हउ ह ति ।
विसाणु गयस्स ।
सिरीहरहत्थि ।
जसो इव साव ।
जमेण व वहु ।
सुरारि वृसीहु ।

5

10

घत्ता—अण्णदिमल्लंहु महु पडिभडमारणमग्गियमित्तु ॥

अन्नाडइ अवडण्णु हर्षवाहुसहवहिरियदिसु ॥ ६ ॥

१ S सेंदु°, ७ AP कयतधाम ८ B °काहलि° ९ A विषडविच्छ १० B °णियच्छिय. ११ S महुगउरि. १२ A त तदि रोलविमहु १३ P °वैदु, S °वदु १४ AS चाइउ.

6 १ P मओल्लिय° २ PS °सोह. ३ P °कट्ट. ४ B शिवट्टिवि, S शिवट्टिवि ५ A इउ गओ शत्ति, P इओ गओ शत्ति ६ ABP शिवीहु ७ PS °मल्लह. ८ BA।h इयवहुसह°, PS ददवाहु°.

3 b सक्षारायमेह सप्पारागेण देहिता मेधा इव. 4 a कालकयतधाम मारणयमसहयतेजसः, b °घण जाल° मेघजालम् 6 a सणि दि ट्टि वि ट्टि° शनिदट्टिसह्याः विश्विष्टयाः. 7 a °णि हा य निघातो वज्रनिर्घोषः. 8 a जमदुपेच्छ यमवत् दु प्रेक्षाः 10 उव्वगण° पत्थरसघट्टशब्द.

8 1 a मंडल्लियगंहु महार्द्रकपोलः. 2 b सयापियपलु सदापियधूलिः. 6 a पडिच्छिउ आकारितः, b णियट्टिवि आकृष्य. 8 a गयस्स गतस्य नष्टस्य, b विसाणु दन्ताः. 9 b सिरीहरहत्थि श्रीधरहस्ते 12 b वृसीहु वृक्षितो महामलः 14 अक्खाडइ बुद्धश्रुतौ.

सुयपकसु धरिवि	परिछेउ करिवि ।	
मोहामियहु	सनादिवि धहु ।	
गयसीलगामि	वसुएवसामि ।	
कण्हहु वलेष	सुद्विपच्छलेण ।	
परसरिवि रगि	लग्गेवि मगि ।	5
वसरिउ कसु	गोविंद भसु ।	
सुज्जेवि कंसु	दलघट्टियसु ।	
करि वप्प तेम	जउ जियइ जेम ।	
गुह जम्मवेरि	उज्जुवयेरि ।	
णसु जयहु जाउ	उगिण्णघाउ ।	10
महेभुयरघालि	कोवगिजालि ।	
पदिवपप्पजुरि	वसततुरि ।	
भाहवरसिद्धि	वणंतमालि ।	
मिप्पतफुलि	कुकुमजलोहि ।	
अण्णण्णपण्णि	विमिसत्तंशुणि ।	15
आसण्णवणि	ताई पाइशुमि ।	
रिउणा विमुक्क	जाणूव हुक्क ।	
पसरियकरासु	इमोयरासु ।	
ता सो वि सो वि	आसग्ग दो वि ।	
सबालणेहि	अदोलणेहि ।	20
भावहणेहि	भेवि लुहणेहि ।	
परिममिवि कसु	संदंहु पसु ।	
वणेणं वसु	रुणेणं रंधु ।	
वाहोइ पाहु	वाहेण गाहु ।	
विट्ठीइ दिट्ठि	मुट्ठीइ मुट्ठि ।	25
विसेण विजु	वसेण गसु ।	

7 1 S कसामि १ BP मोविदु 1 A उज्जुवयेरि ४ AP महभुयवमालि
 ५ AP विमिसत्तपुणे १ ABPS उहि ७ AP पक्क ८ A वे १ AP add after
 20 ७ उहलणेहि आलीणेहि १ AP वविहणेहि ११ B वरद १४ AP सवेण सपु
 १३ AP वणेण वपु १४ P वाहेण गाहु

7 1 ७ परिछेउ करिवि स्वपको विमगीकृत 2 ७ सनादिवि सनद 4 ७ वलेण वलमदेण
 7 ७ दलघट्टियसु शूर्णितभुवमालि 9 ७ उज्जुवयेरि वृवैर 11 ७ ० भुवरवालि भुममेलापके
 भुवासाज्जनिनादे वा 21 ७ अवि अवि

परिकलिवि तुलिवि	उल्लिवि मिलिवि ।
तासियगहेण	सो महुमहेण ।
पीडिवि करेण	पेल्लिवि ^१ उरेण ।
संभिवि छलेण	मोडिट वलेण ।
मेणि अणियसल्लु	साणूरमल्लु ।
कउ मासपुंजु	णं गिरिणिउंजु ।
गेरुयविलित्तु	धिपंतरत्तु ।
महियल्लणिहित्तु	पच्चत्तु पत्तु ।

30

घसा—विणिवाइवि चाणूव एहु बहुरुंवेयणं दुसिवि ॥
पुणु हक्कोरिउ कंसु कण्हे कालेण व रुसिवि ॥ ७ ॥

35

8

णवर ताण होण्हं सुयारणं	जाययं जणाणंदकारणं ।
सरणघरणसंघरणकोच्छरं	मिउडिमंगपायडियमच्छरं ।
करणकसरीयंघंघंधुरं	कमणिवायणावियंघसुंधरं ।
मिलियविलियमडिलुलियवेहयं	णत्तसमुल्लणवडियमेहयं ।
पवरणयरणरमिडुणतोसणं	परिघुलंतणाणाविहसणं ।
परंपरकमुल्लुहियदूसणं	वुडिअऊण सुइरं सुमीसणं ।
वरणवैण्णोणधियकंधरो	वरमयाहिवेणेव सिंधुरो ।

5

घसा—कव्विउ पएहिं धरिवि णिहल्लिउ गलियंरुहिरोल्लिउ ॥
कंसु कयतहु तुंदि^१ कण्हेणं भमाडिवि वल्लिउ ॥ ८ ॥

१५ B पेल्लिवि. १६ APS मण°. १७ P दुब्बयणेहिं १८ P हक्कारिवि.

8 १ A कयवपुर, २ A °णामिव°. ३ P °मिधुण°. ४ A परपरकम छहियदूसणं,
B परपरकमउल्लहियवेहयं, S °मुल्लिहिय°. ५ A चण्णोण्णमिय° ६ A वरमयाहवेणं व, B वरमया-
हिवेणेव ७ S उंजुतो. ८ BK गल्लिउ ९ APS तौडि. १० BP केसवेणं

32 b गिरिणिउंजु गिरिनिउंजु. 33 b विणत्तरत्तु अथोत्तरत्तु. 35 विणिवाइवि मारवित्ता.

8 2 a °कोच्छरं कौतुककोलादकम्, b °पायडिय° प्रकटित. 3 a करणेत्वादि आवर्तन-
निवर्तनप्रवेशादि, b कमणिवायणावियं चरणनिपातनामिका 5 a °णयरणरं नागरिका.,
6 a परं उल्लुह, °उल्लुहिय° दत्त मर्त्तनवलात् ७ पएहिं पादम्याम् ८ कयतहु वुडि
यमस्य मुखे.

9

हइ कसि वियभिय तियसतुट्टि
किंकर वर णरवर उरयरत
मा मइ आरोउहु गलियगव्व
तहिं भवसरि हरि सकरिसणेव
वसुपवे भणिये म करइ भति
भो मुर्यइ मुर्यइ जियमणि भवति
उप्पणउ देविहि देवईहि
कुलधवल्लु वसुधरभारधारि
पप्पण्णु पपट्टि पदगोट्टि
ओ कुज्जइ सुज्जइ सो जि मए

आयासहु निषडिय कुसुमविट्टि ।
कण्हेण मणिय मडणि मिडत ।
मा एयहु पथे जाहु सव्व ।
आलिगिउ जयहरिसियमणेण ।
इहु केसरि तुम्हइ मच दति । 5
कण्हु बल्लयत पि पयहु जति ।
गम्भमि पसणि महासईहि ।
सुउ मज्जु कसविज्जसकारि ।
एवहिं कइ डोइउ कालवैट्टि ।
गोविदि" कुइ किं कोई धरइ । 10

पसा—जाणिवि आववणाहु जियगोसहु मगलमारउ ॥

वदिउ भुंषणिपरेहिं दामोयउ वरिषियारउ ॥ ९ ॥

10

कण्हेण समानउ को वि पुसु
दुद्धरमरणधुरविण्णल्लु
मज्जिणि गियल्लइ गयधरगइ
महिणदियजिणधरपायेण
कइवयदियइहिं रीकीलिरीहिं
पयुसउ पई माहव सुदिहु
एवहिं महुपाकामिणिहिं रसु

सज्जेउ जणणि विइभियससु ।
उद्धरिय जेण निवडत' वधु ।
सहु माणिणीइ पोमावईइ ।
महुएहिं सणिहियउ उमासेणु । 5
गोछाविउ पहु गोधाणिणीहिं ।
काळिवितीरि मेरउ कडिहु ।
महुं उप्परि डीसहिं मधिरविणु ।

9 १ P ओत्तर २ P आरोउहु ३ S कि ४ B जाइ ५ B मणिउ ६ B करि
P करहु ७ A पहु ८ B मुज्जि मुज्जि ९ A कण्ठहो १ B देवीदेवईहिं ११ A काळिविहिं
B काळविहिं १२ A गोविदे कुदे १३ AP को नि १४ AP निव'

10 १ B समानउ २ AAls दुद्धरणमधुरविण्णल्लु B दुद्धरमरणविण्णल्लु
३ BAls मधियदिय' ४ AP रीकीलिहिं B कीलीहिं

9 1 हइ कसि इवे कसे ६ आयासहु गव्वणात् 3 a आरोउहु अस्माक मा रोपत्रयादयन्तु
G a अलंति कोष 9 ६ काळवट्टि काल्पयनादि धनुषि 11 आववणाहु वादवनाय

10 5 a १२ कीलीरीहिं रीकीलीरवनीजमि G a पयुसउ भूवे परिदिय ६ कडिहु
कमिवल्लम् 8 ६ उ भति याइ उद्धन्तया

क वि भणइ दहिउ मंयंतियाइ
 लवणीयलिउ कर तुज्जु लम्पु
 तुहुं णिसि पारायण सुयहि जाहि
 सो सुयरहि किं ण पडणवहुं

तुहुं मं घरियउ उअंतियाइ ।
 क वि भणइ पलोयइ मज्झु मम्पु ।
 आलिगिउ अवरहि गोवियाहि । 10
 सकेयकुडंगुडीणरिउ ।

वत्ता—का वि भणइ णासंतु उअरिउ खीरमिगारउ ॥
 किं वीसरियउ अउ जं मं सितु मडारउ ॥ १० ॥

11

इय गोवीयणवयणइं सुणंतु
 संभोसिउ मेळिवि गवभाउ
 परिपालिउ थणंथणेण आइ
 कावयदियइइ तुहुं जाहि ताम
 इय भणिवि ठेण विंतेविउ विण्णु
 आलाविउ भाविउ जियमणेण
 पडविउ णंतु महुसूयणेण
 सहुं वसुएव सहुं इलहरेण

कीलइ परमेसह इरइसंतु ।
 इइजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ ।
 वीसरमि ण खेणुं मि असोय माइ ।
 पडिवक्ककुलपणउ करमि जाम ।
 वरखसुंहारइ वालिहु छिण्णु । 5
 गोवालय पूरिय कंजणेण ।
 ओहामियेदियपूयणेण ।
 सहुं परियणेण हरिकरिजेणेण ।

वत्ता—सउरीणयरि पइहु अहिसुरणरेहिं पोमाइउ ॥ 10
 भरइधरिसिसिरीइ हरि पुप्फयंतु अवलोइउ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइय
 महाभावमरद्धानुमणिए महाफळे कंसचाणूरणिहणो जाम
 छासीतिमो परिच्छेउ समसो ॥ ८९ ॥

५ AP माइउ. ६ A णवणीव°. ७ A °वसु ८ AP उअरमि ९ AP मइ अहिसितु मडारउ.

11 १ B संभोसिवि मेळिउ. २ B भणि थणेण ३ B वीसरमि. ४ B खणु वि.
 ५ B चित्तविउ. ६ PS वसुधारइ. ७ AP वालं आकरिसियपूयणेण. ८ B वसुएवइ. ९ APS हरि-
 करिमरेण १० A छासीमो, P छायासीमो, S छासीतितमो.

७ a उवणी यलिउ नवनीतलिउ. 11 a पडणवहु प्रपूर्णवान्, b °कुडंगु इत्यशासः स्वल्पवृक्षः.

11 2 b तुहु नन्दयोगः. 3 b माइ दे मातः 5 a चित्तविउ वाञ्छित वस्तु, b °वसुधारइ
 सुवर्णधारया. 7 b ओहामियेदियपूयणेण तिरस्कृतदेवताभूतनेन. 8 b हरि° अथाः. ९ सउरी-
 णयरि श्रीरपुरे, पो माइउ प्रकथितः.

मारिय महुरावाहे जीवजस असंविघहु ॥
गव सोपण उयति विठेहि पासि अरेंसिभहु ॥ सुवर्क ॥

1

धुपरे—हुम्मण जीससंति पियविराड्हुयासणजाळनालिपा ॥
वणदवदणहुणियणववेळि व सव्यावयवकालिया ॥

रायककण दुहिर्कलीला हव	पुष्कविराहिय मेलमहिळा हव । 5
गह्वपस फगुणवपराह व	सुहु क्षीण णवर्चदकला हव ।
मोक्षलकेस काळदिकसा हव	वहाणवियक्षिय जिणसिक्का हव ।
पठरविहार वडसपुरी विय	वरविमुक्त काणीणसिरी विय ।
कविविषक्षिय उत्तरमहि विष	पहुर्छाय छणवयहु सहि विष ।
णिट्ठकारी कुकाहि धाणि व	दुक्काह भायण पारयजोगि व । 10
गालियहुयजसिचपमोहर	मयलोपयि धीय मडलियकर ।
अणह जणणु शुव भावह पाविय	किं कजेण केण सताविय ।
अणु मुह केण कयठ विहवत्तणु	को व यवह महुं तणठ पडत्तणु ।
जीविठ अर्धु जि कासु हरेसह	कासु कासु कीळाळि ठरेसह ।

धस्ता—जीवजसह पडुत्तुं शुणि किं मच्छद किंसाह ॥ 15
ताय सणु वळवतु मुग्गु समाणु मविजाह ॥ १ ॥

2

धुपरे—वासारति पति बहुसलिसुणेद्वियपंदगोठले ॥
जेणेकेण धरित गोयखणु गिरि इत्येण णवयले ॥ ६ ॥

1 १ A पहुरे पासि २ AP भरसेवहो ३ P दुमिस ४ P काणीणे ५ P महि उत्तर
६ A पंडुछाय सहि छणईदहो हव ७ AP कयठ केण ८ B अणु नि ९ AP पठत्तु १० B उपत्तु
2 १ B गोवळणगिरि

1 4^० दवदवदणहुणिय अग्री हुता 5 A गवककण गतकड्डणा, पळे दुमिश्काले गत नई
क वळे कर्ण घान्यम्, 6 मेळमहिळा वडा असी वसा कतपुण न 6 A पडपस नववाहना, नहानि
नागवडीदहानि वा वणराह वनमेणी 7 A कठळी कला योगिमया 8 A पठरविहार प्रकरणे
उरसि विपत्ती हाते यसा, पळे प्रवृत्त निहाय वन बौद्धाना नगरे 9 वरविमुक्त वती भर्ता वपय
9 A कवि कटिमेखला, पळे उत्तरवेळे काळीपुरी न 12 A शुव भावह पाविय गरिग्रामापद
प्राप्ता 14 A हरेसह यणे हरिणति 5 कासु वम कीळाळि धरिरे.

वहरिणि गिययैमेण विणासिय
मायासयहु जेण संचूरिउ
जेण तालु घरणीयलु पाविउ
तरुर्जुवलउं मोडिउं भुयलुयलें
चाउ पणाविउ संसापूरणु
कालियादि तासिवि अरविंदइं
वंतिदि जेण वंतु उण्याडिउ
जो वग्गिवि भैंडरंभि पदट्टउ

बालत्तणि जें पूयण तासिय ।
जेण तुरंगु तुंगु सुसुमूरिउ ।
जेण अरिट्टियणु वंकाविउं । 5
णायसेज्ज मायामिय पवलें ।
किर्यउं जेण गियपिसुणविसूरणु ।
सुडियइं जेण पउरमेयरंदइं ।
सो जि पुणु वि कुंभत्थलि ताडिउ ।
कालसलोणउ छेपं दिट्टउ । 10

घसा—जेण महु चानूक अममुहकुहरि भिवेईउ ॥

तेण गंदगोवेणें मारिउ तुह जामाईउ ॥ २ ॥

3

जुवर्ह—वसुपवेण पुनु सो घोसिउ भायय सीरहेइणा ॥

ससयणमरणयणु गिसुणेप्पिणु ता कुन्डेण राइणा ॥ छ ॥

पेसिया सणंदणा	ससदणा ।	
भाषिया सवाइणा	ससाइणा ।	
सूरपट्टणं चियं	धयंचियं ।	5
कण्हपफज्जपोसिरा	सुरोसिरा ।	
जिमाया दसारइहा	जसारइहा ।	
जाययं सकारणं	महारणं ।	
दिण्णधायहारणं	पल्लारणं ।	
रसवारिरेड्डियं	रसोड्डियं ।	10
वंतिदत्तपेड्डियं	विहोड्डियं ।	
छिण्णलससामरं	णियामरं ।	

२ A तिय थामेण. ३ S चालत्तें. ४ B तुरगदुग. ५ BAls. अरिट्टु ६ APS ह्रियलउं.
७ ABPS सवाळरणु. ८ ABP कयउ ९ B पवर १० PS महु ११ PS जिवाइउ.
१२ B गंदगोविंदे. १३ P जामाइलो.

3 १ A वाइया. २ PS सुरोसिरा. ३ A दसारइहा. ४ S वसोड्डिय. ५ A वहिड्डिय.
६ A गियामर, P णयोमर.

2 3 a वहरिणि वैरिणी पूतनादेवी, °थायेण वलेन. 4 a °सयहु चकटम्. 5 b अरिट्ट° वृषभ. 6 b णायसेज्ज नायशय्या, आयासिय चग्गिता. 8 a कालियादि कालियसर्पः.
9 a दत्तिहि गजस्य.

3 3 b ससंदणा सरथा. 4 b ससाइणा ससैन्या. 5 a चिय चित वेहितम्, 6 धयचिय ध्वजवहितम्, 7 b जसारइहा यशोयोन्वा. 10 b रसोड्डिय रसिधर्मम्, 11 b विहड्डिय कम्पितम्,

पुण्यसासवासिय मिससिय ।
 यथा—णयर दुरतरयाह पुण्येकवह गयणायह ॥
 यद्वा यद्विरिण्णि णारायणणारायह ॥ ३ ॥

15

4

पुण्य—णासतेहिं तेहिं महि कपह आणामणियरुज्जला ॥
 महमयणरमाहि महिमहिछदि वल्लह जलहिमेहला ॥ छ ॥
 णियपयपकयतलि आसीणा ते भवलोहवि सगारि रीणा ।
 राय अवरु पुत्तु अमरायव पेसित जो केण वि ण पराह ॥
 तेण वि जायवि जयसिरिलोहं एवकिंकरइयगयसरोहं । 5
 सवरीपुह चवसिदिं णिरेहव जीसरियउ जायववल्ह कुयव ।
 करिकरेयैणेहिं असरोलिहिं एवसकदि पडतमहिवालहिं ।
 चंडगयौसणिधुलिपुत्तुहिं विवदिषकौतसुलहलसेल्लहिं ।
 फुरियकिरणमालांपरीकहिं विहविधमयंडेकइयमाणिकहिं ।
 भवकंरगाहपरियसिरिमाळहिं मसिसघहणहुंयवहजाळहिं । 10
 मयैणियलियलोहिपकल्लोलहिं दिसिविदिसामिलंतेवेयाळहिं ।
 वाढाभासुरमहरवकायहिं किलिकिलिसहिं भूपपिसायहिं ।
 यथा—पुण्यहं नरयोरीह करि करवाल्ह करिपिण्णु ॥
 छायालीसहं विणि सयह पम पुण्योपिण्णु ॥ ४ ॥

5

पुण्य—गह अवराइयमि वसुपवतगूढहसरणिमुमि ॥
 पविठलसयल्लेमुषणमवणमवजसवहडे विरंमि ॥ छ ॥

4 १ B णियपकयतल २ B जायवि ३ P जेकवह ४ A निमलेहिं B विवणेहिं
 ५ APS अवराळहिं ६ P महिपालहिं ७ B यवासिणि ८ AP इहमालहिं ९ B परिकहिं
 १ APS चडममठ ११ B करवाळ १२ AP तिरवाळहिं १३ B पुण्यव १४ ABP
 वण १५ BKP मिलति १६ A नरयोरेहिं B नरयोह १७ A करपिण्णु
 5 १ B अवरायमि २ B वसुपह ३ B सवजसववह

13 ७ निरसिय नी प्रयस्त न्यास वा 14 दुरतरयाह पुण्यवचनवेयानाम् गयणायहं गयनागतानां
 गजनादानां वा 1० णारायहं णाणानाम्

4 1 महियरुज्जला मणिलिखे उज्जला २ महमयणरमाहि बाहुवेवे खाया भूसे-
 7 a अमराळहिं वडुने 8 a पुरिल्लहिं मुल्ले कारपिमिर्वा 9 a परिकहिं प्रपु
 10 a सिरमाळहिं सीवडे (सिरमाळे) शिरोगतामि पुण्यमाळमिर्वा 11 पुण्यह पुढा नाम्
 11 छायालीसहं विणि सयह पदत्तामिहविकानि बीमि यानि बुढानां पुढा
 5 1 अवराइयमि अवराजिते गने छति २ वरविमुमि ३ वावे विषले

अणु वि सुउ जरोसिधु केरउ
 कालु व चहरिबीरजीवियह
 पभणइ ताय ताय आयण्णहि
 विसिधहि सहु समरि धरेण्यु
 पुलउ जणतु गरादिबदेहु
 जलि थलि नहयलि कहि मि ॥ माइउ
 गपिणु पिसुणचरिउं जं दिहुवं
 त जिह्णुण्येपिणु जाणियणार्
 बंधुवगु मंतणइ पइहुउ
 जइ सबलोहि अयलु आठप्पइ
 वेण्णि जि^१ होति विणासहु अतर
 तहि पहिलारउ अजु ण जुजइ
 हरि असमत्थु देह को जाणइ
 छलामाहिरामसुविरामे

घटा—बोझिउ महुमहणेण हवं असमत्थु ण बुद्धमि ॥

मं मेळुह रणरणि पक्ख जि रिउंहु पणुधमि ॥ ५ ॥

6

उवर्—णासिउ जेहि चहरिविज्ञागणु भेसिउ जेहि विसहरो ॥

मारिउ जेहि कंसु चाणूह वि तोलिउ जेहि महिहरो ॥ छ ॥

ते भुव होति ण होति व मेरा

इय गळतु मुरारि जिवारिउ

जं केसरिसरीरसंकोयणु

अजु कण्ह ओसरणु तुहारउ

कि एवहि जाया विपरेरा ।

इलिणो मतमणि सचालिउ ।

तं जाणसु करिजीवविमोयणु । 6

पुवउ पदोसइ परयपगारउं ।

४ PS अरुंणहो. ५ A जिहदिउ^१ ६ AP दीणवयणु. ७ K पिचिएण, bnt g1099 पितृयैर्नवमि
 छ ८ S आणेदि ९ B चैं उव^२. १० AP भिसुणेने विद्याणिगणाय, S भिसुणेपिणु जाणियणाए,
 ११ P भविउ ॥ महवहि. १२ A वि १३ P तप्यविसु १४ P दइउ. १५ P रिउंहु.

6 १ S हरिणा

3 b विहलिप^३ दु पिगानाम् 6 a पिचिएहि पितृयैर्नवमि छह, b नदगोउ कण्ण, 9 a
 भिसुणचरिउ अयुचेष्टितम् 12 a आठप्पइ मारयितुमारम्भतं, b नासइ अयुतSवल.. 16 a
 एतेत्यादि छलामाणामभिरामस्य स्मणीयत्वस्य सुहु चिरामो वसाम्

6 1^४ पिचागणु देउतालम्पट, मेमिउ यव प्राणित कम्पयि. 2 महिहरो गोत्रयैर्नवमि.
 3 a मेरा भम. 1 b मतमणि मन्त्रमार्गे, सचालिउ प्रवर्तित. 6 b पु^५उ अये, पदो ॥ ३ प्रमयिप्यागि;
 ५२^६ सुत्र

इय कहेवि मच्छक जोसारिउ
गयउरसउरीमहुरापुरवह
वहइ सेणु मणुदियु षउ यकइ
भूवइ भूमि कमतकमतइ
कालु व कालायराणे ण मगउ
अलियजलजजालासताणइ
हरिकुलवेयविसेसहिं रइयइ
जायरेणारिकुवेण रुइतिउ

महुइ क्षणवारि णीसारिउ ।
विम्वय जायव सयल वि णरवइ ।
महि कपइ अहि भरहु ण सकइ । 10
अतइ ताइ पहेण मैइतइ ।
कालजमणुं मणुमारो लमगउ ।
इत्तमागयेयाइ मसाणइ ।
सिवजहुयचार्यससयउइयइ ।
दिइउ देवथाउ सोर्यतिउ ।

मत्ता—हा समुहविजयक हा धारण हा धूरण ॥

15

यिमियमहोयैदिराय हा हा मचल अर्कपण ॥ १ ॥

7

पुणई—हा वसुपय बीर हा इच्छइ पुष्पाइवपुष्पमइणा ॥

हा हा उमसेण गुणमणमिदि हा हा सिद्ध जणइणा ॥ ४ ॥

हा हा पंड वइ किं जायउ
हा हा चम्मपुच हा मावइ
हा सहयण णउल कहि पेक्खामि
हा हा कींति मदि हा रोहिणि
हा महिणाइ कुरउ जमहुयउ
त आयण्णिवि थोखे वइते
कखे केण दुहेणं यिसण्णी
त गिह्णुणेवि देवि सहु ईरइ
तहु भीयहिं सिविधं सचाळिउ

पत्थिववरइ विहुव समायउ ।
हा हा पत्थ विजयमहिमावइ ।
वच कासु कहि जाइवि अक्खामि ।
हा देवइ मणंगसुइचाहिणि ।
सम्यइ केम कुलकजउ हूयउ ।
पुठिउउ गियसुएण विइसते ।
किं सीयइ के मरणु पवण्णा ।
मणु वरणाहि कुदि की धीरइ । 10
महिपलि सरणु ण कहि मि गिहाळिउ ।

१ AP महुइ ॥ महुइ १ B वइतइ ४ A कालजमण ५ B हरितउमवविसेसहिं ६ A "केवू"
P "महुइ" ७ ABP जयणारिकुवेण B जायणारीकवि ८ P रुइतिउ ९ P "महोयै"

7 १ P के १ A सजायउ, P उपाइउ १ P जायवि ४ ABP उ उम्वहु ५ B उउ
१ P इहेदि ५ A गियण्णा ८ B वरणाइ ९ A उइ १ PS सिमि

9 b अहि भरहु ण सकइ येयनाग मार न वण्णोति 10 a भूवइ राजान भूमि
कमतकमतइ भूमि कमन्तो मच्छन्त 11 a कालायरणि कलस्व मरणस्य आवरणे आदरणे वा
12 b "देवाइ मृतकानि 13 b सिव पुष्पाळी "अहुव पुष्पाळ 14 यिमियमहोयैदिराय
स्तिमितसागर

7 3 b पत्थिववरइ विहुव उपायउ धनुमि कृत्ता इत्त मातिव 4 a मावइ भूमि
b विजयमहिमावइ विजयमहिमा रुविदीप्तिर्यस्य ५ b वच वार्ताय, 6 b "वाहिणि नदी
8 a थोखु वइते आभरे पत्ता

द्वयं पुष्पफलाहं नं जरपायव
तं गिमुणेपिषु रणभरजुत्तं

अग्निपवेसु करिवि मय जायय ।
भासित लोर्णायलवहपुत्तं ।

धत्ता—भल्लेव सुहृदणिहाउ गिग्घिणजलणे तं^{१३} यद्धउ ॥

आहवि सँउहुं भिडेवि मं जसु जिग्घिणि ण लद्धउ ॥ ७ ॥

8

बुधई—हा मइ कंसमरणपरिह्वमलु रिउरुहिरें ण धोरओ ॥

इय चितंतु यत्तु मलिणाणणु जणणसमीपि आइओ ॥ छ ॥

पायपणामपयांसियविणयं
ओइउ सुयउ सचुं विण्णवियउ
अत्थमिएण गियाहियवदे
यत्तहि पहि पवहत महाइय
विट्ठउ महिऐण रयणायरु
बाडवगिजालाहि पलित्तउ
णवपवालसरलकुवरत्तउ
जलयरघोसें भणइ व मंगलु
तलपिहिसणानामणिकोसें
पेरगंमीरु पयइगंमीरउ
महुमहु आउ आउ साहारइ

विट्ठउ ताउ तेण पियेतणं ।
अरिउल्लु गिरवनेसु सिहिराधियउं ।
थिउ मेइणिपहु परमाणवे ।
हरि यल जलहितारु सम्राईय ।
वेलालिगियचन्द्रियायरु ।
जलकरिकरजलभारहि सिउउ ।
णं कुकुमरापण विलित्तउ)
इसइ णाइ मोत्तियइतुज्जु ।
पेघइ संवट्टियसंतोसें ।
ण सहइ मलु ण अहु भडारउ ।
णं तरयेइत्ये इक्कारइ ।

धत्ता—भूसणदिच्चिविसालु णायइ तारायणु थक्कउ ॥

जाययणाहे तेत्थु सायरतडि सिधिरें विमुक्कउ ॥ ८ ॥

15

११ AP गियपुण्ण°. १२ AP भगउ. १३ ABPS om त १४ B सगुह

8 १ B पयासियणय. २ B गियतणय. ३ K उच्चु and gloss सवै सय वा, ABPS सलु. ४ P अरिउल्ल ५ A गियाहियवदे. ६ AP उपाइय. ७ A भइएण. ८ AP वेलाडकिम°. ९ B °कजलभारासिउउ, B °कवाराहि सिउउ १० AP यज्ज ण वट्ठिय°. ११ AP परहु बुल्लु १२ ABPS इयहि. १३ B सिमिह.

12 a जरपायव जीर्णवृक्षाः. 14 ° गिहाउ समूहः, ° गिग्घिणजलणे निर्दयाश्रिना. 15 सउहु समुक्ष्म

8 4 a जोइउ सुयउ दट्ट श्रुतम् 5 a गियाहियवदे निबधुसमूहेन. 6 a महाइय महदिका. 7 a महिऐण हरिणा. 8 a पलित्तउ प्रबलित 10 a जलयर° शल 12 a पर-गंमीरु परेक्षोम्याः, पयइगंमीरउ प्रकृत्या यम्मीरे विन. 13 a महुमहु दे कृष्ण, आउ आउ आगच्छागच्छ, साहारइ धीरयति. 15 जाययणाहे यादवनायेन समुद्रविजयेन, सि विरु सैन्यम्

9

दुवर्द—कविय रत्न सुरग मायगोधारियसारिमारया ॥

कवि निबद्ध के वि मय के वि कपहयभूरिभूरया ॥ छ ॥

जियैसताववारिरविसयणह	उमूलति के वि करि गलिणई ।	
केय वि पकु सरीरि निबिहस	सीयलु मालु विलेयणु थकड ।	
वाणयिदुचदियनिचलजलु	दीसह काणणु चूरियदुमदलु ।	8
मुकई दालिणह मणिपरिथाणह	सुरयह मडह विविहसगुताणह ।	
याणुनिबद्धह तवसिवळाह व	गुणपसरियई सुधम्मफलाह व ।	
कम्मियाह दुसह बहुवण्णह	अलिपविधि मडेवि वित्थिण्णह ।	
कहयय दियह तेत्थु निवसताह	मय दुग्गमपपसई ओयतई ।	
पुणु मण्णहि विणि मनु समत्थिउ	सुखयेण माहई मम्मथिउ ।	10
हरि गुह पुण्णवतु अ इच्छहि	त जि होह जियैससि जियच्छहि ।	
तिह करि जिह रयणावरैयाणिउ	देह मग्गु मयरोहज्जाणिउ ।	
जिरसणु अइ दियह मल्लासणि	ता रक्कससिउ थिउ इम्मासणि ।	
णहयमु अमड भिसिहि सपसउ	हरिवेसई हरि तेण पडुसउ ।	

मत्ता—माउ जिणिदु अवेवि जियैसतायजपतुट्ठिहि ॥

15

माहँव विताहि काह चड मडु तथियेहि पुट्ठिहि ॥ ९ ॥

10

दुवर्द—सा हय गमजयेरि कउ कळयलु अविषइसविसामरे ॥

मणिपल्लापट्टेवल्लामरि काडिउ सविउ हयनरे ॥ छ ॥

अवल्लहुरगतसरगभिरतरि

सुरउ पाडु समुद्धर्मतरि ।

9 १ B गोसारिय १ S सम १ A के वि कपहयि वरह वि भूरिमारया BPS कप-
दिय ४ AP निव ५ AP8 वेहि वि ९ AP सीयलु पाह विलेयणु पिउउ ७ B विलेयणु ८ A
वदिय ९ AP सारि १ B ममा ११ A मडव १२ APS पवेसु १३ S माहउ १४ A
जियवति १५ AP मर्याणिउ १६ AP अविषइसवतुट्ठिहि 1७ K माहउ १८ B तथिहि

10 १ P पडे २ A चवळ सुरउ तरग; P चळतरगगतभिरतरि.

9 1 ओ या रियसा रि मवतारितपयोणा 2 कयहयभूरिभूरया शुण्डाहसत्रुभूमिरजव
० a दाणेत्थारि दानविनुमिर्मदकवे; कळे अनित्तचमिद्रकामिअिनिग अम्म ७ a सल्लिणह कविका
परियाणह पत्थाणानि ६ तणुवाचह याचनाणानि 7 a याणु स्थाणु कीलड ६ गुण रत्न
11 ६ जियच्छहि पय 12 ६ ओहर वळनघरिउय 13 ६ रक्कससरिउ हरि 14 ६ हरिवेस
अश्रुपेण 1० नणिपसायजयपुट्ठिहि उसादितनाउकाणुले

10 3 a सुरगसरग वृक्षवपुष्पा तरा ६ सुरउ अश्रु

हरिवरगदमज्जायद् धरियञं
तद् अण्णुमग्गे साहणु चङ्खिञं
थियञं सेणु सुरणिमिद् गयमलि
भवसंस्तरणदुक्खदुक्खियहंरि
तित्थंकरु सिधदेविहि होसइ
एयइं दीहिं नि पंक्कयेत्तहं
जक्खराय तुहं करि पुरु मल्लं

पाणिञं विहिं माहंहिं ओसरिञं । 5
इयदंकारवहरिसरसोङ्खिञं ।
वेसादप्पणसंणिहिं महियलि ।
वावीसमु समुद्विजयद् धरि ।
लम्मासहिं सुरणाद् पघोसइ ।
धाणि णिवसंतहं बहुवरइत्तहं । 10
चित्तजयतिपंतिओहिङ्खरं ।

वृत्ता—अस्ति पसाउ मणेवि गउ पेसिउ सहसक्खे ॥

पुरि परिहाजलदुग्ग कय दारावइ जक्खे ॥ १० ॥

11

दुवर्—कञ्जाराभसीमणइणवणपुल्लियफलियवरुवरा ॥

सोहइ पंचवण्णचलधिधिं दूरोस्सरविहरा ॥ छ ॥

घरइं सत्तभउमंइं मणिरंगइं
मणैणाइं माणिक्कणिचइं
जलइं सक्कमलइं थलइं ससाखइं
कुक्कमपक्कं धूले कप्पूरं
महुयर वणुयणति महु थिप्पइ
कह कइतु जायउ रसु खवइ
कुसुमरेणु पिंगलु णंहि दीसइ
वेणिण वि ण संझाघण णवघण
जहिं जिणहरइं वरइं रमणीयइं

रयणसिहरपरिहृदुपर्यंगइ ।
तोरणाइं मरगयदल्लणिइइं ।
माणुसाइं पालियपरिहासइं । 5
णउ धुप्पइं सैसिकतद् धु णीरं ।
परहुयं धासइ पूसउ कुप्पइ ।
कलमकणिणु एमेव बिङ्खुचइ ।
कालायरुधूमव विस भूसइ ।
जहिं दुहु णउ मुणंति णायरजण । 10
वीणायंसविष्ठासिणिमेयइं ।

वृत्ता—तहिं समवणि सुत्ताए रयणिहिं दुक्खियहारिणि ॥

दिट्ठी सिचिणयपंति सिधदेविइ सिक्ककारिणि ॥ ११ ॥

१ APS मापहिं ४ P °इकार एरिउ° . ५ A °दुक्खिउ° ६ AP करि तुहु.

11 १ B ओहिय २ P °भोमइ ३ AP कणाइ ४ B °पकं° . ५ A सवियवहो.

६ B3 पदुव. ७ AP णहु ८ P °गीयइ ९ AB तहिं नि मवणि.

4 b विहिं माइहिं द्वाय्या मागाम्पाय् 5 a तद् अ-यत्त्व 6 a गयमलि निर्मले महीतले द्वीपे,
b वेसा° वेद्या 7 a °दुक्खियहरि दु.खिताना प्राणिना धारके ग्ये 8 b पघोसइ कयवति वनदत्त,
9 b धणि वने जले, बहुवरइत्तहं वधूवरयो . १० b °जयति° च्चवा

11 1 कण्ठ° खड्वाटिका. 2 दूरोरुद्ध° दूरादवरुद्धा 3 a मणिरगइ मणिरथानानि
मण्डपस्थानानि, b परिहृदुपवगइ धृष्टयूतानि 5 a ससाखइ धान्यउत्तानि, b पालिय° कृत.,
6 b धुप्पइ प्रज्ञात्यते 7 a महु मकरन्द, थिप्पइ क्षयति, b वासइ शय्द करोति, पूसउ शुक्र.,
8 a कह कइतु कथा कययन् 10 a वेणि वि पुण्यरत्न अगुलधूमव द्वी. 12 रयणिहिं रात्री.

12

दुर्गा—विप्रादिप्राणसत्त्विलजलभारासिक्तकमोसमूलमो ॥

पसरियकण्ठतालमदाणिलबोलिरमसलमेलमा ॥ छ ॥

विह्वल मत्तल जयणसुहावत
कामधेणुकीलारसलीणत
रायसीडु उल्लघियदरिगिरि
हृल्लतल जहि भमरमुणिल्लत
सारयसेसहर ओण्डर शुद्धत
मीण ससकलसा इय रघर
सल माणसु समुद्रु श्रीरालत
सेहीरासल्लु जणमणमोहणु
रणपुणुं पुणपडु भवलोद

समुद्रु एतल करि महरावत ।
विह्वल ईसाणविसिदसमाणत ।
सिरि पुणु विह्वल ण तिह्वयणसिरि । 5
सुरतकुरुसुमदामजुयल्लत ।
हेमतागमदिण्यरु विह्वल ।
गयासिंधुकलस मगलधर ।
मयरमच्छकच्छमरावालत ।
इयिमाणु कणिण्णिल्लणु । 10
मुद्धर सिधियत विपेणु निवेरत ।

यत्ता—सिधिययफलु जडेजेहु कहर सेंहहि निवजैसरि ॥

होसर तिहुपेणपाडु तुणु गम्मि परमेसरि ॥ १२ ॥

13

दुर्गा—हिरिसिरिकतिसतिविह्वलुकिहि देविहि कितिलच्छिहि ॥

सेविय रायमहिंसि महिसोमिणि आहिणमपकपच्छिहि ॥ छ ॥

सकणिमोहयाहि पणयतिहि
तहि पडुमगभि पठरवरिय

अवरोहि मि उवयरणह देतिहि ।
आणह पठरपुणपरिचोरिय ।

12 १ PS 'कमो' २ B 'सुहाव' ३ B 'महराव' ४ B पुण ५ S सारसव
६ AP वृत्त ७ A दिणवरि वित्त P 'विणवरित्तजो' ८ A रघर P रघर ९ B कच्छ-
मच्छ १ B सेहीराल्लु ११ B पुण १२ B निवहि १३ A जणजेहु १४ वडलिहु
१४ AP निवे १५ P तिहुवण

13 १ S दिहि २ A सावामिणि P सिपवामिणि ३ A अमराहिवतवयरणह देतिहि
४ AP 'पण' ५ APS परिगरिय

12 ४ b ईसाणविसिदसमाणत कुरुपमसदया ७ a रायसीडु सिंहान इत्यर्थ-
७ a हृल्लतल भवल्लमानस 7 a सारय सल्लकळ, हृल्लतलीला सेवित 8 a ससकलसा
कामध्वनमस्यौ रघर रतिपडौ ६ गया सिंधुकलस यत्तासिपुम्मा नौ चक्रिये मल्लकार्यं ध्रुवौ तादृशौ
७ b रावालत घन्दपुक्त 12 अडेजेहु नादकल्लेयो रावा

13 3 a सकणिमोहयाहि इन्द्रनिबोवितामि सेवित राखी; ६ अवरोहि अपराभिभ
उवयरणह उपकरणानि 4 a पठरवरियह पुरदत्त इन्द्रस

मणिमयमण्डपसाहचर्यमत्यद
उद्धमाणां तिष्ठिणि पवित्रद्वैत
कस्तियसुखप्रपाकिव छेद्विदिणि
देव जयंते पाणसपण्णव
आय देव देवादिब दाणव
पुजिबि जिणपियराइं महुच्छवि
णधमासावसाणकयमेरे^१
पंचलवस्त्रवरिसैइं णरसंकरि
सावणमासि समुग्गइ ससहरि
तत्तालंतजीवि जिम्मलमणु

पुब्बमेव णिद्धिकलसविहृत्यड । 5
धणयमेहु धणधारहिं धुद्धड ।
उत्तरआसाढइ मयलंछणि ।
गयरुवेण गग्भि अवहण्णड ।
वंदिवि भावें सफणि समाणव ।
णच्चिय पवियंभियमंभारवि । 10
पुणु वसुपाउसु विहिउ कुवेरें ।
संजायइ णमिणाहजिणंतरे ।
पुणंजोइ पुव्वुत्तइ वासरि ।
ज्जाणिइ ज्जाणिउ देव सामलतणु । 15

ब्रह्मा—उत्पण्णे जिणणाहे सग्गि सुरिंदहु आसणु ॥
कंपइ ससहावेण कहइ व वेवेहु पेसणु ॥ १३ ॥

14

जुवई—घंटासुणिचिउड कप्पामर हरिसंबलेण पेछिया ॥
जोइस हरिरवेहिं वेंतर पढुपंडहरवेहिं अछिया ॥ छ ॥

मावण संखणिणायहिं णिग्गय
सिधियाजाणहिं विविहविमाणाहिं
मोरकीरकारंडहिं आसाहिं
केरिदसणाहयणीलवराहिं
दायावइ पइहुं परियंविबि
अप परमेठ्ठि परम पमणंतिइ
पाणिपोमि भसल्लु व आसीणड
अणिमिसणयणाहिं सुइरु णियच्छिउड

गयणि ण भाइय कत्थाइ हय गय ।
उल्लोवेहिं दियंतपमानाहिं ।
फणिमंजोरमपाहिं मेसहिं । 5
आया सुरवर सहुं सुरणाहिं ।
मायादिमे मायरे वंविबि ।
उच्चाइउ जिणु सुरवइपेसिइ ।
इवहु दिण्णड तिहुयणैराणड ।
कयपंजलिणा तेण पडिच्छिउड । 10

१ AP परिउद्धड, S परिउद्धड ७ P छद्वि ८ P अयत. ९ B माणु. १० B नेर. ११ P
१३ ॥ पुणु १३ S उण्णजहि १४ A दइवहो, S दइवहो.

14 १ P हरिवलेण. २ APS पइइसरेहिं ३ APS 'मज्जर'. ४ B पयइ ५ S सुरवर.
६ AP पाणिपोम. ७ AP तिहुयण.

6 a उद्धमाणां तिष्ठिणि ऋतुत्रय कप्पामासमित्यर्थे, पवित्रद्वैत प्रवृत्तिः, धणयमेहु कुवेर एव मेघः.
10 b पवियंभियं प्रविभूमित 11 b वसुपाउसु धनवृद्धि 13 b पुण्यजोइ तद्वृत्त्ये, पुव्वुत्तइ
पद्मपाम् 14 a उक्तालंतजीवि तत्काल पञ्चलवस्त्रवर्णकाल तत्त्वान्त्य नद्वयसद्वल तत्कालान्त्यजीवी.

14 1 °विउद्ध सावधाना जाता ॥ हरिरवेहिं सिंहादौ. 4 b उल्लोवेहिं उल्लोचै,
दियंतपमानाहिं दिग्गन्तप्रमाणै 6 a णोलवराहिं मेवै 7 a परियंविबि त्रि. प्रदक्षिणीकृत्य,
b मायरे मानम् ८ b सुरवइपेसिइ इन्द्रपत्न्या श्रव्या.

मकि निहिउ कवचवण्णुज्जलि हरिणीलु व सोहर मवरयलि ।
 यत्ता—इसाणिदे छत्तु देवहु उप्परि धरियउ ॥
 सोहर मदिणयमेहि ससिबिउ व विण्णुरियउ ॥ १४ ॥

15

दुवरं—मगलतुरवीरभिम्बोसे मदिहरमिसिवारणो ॥

वरणगुट्टपहि सचोइउ सुरमहणा सवारणो ॥ व ॥
 तारायणगहपतिउ लघिवि सुरगिरिसिद्ध स सि धासविनि ।
 इसदिसिधेहि धार्यजोष्हाजलि मद्रसदसकासि सिलामलि ।
 णवियसुररामारसणसणि निहिउ छुणासीरे सिहोसणि । ६
 णाहणाहु परमन्धरमते सगारे हरिदुरेहते ।
 इज्जलणजमणेरियवरुणह पणकुमेरुहहिमकिरणह ।
 पदिवसीर दिनेसफणीसिह जणभाउ होरवि नीसिसह ।
 पड्डरेहि निजियणीहारहि कछसहि धयणविणिग्गयलीरहि ।
 ण किरीयणेहि पयससहि ण ससायमणिगु मिहणतहि । 10
 णावह उरसतिस निरसतहि य मगुराहोस धुवतहि ।
 सिउउ देवदेउ देविवहि गलतहि सिहरि य णयकवहि ।
 यत्ता—इहे तिणनिहिधार पुष्कर ततुयवद्ध ॥
 य यममहकंडा आयमसुचणियवद्ध ॥ १५ ॥

16

दुवरं—हरिणा कुकुमेण पविलिउउ छज्जर णाहदेहमो ॥

सत्तारायण पिहिवंगउ धावह कालमेहमो ॥ व ॥

८ P इसाणिदे १ B भेहे

15 १ A दासो १ PS गुणय १ AS 'वह' ४ AP 'पगारियजोष्हा'
 ५ BP सीहासणि १ P 'फलेह' ७ B कवीयणेहि P निधीयणेहि ८ B देवदेउ १ P वद्धहि
 वद्ध १० P कुडा

11 हरिणीस इन्द्रनीलमणि 13 अहिबनयेहि नवीनये

15 4 a° बहि माते ५ a रसवासणि कठिमेसत्त्वयादे 6 b सायारे इविदुरेहते
 स्वाकारेण परमाक्षरेण, हकारेण सिन्धुना ओंकारेण राजता, सिन्धुर्येकारवाचक ॐ स्वाहा इत्येवरूपेणे
 स्थये 8 a पक्षिवसीह प्रतिपत्ता आदरेण 10 a किचीयणेहि कीर्तिस्तनैरेव कलधे पयलेतहि
 प्रगलति 11 a तिस निरसतहि गुणालेकके 13 b सिहरिव णवकंदहि नवमेधैरिविवत्
 14 आयमसुचणिवद्ध आयमसुचयेण वचन प्राप्तितामि

16 1 हरिणा इन्द्रण

गिबसणु काई तासु वणिज्जइ
सहइ हारु वच्छइलि विडंविह
कुंडलाई रयणावलितेवइ
भणु कंकणहि कवण किर उण्णइ
पहु मेहेसइ अम्हई जोपं
सयमहु जाणइ जिणहु ण रुच्चइ
लोयायारें सव्वु समारितं
णाणासहमहामणिस्त्राणिइ
तुच्छइ जिणगुणपाव ण पेक्कइ

जो जिम्माथमाउं पडिवज्जइ ।
णं अज्जणगिरिवरं सरणिज्जइ ।
कण्णालगाइं णं रविविथइं । 5
मुयवंधणं व मुणिवइ वण्णइ ।
पयणेउरइ कणंति व सोपं ।
भूसणु सो परिहइ जो णच्चइ ।
तियैसिंदे शुइवयणु उरिउं ।
पुणु लज्जिउ वण्णंतु सव्वणिइ । 10
अण्णु जहंणु मुक्खु किं अक्खइ ।

अन्ता—अमर मुणिइ शुणंतु बाल वि बुद्धिइ कोमलं ॥

तो सव्वहं फलु एक्क जइ मणि मसि सुणिम्मल ॥ १६ ॥

17

पुवई—इहिअक्खयसुणीलदेवंकुरसेसासीहिं णदिओ ॥

धम्ममहारहस्स गइगुणयव नेमि सदिओ ॥ छ ॥

पुणु द्वारावपुंर औवेण्णिणु
तियैरणसुचिसुद्धिइ पणवेण्णिणु
णच्चइ सुरवर दससयलोयणु
विसिविसिपसरियबलदससयकर
महि वल्लइ विसु मेल्लइ विसहई ।
विरुण्णइउवाउ णहि णज्जइ
बल्लइ जलहि धरणीयलु रेल्लइ

सुद्धेमाव भावें भावेण्णिणु ।
जिणु अणणिवज्जंणि यवेण्णिणु ।
देइसयदेपहसियपवराणणु । 5
डोछइ णहयलु सरवि सससहइ ।

पायंगुण्णक्खु ससि छज्जइ ।
लीलइ वाइइहं जहिं वल्लइ ।

16 १ A तासु काइ २ S °माहु ३ S वच्छयलं. ४ A गिरिवर ५ P तियवेदे.
६ B समीरिउ ७ P सवागिउ. ८ PS पेक्कइ. ९ S उवण्णु १० A कोसउ.

17 १ S °वुक्कइ २ ABPS °पुरि ३ BS आणेण्णिणु ४ AP read ३ b as 4 a.
५ S °माहु ६ B पणवेण्णिणु ७ AP read 4 a as ३ b. ८ AB तिरवणं, K तिरवण in second
hand but gloss तिरवण ९ AB बुविबुद्धि, P बुद्धबुद्धि १० ABP दसं. ११ A सहसमहं.
१२ B adds तर्हिमइलआइमइरसक १३ A दिण्णदंठपाउ वि पडि, P ओउइ°

4 b सरणिज्जइ जलनिर्जर 5 a रवणावलि° रज्जोणि 6 a कंकणहिं कक्कणेयु, उण्णइ
गव 7 a जोए दीक्षावसरेण 10 a णाणेत्थादि नानाविधसंयमहास्त्रलागिरिव, b सवागिइ
सवाण्या 12 कोमल मुखा

17 1 °चिसासीहिं शेषापुण्ये आर्थावादैश्च 2 गइगुणयव समनस्य गुणकर्ता, नेमिव
चक्रपापावत् 4 a तिरवणं तिरवणस्व. 5 b सरवि सूर्यसहित 6 a °वाउ पाद; णच्चइ शायते.

तद्वि कुलमहिहरणियेव विसद्वर	विष्कुरति तापयलि तुद्वर ।	10
जैचिवि यम सरसु भाषदे	वविधि जिर्णु सद्ग सुरधरैवदे ।	
गड सोहम्मराड सोहम्मदु	पुरवरि बाहदु पालियधम्मदु ।	
गियसतदु वड गिहवमकवड	दहधणुदहपमाणु पद्वयड ।	
णयजोव्वणु सिरिहदु गित्तमसु	सामिड एक्क सहसवरिसाउसु ।	
मसा—थिउ भुजतु सुहाइ जेमि सग्गवससुड ॥		15
मरहसरोकहसुद पुष्कदतगणसथुड ॥ १७ ॥		

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसमुणासकारे महाकरपुष्कयतविरचय
महाभण्यमरहाणुमणिय महाकम्मे जेमितिपकरउपची नाम
सत्तासीतिमो परिच्छेड समसो ॥ ८७ ॥

१४ AB सिहव १५ B जचवि १६ P विपवर सद्ग सुरविदे १७ PS सुरविदे १८ ॥ गिरपम°
१९ S पचाणु २० A सामिड एक्क गरिह सहसाउसु I सामिड सद्ग एक्क नरिसाउसु
२१ A °तिपकर° S तित्पकर° २२ P सत्तासीमो; S सत्तासीविसमो

14 a गि सामसु अदेव-

धनुगुणमुक्कविसकसर ओरुद्विवायरकरपसर ॥

णं वणकरि करिहि समावडिउ जरसिंघडु रणि मुरारि मिडिउ ॥ भुवकं ॥

1

धुवई—सउरीपुरि विमुक्कि जठणाहें मडलियंसयणवत्तण ॥

णिवसुइ कालजमणि कुलदेवयमार्यावसणियत्तण ॥ छ ॥

गाजिइ हरिपयाणमेरीरवि
पंधि पंडरि कप्पूरें वासिइ
इसदिसिवहंमंयणिवैहि पणोंसिइ
पित्तिइं मतिं महति अणुडिइ
औषाहिइ मणहरसुरहंयवरि
लज्जइ मणि बिणिगोइ हरिवलि
जिणपुण्णाणिळफंयिंयसयमहि
वारहजोयणाइं वित्थिण्णइ

खंविइ अमरिसविसरइ णवि णवि । ४
करिघंटाटंकोरवविलसिइ ।
सायरतीरि सेणि भाषासिइ ।
आरायणि कुससयणि परिट्टिइ ।
वोहाईइयइ रयणाधरि ।
पुणरवि चलिंयंमिलियजळणिहिजळि ।
रयणकिरणमंजरिपिंजरणहि ।
रइयइ णयरि रिद्धिसंण्णइ ।

मत्ता—संगामविक्कसिक्कालाकुसलि
असुरिंदमहाभडमयमहणि

वसुएववरणसैंरहभसलि ॥
सिरिरमणीलंपडि महमहणि ॥ १ ॥

P has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza —

इमण्णाल्लण्णल्लोणिमण्णल्लुळलियकिपिसरत्तस ।

लण्णत्तस सम समीसियाइ कण्णो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

This stanza occurs at the beginning of xxxii for which see Vol I. page 511. ABKS do not give it at all

1 १ PS 'मुकपिसक'. २ ABP 'रुद', KS ओरुदु ३ P 'करिहो, S 'करिहो
४ PS जरसेवहो. ५ A विक्कमु. ६ A मडलियइ, P मिलियइ ७ BK माय' ८ B गजिय'.
९ B णवणवि १० A पवर', PS पउर' ११ AP 'टकार' १२ P 'दिसिबो १३ B 'णिगह'
१४ S पयासिइ. १५ B पित्तण, P पित्ति', S पित्तमयते, Als पित्तुयमते against Mss.
१६ B मत्त. १७ BP आवाहिय' १८ B सुवरहरि १९ B बिणिगाय २० B चलिइ मळिइ
P वलिय मिलिय, Als वलिइ मिलिइ against Mss २१ Als 'कपिइ २२ B सरोइ'

1 1 'मुकविसकसर सुकवाणधब्द', वाणेन सह सुकहुकार इत्यर्थ, ओरुदु' अवरुद.
3 विमुक्कि विमुक्के रिपुमयाज्जे सति, जठणाहें विष्णुना. 4 णिवसुइ जरासवपुत्रे निवर्तिते सति कि
आतम् 5 b अमरिसविसरइ श्लेषविपर्यये वेगे 7 a 'मयणिवहि मृगसमूहे 8 a पित्तिइ पित्तुये
समुद्रविजये. 9 a 'सुरहयवरि नैगमदेवचरणे, b दोहाईइयइ द्विमागीभूते 14 a 'मय' मद..

2

बुधै—शिरस्समिद्धयितम्भूलेनगयवरगर्भसाहसे ॥

धियं सुहृत्सीरिधिर्यमाणाविद्विष्यैवमयपरज्वसे ॥ छ ॥

रूपपण्डर सामिह जेमीसति
कालि गोलतइ पइहि भिरतरि
मगहाहिउं अत्याणि बइहउ
होरयाइ रयणां धिचिउइ
सपसायण वयणु जोपरिणु
काहिं सइहं माणिऊइ दिव्यइ
भणइ सीट्टि हउ गउ धाणिऊइ
बुध्याप जलजाणु न भणउ
मइ पुच्छिउ गउ एउ जुवाणउ
काइइ पुरिउ पठिभउदलवहणु
किं न मुणहि बहूपण्यइ गोयउ
ता हउ गयरि पइउउ केही

अन्ता—संहि गियर्थेव सणिहु मइरहु
गैर सुर सुतिरंछणिमिच्छिरउ

तयबुधवहमुहहुयममीसति ।
एत्तहि रायगिहकर पुरयति ।
केव वि धणिणा पणविधि विहउ । ४
तासु तेव करि गिहिय पयित्तइ ।
पुच्छिउ रायं सो विहसेधिणु ।
मलपरिवत्तं जायइ मध्यइ ।
पतियव वधिणावज्जणविज्जहि ।
जाइवि कस्यइ पुरयति लम्माउ । 10
पुरवउ कवणु पत्थु कौं राणउ ।
किं न मुणहि दारायइ पइयु ।
राणउ मधु देउ वामोयउ ।
मवहारिणि सुरयरपुरि जेही ।
अणुहरंइ जारिउ पुरवरहु ॥ 15
जारिउ जावइ अमरच्छरउ ॥ २ ॥

3

बुधै—त पेच्छतु सतु हउ विमिउं भणिहवि रयणसारय ॥

आयउ हुन्छं पासि मगहाहिव पसरियकरविचारं ॥ छ ॥

त जिधुणिवि विद्विष्यैवमहोउ
मई जियति जीयति न आयव

पहुणा कालजमणमुइं जोइहं ।
हुववहु लम्मु भरति न पायव ।

2 १ P उमूलो १ B गम्भ १ Aa विप against Mas ४ A गहपरपवते
BB गयहय ५ P गरुवि पइह ६ B मगहाहिउ ७ B दविषावलय ८ B जुवाइ ९ B पुरि पति
१ P पुरे जेही ११ P काह १२ B दवपव १३ A अणुहवइ १४ A अवसरमिणिगिणियच्छिरउ
१५ APB तिरिच्छि B तिरिच्छि

3 १ B गिहउ २ B हुन्छ १ A नरविषावर

2 1 विउवि कृष्ण गव गम्भत् 2 बुद्धि सुहृत् 4 a पइहि पते: प्रनाया वा
13 a गोयउ स्थानम्. 10 b अणुहरइ उपमां भरति 16 a वर सुर नरा सुरमा सुतिरच्छ
णि यच्छिरउ योमन त्रियेवलोकेन वासात् ७ अमरच्छरउ अमरपक्ष

3 2 करविषावर क्रियवसात् 3 b कालजमणमुहु जेहपुस्य मुलम्

कहिं वसंति गियजीविउं लेपिणु
हउं जाणेंते ते सयल विवण्णा
णवरज्ज चि जीवंति विवन्निखय
मारमि तेण समउं णिसेस वि
ता संगामंभेरि अफ्फालिय
उट्टिय जोह कोहहुइंसण
चावन्नक्ककोंतासणिमीसण
खलकुलदुसण गियकुलभूसण
इक्कारिय दिसिविदिससवासण
इच्छियजयसिरिकरसंफासण

यथा—रह रहियेहिं जोइय इयणवर
णाहि कहिं मि ण माइय सूरखयर

बणि सियाल सीहइ ल्हिक्केपिणु । 5
सिहिपैइट्टु माणभयदण्णा ।
णंदगोवभुयवलपैरिरिक्खिय ।
फेठमि वलविलाहु पसरच्छवि ।
गुरुरवेण मेइणि संचालिय ।
क्कचणकवयविसेसविहसण । 10
गुंलुगुलंति मयमयगलणीसण ।
हिलिहिलंतं हरिवर वद्धासण ।
रुहिरासोसण डाइणिपोसण ।
मग्गियअमरविलासिणिदंसण ।
आइय सुहइयसयजगकर ॥ 15
गुहउंमरंडिडिमोमुक्कसर ॥ ६ ॥

4

दुवई—लहु सखलिउ राउ अरसंधु मयंधु महारिदारणो ॥

गउ कुंसेसमरुणवरणंगुलिचोइयमत्तवारणो ॥ कु ॥

भुयवल्लधपियसयंणफणिदहु
कहिउ गहीर वीर गोवद्धण
तुज्जउ पहुं जरंसिधु समायउ
अच्छइ कुरुवेसइ समरंगणि
अज्ज वि किंरं तुहुं काइं विरावहि
किं संधारिउ तहु जामाइउ
तं गिस्सुणिवि हरि कयपहरणकैर

णारयारिसिणा णंपि उर्विदहु ।
गियपोरिसगुणरंजियतिहुयंण ।
वहुविज्जाणियरेहिं समेधउ । 5
सुहइदिण्णसुरेणहुआलिगणि ।
गियदुआलि किं णउ मणि भावहि ।
किं आणू रणंगणि वाइउ ।
उट्टिउ इणु भणंतु वद्धाहउ ।

४ P जाणमि ५ P विहिहि पइइ ६ AP वाणं ७ PS पडिरिक्खिय. ८ AB ० विलास.

९ BPS सणाहमेरि. १० ABPS गुल्लुल्ल ११ B रहियइ. १२ AB ० डामरं

4 १ ABPS जरसंधु. २ B ० खेत्त अरुणं, P ० खेत्तिमरुणं ३ B चरणुगुलिं. ४ B ० सयलं.
५ P ० तिहुवण ६ B इहु, PS एहु. ७ PS जरसंधु. ८ P समाइउ. ९ AP ० दितं. १० AP वहु
किर. ११ P दावहि १२ S सहारिउ १३ P ० पहरण

6 a विवण्णा विपजा मृता, b ० दण्णा विदीर्णा मृता. 7 a विवन्निखय शत्रव. 8 b पसरच्छवि
प्रकृष्टशरसदृश, अथवा, प्रसरन्ती छविः कान्तिर्यस्य. 11 b गुल्लुल्लति शब्द कुर्वन्ति, मयमयगलं
मदोन्मत्ता.. 13 a ० सवासण राखला शवाश्रमा. 15 a रहियहिं सारथिमि, b उन्नतयस गकर
उत्तावतलङ्गकरा 16 b ० डमरं ममोत्सादक., ० जोमुक्क अवमुक्क..

4 1 मयधु मदान्व. 3 a ० सयणं नागशय्या. 7 a विरावहि कालसेप किं करोषि;
b गियदुआलि निगोत्तकत्त (†) स्वमाडीमारणु (†).

हलहर भज धरि निर्दोषमि
ता सणख कुन्ने ते जरवर
पह्यरं रणतुराह रजह
जायववतु जलनिहिजलु लघिवि

धत्ता—सणखरं धहियमच्छर
अम्भिहृह कयरनकलयलह

दे भायसु मसेसु वि मारमि । 10
चोह्य गयवर धाहिय ह्यधरं ।
खपूरियगिरिहृहरसमुहं ।
थिह कुन्नेसु स ति भासधिवि ।

करवालसुलसपसकरह ॥

वामीयरजंरंतिधह धलह ॥ ४ ॥

15

5

धुधरं—हयगंभीरसमेरमेरीखधहिरियणहदियतं ॥

उकसयसामातिफसराजसणखधहियदतिदतं ॥ ५ ॥

कौतकोविशुपियकुमयलह
धुधमुत्ताहलणियरजलियह
सेहविहिर्णवीरयकलयलह
कच्छलतधर्गुणगणकारह
लोखियफणिदिणयरलसिसकर
हयमर्त्यह मरिधंकरलोह
मीधियधुधरं निहिणनुरमह
पगैहणिहृरंविहिनीसं
भगारह धुधियधयदह
लुसमिहकनगपंरसं
धणविधंलियधायकीकाकर

रहिरधारिपूरियधरणियलह ।
विह्लियतधुमलपकलियह ।
सरयरपसरपिहियगमणयलह । 5
मोहविमुकफारहुकारह ।
धजमुह्विधूरियसीलह ।
दलियद्विधुलीलहयलनिह ।
कंठमिधायजजरियरहगह ।
करकहियलारहिसिरेकेसह । 10
मौलकहपीणियमेरह ।
धुरकामिणिकरधलियसेसं ।
किलिकिलि जीहणियेयालह ।

धत्ता—ता रजवरधरिधरिधह

धुधतह दोहं मि लाहणह ॥ 15

मो सुहहं मच्छरमि जलिह तेह धूमं व रज नहि कच्छलिह ॥ ५ ॥

१४ B निर्दोषमि १५ ABP कुह निव नवर १६ PS खर. १७ B^०अरविधनकर PS^०नरुध

5 १ P^०दमेरी २ BPSA^० विवतह ३ APA^० विपससग ४ BPSA^०
दसं ५ P विह्लियमल ६ A निहिध ७ विहीन ८ P^०धगुण ९ APS हयमाधय
१ B भकि १ A रलनिह ११ P धुधि १२ AP सगह १३ A निह्वियहय
१४ AP^०वीसह १५ B^०करकेह १६ B कलिय १७ B मल १८ A^०पवेसह १९ B^०विग
लिय २० ABP किलिकिलि २१ किलिगिलि २२ B दोहि २३ P तरे धूम २४ B धूमरजो

13 a जायववतु वादवलेभ्य

5 3 a धुधिय स्रष्टानि 5 a सर वाया 7 b वीषकह शिरज्जानानि 8 b
वीषद धीमला 9 b कठनि बकि रदवह यमनि 10 a पमह रजु 12 a खरं
पयसह भजितधरीप्रवेणानि ६ सेसह पुणानि 13 b किलि किलि धिह कुन्ने 14 a
हरि अथा 15 b रज रजो धूमि

6

दुर्वर्—यं मुहवद् गिहिलु जयलच्छिहि लोषणपसरहारभो ॥

यं रणैरयससस्त पवणुद्धुड पिगलकेसमारभो ॥ छ ॥

असिधारातोषण ण पसेमिड
उद्धु गंपि कुंभत्यलि पांढियड
गंदिं यंतु कण्णेण छडपिड
वंसि यंतु चिंघेण गलत्थिय
करपुक्कळरि पइसइ गणियारिहि
वेलंवलपडिपेड्डिड गच्छइ
दिट्ठिपसहं असिपंसव पिवारइ
मेणि विलगु वीसासु भं मग्गइ
हरिपुण्डरिखड रोषेण व उद्धु
हंकाइ मणिसंघजंपाणइ

घत्ता—धूळीरड दहिररसोल्लिपडं

थिड रंतु पड वि णंउ चड्डियडं

पंडुरल्लत्तडु णवरुणेरि थिड ।
पिच्चव्वासं गयवरि चडियड ।
मइलणसीलड कासु ण विप्पिड । 5
इंदि यंतु चमरेणवइत्थिड ।
लोलइ योरयणत्यलि णारिहिं ।
वैठदिसि णिम्मंछिड किं अच्छइ ।
अंतरि पइसिधि णं रणु वारइ ।
पैयणिवडिड णं पैयइ लग्गइ । 10
जं जं पावइ तौहिं तहिं संडइ ।
जोयंतहं सुखरइ विमाणइ ।

यं रणवडुराप पेड्डियडं ॥

यं वम्मइर्याणं सल्लियडं ॥ ६ ॥

7

दुर्वर्—पसमिह धूलिपसरि पुणरवि रणरहसुंखाइया मडा ॥

अंजुसर्वस विसत्त विसमुब्भइ सोइय मत्तगयवडइ ॥ छ ॥

कासु वि णारायहिं उड दारिडं

णायहिं जं धसुइयलु वियारिडं ।

6 १ A णरक्कलसत्त. २ B पवणुद्धु. ३ A पसरिड. ४ P उवारि ५ B गल्ल. ६ P चमरेण विहरियड. ७ A रउविमु, PS चउदिसु. ८ AB णिम्मच्छिड, S णिम्मदिड. ९ AP add after this अजापड करु दिंस गच्छइ, A म्हु पपुक्कइ कहिं किर गच्छइ, P अह चवड्ड किं निघड्ड अच्छइ. १० AP पवर. ११ A लवणि पइसि वीसासु १२ APS व. १३ PS पयवडि-यड. १४ APS णायहिं १५ A त तहिं. १६ B स्तपभो वि, P रउड पड वि, Als. रउड पड ॥ against Mss. १७ S ण चल्लियड. १८ A वाणइ.

7 १ S इद्धाविया. २ A विसविसत्त.

6 1 मुहवद् मुलनक अन्तरपटः २ पवणुद्धु पवनकथितः. 4 b पिच्चव्वासं गजो जले स्नान करोति तदनन्तरं कुण्डया विजगृहे रजः. क्षिपति, तस्य तु रजसो गजपृष्ठोपरिपतनाभ्यासः सजातः, तदभ्यासयोगेन तस्य गृहे रजः पतितम्. 7 a करपुक्कळरि कुण्डल्ये मुखे, यणि यारिहिं हस्तिभ्याम्. 8 b चउदिसि पिच्चच्छिड सर्वज मस्सित 10 a वीसासु अ मग्गइ विशास याचते, b पयणिवडिड पादलम्. 13 b रणवडुराप रणवधूराणेण. 14 a पडवि पादमयि.

7 ॥ a णारायहिं नारायैर्वाणे, b णायहिं नार्गेर्वसुधातल विदारितमिव.

को वि अद्दहं सिरि^४ मिण्णउ
 गुणमुक्केहिं सगुणसज्जुत्तउ
 को वि सुद्ध धरणिपल्लु ण पत्तउ
 केण वि जसु धवलित्ठि णिह भिदं
 धरल्लु ण सक्किउ छिण्णकरगार्हि
 कासु वि तिरु अद्यततिसाहउ
 कासु वि अतइ पयजुंयधुलियेइ
 कासु वि गलित्ठ रत्तु गत्तवडु
 कासु वि सिप कामिणि ध णिरिक्कइ
 को वि सुद्ध पहरणं णउ मुञ्जइ
 को वि सुद्ध जहिं जहिं परिसज्जइ
 यत्ता—अल्लवामरपट्ठोल्लकरिप
 भैम्मिदिय गल्लयणमारधर

सोद्ध मड रुदु च मयइण्णउ ।
 यडुलोदेहिं लोद्धपरिचत्तउ । 5
 मग्गणेहिं चार्ह य उक्किपत्तउ ।
 असिधेणुयंयिदत्तजसहुदं ।
 केण वि धरित्ठ चक्कु दत्तगार्हि ।
 असिधरणाणिपंधारहिं धायेउ ।
 पडुरिणयधणाइ ण डुलियेइ । 10
 केद्ध तिस णिह तिसियंकयतडु ।
 णहहिं विपारिधि हियवउ चक्कइ ।
 मुंछिउ उम्मुच्छिउ पुणु जुज्जइ ।
 ताहिं तहिं समुदु को वि ण डुज्जइ ।
 हरिवाहिय मच्छरकुण्डुरिय ॥ 15
 पवरासवारकरवालकर ॥ ७ ॥

8

दुप्रा—इपसणाइदेहणिक्केद्वियलोद्वियंतुत्तलकडे ॥

के वि समोवडंति पविमडधदि विरसियत्तसपडे ॥ ४ ॥

अवसिरिरामाहिं गणल्लुद्धइ
 असिसंघइणि उद्विउ इपवडु
 इलविदिसालइ तेण पलिसइ
 ता पविक्कअपहरमयतडुदं

यक्कमेज पहरतइ कुज्जइ ।
 कडकडतु सोसित्ठ सोणियडु ।
 पक्कलवमरेइ विधइ छत्तइ । 5
 मडुमडवल्लु वल्लेदिसियहणडु ।

१ APS अद्दहं ४ AP तिरु ५ AP धरणिपले ६ A नावइ उक्किपत्तउ ७ P "विणुव"
 ८ B "विदत्त" ९ A णवडु P अज्जु १ PS "धाहि" ११ PS धाइउ १२ P "हुव" १३ A
 डुलियउ १४ A पलियउ P बलिकइ B बलिकइ १५ P "कडो" १६ A पहरणि ण समुज्जइ P
 पहरणेणउ १७ A मुच्छिउ पुणु उ मुच्छिउ कुज्जइ P मुच्छिउ मुच्छिउ पुणु पुणु छत्तइ १८ P समुदु
 १९ A "पयज्जकरिय" २ A "डुक्कुरिय" B कुज्जरिय २१ AP "अमिह गल्ल" २२ अम्मिदिय
 २३ A "णिपहिय" २ B "छदिय" P "लोद्विय" २४ A "त्तलकडे" ४ P "दिसिपे"
 B "दिसव"

4 a अद्दहं इ अर्धचन्द्रेण 5 a गुणमुक्केहिं मार्गवैश्वचक्रैश्च सगुणं वागी दातृवत् 6 b
 उक्किपत्तउ उज्ज (उत्थ) स्थापित 9 a अज्जवतिसाहउ अतीव तृविं जातम्, b धावउ
 वृत्तम्, 11 a गत्तवडु देहमप्यात् 12 a तिरु कृष्णावी 13 a णउ मुज्जइ न विस्मरति
 14 a परिक्कइ प्रवर्तते

8 2 समोवडंति अवपत्तिं सधडे युगे उम्मुक्केत्कर्त्तव्यात् 4 b कडकडतु काय कुर्वन्,
 सोणियडु त्वद्ध 5 a आहइ मुत्तानि; पविक्कइ प्रवर्त्तमानि 6 a तडुउ मीतम्

पोरिसगुणविभोविषवासर्व
 णरहरि तुरय रहिणं संचूर
 धीरइ हुकारइ पच्चार
 वमइ रमइ परिभमइ पयइइ
 सरइ धरइ अवहरइ ण सचइ
 उल्लालइ चालइ अप्फालइ
 ईइइ संखोइइ आवाइइ
 अंतं ललंतइ गांइइ ताइइ
 वेइइ उव्वेइइ सदाणइ
 वगइ रगइ जिगंइ पयिसइ

वत्ता—कुसपास विलुंचइ हयवरइ
 वरवीर रणंगणि पञ्जलइ

हणु मणंतु सैंइ धाइउ केसउ ।
 सारइ दारइ मारइ जूरइ ।
 हणइ वणइ विहुणइ विणिवारइ ।
 संघइइ लोइइ आवइइ । 10
 खचइ कुंचइ लुंखइ वंचइ ।
 रुसइ दूसइ पीलइ हूलैइ ।
 रोइइ मोहैइ जोइइ साइइ ।
 रंडमुंडखंडोइइ पाइइ ।
 रक्खे भुक्खोरीणइ पीणइ । 15
 वलइ मलइ उल्ललइ ण वीसइ ।
 गलगिखइ तोइइ गयवरइ ॥
 मंडलियइ रयणमउड वलइ ॥ ८ ॥

9

दुवई—जुजइ धासुपउ परमेसर परवलसलिलमंदरो ॥

सुरकामिणिणिहिउकुसुमावलिणवमपरंदापिजरो ॥ ६ ॥

गयमयपंकमंमिह खलमहुयरि
 संइणसंदाणियइ दुसचरि
 लोहियंमंथिमेहि सुसचुरेइ
 सामिपसायदाणरिणिगमि

इपलालाजलवाहिणि दुत्तरि ।
 रंडमुंडविच्छंडमयंकरि ।
 कउपमउडकुंडलहारंविइ । 5
 बुक्ख विहंगमि तहि रणंसंगमि ।

५ S °विग्गविग्ग° ६ S °वासउ ७ AP° सपायउ ८ S केसउ ९ AP लो णरहरि
 तुरयहि (P दुयइ) सचूरइ, BAIs. जरकर though Als. thinks that क is written in
 second hand, K. records a ५ जरकरि इति वा पाठ, T also records a ५ जरकर
 (रि ?) इति वा पाठ., १० S खेण. ११ ABS जुचइ, P कौचइ १२ A चालइ १३ B
 अप्फालइ १४ P लइइ १५ S जोइइ मोइइ १६ A अतललउ, S अप्पेणण १७ APS गांइ.
 १८ AS °रणे, P रिण (इ) १९ S रगइ २० B गिवसइ २१ P पइइइ

■ १ A °मदरो २ ABS °कुसुमजलि°. ३ PS °मवरिंद°. ४ P °भमिय°. ५ K °जलि
 वाहिणि दुत्तरि but gloss नदी on जलवाहिणि ६ BPS °विच्छुड°. ७ S °यमेहि. ८ APS सुसि-
 निप, B सुसचिप, ९ ॥ रणि

7 u °वासउ इन्द्र. 8 a जरहरि नैरास्तुता अन्ना, रहिण रणिकान् 9 a धीरइ स्वपशान् धीरयति.
 10 a पयइइ प्रवर्तते 12 a हुलइ प्रोइ (!) शूलप्रोव करोति (!) 15 b रक्खे राक्षसान्
 17 a कुसपास तर्जनकान्, °विषउ प्रीवामरणम्

9 1 °सलिलमंदरो °सलिलमन्यने मन्दर. 3 a गयमयपक° गजमदकंदमे. 4 b
 °विच्छड° सम्पूहेन. 5 a °वि मे हि विन्दुमि.

सिरिसिं कुलससामत्यमयधे
 नदगोव धियदुर्धे मत्तव
 त जाणहि करिमयरउह
 पर विणु गार्हि मद्रिसिहिं वज्ज
 जाहि जाहि गोवाल म दुक्कहि
 गियकुलकमलसरोवरहसहु
 त मुयवलु तेरउ वक्खालहि
 पर्यहिं तुज्जु न वासहु सुत्त
 वत्ता—पर मारिवि वारिवि जसु रवि
 वज्जोलिवि पदहु तणउ कउ

माइउ पचारिउ जैरसंथे ।
 अ तुहुं महु करि मरणु न पत्तउ ।
 च्चिकिवि थक्कउ लवणसमुह ।
 पदहु केरउ गोउलु सुण्णउ । 10
 मसु मज्जु कमि पडिउ न सुक्कहि ।
 जेण परक्कमु भगउ कसहु ।
 वेक्खहु कुलकलकु पक्खालहि ।
 ता वारियणेण पडिबुत्तउ ।
 तोसोवमि सुरेणर नर भुवणि ॥
 गोमदलु पालमि गोर्दे हउ ॥ ९ ॥

10

पुरा—मयव वि वेक्खु पेक्खु हरितुक्कलसिरियणकुकुमावणा ॥
 एव बाहुदउ महु केरा वेररिकरिदवारणा ॥ सु ॥

एव बाण एव बाणासणु
 इहु सो तुहु रिउ एउ रणगणु
 अइ गियकुलपरिहरेण न गवेसमि
 सो बलपवहु पय न जमसमि
 हउ नउ नासमि पाउ पयासमि
 इयिं गज्जतहिं भगुरभावह
 उट्ठिउ गुणउकारविणायउ
 सहमपण व तेण वमक्कह
 लसि तसिपउ हुउ झीयेकललउ
 जलमिदिज्जह अलह परिमुल्लियह
 कपियाह सस वि पायालह

एहु इहु करियरज्जवालणु ।
 एउ सक्कि सुरमरिउ जहगणु ।
 अइ अइ कसपहेण न पैसमि । 5
 अरहउ सासणु न पत्तसमि ।
 मसु तुज्जु जीविउ गिण्णासमि ।
 दोहि मि मक्काळियह सचावह ।
 वेचिउ वाउ वदणु अइ जायउ ।
 सुरकरि बाणु देणु नउ थक्कह । 10
 पिउ जसु न मयमीप कालउ ।
 गइणक्कयसह मदिवाल्लि सुलियह ।
 विरिसिहउ गिवडियह करालह ।

१ AP सिरिकुलससामत्य ११ P जसंथे १२ S वक्कहु १३ A तोसोवमि P तोसोवमि
 १४ सुर नरवर नर १५ A उक्कालउ S उक्कालमि १६ P गो इउ

10 १ S वेक्खु onco २ S नहरिदवारणा ३ P एहु ४ S परिहरेण ५ P बाहुद
 ६ PS चक्कह ७ ABPSAIs हीनु कम्म ८ APS मयमीप

7 a उक्कहु^१ वक्कहु 10 a वज्जउ वदितव 13 b कुलकलकु ल गोपपुत्रो जनेर्णयते
 इति कुलकलह 10 a कउ कमा b गोमदलु सुमक्कल्लु गोउ गोप

10 3 b इहु वक्कह 4 b चमिक्क सक्किण्णम् 5 a गवेसमि स्फोटयामि 9 b वेचिउ
 कमितः अहुं उक्कालः 10 a चमक्कह निमेति

घत्ता—अमरासुरविसहरजोइयइं तोणीयइं अंधारोइयइं ॥
उपुहविचिचइ संगयइं णं गरुह पिछेइं णिगयइं ॥ १० ॥ 15

11

दुवई—बलोरययजैसारि बहुपहरण चहुलसमीरधुयधवा ।
ता जैरसिधरायदामोयरपयनुयचोइया गथा ॥ ६ ॥
करहगलियमयमिलियमहुयरा अलहर अब पविमुकसीयरा ।
सायर अब गज्जणमहारवा बइवहु अब तईलोकभइरवा ।
मुणिवर अब कयपाणिभोयणा थीयण अब लीलाबलोयणा । 5
पत्थिव अब सोहंतचामरा अलंभर अब परिचत्तभीयरा ।
सुपुरिस अब वटवटकच्छया रक्खस अब मारणविणिच्छया ।
सुररह अब धंटीलिमुहलिया बरसर अब पइरेहिं पयलिया ।
जैवणिहिं अब रयणेहिं उज्जला कज्जलालिपुंज अब सामला ।
अरणवालवालियधरायला अलअलंतसोवणसंजला । 10
पुक्खैरगासंगहियगंअया एकमेकमारणविलुअया ।
रोसजलणजालोलिछाईया विहिं मि कुंजरा सैंउह धाइया ।
घत्ता—कालउ सुरवावालंकरिउ फेडिछुरियई बिज्जुर बिप्फुरिउ ॥
सरधारहिं बुहउ महुमहणु णं णवपावसि ओरंधेरिउ घणु ॥ ११ ॥

12

दुवई—सरणीरंधपसरि संजायइं अगु वि ण जाइ णहयले ॥
विज्जतेण तेण मउ सुडिय पाडिय भेइणीयले ॥ ६ ॥

८ BP 'रोहिंय', ९ S उगह, १० BP पिच्छर, ११ K विमाइ.

11 १ P वलवियं, २ A 'रजसारि', ३ PS जरसैंव' ४ ABS वइवउ अब ५ B तिहुक', P तेलोक्क', ६ BAs छीअविलोयणा ७ S खज्जण अब, ८ AB परिचत्त', ९ ABP हररर अब १० BS घदाहिं मुह', ११ P भिवणिहिं, १२ P पुत्तर अब १३ S धाइया १४ A सहुउहु, BP वमुहु, १५ B करि, १६ P 'छुरिय', १७ P विप्फुरियउ, १८ B उत्तरिउ.

12 १ AP 'भीरवयारे २ S विक्खेण.

14 b अंधारोइयइं स्कन्धरोपितानि. 15 a सगवइ यतानि.

11 1 'रयण' इत्ता, 'सारि' पत्थाणम्, 'धुयधवा' कथितध्वजा.. 4 b वटवटु अब समवत्, 7 a 'कच्छया' कज्जा अवाचयं च S a सुररह अब देवरववत्, b पइरेहिं यामैवांसिध. S a 'यणेहिं' रजैर्दन्तैश्च. 11 a पुक्खरअम् 'शुद्धाणम्', 14 a सरं अल वापध.

12 1 सरणीरंधपसरि निमित्ततया अणसरे, निरुदरे, अगु पक्षी. 2 तेण नारायणेन.

वरधम्मेण जह वि परिचत्ता
परणरजीवहारि दुइसण
वम्मविइसण विसुणसमाणा
अणुहं दिण्णवं जह वि णवेपिणु
अन्धदु पावइ न तिइअमुव
मन्नाणा वि णिय मोक्खदु कण्हे
ता मगहाद्धिवेण रुसत्ते
णियसरेहिं विणिवारिय रिउसर
असा—ता कण्हे विइउ परसरिवि
परवइ नारावहिं वणिउ किह

लोहनिवद्धा वित्तविचिता ।
चच्चलयर णावइ कामिणियेण ।
दूरेसारियभमरविमाणा । 5
कोइउ ताउं वो वि मेड्डिपिणु ।
अह किं किर कएति जह गुणबुय ।
वहरियीरणिहारणतण्हे ।
हरिधनुवेयंणाण दूसत्ते ।
विसइरेहिं छिण्णा इव विसहर । 10
धयउत्तइ चमरइ कप्परिवि ॥
बुत्तेहिं विलासिणिउउ जिह ॥ ११ ॥

13

बुवई—ता वेवइसुयस्स वळेससि पलोईवि निज्झिपावणी ॥
मणि चित्तविं विअ अरसिंवे विसरिसावेपिइकविणी ॥ ६ ॥
इउई—णवर पवररायाहिरापण सवेसिया हारणी मारणी मोहणी धमणी
सम्पविकापळउंछेइणी ॥ १ ॥
पळपधरवारणी लगया वणिणी पासिणी वणिणी सुलिणी हुंछणी
मुडमाकाहरी काळकावालिणी ॥ २ ॥
पयडियमुइवतंपरीहिं हों हिं ति हासेहिं पिणुइवेसेहिं मायीविरुडेहिं
भीमहिं भूरेहिं यद्धा रहा ॥ ३ ॥
हरिकरियरे किंकरे उल्लइमि वीवेमि विंधमि जाणे विमाणमि
कण्हेणे जुज्जे रिउं वीसए ॥ ४ ॥

१ S कामिणिअण ४ AP तो वि मेपि BAIs ताउ वोपि ५ PAIs भाइय ६ AP कुणति
७ PS पाणु

13 १ B वळवसिए लो २ S पलोववि ३ S निज्झा ४ A वित्तवि S चित्तवि
५ PS वरतेपे ६ P वेविइकविणी ७ A omits इउउ ८ S omits मोहणी ९ B छेयणी
१ AP पळपधरवारणी B पळपधरवारणी AIs पळपधरवारणी against Mss and against
gloss in all Mss ११ A omits हुंछणी S हुंछणी १२ S हा ई ति १३ AP मायाविरुडेहिं
१४ P भूरेहिं १५ K omits वानमि विंधमि १६ P कण्हेण कुजेण जुज्जेवि रिउ १७ BK रिउ

5 a वम्म विइसण मर्मविधसका 7 a तिइअउय गुणाज्ज 8 a मोक्खदु मोहं लक्ष्य प्रति बाणा
मेविता; 9 b ७ गुदेयभाण इउते अनुवेइअननुय कुर्वता 11 a विइउ राजा विइ 12 a
वणिउ अणित

13 4 पळपधरवारणी यमादप्यविभक्त्युक्ता इत्यर्थे लगया धक्रीभूता; काळकावा
लिणी कुणा कापालिनी

विदुर्णह सयलं बलं जाव पुट्टं सख्येद्विभंगेहि तावंतराले चलंतुग्ग-
पक्खिदकेऊहँरो संठियो ॥ ५ ॥

फणिँसुरणरसंयुओ सूरसंजौमसंघट्टसोढो महामंतवार्दसरो तप्पहावेण
णिण्णासिया ॥ ६ ॥

जलहरसिद्धे खलंती बेलंती बुलंती तसंती रसंती सुसंती चलायास-
मग्गे सुदूरं गया देवया ॥ ७ ॥

घसा—हँरिँसणि णइयलि दिण्णपय अं वहुइविणि णासेवि गय ॥ 10
तं परतरुणीगलहारहर पड्डणा अवलोइय णिययकर ॥ १३ ॥

14

बुधई—पमणइ कोयजलणजालारुण दिट्ठि धिबंतु माहवे ॥

किं कीरइ खलेहिं भूणहिं थियहिं गणहिं आइवे ॥ छ ॥

तेण बुद्धिओ हरी सुपिंडमुंडखंडणे	किं बह्महिं किंकरेहिं मारिणहिं मंडणे ।
होई भू इय णिवे ण बुद्धिसे किमेरिं	एहि कट्ट चिट्ट उट्ट पेच्छ मज्झ पोरिं ।
केसरिं थ्व बुद्धरो करग्गणककराहओ	सो वि तस्स संमुहो समच्छरो पधाइओ ।
ता महीसरेण इ ति पाणिपल्लवे कय	लोयमारणेणविद्वंसंणिहं सच्चक्रयं । ४
उत्तमेण कुकुमेण खंदणेण चच्चियं	भामिय करेण धीरदेहरत्तसिच्चियं ।
सुत्थपंचवण्णपुण्णदामएहिं पुजियं	राहियामणेहरत्तस संमुहं विसिच्चियं ।
खंडसूररस्सिरासिच्चिच्चियविसिचंछहं	कालकवभीमभूयमसुदूयदूतहं ।
वेरितासयादि भूरिभूइमाइ मासुरं	भयिजीयमैदुचेदुत्तट्टकिणरासुरं । 10

१८ BKP विदुणेह. १९ B पुट्ट, P उट्टति २० B सख्येद्विभंगेहि. २१ A "केसरहो,
P "केकरे. २२ A फणिणसुरं" २३ APS "सगाम", P "सगामि सवाविओ सो महापुण-
णेमीसरो तप्पहा" in second hand. २४ A बल्वी. २५ B वहु इवणि in second hand;
S विणदंसणि.

14 १ A दोच्छिओ, B बुच्छिओ, S दोच्छिओ २ ABP विपिंड. ३ P होड ४ B
डक्खसे, P बुण्णसे ५ Als "मामणक" against Mas misunderstanding the gloss.
६ A "विमवणिइ पिक्कय ७ A गुड, PS गुणं ८ BP "पुण" ९ A चदवरासिं, B चदवरेय-
रासिं. १० A "सच्छिइ ११ A "मट्टकिट्टणट्टकिंकरा".

४ जाणे वाहने, बुद्धो युद्धनिषये 7 चलतुग्गपक्खिदकेऊहँरो सठियो चलोअगखकेतुधरा
सहित. 9 चला चपल 11 a "हर अपहृती.

14 ॥ a बुद्धिओ तिसुत्तं, न पिंड" मनुष्यधरीरम्. 4 a होइ इत्यादि नृपे हते सति
पृथ्वी भवति स्ववशा ॥ a करग्गणककराहओ क्काअग्गित्तल्ल एव नखराचितः. 6 b लोयमारणे 5-
छ विं व स पि इ लोकमारणे प्रलयार्कविम्बसद्वयम् ॥ b राहिवा" गोपाकना. 9 a "विच्चियचि"
अम्यचि. 10 a "वासया रि भासकारि, भूरिभूइमाइ प्रसुविभूतिविषया.

घसा—आणामागिकहिं वेयेंदिउ व रिउरगु हरिकरि अदिउ ॥
गियकफणु तिहुयजसुहरिय न पाहुइ वेसिउ अयसिरिय ॥ १४ ॥

15

दुपार—त हत्येण लेवि दुब्बोह्लिउ पुनरवि रिउ परोहिभो ॥
अज वि देदि पुहवि मा आसहि अणुणहि सीरि सौमिभो ॥ ६ ॥
त गिहणेवि ^{११} मगहेसे आरुहे कयतभउमीसे ।
हुइ गोवाहु बालु गडे आणहि सहु होवि कामिणियणु भाणहि ।
अउ किं सिहि सिहाहि सतायहि यहु अगार सुइउरुणु दावहि । 5
बैके एण कुलाहु व मत्तउ अखु मिर्त्त कहि जाहि जियवउ ।
ओसरु सवे परेसर मा अमपुउ आम न भिवमि सत्तिर तुइ उउ ।
राउ समुदयिउउ कम्माराउ वसुएउ वि पाएउ महरउ ।
हुइ धेर साहु पुसु किं यजहि बिहु अरणि मर्गणु न लअहि ।
हरिणु व सीहिं सहु एण इअहि मिहु होवि रायसहु वछहि । 10
अल अजिहिलि पाय पाये तुइ आहु गाहु मा जोवहि महु तुहु ।
सा हरिणा रउरणु विमुकउ रविमिहु व अत्ययेरिहि हुकउ ।
घसा—गरणाहु छिणउ सिरकमलु पावेर रेहुणु जयकुसुमवहु ॥
विउ हरि हरिसे कउरयमुउ पवरउरकौडीहि धुउ ॥ १५ ॥

16

दुपार—इर अरविपणर महुमहसिरि अजियमहुयराउभो ॥
सुरवरकपविमुहु गिवहिउ जयवियसियकुसुममेउभो ॥ ६ ॥

११ B विपदिपठ

15 १ PS पयहेवो २ B पुहर ३ PS पतिवो ४ P पठणु ५ B न हु ६ AP
बलेण ७ B मिहु ८ AP जमिउउ ९ P ऊरव १० B पवह ११ A सहु परे वाहु B पर
P परि १२ BS होइ १३ ASA० रायणु १४ APS अत्ययेरिहि १५ A पाई
१६ AP एणे

16 १ B अरविउ P अरवेवे ३ अरवेव २ B अरवि ३ P विमुक

11 a वेयडिउं अयिय,

15 2 अणुणहि प्रायेव 5 a सिहि सिहाहि सतायहि अजि स्वाअमिवाल्पसि 6 a
कुलाउ व कुमकारव 7 b उउ इअय, 9 a पर पादणुणे 10 b मिहु होवि इत्यादि मूलो
भूला रामने वाञ्छवि 12 b अत्ययेरिहि अज्ञानने

अरिणरिद्विजारीमणजूरं
पायपोमपाद्वियगिष्वाणं
धिरभवचरियपुणसंपुणं
एकसहसवरिसाउणिवर्धे
मागडु वरतणु समउं पहासें
सुरसरिसिंधुवकंदणिकेयहं
सिरिविरयकडकलविविधेवें
विष्फुरंत पहायलि पेसिय सर
जिणिवि गरुडसोहंतधयभे
णियपयमुदिय दपुडलियहं
घसा—कोत्थुयमाणिके दंड अवव
सिद्धरं सहुं सासिह सत्त तहु

कड कलयलु पहायहं जयतूरं ।
दहधणुतणुडच्छेहपमाणं ।
णवधणकुवलयकल्लवणं । 5
रणभरधरणयोरधिरकधे ।
साहिय कयदिब्विजयविलासें ।
मेच्छरायमंदलह अणेयहं ।
णिज्जियाहं णारोयणदेवें ।
बिज्जाहरदाहिणसेदीसर । 10
महि तिखंडमंडिय जिय अणें ।
सूडामणि णाणामंडलियहं ।
मय संखु वल्लु धणुहु वि^{१०} पवर ॥
रयणहं मेहणिपरमेसरहु ॥ १६ ॥

17

पुर्वा—अहसहास जासु वरदेवहं मणहरिदिरिद्धहं ॥

सोलह वल्लणिहिसदिण्णापहं रायहं मउडवद्धहं ॥ छ ॥

कहयवकरणाळिराणणिलेपहं
रुप्पिणि सव्वहाम जंवावह
हावभावविभमपाणियणह
एयउ साहिय पुहणरिवहु
वल्लएवहु माणवमणहारिहि
रयणमाल गय सुसल्लु खलंगल्लु
कसण धवल वेणि वि णं जलहर

घरि वेत्थियहं सहासरं विलयहं ।
पुणु सुलीम लक्खण मंथरगह ।
सहं गंधारि मोरि पोमावह । 5
अहमहापविउ गोधिदहु ।
अहसहासरं मंदिरि^{१०} णारिहि ।
खउ रयणाहं तासु वहुमुययल्लु ।
पुरि दारावह गय हरि हलहर ।

४ PS °लधे ५ A °विधुकठं, PS °सुवुकठं ६ BS °सोहवि, ७ P °सुल्लियह, ८ P °कोसुहं.
१ P माणिक. १० B मि पवर, P मि अवव

17 १ B °देवहिं २ BK कहव^{१०} but gloss in K कैवव, P कहविय. ३ A °णलि-
यह. ४ A तेत्थियह जेहे वरविल्लयह, P तेत्थिय सहसह वरविल्लयह. ५ B सहु. ६ ॥ एहउ. ७ A
मदिरणारिहि ८ AP भवल ण वेणि वि

16 4 a °गिस्वाणे कुण्णेन मागधवरतन्वादय साधिता इति खन्ध. 5 b णवधणं आवाण-
मेव. 7 b कयदि व्विजय विलासें कुवदिव्विजयविलासेन 8 a सुरसरि त्यादि गङ्गासिन्धूपकण्ड समीप-
निफेतनानि. 12 a °सुदिय सुद्रिता अल्लुताः चूलमणयः, दपुडलियह दपेणोल्लितानाम्
13 b गय गदा.

17 2 °दिण्णापह दिग्गजानाम् 3 a कहव^{१०} कैतवम्, b विलयह वनितानाम्, 5 a,
°पाणियणह जलनद्या.

अहिसिखिउ उचिदु साम्ताहि
यद्धउ पङ्कु थिरेहइ केहउ
दिव्यकामसोफनइ भुजतहु
अण्णाहि दिवेसि कसमहुपरिउ
धत्ता—पङ्कुल्लयेल्लिपल्लवियवणि
शउ जलकेलिहि हुरि सीरघव

मिरि य धणेहि णवधु सयताहि । 10
तदिबिलासु धेरमेहहु जेहउ ।
नेमिहुमारहु तहि णिवसतहु ।
णिवभतेउरेण परिवारिउ ।
अवपाउसि सयसमागमणि ॥
णामेव मणोदह कमलसर ॥ १७ ॥ 15

18

पुणइ—सोहइ चिह्नमति जहि वाय सलील मरालपतिवा ॥

ण रुदारविदकयणिलयहि उच्छिदि देहकठिया ॥ छ ॥

पोमहि णियदहिनियहि धयेसिय
उच्चिय भमराधलि तेहि अगे
बहुगुणवतु जर वि कोसिल्लउ
तो वि णालिणुं सात्तरे वण्णिय
जहि सारसई सुपीयलियगइ
तहि जलकील कर तदणीयणु
कोहि वि यिपलिय द्वारावलिणय
पयलिं धणकुळुं पइ सिचउ
काहि वि सुणुं यत्तु तणुधडिउ
काहि वि सिचहि धैयविद्धि य धैर
काहि वि उच्छापेउ कयलियवणुं

ण चंदेण जोण्डु सपेसिय ।
अयसकिंति ण किंतिहि संगे ।
जर वि सुपसुं सुमिसु रसिल्लउ ।
जकपसगु किं ण कर विण्णिय ।
ण सरसिदिणवधुइ तुगइ ।
अहिसिखतु देउ नारायणु ।
सयदलदलजलकणत्तसय गय ।
जावइ रहरु रावियमसउ । 10
अगावधु सधु धैयडियउ ।
ण णिगय रोमावलिअकुं ।
कण्डजलजकिहउ विरहाणलु ।

१ S omits 'वर' १ B विपहि

18 १ B कयणिलहि K कयणियकहि but gloss कृतनिकयावा २ ABS देहकठिया
३ B वहु ४ वर ५ B सुसु ६ B 'णलिय ७ BP बइर ८ B काइ ९ A पयसिचउ B पइ
विचउ K पइ सिचउ and gloss मर्ता K records a p. पय पाठे जलसिख ४ पयविचउ
T पयसिचउ जलसिख १ A सणु १ BK नावडिउ ११ A सियवेहिदे वर P लिय Als
पयवेहिदे वर १२ B वर १३ B 'अंकु १४ ABAls उच्छापउ P ओज्जाणउ १५ P 'य

10 ४ पवहु नवणलम् 18 a म ॥ जरासव 14 ४ सरवसमायमणि शरत्काजामने

18 1 मरालपतिवा हस्तेणि 2 रुदारविदकयणिलयहि विस्तीर्णकमले कृतनिकयावा
कम्पाः ॥ a पोमहि इत्यादि कम्पा पद्याना चन्द्रेण भावा ज्योत्स्ना प्रेषिता हव 4 a तहि अगे
तस्या हसपके अङ्गेन 5 a कोसिल्लउ कर्णिकलुक 6 सुमिसु सर्व रसिल्लउ मकरन्दयुक 7 a
सात्तरे भेवेन 7 a सुपीयलियगइ पीतयपीरणि 8 वर अलम्, 'बहुइ वृत्तानि 9 ४ सयदल-
दल कमलभने 10 a पइ मर्ता 11 a तणुधडिउ शरीरस्थलम् 12 a वर वरा विशिष्टा 13 a
कव लियवधु कवलितवधु

कौहि वि दिण्णुं काणि णीलुप्पल्लु
का वि कण्हतणुकंतिहि णासइ
कंठि लग्ग क वि णेमिक्कुमारहु

घत्ता—तहिं सच्चैहामदेविइ सइइ
अइसरसवयणरोमंचियउ

गेण्हइ णाइ णयणवइहवहल्लु ।
धैलदेवहु धवलत्तं दीसइ ।
जौइं अहिंस घम्मावित्थारहु ।

15

ण विंशसिहरि रेवाणइइ ॥
णीरं णेमीसरु सिंचियउ ॥ १८ ॥

19

उधरं—जो देविंदचंदफणिवंदिउ तिरुयंणणाहु वोळ्ळिओ ॥

सो वि णियंविणीहिं कीलंतिहिं जलकीलाजलोळ्ळिओ ॥ छ ॥

देवें बारुचीर परिहत्तें
पुणु वि तेण तहिं कील करत्तें
णिप्पील्लहिं कडिळु परिपोळ्ळिये

णारिउ णळ मुणंति पुरिसंतव
जासु पायपूलि वि वदिअइ
ता देवेण भणिउ णळ मणिणं
भणु भणु सच्चैभामि सच्चं तुहुं
ता बीलावसमउळियणयणइ
बहुकल्लाणणाणविस्थिणणइ
सो वि ण रहु महापहु जुअइ
किं पइ संजाऊरणु रइयउं
किं तुहुं फणिसयणपलि पसुत्तउ
होसि होसि भत्तारहु भायव

घत्ता—इय अं अरदुल्लवयणेण इउ
णारायणपहरणसाल अहिं

तरलतारंणयणेहिं णियत्तें ।

उप्परि पोसि चित्त विहसत्तें ।

यिय सुंदरि णं सल्लें साल्लिय ।

5

जो देवाहिदेवें सइं जिणवव ।

तहु ओळ्ळिणिय किं ण पीलिअइ ।

पेसणु विण्णउं किं अब्बाणिणउं ।

किं कालउं किउं जरकमल्लु व मुहुं ।

उत्तउं उत्तव तहु ससिबयणइ ।

10

अइ वि तुम्ह पुण्णइं संपुण्णइं ।

एयं महुं सरीरु णिउ झिअइ ।

किं सारंणु पणोमिबि लइयउं ।

अं कडिळु मज्जुप्परि चित्तउं ।

किं तुहुं देवेंदिउ दामोपव ।

15

तं लैग्गउ तहु अहिमाणमउ ॥

परमेसरु पत्तउ झसि तहिं ॥ १९ ॥

१६ P काय १७ PS कण्णे दिण्णु १८ B णामि १९ ABPS वल्लयवहो. २० ॥ णामि
२१ ॥ सच्चमाम°

19 १ P तिरुवण°. २ P °ताळ°. ३ BAls णिप्पीलेहि. ४ AS पक्कोळिय, BAls.
पक्कोळिय, P पक्कोळिय. ५ S °देवु ६ ABPS उल्लणिय ७ BP सच्चमामे ८ PS एउ ९ B
जिअइ १० PS पणावेवि ११ AP किं ऋणीसयणपले पसुत्तउ, S किं पइ फणि° १२ S देवदेव.
१३ A लग्गउ तहो मणे अहिमाणमउ

14 णयणवइहवहल्लु नैत्रवैमवफल श्रद्धातीव 15 णासइ प्रच्छासते 17 रेवाणइइ नर्मदानद्या

19 २° जलोळ्ळिओ जलाद्रीकृत 3 ढ विद्यत्तें पक्वता 5 ढ विद्यइत्यादि वज्रनिश्चोतन
शीनकर्म मम कथितमित्यादिप्रायेण 7 ढ ओळ्ळिणिय पोतिका (ज्ञानशायी) ८ ढ जरकमल्लव जीर्ण-
कमलवत् 10 ढ बीछा° मीढा, ढ ससिबयणइ चन्द्रवदनया

20

पुनर्—चण्डिउ कुपेरैहिं कणिसयणु पणाविउ धामपापेण ॥

धणु करि गिहिव सखु भाऊरिउ जणु बहिरिउं गिणारेण ॥ छ ॥

महि धरैहरिय डरिय जिम्माय कणि

बधविसहइ सरिसरतीर

मुडियल्लमे मयवस गय गयवर

कण्णदिण्णकर महिणिवडिय धरै

हरिणा रयणकिरणविप्पुरियहि

हल्लोहल्लउ गयारि सज्जावड

पहइ पल्लयकालु कदिं गम्माह

तदिं भवसरि किंकव गड तेत्तहि

तेण तेत्थु पत्ताड उडेपिणु

पत्ता—तुह किंकर बल्लिमहइ धरिवि

धणु पाविउ जल्लयव पूरियउ

गयवज्जणि कपिय ससि दिणमणि ।

पडियइ पुरगोउरपापाखं ।

गल्लियणिबधण गट्टा हयवर । 5

पडिय ससिहर सधय गाणाभर ।

उप्परि इत्थु दिणु कडिछुरियहि ।

ऊपर अणु मयकपियकायउ ।

किं इयदईपहु पसरइ दुम्माह ।

अच्छइ धरि महुंसयणु जेत्तहि । 10

दाववारि विण्णविउ भवेपिणु ।

धरि वेमिकुमारं पइसरिवि ॥

सयवपळि महोरउ चुरियउ ॥ २० ॥

21

पुनर्—पइ ररपाइ आइ परिवाडिइ हयजजसवणधम्मइ ॥

पक्कहिं कणि कयाइ बल्लयतें तिण्णि मिं तेण कम्मइ ॥ छ ॥

लिंपसज्जसव जो तहिं जिगड

सच्चंमाम पयियमिय पसिउ

महिल्लइ गत्थि मतणैउज्जवड

वायपणोमणु विसहरजूरणु

अवड मजिउ गड हरि सकरिसणु

त गिणुणिवि हियउल्लउ कज्जुसिउ

ता कण्हेण कयउं कालेउ मुहु

तेण भलेसु वि जणवड जगाउ ।

गिर्लेपीळिउं न जीउ बरि थिसउ ।

अणि पयडति ज पि पक्कण्णजं । 5

वज्जिउं तेरउ सखाऊरणु ।

किह महु उप्परि धल्लहि गिणसणु ।

इय पइउ गेमीलें विल्लसिउ ।

पउ दाइअयोत्ति कासु वि छुई ।

20 १ PS कोपेरैहिं २ A धरैहरिय ३ P omits सय ४ P कर ५ S omits न
in रयण ६ APS देहवहो ७ II महसुगणु ८ A मयव. ९ AP पाविउ

21 १ BS वि २ B लिंभ ३ B सचंमाम P सच्चंमाम ४ A गिणुणिवि ५ S
पणावणु ६ AP बल्लयउ ७ BPS दावव

20 1 पणाविउ गणग्रीकृतम् ४ b वावारइ धाकय 5 a गय गता नहा 6 a
कण्णदिण्णकर कयम्मा कणीं गिणाय ७ c ससिहरा विहारे ससितामि 12 b धरि आयुषशाळायाम्,

21 1 परिवाडिइ अनुक्रमेण सववधम्मइ कयस्वभावानि, बहिरत्त कृतमित्यर्थ 3 a
सिंय प्रत्यक्षा 7 a गड हरिल्ल हरिल्ले सकरिसणु बल्लमहोमि न 9 b दाइअयोत्ति स्वगोमस्तुतौ

23

पुषर—यथियेय माहवेण महुपवइअर पपिणु सपहहो ॥

सुय तेय मरालैयगामिणि डोवहि मेमिणाहहो ॥ छ ॥

त भायणिवि कसहु ताए

अ ज कार मि जयणाववि

त त सणु तुहारैय माहव

अवह यि देयदेउं आमाहउ

हा मइवि थामीपरघडियह

कचणपकयकेसरवणहि

अपजयसहें मगळयोसें

आहविमाइकाळि वर ससि रवि

पहैरदेयगार वरणिवसणु

ईहाहयपहपहडणिभाप

कामपासलंकासखबाधुय

सुधरेण सुहयसणहुं

विरसोरसणसमुत्तिरेकअणु

मत्ता—महिसेयधोयसुरमहिहरिण

मणु मणु कइतर मयगयई

दिण्य वाय गोविंदहु राय ।

अ ज गरि अम्हार सुव ।

धीयई किं जियवईरिमहाहव । 5

कहिं अग्रह बहुपुणविराड ।

पञ्चयण्यमागिकाहिं अडिय ।

अमुत्यळउ छुई कदि कण्हहि ।

वविणदाणकयविहडियतीसें ।

आय सुपारु पिसहर अयर वि । 10

कअयमउअमणिहारविहसणु ।

अकसें सुदयरसघाप ।

पहु परिणहु अल्लिउ परिणसुय ।

ताम तेण मणिसिबियाऊं ।

अइवेडिई अचकोइड मिनेउकु । 15

ता सइयउ पुकिउउ जिणवरिण ॥

किं रुइइ जाणामिनेसयई ॥ २३ ॥

24

पुषर—ता मणिय जरेण पारदियइइहयार काणजे ॥

ययइ तुइ विवाइकआमयविषेपारअभोयजे ॥ छ ॥

अरिमइ अरियई वाइसहासें

देवदेव भोविदापसें ।

23 १ AP पलिउ २ ABPS मरालैयगामिणि ३ AP तुम्हारउ ४ B "ववरि"

५ B देवदेउ ६ B छुइकिर ७ A देवमर ८ B परिणहु अल्लिउ ९ ABP समुत्तिउ १ B मुगउकु ११ B मुगसयई

24 १ A "वव"

23 1 सपहहो योमायुक्त 3 a कसहु ताए आर्यपुराणे उग्रवधोलभोप्रेतेनराजा कवित, तदभिप्रायेण तस्य रात्रोऽपि कवनामा पुत्रोऽस्ति, अन्तथा स्वभोत्रमन्वे विवाहो न भवते 8 b छुइ मुद्रिका धिता 9 b विहलिय हरिद्रा 13 b परिणहु परिणेतुम्, 15 a ओरसण अवसण यम् ६ वइवेडिउ इतिवेडितम्, 10 a योनमहिहरिण नौतमेरुना ६ अइयइ अइवरो अत्त

24 2 विवाहेस्मादि विवाहकार्णावतरणां योक्त्रनिमित्तं भूतानि 3 a वाई व्याघा मिहाम्

आणियाइं सालणयणिमित्तं
 जे भक्खंति मासु सारंगहं
 खड्डज जेहि^१ पिसिउं मोराणउं
 जंगलु जेहि गैसिउं तित्तिरयडु
 जेहि जूडु विद्धंसिउ रउरउ
 कवल्लिउ जेण देहिदेहामिसु
 पासिउ कव्वु जेण तं हारिणु
 होइ अणंतदुक्खचित्तावइ
 सो अद्वियसवंधु ण पावइ
 अहिं मृगमांरेणु भोजु णिउत्तउं
 घत्ता—अइ इच्छइ सासयपरमगइ
 मइ मासु परंगण परिहरइ

ता चित्तइ जिणु दिव्वं चित्तं ।
 ते णर कहिं मिलंति सारंगहं । ०
 तेहि ण कियउं वयणु मोराणउं ।
 ते पेच्छंति ण मुहुं तित्तिरयडु ।
 ते पौविहहिं णरउ णिरु रउरउ ।
 तडु चंडति कालवूयामिसु ।
 तडु दुक्किउ वहरइ णं हा रिणु । 10
 जो पसुअट्ठिउं ह्रियवहि तावइ ।
 किं किज्जइ रायाणीपावइ ।
 तेण बिवाहं महुं पज्जत्तउं ।
 तो खंचेइ परंहेणि जेतं मइ ।
 तिरिपुप्फयंतु जिणु संभरइ ॥ २४ ॥ 15

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिससुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरह्य
 महाभक्खमरहाणुमणिण महाकन्वे अरैसिधणिहणणं णम
 अङ्गासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८८ ॥

१ AP पिसिउ जेहि, B जेण पिसिउ. ३ AP अखिउ ४ AP भुजति ५ AP कोल्लेहानिडु
 ६ A वडइ ७ AB निगमात्तु ८ B इच्छइ ९ BP खचहु १० A परहण ११ P जेतं
 १२ P^० पुप्फवडु १३ A जरसवणिग्वाण १४ S अङ्गासीमो

४ a सालणय^० शाक्म ५ b सारंगह उत्तनशरीराणाम् 6 a मोराणउं मयूरसवन्धि, b मोराणउ
 मम सवन्धि 7 b ति तिरयडु कृतिपुक्कस्व सुत्तस्य 8 a रउरउ चल्हान् 9 b कालवूयामिडु काल-
 दूता आनिपम् 10 a हारिणु हरिणानानिदम्, b हा रिणु ऋगनिव हा कथम् 11 a^० चित्तावइ
 चित्तापति. 12 a अद्वियसवंधु ण पावइ गमे एव विलीयते, b रायाणीपावइ राक्षीप्राप्त्वा.
 15 b परंगण परलो.

ओशवि हरिणं तिहुयमेसामिदि ॥

मपि कवचारसु जायत भेमिदि ॥ भुवक ॥

1

पुषर्—पञ्चदु तिर्चि निविस्तु मण्णेकु वि जहि प्राणिहि^१ विमुचय ॥

त मज्झिदुरकारि पल्लमोवणु महु सुवद व वचय ॥ छ ॥

ससाव घोव चित्तु सतु	वड भियाणिवासु एव मणतु ।	5
जाणे परियाण्डि कर्णु सतु	वारायणकड मायापवणु ।	
रोहियससुपरसवरा	जिह वरियर जाणावणपरा ।	
अवियाणियपरमेसरगुणेण	कुन्नेण रत्तलुत्तेण तेण ।	
णिच्चेयहु कारेणे द्धसिपाह	रोवतह वेवतह धियाह ।	
एव जीएण मसासएण	किं होसर परेहेहं हएण ।	10
झापतु यम मवलियकरेहि	सवोदित सारस्सयत्तरेहि ।	
जाय जीय देव भुयण्यल्लमाणु	पर दिहउ पद भवेह लमाणु ।	
हउ जीवपासुउ सोयवडु	उडु होयहि सज्जममेरु कडु ।	
हउ रोसमुत्तादिसावदिडु	अगि पयवहि बाधीसमउ तित्तु ।	

मत्ता—भैमरववत्ता निजियमारु ॥

वयजह लमाह भेमिकुमारु ॥ १ ॥

2

पुषर्—तहि मयसरि सुदिदसोहं सिचिउ विमलवारिहि ॥

वीणाततिसहसंताणे गारुहं विविहणारिहि ॥ छ ॥

वत्तकुवसिबियाकडवेडु	व गिरिसिहारासिउ कालमेडु ।
सोहर मोत्तियहारे सिपण	णहमाउ व ताराविलसिपण ।

1 १ P तिहुवण^१ १ AP निमिषतिचि P निविस्स तिचि Als निमिषतिचि १ AP पाणहि B पाणिहि S प्राणहि ४ B कज^२ १ P काल १ APS हरिसिपाह ७ APS भण्यवसमाणु ८ B दयासुडु १ S मरु १ S मरु.

2 १ APS उताणहि २ BK गायत १ P हारिए ४ B गायत

1 3 नि विस्तु निमेषमात्र वृत्ति 4 पल्लमोवणु मत्तमोवणम् 5 a सतु सवय 7 a रोहि व^३ रोहितमत्तः 10 a जीएण जीनिवेन 14 a वहिणु वदि रिपवम्.

रत्नुपलमाह सौह दंतु
ससितेयसिर्यसोहासमेव
सिरि बलईयवरमउडेण विसु
पियवयणाउच्छियमित्तवंधु
पहुपहुसंखकाहलसैरेहिं
तदसाहासयदंकियपयगु
मंदारकुसुंमरयपसरपिगु
कंकलिलुलियदलवैलयतंधु
गड सईं पेरिलुंचिड केसमाह
तरुणीयणु बोह्लइ रोषमाणु
उपपणहु एयहु वधगयाहं
सिवणंठणु अंजि बि सुंहु बाळु

णं जउणादेहु जणमैल हरंतु । 5
ण अंजणमहिहर तुहिणतेउ ।
णं सो खिं रयणकूडेण जुत्तु ।
णिच्छिंहुं सिदिलीकयपणयवंधु ।
उच्चाइउ णरसयरामरेहिं ।
फलरसणिबडियणाणाविहंगु । 10
गुमुगुमुगुमंतपरिभमियभिगु ।
सहसंवयवणु फुल्लियकैयंहु ।
पडिवणणउ दहु जिणवइविहाइ ।
हा हा अर्थमियउ कुसुमयाणु ।
हलि माइ तिणिण बरिसहं सयाईं । 15
रिसिधम्महु एहु ण होइ काळु ।

वत्ता—एण विमुकिया रायमई सईं ॥

महुराहिवसुंथा किह जीवेसईं ॥ २ ॥

3

दुवई—वामरधवललससीहासणघरणिघणाईं पेच्छेहे ॥

णिहै अरतणसमाईं मणि मणिवि यिउ मुणिमणि वूसहे ॥ ६ ॥

जिणु जम्मै सहुं उप्पणवोहि
सावणपवेसि ससिकिरणभासि
भित्ताणफजसइ विनु धरिवि
सहुं रायसहासैं हासहारि
माणवमणमइलणधंतमाणु
अधंतवीरैतवतावतविउ

हलि वण्णह को एयहु समाहि ।
अवरण्हइ छहइ विणि पयासि ।
छट्ठोववासु णिम्मंतु करिवि । 5
आयउ जहुसबारिसघारि ।
संजमसंपेणवउत्पणाणु ।
बलएवघासुपेहि णविउ ।

५ S 'द्रु. ६ P जणमणु, S जणमणु ७ A 'सिचय', B 'वस्य for सिय', S 'सिअय'.
८ AB निदय' ९ S व for वि १० B निच्छिह ११ B 'काहलवेहिं' १२ B 'कुदरय'.
१३ ॥ 'वयल' १४ S 'कलवु. १५ ABPS आलुविउ १६ B अरियमियउ. १७ H अज.
१८ B सुदु. १९ B उगसेणसुव in second hand.

३ १ B 'सिहासण'. २ B पिच्छहो ३ B निच्छउ अरतणाइ मणि मणिवि. ४ A 'सपत्त',
B 'सपुण'. ५ A 'घोर', B 'घोर' ६ B 'वासुएवहिं'

2 ॥ a 'सिचय' सिचय वल्लभ, b तुहिणतेउ चन्द्रयुक्तो गिरि.. 8 b निच्छिहु नि स्थः.
10 a 'पयगु सईं.

3 4 a ससिकिरण भासि शुक्लपदे 5 a विनु वरिवि मनोव्यापार सकोच्य.

पिंडु कारणि मिट्ठाह पिंडु
 वरयत्तणरिंदु भयणि यत्तु
 परमेद्विहि णवविहपुण्णठाणु
 माणिक्कविट्ठं णवकुसुमवासु
 बुदुहिणिणाउ जिणु जिमिउ जेतु
 माहंथेपुरि मेत्तिवि जतु जतु
 छप्पण दिरंह हयमोहजालु

अण्णहिं विणि दारावह पट्टु ।
 थ अम्मोम्मतरि भासुरह्णु । 10
 तद्दु दिण्णउ तेणाहारदाणु ।
 गधोअयवरिसणु देवघोसु ।
 जायाह थ वओत्ताह तेत्थु ।
 पासुयपंपसि पय वेंतु वेंतु ।
 धोलीणद्दु तद्दु छम्मत्थकालु । 15

वृत्ता—कुसुमिवमद्विरह हिंदियसावय ॥
 पत्तो जर्देवर्दे रेवेय्योवय ॥ ३ ॥

4

वृत्त—पयित्तयेणुमूढि भासीणउ जायिपजीवमगगो ॥

तयवरणुंगासगघाराहयदुदरकुसुममगगो ॥ छ ॥

परियाणिधि वत्तु सत्ताह विरत्तु
 परियाणिधि पुंउ परमत्थकंउ
 परियाणिधि सुद्ध परियाणियत्तु
 परियाणिधि मोक्खु विमुक्कणत्तु
 परियाणिधि सिद्धह णत्थि फासु
 अयवणिगाहि सिद्धुवदसियहि
 णरंक्खि वावविचाहिदाणि
 गुणमूमितुमि तिदुर्यणपहाणि
 छप्पणउ केवत्तु वलियद्विय

रत्तगिद्धिदुद्धु जिज्जिणिधि सरत्तु ।
 आसत्तु कवि णिज्जियउ कउं ।
 जोईसरेण णियमियउ सत्तु । 5
 एद्ध वि ण समिच्छिउ तेण वत्तु ।
 निज्जिउ गेम्मिं वहुमिद्धु वि फासु ।
 आसोयमासि पडिक्खियद्वियहि ।
 पुण्णहपाळि पयसत्तमाणि ।
 वडियउ तेरह्मह साद्धु दाणि । 10
 उद्वियं वटारये कवि कवि ।

वृत्ता—वैल्लिय आसत्थ हरिसुप्पिद्धिओ ॥

जिणसंयुद्धमो धो वल्लियो ॥ ४ ॥

७ A न अम्मतरि भासासुरह्णु ८ B "द्वि ९ B गधोवह" P गधोयवरिसणु १ P पुंउ
 ११ B "पदेसे ११ II विवहह इउ ११ AB वयवर्दे १४ B रेवह" १५ P पयव

4 १ BA 18 वरणम् २ P परियाणेविणु सत्ताह ३ AS निजियउ P निजिउ ४ S
 पुद्ध ५ S "रुद्ध ६ BP नेमे ७ A वहुमिद्धि ८ A पडिक्खिय" ९ B सिद्धवण" १ B उद्विउ
 ११ BS वटारउ १२ AS वल्लिय १३ A वत्तुउ मणे

12 ६ गधोअय गधोवह 14 ८ माहवपुरि हारवतीम् 16 ६ सावय व्यापदम्
 17 ६ रेवयया वय कनयन्तगिरिम्.

4 4 ६ पुठ परमत्थकंउ शावतभ्रमाथरुमहाभा ६ आसत्तु दत्तादि रूपे आत्मनि आसत्तु
 तथा सति नेत्रेन्द्रिय जितम्. 6 ६ व निच्छिउ वान्छित 8 ८ अयवद्वियया हि अवतीर्णार्था प्रतिपदि

दुषई—बहुमुदि बहुयदंति बहुसयदलपत्तपणच्चियच्छरे ॥

आरुहंड करिदि अइरावइ विलुलियकण्वामरे ॥ छ ॥

दंडड—विणयपणयसीसो सुरेसो गवो वंदिडं देवदेवो अताओ असाओ
महाणीलजीमूयवण्णो पसण्णो ॥ १ ॥

गणद्वरसुरवंदो अमंदो अणिंदो जिणिंदो मइंदोसणत्थो महत्थो
पत्तत्थो असत्थो समत्थो ससत्थो अबत्थो विसत्थो ॥ २ ॥

वियलियरयमारो गहीरो सुवीरो ज्यारो कमारो जछेओ अमेओ
अमेओ अमाओ अरोओ असोओ अजम्मो ॥ ३ ॥

5

विसद्वरधरसंक्रुणाणाकुषारंतरो पंडुडिंडीरपिंडुज्जलुहामभाभूरिणा
वामरोहेण जक्खेहिं विज्जिज्जमाणो ॥ ४ ॥

अमरकराबिसुभंतपुप्फंजलीगंधलुब्बालिसामंगणो वेवंसामंगणाणञ्च-
णारद्धयेयज्जुणीदिणतोसो ॥ ५ ॥

सयलजणैपिओ अममसो सुभासो हयासो अरोसो अबोसो सुलेसो
सुपेसो सुणासीरईसो ससीरीसिरीसंशुओ ॥ ६ ॥

सुरवरतकसाहासुराहासमिल्लो जयंको जणायं पट्टाणो जरासंध-
रायारिमीसावहो मिण्णमायाकयंको ॥ ७ ॥

पविउलपरंभामंडलुभूयविही विहिज्जंतवोरंधयारो विराओ विरेहं-
तछसत्तओ पत्तसंसारपारो ॥ ८ ॥

10

अमरकरणिहुर्मंतमेरीरवाह्वतेलोक्खलोयाहिरामो सुधींओ सुणामो
अधामो अपेम्मो सुंसोम्मो ॥ ९ ॥

कलिमलपरिवज्जिओ पुज्जिओ भावणिदेहिं चदेहिं कप्पामरिंदाहमि-
देहिं णो णिज्जिओ भीमंपादिदियत्थेहिं णिग्गंयपथस्स जेयारओ ॥ १० ॥

5 १ P बहुसुयदते २ A आरुह करिदि ३ P अइरावण ४ P वदिओ ५ PS अतावी.
६ PS असाओ. ७ P मइंदासण°. ८ A समत्थो असत्थो, P सम्मो समत्थो ९ ABS सुवीरो.
८ P अमाओ ९ AP °क° for धर° १० P दिव्व°. ११ S °ज्जणीओ. १२ P पविउलपभा-
महल°. १३ AB सधम्मो सुयुज्जतणामो अवामो १४ AP सुसम्मो. १५ PS °पचंदिय°.

5 3 असाओ अभाप 4 °मइंदासण° सिंहासनम्, सत्तत्थो सञ्ज्ञा, अवत्थो नया.
5 अमारो अकन्दर्ष 6 पट्टं थेत. 7 °सामगणो कुण्णपाङ्कण 8 वसीरीसिरीसंशुओ बलभद्र-
सरितेन विण्णुना स्तुत 9 सुराहासमिल्लो सुधोमासहित. 10 मिण्णमायाकयंको मित्रमाय इति कृत.
अट्टो विरुद यत्त.

कलसकुलिससलकुसमोयसयलिदेवत्तीधरेत्तीधरामहातीरिणी
लखणालकिमो वफभावेण मुक्को रिसी अर्द्धो उज्जुभो सिद्धुतथो
सुसथो ॥ ११ ॥

अणमणगवससयाण कयतो महतो अणतो कणताण ताणेण हीणाण
दुक्खेण रीणाण बधू जिणो कम्मवाहीण वेज्जो ॥ १२ ॥

धत्ता—सुरवरदिभो महसु महाहिय ॥

सिक्खयीसुभो देवो माहिय ॥ ५ ॥

16

6

बुद्धे—गिम्मलणापेधत सम्मसविक्कण चरियमणहरा ॥

वरत्ताह तासु पयारह जाया पवर गणहरा ॥ सु ॥

साहुसु सप्यह सपवरयाह
पासुयमिक्कलासणमिन्नुयाह
परिगणियह भट्टसयाद्विपाह
पण्यारह सय भवहीहिराह
सलोहिपयम्महसरमणाह
मणपअयणाणिहिं अहिं पयासु
परवणणिजालविराहयाह
आलीससहासर सजर्हिं
परिवट्टिययपालणरहिं
सजाय तिरिय सुरवर असल
अहिं पयसह ओठ असेसु सरणु

अहिं पुष्पविपहुह कलसपाह ।
पयारहसहसर सिक्खयाह ।
अप्यथि परथि सया हियाह । 5
केवलहिं मि जाणियसवरह ।
पयारह सय सविट्ठयणाह ।
एहे सयण ऊणठ सहासु ।
बसुसमह सपाह विवाहयाह ।
अहिं पक्क लफ्फु मदिरजर्हिं । 10
अक्काह तिणिज वरसाधरहिं ।
वेखति पयह मरुळ भंसण ।
तहिं किं वणिज्जर समवसरणु ॥

१४ Aa "वहर्हिदवती" P "वहर्हिदवती" १५ BS भरती १६ P अजुयो १७ BP देव
१८ AP समाहित

6 १ B "गणकच १ BAa चरिक्कणहरा 8 परिवक्क गणहरा १ B वरपत्ताह ४ A
सज्जह सजपरयाह P सुवक्कसजपरयाह ५ 8 वहह ६ P omits this foot. ७ H भवहीहराह
८ ABKS सहस विट्ठयणाह B has ह for व in second hand ९ 8 वज्ज १ P ससल

13 सयलिदवत्ती मेसुक्का भू परा पताका अजयो उज्जुभो वाक्कावाग्यामवक 14 सस
याण कयतो सयससेटक 15 ६ महसु ल पूजय 16 ६ सादिन मावै अग्ने हिं वया भवति,
छस्मीदृष्यमिस्यर्थ

15 1 चरिय चरिणेण 3 a सपवरयाह मोक्षपद्वयानि 4 a मिक्खयाह मोनकानाम्,
5 ६ अप्यथि इत्यादि आमावै परावै च उदा हियानि 7 a वणाह गणानाम्,

धत्ता—जियकुरारिणा वसुमह्हारिणा ॥

जेमी^{११} सीरिणा नविवि मुरारिणा ॥ ६ ॥

15

7

दुधई—धम्माधम्मकम्मगइपुग्गलकालायासणामहं ॥

पुच्छिउ किं पेमाणु परमागमि चैउद्वभूयगामहं ॥ छ ॥

किं रणविणासि किं पिच्छु एह

किं देहत्यु वि कम्मेण सुह ।

किं निचेयणु चेयणसरुउ

किं चउभूयहं संजोयैभूउ ।

किं निग्गुणु पिक्कलु निव्वियारि

किं कम्महं कारउ किं अफारि । ॥

ईसरवसेण किं रयवसेण

संसरइ देव संसारि केण ।

परमाणुमेनु किं सव्वगामि

अप्पउ केहउ भणु भुवणसामि ।

त निस्तुणिवि जेमीसरिण दुसु

जइ खेणविणासि अप्पउ पिरुत्तु ।

तो किं जाणइ निव्वियउ निहाणु

वरिसइ सप वि निहिईव्विठाणु ।

णिक्कइ किं कहिं उप्पसि मवु

जंपइ जणु रइलंपइ मससु । 10

जइ एह जि तइ को सङ्गि सोपंथु

अणुहुंजइ गरइ महत्तु दुक्कसु ।

जइ भूयवियाह भणति भाउ

तो किं किं लभइ महविहाउ ।

णिक्किरिवइ कहिं करणइ ईवंति

कहिं पयइवधुं शुत्ति वि धवंति ।

जइ सिववत्तु हिंइइ भूयसत्तु

तो कम्मकंइ सयत्तु वि गिरत्तु ।

धत्ता—जइ अणुमेत्तउ जीवो एहउ ॥

15

तो सजीवउ किइ करिदेहउ ॥ ७ ॥

8

दुधई—जीवुं अणाइणिहणु गुणधंतउ सुहुमु सकम्मकारओ ॥

भोत्तउ गत्तमेत्तु रयवत्तउ उदुगई मडारओ ॥ छ ॥

११ S omits धत्ता lines. १२ BK जेमि.

7 १ A कि पि माणु २ APS चोइइ^{१०} ३ PS उजोए हूउ ४ APS जेमीसेण. ५ A एणि विणासि ६ AP'S गियदव्वं. ७ APS कहिं पिर ८ S सगसोक्कु ९ P सक्कु. १० APS पिर कहिं ११ P एहति १२ A भवत्तुचि १३ A कम्मरुदु

8 १ APS जीउ

15 b मुरारिणा वृष्ट इत्युत्तरेण सन्त्व .

7 (i) a २^{१०} दज. (i) b निहिदव्वं^{१०} निविदव्वम् 12 a भाउ भावो जीवपदार्य, b मह-
विहाउ मांगानविभाग स्वस्वम् 14 b कम्म कडु क्रियाकण्डम् 16 b करिदेहउ चेदणुमात्र तर्हि
गजशरीर महत्, तस्यैव सचेतन कथम्

■ 2 भोत्तउ भोक्ता

इय धयणइ सवणसुहासियाइ
 बलपर्वे गुणहरिसिपमणेण
 भरहंतहु केरी परम सिक्क
 अथरोह धावसाययवपाइ
 पत्यतरि सुदगयवरगाइ
 सजमसीलेण सुहाइयाइ
 जइजुयलइ तिणिण पलोइयाइ
 किं किर कारणु पमयाणुराइ
 पिहुअधुदीवि इह भरइखेति
 सपयाधपरजियवरिसेणु
 तेत्थु जि पुरि वणिवइ भाणुदणु
 तहु पढमपुत्तु नामे सुभाणु
 पुणु भाणुसेणु पुणु सरदेउ

आयणिगिवि मिणवरमासियाइ ।
 सम्मत्तु लइउ गारायणेण ।
 अथरेहि छईय जिमायदिकल । 5
 निव्वुडइ परिपालियदयाइ ।
 वरदत्तु पंपुच्छिउ देवईइ ।
 चरियामग्गे धरे आइयाइ ।
 महु धयणइ नेहं छाइयाइ ।
 ता मणइ मडारउ जिमुणि माइ । 10
 महुराठारि जिणवरधरपाविसि ।
 गरवइ तहिं निवसइ सुरसेणु ।
 जठणायसांसइरहि रत्तु ।
 पुणु भाणुकिसि पुणु अथर भाणु ।
 पुणु सरइत्तु पुणु सरदेउ । 16

धत्ता—तेत्थु महारिणी समजलसायये ॥
 जियपवेदिमो जाणवियायये ॥ ८ ॥

9

पुणई—पणयिवि अमयणवि जरणाहं जिमुणिवि धम्मसासन ॥

सुणवि सिमायवत्तलचामरमेइणिहरिवरासन ॥ ६ ॥

गरवरसाहियसग्गापधणि
 वणिणाहु वि तवसिरिभूसियगु
 जठणादत्तइ वणि कुलणीवि
 ते पुत्त सत्त वसणादिइय
 भिक्षाडिय राप पुरवरउ
 ते गय अवति नामेण देसु
 तहिं सपत्ता रवणिदि मसाणु

छइयउं मुणिणुं जहणिदमणि ।
 थिउ तेण समउ जिम्मुकसत्तु ।
 इहं छइयउ जिणइसासभीवि । 5
 सत्त वि दुद्धर ण कालवूय ।
 मयपरवत्त ण करिवर सराउ ।
 उज्जेणिणयव मणहरपयेसु ।
 सुज्जतकुद्धसिषसाणठाणु ।

१ B समत्तु ज्यउ २ B ऊयइव ४ AP वि पुच्छिउ ५ B तहिं आइयाइ ६ PS भाणुदत्तु
 ७ AP ० दत्तावरचचिउ ८ B तहे

३ १ B अयावत्त २ P गुणिवत्त ३ AP वत्त ४ APS वत्त ते ५ B ० वेसु

9 a अइजुयलइ गतिमुभावि 10 a महारिणी अमयणन्दी

9 5 a कुलणी वि कुलणीपे कुलकदम्मे 7 b सराउ तठणात् 9 b ० सा णं सुमक..

संनिहितं तेत्थु सो खुरकेड
तदिं चोर किं पि चोरंति जाम
पुरण पसदज्ज तामियारि
घणसिरि घरिणि सिमुदरिणदिट्ठि

अघर धि पदद्व पुग धर्वालफेड । 10
अण्णेण कटंनरु टोई ताम ।
सहमभडु भिभा तट्ट दहपदारि ।
तदि तणुगट्ट णामे वज्जमुट्ठि ।

घत्ता—विमलतणूगट्टा रहरसयादिणी ॥

णामे मगिया तट्ट पियगेदिणी ॥ ९ ॥

10

दुवई—ते' स्वणुं पत्थियेण मट्टसमयविणागमणि यण गया ॥

जा कीलति किं पि सव्याइ धि ता पिमुणा सुणिदया ॥ छ ॥

भाकट्ट दुट्ट वरइत्तमाय
गुफुगुममालइ सट्ट अइमांतु
सलिमुदि छउंभोयदि मज्झगाम
आलिगिय कोमलयभुयाइ
तुण जोग्गी जलमट्टयरयाल
अमुणंतिइ गर अमुदारिणिदि
पालीइ कुभि करयलु णिदिचु
छा छा फंतिं सा पाठ तेण
तणवेंदइ वेदिधि विट्ठियणयण
पेसुणसलिलसगहमरीइ

मुदि णिग्गय णउ कट्टयवर धाय ।
घटि विचु स्वपु कुगोर धंतु ।
संगत्त मुण्ड णयपुष्फाम । 5
मणुं जाणियि योड्डिउ सानुयाइ ।
मं णिदिध कलसि परपुष्फमाल ।
पट्टण्णविशत्ति रहरिणीति ।
उगाइउ फणि वंतु रत्तणेसु ।
विपट्ठिय मट्ठियलि मुच्चिय विलेण ।
गयफायनेय मउलत्तययण । 10
वट्ठिय पिउयणि परमायरीइ ।

घत्ता—तायाओ पिभो भणइ सुसगिया ॥

फटिं सामंगिया अव्यो मगिया ॥ १० ॥

१ ॥ धवलफेड, ७ पुगु ताम.

10 १ A 131' रं खद, २ B १२२२२२, 1' कट्टयवर २ A पुकाय. ४ B ११११११, 1' पुच्छोयदि, ५ A "जाणेभिणु भोड्डिउ. ६ A 131' ११ बाल्ल कुंभ. ७ A नलरत्त" ८ B भणति. ९ A तणुपेडिपेडि, 11 A 1३. तणविउए वेदिधि, 1' तणवेदिण. १० A तायायड, 1३ तायाइड.

12 a पसदज्ज उपमपज्ज. 14 a विमलतणूगट्टा विमलस्य पुत्री.

10 2 विमुणा पम्भी. 3 a वरइत्तमाय यणमडिमाता. 5 a स गिमुदि पन्मयदना, छउंभोयदि धामोवदि. 7 b फलसि गटे. 8 a गर स्वभाव कपट्ठ, b पट्टण्णविशत्ति अयन्तरालयाया 1१ यणवेदइ वृणवेदनेन. 13 a पिओ भवो यणमुट्ठि; b सुसगिया भोभनयथा. 14 a सामगिया ययागट्ठी.

11

दुयई—कहिय अयियाइ विसहरवादागरलेण धारया ॥

पुत्तय तुज्जे यरिणि खयकालमुदे विहिण्णा णिवाइया ॥ छ ॥

अम्हेहिं ओहरसपरवसेहिं

वृद्धी ण जीयियासावसेहिं ।

घल्लिय कत्थइ दुग्गतरालि

पेयग्गिजालमालाकरालि ।

ता वल्लिउ सो सगरसमात्थु

उपलयातिन्नुकरवालइत्थु । 5

हो हे सुवरि परिसोयमाणु

परिमइ पेयमहि ओवमाणु ।

ता तेण दिट्ठु तहिं धम्मणामु

रिति दूसइतवसतावजामु ।

ओयाइउ भासिउ तासु पम

जइ उच्छमि पिययम कह व देव ।

अलवचरीयपुयकेसरेहिं

तो पइ पुज्जमि इदीवरेहिं ।

इय अणिवि भेमते तहिं मत्ताणि

अणवरयविण्णणरमासहाणि । 10

दिट्ठी पणइणि णासियगरेभं

मुणिवरतणुपवणीसइभरेण ।

जीयाविय जाय सखेयणि

पेरिमिड्ठु रहं ण रहणि ।

रमणीवत्तणुपुल्लइयसरीव

मउ कमलेंह कारणि कहिं मि जीई ।

गइ पिययमि मणीइयययेणु

कवहेण पडुक्कउ सरसेणु ।

मत्ता—तेण मणोहर तहिं तिइ बोद्धिय ॥

15

जिह्म हिण्डल्लय तीइ विरोद्धिय ॥ ११ ॥

12

दुयई—परपुरिसंगसगरहरसियउ मयजवसेण जीयमो ॥

मविलउ कस्स होति साहीणउ बहुमायाविणीयमो ॥ छ ॥

परिहरिवि चिराणउ वाइ रमणु

पडिचण्णउ ते सइ तीइ रमणु ।

तहिं अबसरि आयउ वज्जमुट्ठि

कतहिं करि अणिय खणालट्ठि ।

11 १ APS दुग्ग २ P फणि ३ A गिवेइवा ४ A उक्कस ५ P omits the foot ६ ABPS हा हा हे सुवरि ओमाणु ७ AS चिवा P चिह ८ APS ओवमाणु ९ B वि १० B महे but notes a p भमे वा पाठ ११ A adds after this अबजोइ परवळरिउमरेण १२ AS परिमइ B पइमइ १३ B कमलेंह १४ AP वीव

12 १ B रमणु

11 4 a दुग्गतरालि वनमये समाले b पेयग्गि जेतमि 11 b मुणिवरेत्ता वि मुनिवरपवनोपवेन जीविता 12 b परिमिड्ठु परिमृष्टा 14 a मणीइयययेणु मणीइययचौरा 15 b तहिं तिइबोद्धिय तव तथा जलितम्

12 1 जी वओ नीचा, नीचा खीटा वा 2 मायाविणीवओ मायायुका 3 b रमणु कीचनम्

इच्छिवि^१ परणररररसपवाहु
ता वणिमुपण वद्धि सवाहु
अगुलि खडिय ण पाववुद्धि
चित्तचर इहो माणिणिरपण
दुग्गधुं पुराधिहिं तणउ देहु
रण्णजइ किं किर कामिणीहिं
किं वयणं लालाणिग्गमेण
किं गरुयगडसरिसेण तेण
परिगलियमुत्तसोणियजलेण
पररत्तिइ गुणविहावणीइ
मइ जग्गु मुक्कु भीयाइ माइ

सा ताइ जाम किर हुणइ गाहु । 5
णिचिंसु पडिउ ण कालगाहु ।
कम्मवसमेण वहिय विसुद्धि ।
दरिसावियधणजीवियखरूण ।
मणु पुणु बहुकवडसहासगेहु ।
वइसियमंदिरि चूडामणीहिं । 10
अहरं किं बल्लूरोवमेण ।
माणिज्जतं वणथणजुएण ।
किं किज्जइ किर सोणीयलेण ।
एत्थतरि दइमायाविणीइ ।
वरइत्तहु उत्तरं विण्णु ताइ । 15

घत्ता—घेतुं परहण सुहु अकारयौ ॥

ताम पराह्या ते तहिं भायरा ॥ १२ ॥

13

दुवई—विण तेहिं तस्स वचिण तहिं तेण यि तं ण इच्छिय ॥

हिसाअलियवयणचोरत्तणपरयोर दुगुछिय ॥ ५ ॥

तणमिइ मण्णिउ त चोरदब्बु
अलमाहिलउ किं किर णउ कुणति
तिर्यवरिउ कहतं भायरेण
त णिसुणिमि मेळिबि मोहजालु
वसिकिय पवेंदिय गियमणेहि
आसाधिउ धम्ममहामुणिदु
जिणवसहिं आतिहि पायमूलि
अउं लइयउ लहु तर्णुअगियाइ

मंभीविलसिउ घज्जरिउ सब्बु ।
अत्तारु जारकारणि हुणति ।
छिण्णगुलि वाधिय ताहं तेण । 5
सररुकिरिइ दयदाढाकरालु ।
णिव्वेइएहिं वणिणदणेहि ।
उउ लउउ तेहिं पणविमि जिणिदु ।
उवसाभियभवयरसहुसालि ।
णियवरियविसण्णइ मणिघाइ । 10

१ A इच्छिय° १ B लयेण ४ B दुग्गध ५ AP3° मंदिर°, ६ AP वित्त. ७ S अकारया.
८ B तहिं ते

13 १ B तिण. २ B परयाइ. ३ Als दय, S भिन्नवरिउ. ४ A सरहरिउरिइयदाढा°. ५ ABP वड ६ S उणुवणि°

5 b ताइ तथा पङ्कजत्वा 6 a सवाहु स्ववाहु. 10 b वइसिय° माया. 11 b वस्स-
रोवमेण शुष्कमासोपमेण 12 a °गड° स्फोटक, b माणिज्जतं भुक्तेन. 13 a मइ इत्ता दि मातः
इत्यादे, रूपटेन वा, फनर दृष्ट्वा सीताया मम कायतित खड्गम् (?) 16 a वे तु पृथीत्या

13 6 a सररुकिरत्तादि सररुकिरिदंतादप्यनराल इति धर्ममहाधुतोर्निर्णयणम्, दया एव
दप्या. 9 b भवयरसहुसालि सत्तारनस्थवस्फटके 10 a तर्णुअगियाइ क्षामगरीरया.

हिंतालतालतालीमद्वि
अच्छति जाम सपुष्पतुद्धि
अचिवि नयकमलहि सच्चिवि
पुच्छियत तेन निषसह वज्रमि
मंगीविषाह तवचरणेड
विद्वसिवि छयत रिसिधेरि
सोहम्मसमि सोहम्मसमेव
सणासु करेपिणु कससस

प्रस्त—तीर्तितो जुया पादसदय ॥

भेरे केसय वरतसदय ॥ १३ ॥

उज्जेनीवाहिरि काणजति ।
परमेद्धि वणासियमोहपुद्धि ।
सपत्तु ताम सो वज्रमुद्धि ।
पर्व्वर किं नयजोध्यमि ।
वज्ररिड तेहि त भयरकेड । 15
तहु गुहहि पासि गुणगणपविषु ।
धारितिव वदकतेथ ।
सुर जाया सच वि तोयार्तिस ।

80

14

हुवई—निष्ठालोयनयरि भरिकरि कुमुदरुणकेसरी ॥

परिपदे विचचलु सहु पिषपणहणि नामे मनोहरी ॥ ६ ॥

विचराड आपड पदमपुसु
अण्णेल्ल गयेलवाहणु पसत्तु
पुण्ण पदपधुल्ल वि मयणचलु
मेहवरि धणजड वहु हयारि
कालेण ताह न मयणजुसि
ते'धु जि गिण्णासियरिडपवाड
सिरिकत कत हरिवाहणकल्ल
साकेयनयरि न हरि सिरीह
तहि वकवहि पुरि पुष्पकल्ल
पियेण तेण नववेणुवण्ण

ययवाहणु पकयपसणेसु ।
मणिचल्ल पुष्पचल्ल वि महासु ।
तेसु जि वाहिणसेहिहि विसाह ॥ ६
सच्चसिरि नाम तहु हहणारि ।
धणसिरि नामे सज्जणिय पुत्ति ।
आणदणयरि हरिसेणु राड ।
सुड सजायड कमलाहणकल्ल ।
सोहदु महदु सुहकरीह । 10
तहु सुकु उहु तणुदु सुवसु ।
हरिवाहणु मारिपि छय कण्ण ।

७ A सपुष्पतुद्धि, BPS क्षणतुद्धि C AP मोहपुद्धि, E APS पावधर १ Als ते
against Mes ११ A तवचरिणु १२ B वासीस १३ P वाहो १४ H भारे विचय

14 १ PS निष्ठालोय, २ ABP 'कुमलपदकल' ३ 'कुमलपदकल' ४ PS परिपड,
५ AP तहो पणहणि छह नामे ६ B यल ७ P पदपधुल्ल ८ Als मेहउरे ९ मेहउव ८ A व
कल्ल सयवरी वामवण्ण

11 a हिंताल ताळतालीमद्वि 12 b पुच्छि पुद्धि 14a निषसह भूय निवसय 19 a ता हिं तो तस्मात्
सौवर्मस्वर्गात् 20 b उडय के

14 1 निष्ठालोयनयरि निष्ठालोयनयरे 7 b पय सिरि वा वनभी हरिवाहन हला वक्रि-
पुणेण सुवचेन गहीता 10 a हरि सिरीह निष्ठा हन्त हव 11 a पुरि अबोध्यापुरे 12 a नव
वेणुवण्ण नीलवयवदर्पा ६ कण्य वनभी

सुचिरसचित्त संसारबासि
त पेच्छिवि ते चित्तगयाह
अरिमित्तवणि होइवि समाण

भूयाणदहु जिणवरहु पासि ।
मुणिवर सजाया जइणवाइ ।
अणसणतवेण पुणु मुइवि प्रीण । 15

वत्ता—सग्गि चउत्थए सामण्णा सुरा ॥

ते सजाययीं सत्त वि मायरा ॥ १४ ॥

15

हुवर—सससमुदमाणु परमाउसु मुंजिवि पुणु वि निवडिया ॥

काळें इइ अइ धरणिद वि के के पेथ विहडिया ॥ छ ॥

इह भरहणेसि सुपसिखणामि
गयडरि धणपीणियणिअणीसु
बभुमइ धरिणि तहि धम्मकहु
तहि पुरवरि राणउ गंगइउ
उण्णणउ गवणु ताहं गंगु
पुणु गगमिसु पुणु गइवाउ
पुणु गंईसेणु निउगराव
अणमिमि गग्गि समूइ राउ
मा पइउ महु संताअयारि
उण्णणउ रेवइधाइयाह
बभुमइहि वाउ विइणु गपि
णिण्णामउ कोकिउ ताह सो वि
छे वि ते भावर भुजति जाम

हुदजंगलि वेसि विविअधामि ।
वणिणाहु सेवबाहणु णिहीसु ।
हुउ सुउ सुभाणु णामेण संखु ।
गंदयंसधरिणिमणमीणकेउ ।
गगसुउ अवर पावइ अणसु ।
पुणरवि सुणउ संपुणकाउ ।
अवरोण्णर गेहणिअछाय ।
उव्वेइउ वर गवणु म होउ । 10
हुहु पावयमु सतोसहारि ।
रायाएसं सचोइयाह ।
रक्खइ माणुसु भविअणु किं पि ।
अणगहिं विणि उववणि सह भमेवि ।
णिण्णामु परांइउ तहि जि ताम । 15

वत्ता—संखें बोझिउ महु मणु रजहि ॥

आवहि अचव तुहु सेंहु भुजहि ॥ १५ ॥

१ A °तावेण १० AP षण ११ ॥ सजाया.

15 १ A अ व २ P वणि. ३ P गदअस°. ४ APS गहितेणु ५ S °ठाय.
६ S वभूये. ७ A adds after this अइ हुवइ एहु वर खयहो जाउ, K writes it but
scores it off ८ ॥ दहु, P इहु. ९ S यणियखु (?) १० P omits छ वि. ११ B परायउ.
१२ B सुहु, S सह.

14 b जइणवाइ जैनवादिन 16 b सामण्णा सामानिका

15 4 a °पीणिअणिअणीसु इतिहा नित्य प्रीणिता येन स. 5 b ॥ माणु पूर्वोक्तसमासु
मध्ये सुमानुचर, सखु बलमज्जीव 6 b °भीणकेउ काम 7 a ताह गज्जदेवनन्दयशसोः
8 a गदवाउ नन्दपाद. 9 ॥ विदग्गयाय विवाक्कपाया 10 a अणमिमि अन्यस्मिन् सप्तमे पुत्रे
गर्भे आगते सति. 13 a बभुमइहि शस्त्रस्य मातुः.

हितालालालीमहति
मच्छति जाम सपुण्ड्रि
मखिषि गवकमलहि सचविहि
पुच्छियत तेण गिबसह वणमि
मगीविषाद तवचरणेव
विहसिषि सद्यत रिसिचेरितु
सोहम्मसगि सोहासमेव
सणातु करेपिणु रुदसस

धत्ता—तीहितो जुषा पादरसकप ॥

मेंदे सेरप वरतसकप ॥ १३ ॥

उल्लेणीबाहिरि काणणाति ।
परमेष्टि पणासियमोईपुष्टि ।
सपत्तु ताम सो वज्जमुष्टि ।
पथेज्जहि किं गवजोव्वणमि ।
वज्जरित तेहि त भयरकेउ । 15
तहु गुहहि पासि गुणगणपवित्तु ।
आरित्तवत चइकतेय ।
सुर आया सत्त वि सौपत्तिस ।

20

14

जुषा—गिष्वालोपणपरि भरिफरिमुईरुणकेसरी ॥

पत्तिपदे विसचल्लु तंहु पियपणहि नामें मज्जोहरी ॥ ६ ॥

विसगड जायत पडमपुणु
मण्णेहु गवेलवाहण पसल्लु
पुणु गवणचल्लु वि मयणचल्लु
मेहवरि घणजड पडु इयारि
कालेण ताह ण मयणजुसि
तेपु जि गिष्णासियरित्तपयाउ
सिरिकत कत्त हरिवाहणकल्लु
साकेयणपरि ण हरि सिरीह
तहि वज्जवहि पुरि पुष्पकल्लु
पावेण तेण गववेषुवण

धयवाहण पकयपसणेसु ।
मण्णिल्लु पुष्पकल्लु वि महल्लु ।
तेल्लु जि इहणसेविहि विसाडु । 5
सचसिरि नाम तहु इज्जगारि ।
घणसिरि नामें सज्जणिय पुत्ति ।
आणदणपरि हरिसिणु राउ ।
सुउ सजापड कमलाहणकल्लु ।
सोहत्तु महत्तु सुहकरीह । 10
तहु छुडु उडु वणुवहु सुवत्तु ।
हरिवाहण मारिषि सद्य कण्ण ।

* A सपण्डुहि, BPS सपण्डुहि ८ AP मोहपुहि १ APS पावजप १ Al^a है
against Mss ॥ A सचरित्तु १२ B सचरीत ११ P सचरीत १४ B मारे विसद
14 १ PS गिष्वालोप, २ ABP कुमपकदण ३ कुमपकदण १ B पत्तिपु,
४ AP तहो पणहि सद्य नामें ५ B गल्ल ६ P वेदणु कल्ल * Al^a मेहउते ३ मेहउव ८ A है
कल्ल सयवरी सामवण

11 a हितालाल 12 b उष्टि पुष्टि 14 a गिबसहयूव गिबसय 19 a ता हि तो तत्तात्
सौधर्मस्वर्गात् 20 b सद्य वने

14 1 गिष्वालोपणपरि निगम्येकनये, 7 b वचसिरि वा वनभी हरिवाहन हत्वा चक्रि
पुणेन मुदचेन पहीता 10 a हरि सिरीह गिष्वाहन् हव 11 a पुरि अयोप्यापुरे, 12 a गव
वेषुवण नीलवधवर्णा ६ कण्ण वनभी

सुखिरत्तचित्त संसाग्वासि
येच्छिवि ते चित्तयया
अरिमित्तवग्नि होहवि समाण

मृयाणवद्दु जिणग्ग्हा पासि ।
मुणिवर संजाया जइणवाद् ।
अणसणतवेण पुणु मुडवि प्रेण । 15

यत्ता—सग्गि चउत्थण सामण्णा सुरा ॥

ते संजाययीं सत्त वि भायरा ॥ १४ ॥

15

दुग्घई—सत्तसमुदभाणु परमाउसु भुंजिवि पुणु वि जिवडिया ॥

काले इव जव धरणिद वि के के जेय विहडिया ॥ छ ॥

इह भरहरेत्ति सुपसिद्धणामि
गयउरि धणपीणियणिघणीसु
बधुमइ धेरिणि तहि धम्मकंखु
तहि पुरवरि राणउ गगदेउ
उप्पण्णउ जदणु ताहं गगु
पुणु गरामित्तु पुणु जंवाउ
पुणु गइत्तेणु निद्वगराय
अण्णमि गग्गि समूह राउ
मा पव्वउ महु सत्ताययारि
उप्पण्णउ रेयइधाइयाइ
यधुमइहि वालु विदण्णु गपि
णिण्णामउ कोळिउ ताइ सो वि
छे वि ते भायर भुजति जाम

कुरुजंगलि देसि विजित्तधामि ।
जणिणाहु सेयवाइणु णिहीसु ।
हुउ सुउ मुभाणु णामेण संखु । 5
जंदयसयरिणिमणमीणकेउ ।
गगसुग अवउ णावइ अणंगु ।
पुणरवि सुणहु संपुण्णकाउ ।
अवरौप्पक जेहणियदछाय ।
उव्वेइउ वर जदणु म होहै । 10
उहु पाययम्मु सत्तोसहारि ।
रायाणसें सत्तोइयाइ ।
रक्कपइ भाणुसु भवियव्खुं कि पि ।
अण्णहिं दिणि उवयणि सइ भमेवि ।
णिण्णामु परांउ तहिं जि ताम । 15

यत्ता—संघे वोळिउ महु मणु रजहि ॥

आवहि यधव तुहु सेंहं भुजहि ॥ १५ ॥

१ A तावेण. १० AP जण ११ B उजावा.

15 १ A ण य. २ P धग्गि. ३ P जदजउ. ४ APS जदित्तेणु. ५ S उाय.
६ S समूहे ७ A adds after this अइ हुवइ एहु वर पयहो जाउ, K willon it but
scissors it off. ८ B दहु, P इहु. ९ S भवियव्खुं (?). १० P omits छ वि ११ B परायउ.
१२ B सुहुं, S सइ

14 b जइणवाइ जैनवादिनः. 16 b सामण्णा सामानिकाः.

15 4 a पीणियणिघणीसु दरिदा नित्य प्रीणिता येन स 5 b मुभाणु पूर्वोक्तपद्मावतु
मणे मुभाणुचरः, सपु रुग्मइजीवः. 6 b पीणकेउ काम. 7 a ताइ गइदेवनन्दययसोः,
8 a जदवाउ नन्दपाद. 9 a निद्वगराय विष्णान्नरागाः. 10 a अण्णमि अण्णस्मिन् सप्तो पुने
गर्भ आगते एति 13 a यधुमइहि वापस्य मातुः.

भावरूपवर्णं लवसतभात
 निष्णामद ओहच्छदं वा मति
 इय निम्नगिर्वि चक्ष परिचर्त्तं फार
 छ दि निर्वर्णदण वावञ्ज लेवि
 सो सप्त वि सहु निष्णामपण
 सुव्यय पणवेपिणु सज्जद
 ए सप्त वि ददपदिबद्धपणिव
 इय नवयसद वद्धत विवाणु
 फाळं जतं सयसद मुयाद
 सोलहसमुदमुसाउयाद
 सो सप्तगामु वल्लवत जाव

मिच्छितं नवयसदि पुत्त जाव । 5
 तं वासवतणयदि मणि मसति ।
 ससाह असह सरीरं माव ।
 धिय मिच्छासज्जमु परिद्वेवि ।
 न्नामत्त मुनिवरदिक्खामपण ।
 जयत्त नवयसदिचर्त्त । 10
 मज्झदि मि जम्मि महु हौत्त तणय ।
 को वासाह विद्विद्विद्विपत्त विद्याणु ।
 इहमेहं विवि अमरत्तणु गयाह ।
 पुणु तदि हौत्त सत्वर बुयाह ।
 रोहिणिदि गग्नि जावयह राव । 15

वृत्ता—सुहृद्वचनविषयं प्रणयविपुष्पम् ॥
 मयवदेसह नयदि वृत्तम् ॥ १८ ॥

19

पुष्प—जाया देवसेनयाप्य सुया धनपविगम्य ॥

सा नवयसं पुत्ति देवदत्त नामेण पतिदिवा जय ॥ छ ॥

वरमल्लपवेसि पुरि मदिक्क
 धनपदिदिक्कतु तदि वल्ल लेदि
 देवदत्त लेदिणि मल्लपणम
 छद तणुदद देवदत्तमि जाय
 वरिसियसल्लणसुहसगमेण
 वणिमरिणिदि मपिक्क महुवपदि

पात्तायतुगि विपल्लियकल्लकि ।
 वल्लवणसरिद्धु नामं सुविद्धि ।
 हं पीणयणि मज्झसाम् । 5
 लल्लणल्लकिक्क ते वरमकाय ।
 इवापसं गिय नवयमेण ।
 कल्लहोयसिहंरकील्लतल्लयदि ।

५ B निक्खि १ P जस पुत्त ७ B उहच्छद in first hand and उहच्छद in second hand B ओहच्छद Also एहु अज्ज against Miss C वासवतणयदि, omits ५ १ A परिचर्त्त १ B वरीह ११ B वल्लवण १२ A "परिचर्त्त" १३ A इव P इत्तमय १४ P दल्लवणे

19 १ P नवयस २ A मदिक्कदेते ३ B नाठ ४ B लल्ल ५ B मणिगदि
 ६ B विद्वि

६ a भावरूपवर्णं लवसतभाट्टेन b मिच्छितं निर्दयत्त ७ a ओहच्छद इय विद्वि
 b तं इत्यादि तेन कारणेन वासवपुत्रा मनसि जलना 7 a फार स्फार, प्रचुर सारा स्वस्त्यै
 ७ b दिक्खामपण दीक्षामतेन 17 b दल्लवण दल्लवणे

19 3 a मदिक्क मदिक्कनादि 4 b वल्लवणसरिद्धु वल्लवण 7 b गिय नीता
 नवयमेण नैगमदेवेन 8 a वणिमरिणिदि रेवतीवर्णा अल्लवणा b कल्लहोय सुवर्णम्.

सिसु देवदत्तु पुणु देवपालु
अण्णेकु वि पुत्तु अणीयापलु
अरमरणजम्मविषिवारणेण
पिंडत्थिं णपरि धरि धरि पइह
वियलियथणंथणं सित्तं देह
पुत्तिहिं^१ जम्मि चलयवडकेउ
तवचरणजलणहुयकामपण
पही दावियवसुद्धसिद्धि

पुणु अणियदत्तु भुयवलैविसालु ।
सत्तुहणु जित्तसत्तु वि जसालु । 10
हुया रिसि केण वि कारणेण ।
चिरमवत्तणुसुह पई माह दिह ।
तं कळें तुह उप्पण्णु णेहु ।
पेळेंवि सयंमु पँहु वाहुँदेउ ।
वडउ णियाणु णिण्णामरण । 15
आगामि अम्मि महु हौउ रिद्धि ।

मत्ता—कप्पि^२ सुरो हुउ बुउ किसलयमुए ॥

रिसि णिण्णामउ आयण्णहि सुए ॥ १९ ॥

20

दुवई—कंसकटोरकंसमुसुमूरणभुयवलहलियरिउरहो ॥

णिबजरसिधैगरुयअरत्तवरसरआलोलिहुयवहो ॥ क ॥

मीसणपूयणयणरसलित्तु
उत्तुगंतुरगमसिरकयंतु
उप्पाडियमायावसहसिंहु
उद्दाधियजडणासरविहगु
धोरेउ धराधरधरजयाहु
तुह जायउ तणुवहु रिउविरासु
त णिसुणिवि सीलें देवईह

अव आय कार्यवहणेकविस्तु ।
अमलसुणमजणमहिमहंतु ।
णित्तेईकैयसयविणपयंतु । 5
करत्तिक्कणक्कणत्तिपयभुयगु ।
कमलावळहु सिरिकमलणाहु ।
णारायणु णवैघणभसलसत्तु ।
शुव धंविउ सुविस्सुअह मईह ।

■ P भुयवलि. ८ B सत्तुहण. ९ II पिंडत्थय पुरि धरि. १० P ^१वयण्णें. ११ ABS विस्तु.
१२ ABS पुत्तिहिं. १३ A णिळ्ळेवि, S पन्ळेवि. १४ A सयपहु, B सहय, S सहभू. १५ P
वाहुपड. १६ BAIs कप्पसुरो.

20 १ PS ^१कटोर. २ PS ^२अरसेव. ३ B ^३गल्ल. ४ A ^४पहणेक, S ^५महणेक.
५ AS उत्तुगु दुरागुअरकम्पु, P उत्तुगुअरगुअरकम्पु ६ S ^६वसहिसगु ७ B णित्तेइयकय, S णित्ते-
कय. ८ A ^८वलहो. ९ B पयवण.

12 a पिंडत्ति आहारार्थम्. 14 b सय भु स्वयम्: कृतीयनभायण 17 b किसलयमुए हे कोमलमुजे.

20 1 ^१कउमुसुमूरण^१ गल्लचूर्णक., ^२रहो रय. 2 ^२सरजालोलिहुयवहो नाणजाल-
धेगिवैभानर 5 b ^३सयदिणपयगु प्रलयकालविनसर्व.. 6 b ^४णत्थियभुयगु नायितकालनाम.
7 a ^५धराधर^५ गिरि, b ^६कमलणाहु पयनामो नारायण, कृष्ण इत्यर्थ. 8 a रिउविरासु
अट्टविच्छेदक. 9 a सीलें अस्तकेन

केहिं मि लइयाइ महप्पयाइ तहिं केहिं मि पषाणुव्वयाइ । 10
 ओ साइ साइ विच्छिन्नकम्भु विष्णु वेमि मणित पच्छण्णधम्मु ।
 यथा—इय सोउ कइ मरहसुरमणिया ॥
 जिसहौं पहसिया धेकुसुमवसणिया ॥ २० ॥

इय महापुत्तणे विजडिमहापुरिसयुजाककारे महाकइपुष्पयतविरचय
 महामण्यमरहाशुमणिए महाकम्भे देवदत्तपणसमोपयामोपर
 अमरिच्छिन्नकम्भ नाम पण्ययवदिमो
 परिच्छेउ समसो ॥ ८९ ॥

१ S पच्छण्ण धम्म ११ B माय १२ A मित् १३ P कुसुम (omits धु) १४ A
 समायवण्य १५ S मवावनी

11 ४ पच्छण्णधम्म धर्मो नैमिकवेण स्थित इत्यर्थ 12 ४ मरहसुरमणि या मारतकुलोत्पन्नकौरव
 वधजाता देवकी १३ A जिसहा पहसिया दुर्गा उगा य कया कुला कुला

णिस्तुणिवि देवदेविहि भवदं पाय पवेप्पिणु जेमिहि ॥
हरिकरिसरंरुहगरुडद्वयहु धम्मचक्रवरणेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

1

धुवहं—तो^१ सोहगरुवसोहावहि गुणमणिमहि महासहं ॥

पमणह सच्चमोम मुणिपुंगमं भणु मह जम्मसंतर्हं ॥ छ ॥

भासह गणहर विर्यसियतरवरि	मालागंधि मलयदेसतरि ।	5
भदिल्लपुरि मेहरहु परेसरु	सुहउ णं पंचमु मणसियसरु ।	
णदावेवि च्चद्विवाणण	णहपहरंजियदिच्चकाणण ।	
भवव वि भूहसम्मु तहिं धंभणु	कमलायंमणिथणलोलिमणु ।	
पंणु णाम मुंडसालायणु	महकामुयं कामियंवालायणु ।	
जणि जायंइ नुयचारविवेयइ	सीयलणाहतिरिय वोच्छेयइ ।	10
तेण जिणिव्वयणु विस्संसिधि	गाइभूमिदाणाइ पसंसिधि ।	
कवु करिवि रायहु वक्काणिउ	मूढं रापं भणु ण थाणिउं ।	
किं किज्जइ घोरे तवचरणे	किं गरिद सणासणमरणे ।	
विप्पहं वाहणु णयणाणंदिउ	विज्जइ कण्ण सुवण्णे धुमदिउ ।	

घत्ता—मंचउ सहं महिलइ मणहरइ रयणंविहसणु णिवसणु ॥ 15

जो होवहं धम्मं वमणह मेइणि मेइिवि सासणु ॥ १ ॥

2

धुवहं—धीर वि णर तसंति धरदासि व णिवसरु गोमिणी जरे ॥

तस्स णरिद्वचं किं बहुयं होइ सुहं भवतरे ॥ छ ॥

केसालुंभणु णिक्खेलत्तणु

णग्गत्तणु तणुमलमइलत्तणु ।

1 १ ABPS पय पणवेप्पिणु २ S 'करुहं' ३ A धम्मचक्रु ४ B ता. ५ ABP सब्बहाम.
६ B 'पुगव in second hand. ७ P विहसिब'. ८ S महलपुरे ९ APS 'कामुउ १० B
कमीवालोयणु ११ S जाइ १२ सुवण्णु. १३ P समदिउ १४ PS रवणु १५ S दोयइ.

1 2 हरीत्यादि मालामुनेन्द्रादिचक्राद्युक्तस्य 6 b पंचमु मणसियसरु पद्धयो मारण.
कामवाण 7 b 'दिक्काणण दिक्कसमूहमुत्तम्. 9 b अइकामुय अतिकामुक, कामियवालायणु
वाञ्छितस्त्रीजन. 10 a नुयचारविवेयइ नुयचारविवेके जने जाते सति, b वोच्छेयइ उच्छिन्ने सति.
12 a कवु शास्त्रम् 14 a विष्णु वाहणु विष्णुवाहन दीयते, b कण्ण कन्या, सुवण्ण शोभनवर्णा.

2 ३ सुह श्रुतम्, ४ b णयत्तणु पर्णावावरणत्यक्तम्

केहि मि लह्याइ महण्ययाइ ठहि केहि मि पचाणुप्ययाइ । 10
 मो साइ साइ विच्छिन्नकम्मु त्रिजु नेमि भजिउ पच्छण्णैधम्मु ।
 वत्ता—इय सोउ वट्ठ भरेइसुरमायिया ॥
 भित्तही पडसिया हेउसुमवसयिया ॥ २० ॥

इय महापुराणे वित्तुमहापुरित्तुपाठकदरे महाकापुष्पमयविरचय
 महाभयमराहुमाणिप महाकवे देवदत्तपण्डितभौयराजोयए
 भवार्थिलियन्नेन चाम वट्ठणवविमो
 परिच्छेउ समसो ॥ ८९ ॥

१ ॥ पच्छण्णु वम्मु ११ B माइ १२ A भिवइ १३ P कुसुम (omits पु) १४ A
 "समाकवण्णव १५ B "मवायली"

11 ॥ पच्छण्णवम्मु वयो नेमिरुणेव स्थित इत्यर्थ 12 ॥ मरहसुरवणिक् भारतकुलोत्पन्नकौले
 वधवाता देवकी १३ ॥ भित्तहा पडसिया तृणां तया च कया कुला इत्या

माणुसु समणधर्मविष्णुत्तव
अम्हारइ महुयालि महु पिज्जइ
अम्हारइ निर्ध विपलियमहरइ
अम्हारइ गोसउ विरइज्जइ
धम्म परिदुड वेवपमाने
कताणेइणिवधणवइउ
अइ पुत्तागमकरणे पडियव
दीहरफालवकि भिइदिइ
पुणु तिरिक्खि पुणु णरइ विइम्मइ
विमल्लगघमायेणारिणिगय
णीरपूरपरियमहिईरवदि
सादि तीरि ण सुजियवेइइ
सो साळापणु मवविष्णुइउ

मरइ परत्तपिसाप भुत्तउ ।
सिइउ मिट्टउ मासे गसिइइ । 5
होइ समु सउयामणिमहरइ ।
जणणि वि वडिणि वि तहिं जि रमिइइ ।
किं किर खणणण मण्णणे ।
जीहोवत्याससिइ खइउ ।
ससमणरइ डोई सो पडियव । 10
इयर वि छ वि हिंदिउ परिवाडिइ ।
को डुककाइ ण पावइ इम्मइ ।
जल्लकल्लगल्लतिथयविगय ।
गधावइ णामेण महासरि ।
पसुमसुहरमैल्लकियपडिइ । 15
कासु णाम जापड सवइउ ।

पद्या—वर धम्मदिसिहि भित्तुवेदि निर मासाहाइ मुंयप्पिणु ॥
वेपादि पंथरमल्लपाडरिदि खेयइ इयउ मरेपिये ॥ २ ॥

3

पुर्वा—पुसंयसपत्थिवस्स जुइमाळावाळमल्लियतणुइओ ॥

सो वि भणतवीरकहिपामल्लतवविदओ महाबुद्धो ॥ इ ॥

मरिणि इम्मसजउ रिसि अरवडु
कागमहिइरि रइणेउरपुणरि
पुसि सपपहादि संमू

सुउ सोइम्मि कहिणि जियवपइउ ।
पहुंदि सुकेउहि णइयरकुलहरि ।
खच्चमोम ण कामविहरे । 2

2 १ B वम्यु १ P "वम्यु १ S "विपुणउ ४ AP महुलि 8 महुलि 11 महुलि
५ APS माहु वि कज्जइ ६ S डुव ७ B सउयामणि ८ S गोसउ विरइ ९ P नि for वि
१ AB डोइ ११ A "भाकणि १२ S "महिइरि १३ S मल्लकी १४ S सा साका १५ B इयर
विणु १६ A पडर १७ P भुपिणु

3 १ A पुसंय २ B पुहुदि ३ ABP सपपहा

4 ७ परत्तपिसाप परलोकपिडावेन 5 a महुवालि कज्जले ७ सिइउ निथसम् 8 a विपलिय
महरइ विपलितमतिपापया महरिया ७ सउयामणि महरइ जीवामणिममहरिया 9 ७ जीहोवत्या
ससिइ जिहोवत्याधकता मल्लिय 10 ७ डोइ लुउ 11 ७ इयर वि छ वि जणेषु अवि पट्टु नरकेपु
परिवाडिइ क्रमेण 13 a गधावायण मल्लयत्तल

3 1 पुसंयसपत्थिवस्स महाकल्लय 2 सोवि अतिवज्जामा

नेमिसिच्येणरेहिं तुहुं दिट्ठी
पुत्ति तुहोरी सिये माणेसइ
परिणिय राप जायवचंवे
एवहिं मुकी बहुभवकम्मं
महुं केहाइ देवे कयलम्मइ
कहइ मुणीसेरु इह दीवंतरि
सोमरिगामि विष्णु सोमिल्लउ
तहु सा चंभणि दप्पणु जोवेइ
ताम समाहिंसुत्तपदिविषयं

एही वत्त गरिंदहु सिट्ठी ।
अद्धचक्कवट्ठिहि पिथ होसइ ।
णायसेल्ल चप्पिवि गोविंदे ।
महपवित्तणु लद्धं धम्मं ।
पमैणइ रुप्पिणि भणु भणु जम्मइ । 10
भरहवरिसि मागह्वेसंतरि ।
लच्छीमइहि कंतु रिद्धिल्लउ ।
धुसिणपंकु मुदि मंडणु दोवेइ ।
अहइ दिट्ठं मुक्कविट्ठंवे ।

वत्ता—पुत्तकयकम्मविहिण्णमइ भणइ छंछिळ उक्खेवि करं ॥ 15
णिस्संजु अममज्जु विट्ठलउ किह आयउ मेरंउ धर ॥ ३ ॥

4

तुवई—अरसूरसमाणु दुग्गंधु दुरासउ दुयलभायणो ॥
किह मइ दिट्ठु एहुं मलमइल्लिउ भिक्खाहारमोयणो ॥ छ ॥

वप्पिट्ठहि बुट्ठहि णिक्किट्ठहि
मच्छियमिहइ सुट्ठु अणिट्ठहि
तत्तल्लणि सज्जियइ रोमइ णक्खइ
परिगलियउ वीस वि अगुलियउ
अहिरपूयकिमिपुंजकरंउ
पावयम्म पुरिलोयं तल्लिय
जणि भिक्ख वि ममंति ण पावइ
भोयणु धणु हियवइ सैमरेप्पिणु

एम चवंतिहि तैहि गुणमट्ठहि ।
अंगु विणट्ठं उंवरकुट्ठइ ।
भम्माइ णासावंसकडक्खइ । 5
तणुलायणोवण्णुं क्षणि हल्लियउ ।
देहु परिट्ठिउ मात्तहु पिंढंवे ।
वंधवंयणमत्तारविचल्लिय ।
पाविट्ठं को वण्णइ आवइ ।
मुय सा सुण्णालइ पेंहसेप्पिणु । 10

४ S नेमिय°, ५ P तुहोरी ६ S सय. ७ A देवि कयकम्मइ ७ S पणइ ८ B रूपिणि
९ B मुणीव १० P सोमरि°. ११ AS जोयइ १२ AS दोवइ १३ P ०गुत्तु १४ P
०विडविठ १५ P बाल १६ B करि १७ S णिल्लु १८ B मेरए घरि

४ १ AP दुहु दिट्ठु मल°. २ B एहउ ३ B चवंतिहिं तिहिं ४ A मच्छिरसिट्ठे.
५ P ०लावण°, S ०लायणु ६ B ०वणु ७ S उट्ठउ ८ APS पुरलोए. ९ P वधवजण°. १० APS सुपरेप्पिणु ११ S पएसेप्पिणु

6 a नेमिचिय° नेमिचिकै 7 a सिय लक्ष्मी 11 b अहइ दर्पणे, मुक्कविडवउ मुक्ककन्दर्प.
15 ०विहिण्ण° विपरिता, उक्खि वि उक्खिक्ख

४ 4 a मच्छियमिहइ मक्षिकामृष्टया 10 a भोयणु इत्यादि भर्तृहस्य भोजन धन च
स्मृत्वा, ७ सुण्णालइ शून्यगृहे.

गियवररुचहु मविरि सुवरि
घाव्य रमणहु उवरि सणेहें
घल्लिय मच्छेदिवि घट्ठमैवि
मुयें तहि पुंशु गह्वजम्मतर
पुष्पभासं णयणपिमारु
चह्वडसिलघाय तासिउ
अवदि पैठिउ मुव सुयेंक जायउ

हैं सीहवेहें हुच्छुवरि ।
तेज वि समयेममकियवेहें ।
अगहहिउ उच्छलिउ णहणणि ।
मुसुठ भीसणु दुक्खु णिरंतर ।
चह भावतु सणाहु केरउ । 10
गहहु बह्वपैहि विस्ससिउ ।
पेक्खिवि थोरमाससघायउ ।

यत्ता—सो अदिवि पठलिवि बह तलिवि^१ समारमं लिखिवि^२
बहउ जीहिदिवलुयैहि^३ कोहि^४ लुचिवि^५ लुचिवि^६ ॥ ४ ॥

5

हुवह—मविरणामेगामि महुविहि मैच्छविणिहि हुवा ॥

सुयें मरिवि पुचि हुममयतणु णामेण पूया ॥ ५ ॥

मायि मयय मायामहिय
बप्पु ताहि कहि जीवई पावहि
विचिणिच्छांसंरितीदि अहिठिहि
विचि द्येयणि दिहुतु तहु सतहु
इल मलय णिवडत विधार
हुदियतिमिच्छर णासियबहुभव
सम्मममाह बहउह सतहं
तासु किछेसु असेसु वि णासर

पालियकवणामाये सहियर ।
बहुवालिहुदुक्खसंतताहि ।
मुणिवि समाहिमुसपरमैठिहि । 5
पठिमाजोपठियहु मयबताहु ।
वेळबलपवणेणोसार ।
मरह बल्लेण कोमलकरपल्लव ।
जेण पाहु विरइउ गुणवंतहु ।
रविउमामणि धम्मू रिसि मासर । 10

यत्ता—तुहु पुंशिह जीवई करहि दय मसु मासु महु बखहि ॥

हुसपेयल पविदिय जिणिवि जिणु मणसुद्धिह पुजहि ॥ ५ ॥

१५ P देवेह ११ PS 'चववि' १४ BP 'फले' १५ APS मय १६ AP गय for पुणु
१७ AP बह्वपहि १८ P वडिउ १९ APS हव २ AP तल्लिउ २१ APS छवयण
B 'छववि' १३ APS कोएव कोएहि २२ P लुचिवि once

5 १ B 'णाममाणे' २ B omits मच्छविणिहि ३ B सुअर ४ A मायाउहियय,
५ P मावय, ६ B जीवहि ७ A विचिणिच्छां B विचिणिच्छां PS विचिणिच्छां ८ P 'ठरे'
९ A दप्पु १ AP' वरण ११ AS वनमहाउ महुतु बहउह B वनमहाउ बहउ वरउह
PA's वनमभाव महुतु बहउह १२ BS पुचि १३ P omits 'म' १४ B omits जिणु

11 a वरइउहु मय सुवरि हुवरे 16 b बह्वपहि जने 17 a अवदि मूये, b पेक्खिवि
पाणिमिळैहेंहु माससघायउ माससुहु. 18 पठलि वि पक्खा बह पुते संमारमं समारोदकेन

5 3 a मायामहिवि मातुमाया (मातामहा) 4 a पावहि पाणिना 5 a अहिठिहि
मुने 9 b पाहु पाहुवचन विनयन 11 पुचिह दे पुजिहें 12 मणसुद्धिह आवपूजया

6

दुवई—इय धम्मक्खराहं आयणिणवि मेणिणवि ताह कण्णण ॥

अणुवयगुणव्वयाह पंडिवण्णह उवसमरसपसण्णण ॥ छ ॥

मुणिपायापर्विहुं सेवंतिहि	णियज्जम्भतराह णिसुणतिहि ।
भोयवेहसंसारविहेयंउ	दियउल्लह वट्टिउ णिव्वेयउ ।
गामा गामंतस हिंदंतिहि	अत्थियाहिं सहुं जिण वदतिहि । 5
शयइ कालि जरकथाधारणि	पासुयपाणाहाराविहारिणि ।
सिद्धसिद्धणिट्ठाह सुणिट्ठिय	अउं चरंति गिरिविवरि परिट्ठिय ।
पव्वि पव्वि उववासु करती	दुक्कियाहं घोराहं हरंती ।
अण्णह बालइ बालवयंसिय	पुण्णवत तुहुं भणिवि पससिय ।
अणसणु केरिवि तेसु मुणिमतिणि	हूईं अश्रुरंदसीमतिणि । 10
पणपण्णासपल्लयिरवैही	रुवें जोव्वणेण सा जेही ।
तिहुयणि अणं ण दीसइ तेही	त वण्णती कइमइ केही ।
चविवि वियम्भवेसि कुडलपुरि	वासवरायणु सइसिरिमाइरि ।
आसि कालि जा होंती वंमणि	सा तुहु एवहु हूईं रुप्पिणि ।

असा—कौसलपुरि भेसहु पुइइवइ माइ तासु पियं गेहिणि ॥ 15

सोहम्माभवणचूडामणि व ण सिसिरयरहु रोहिणि ॥ ६ ॥

7

दुवई—आयउ ताहं विहिं मि सिद्धुपोलु कयादियकंभोयणो ॥

पसरियसरपयार्वं मसहु व चंडेवहु तिलोयणो ॥ छ ॥

अण्णहिं दिणिं जेमिच्छि मासइ जे दिहुं तइयच्छि पणौसइ ।

6 १ S omits भणिवि. २ S omits पडिवण्णह ३ B ०स्वपुण्णइए. ४ P ०विद. ५ B ०विदेइउ. ६ ABP बउ ७ AP तेसु करेवि ८ S सा हेजो. ९ P दीसइ अण ण. १० BS होंति. ११ S प्रिय

7 १ B सिद्धुवाउ २ P ०पवाउ, S ०पवाउ ३ B चइयवहु, P चहु एहु ४ S दिणिहि निमिच्छि ५ AP विणारुह

8 4 a ०विहेयउ जिमेद. निप्रकार. 7 a सिद्धसिद्धणिट्ठाह महविमि. कथितचारित्रेण. 9 a अण्णइ बालइ अन्यया स्त्रिया. 10 a मुणिमतिणि पञ्चनमस्कारयुक्ता 15 भेसहु भेषजराजा. 16 सिसिरयरहु चन्द्रस्य

7 1 कयादियकंभोयणो कृतवन्तुकन्द्भोजनम्, तस्य मयाद्रिपत्रो जन गता इत्यर्थ. 2 मसहुव सूर्यवत्, चंडवहु प्रचण्डाना वषकर्ता रुद्रवत्, जिनेवो वा चण्डी शतचण्डी पार्वती वधूर्यस्या 3 ७ तइयच्छि सुतीयेनेत्रम्.

नियवराजह मरेरि सुवरि
घाह्य रमणहु उवरि सगेह
महिय बरछोदिवि भरमैवि
मुयें तहि पुंणु गहइजमंतक
गुणवत्तासे नयनविचारक
बढइसिलपाय तासिउ
अवति पखिर सुउ सुयेंक आयउ

हई दीहदेह^१ हुनुहुंदरि ।
तेण वि समयचमकियेदेह ।
नयनविह उच्छलित गहगति ।
मुचउ मीसणु दुपन्नु गिरंतक ।
बद भावतु सणाहु करंत । 1
बहु बहुवेह^२ विहसित ।
वेकिनवि थोलासतंघावत ।

यथा—सो अविधि पठलिवि अह तलिवि^३ समारमै विविधि ॥
अहउ जीहिविपुनैरहि कोरहि^४ कुचिवि^५ कुचिवि ॥ ५ ॥

5

हुवई—भविरणामगामि मंडकिहि मंडकिहिदि दूषण ॥

सुरेक मारिवि पुसि गुणवत्ताय जायेण पूषा ॥ ५ ॥

मायह मयह मायामहियह
बप्पु ताहि कहि जीवई वाचहि
विदिविच्छासरित्तीरि अहिदिदि
विह इपेवि दिहइ तहु सतहु
इस मसय गिरहउत गिवाउ
दुरिपतिमिरहउ जासियवहुमय
सर्मममाउ बईतह सतह
ताहु फिलेसु असेसु वि जासह

पाछिपकनपामाई सविपर ।
बहुदाहिरदुपकसतापहि ।
मुमिहि समारिगुसपरमोहिदि । 5
परिमाजीयडियहु मयमंतहु ।
येकबहपवणेगोसाउह ।
मयह बडेण कोमलकरपहुच ।
जेण बाहु विरहउ गुणवत्ताह ।
पविमगमणि भन्नु पिसि भासह । 10

यथा—तुहु पुंसिह जीवई करहि इय मयु माहु महु बखहि ॥

हुजयेबह पविदिव जिमिवि जिणै मयसुजिह पुजहि ॥ ५ ॥

11 P देवदे 12 PS "चवकिन" 13 BP "नले" 14 APS मय 15 AP गय for पुण
16 AP बहुपरहि 17 P मजिउ 18 APS सुख 19 AP तलियह 20 APS "इदपण
B "इदपण 21 APS ओपय ओपहि 22 P अविधि once.

3 1 B "गामगामे" 2 B omits मंडकिहिदि 3 B सुख. 4 A मायाहहियह.
4 P "मायह. 5 B जीवई 6 A विदिविच्छा"; B विदिविच्छा" PS विदिविच्छा" 7 P "वे.
8 A दण्णु 9 AP 10 पाव 11 AS लवमलाह माहु बहउदे; B लवमलाह बहउ बहउदे
PA 12 लवमलाह बहउ बहउदे 13 BS पुसिह 14 P omits "नले" 15 E omits विणु

11 a बहउहउ महु हुवई हुवई 16 b बहुपरहि छात्र 17 a अवकि कुने; b वेमिसवि
पाविमिलेहउ; माससकाबन कावकमहु 18 बउलि वि फला पर भूरे ययारये मयवेदेन

5 3 a मायामहियहि मायामा (मायामा) 4 a वाचहि पाविना 5 a अहि हिदि
कुने 9 b बाहु बाहुकन विनयम 11 पुसिह रे पुसिह 12 मयसुजिह मावउवा

6

दुवई—इय भम्मक्खराहं आयाणिवि मेणिवि ताह कण्णए ॥

अणुवयगुणव्वयाहं पैद्विवण्णहं उवसमरसैपसण्णए ॥ छ ॥

मुणिपायारविंदुं सेवतिहि

भोयदेहससारविहेपेउ

गामा गामंतरु हिंडतिहि

गयइ कालि जरकवाधारणि

सिट्ठसिट्ठणिट्ठाहं सुणिट्ठिय

पब्बि पब्बि उच्चवासु करती

अण्णइ वालइ वालधयांसिख

अणसणु केरिबि तेत्थु मुणिमतिणि

पणपण्णासपल्लधिरदेही

तिहुयणि अण्णं ण वीत्ताइ तेही

अबिबि विवग्गमदेसि कुडळपुरि

आसि कालि जा होत्तीं वमणि

णियज्जमंतराहं णिसुणतिहि ।

द्वियउल्लइ वट्ठिउ णिव्वेपउ ।

अब्बियाहिं सहु तिण वदनिहि ।

पासुयपाणाहारविहारिणि ।

वर्द्ध चरति गिरिविवरि पग्गिट्ठि ।

हुकियाइ घोराइ हरती ।

पुण्णयंत तुह्म मणिधि पममिद ।

हई अण्णइदसोमतिणि ।

रुक्खं ओव्वणेण सौ जेही ।

तं यण्णती कहमइ केही ।

वासवरायहु त्रासिणि ।

सा तुह्म एवहु हई वमणि ।

वत्ता—कोसलपुरि भेसहु पुहइवइ मदि तासु पिणं मेहिनि ।

सोहग्गभवणवूडामाणि व णं सिसिरयरहु रोहिणि ।

7

दुवई—जायउ ताहं विहिं मि सिमुपाळु कयाहिरक्खने ।

पसरियस्सरपयावं मत्तहु व चंडेवहु तिलोरने इ ।

अण्णहिं दिणिं जेमिस्सिउ भासइ

जे निहं दारणे ।

तद्दु इत्येण मरणु पावेसा
त सुखविरसु वयणु गिह्वेणेषिणु
सहसा सगयाह दारावह
तदसाणि भालयलुवरिड्ड
जाणितं तक्कणि मायाताप
महिउ वारवार बोलगिगि
महु तणुवहहु रयसुहिसाह
त पडिबण्ड कण्हे मणह
वहरिदि सउ मयराहहु पुंजउ
सो गिह्वणिगि मुहु परिणिय कण्हे
त गिह्वणिगि मुणियरकुलें वदिउ

महीसुउ जमपुंउ जायसा ।
मायापियरा तणउ लपपिणु । 5
विह्वउ हरि सिरिकयमायाव ।
बालहु तदयउ गयणु पणहुउ ।
पुसु मरेसा महुमहपाप ।
पन्थिउ मदिह पायहिं लगिगि ।
परं समियव्वउ सउ मयराहहु । 10
ताह गयाह पुणु मि गियपुरवउ ।
विसंदिउ हरिणा मदिहि दिण्णउ ।
धौणिय दारावह जसतण्हे ।
अण्णेषु देविह पुणु पुणु गिदिउ ।

यत्ता—ता जयवर्धे जमसियउ पुच्छिउ मीवें मुणियउ ॥

15

माहासाह जलहरगहिरसउ गिह्वणिदि मुंइ क्षमयतेउ ॥ ७ ॥

8

पुष्प—अवृणामवीयि पुंम्विल्लविदेहं पुष्पकापदं ॥

देसु मलेसंदेसलच्छीहउ पसमियमाजयावर् ॥ ४ ॥

धीयल्लोपपुंरि दमयडु वमियडु
देसिक सुय सउमिसडु दिक्खी
मुणि विणोदेउ जाम आसयिउ
पुरुषरणासिधु सुमरेपिणु
देवय गवपल्लवपायवमणि

देवमेह सि वरिणि^१ क्षणपणियडु ।
पहमरेण मोयैणिकिण्णी ।
वम्महु ताह तवेणवल्लिउ । 5
कालि पडण्णह तेसु मरेपिणु ।
उण्वण्णी महरणदयवणि ।

१ AS वमपुरे B वमउव २ S सुनेपिणु ८ B 'वरिड्डि ९ P मरप, १ B पणउं
११ P विरहिवि १२ AP वन मरपवि येमाजकावे १३ P कुळ १४ A अयउं, P S अयणु
१५ P A 10 जववह १६ P मुणिवह मावें १७ B वर

8 १ S पुंम्विल्लविह्वि^२ २ B 'विदेहे ३ B जलेसु ४ B 'लोयउरि, ५ B देमह
६ B वरिणी ७ P A 10 वणवमिवहो ८ A लोवणि^३ ८ ABP तवेण विह्विउ ९ P सुमरेपिणु

5 a सुखविरसु कर्णविरसु, 6 b विरिक्कयमायावह विन कृता मयापदा कामापदा येन सा
7 a मालयलुवरिड्ड माळोपरि स्थितम्, 9 a महिउ हति 10 a १२ वसुहिसाहह कउ
मुहदा दाहो वै 12 b विरहिटं समित 15 सुह हे पुनि

8 1 आवाहं आप् 3 a दमयडु दयवह b ववववियडु वन चतुषदं सुवर्णादि च
तद्विषये यस्य 4 a सउमिसडु लौमिक्य 5 b तवेणवल्लिउ कृता उल्लिखित- 7 a देवय देवता
उत्सवा, b महरणदयवणि मेरुवमिनि कन्दनवने

तहि भुजंतिहि^{१०} सोक्खु सहारिसहं
पुणु महुसेणवंचुवइणामह
वधुजसंक विहियजिणसेवहु
सा जिणयत्त णाम विक्खाई
जिणकमकमलजुयलगायमइयउ
पढमसगि तुहुं देवि कुवेरहु
पुणु वि पुंडेरिकिणिपुरि तरुणिहि
तुहुं सुय सुमइ णाम संभूई
सुव्वय भिक्खोमिगि पइड्डी
सहुं पणिवायं पय घोपणिणुं
अवई वि तणुसतवियपयासं
मुय सणासं णिह णिम्मच्छर

चउरासीसहास गय वरिसहं ।
तुहुं हई सि पुत्ति सुहकामहं ।
अवर धूय सुंदरि जिणदेवहु । 10
तुच्छु वयसुंछिय पियं हई ।
वेणिण वि संणासेण जि मुंइयउ ।
चिरसंचियसंक्कम्मसुदेरहु ।
वज्जे वणिपं सुण्हघरिणि ।
सो णं धम्मं पेसियं वई । 15
अवणंगणि चंडति पइ दिड्डी ।
विण्णउं दाणु समाणुं करेप्पिणु ।
रयणावलिणोमेणुववासं ।
हई वंमलोइ तुहु अच्छर ।

घटा—इह जव्दीवइ वरभरहि इह सैंयरकिईं महिहरि ॥ 20
उसैंरसेहिदि ससियरभवणि जणसंकुलि जंबूपुरि ॥ ८ ॥

9

दुधई—अरिकरिरेसलितमुत्ताहलमंडियसम्ममासुरो ॥

अणघइ जंबवंतु तहि णिघसइ यलणिजियसुरासुरो ॥ ६ ॥

अंजुसेणदेविहि गयधरगइ
पवणवियलयरहु कोमलियहि
णमि णामे कामाउरु कपइ
यालफयलिकवलसोमाली

पुणु हई सि पुत्ति जंवावइ ।
तुह मेहुणउ पुत्तु सामलियहि ।
एकहिं दिणि सो एम पजेपइ । 5
माम माम जइ वेसि ण सोली ।

१० Δ भुजंतं सोक्ख, B भुजतिहिं सोक्ख, P भुजति सोक्ख सहयोरसइ ११ B विमज्जुल्लय
१२ S प्रिय १३ ΔBS महयउ १४ B "सकम्मसुदेरहो, P सुक्कम्मसुदेरहो १५ AP पुडरीकिणि-
जरी, Als. पुडरीकिणि^{१०} against Mass, S पुडरिगिणिपुरि १६ B णामे. १७ B omits वा
१८ B उपेत्थिय, १९ P "ममा पइड्डी. २० P चडत. २१ S चोवेप्पिणु. २२ BS सुमाणु. २३ B
अपर. २४ B "णामे उववासे २५ S सरयरकिइ. २६ B "क्रियमहिहरे. २७ P "सिहिदे.

9 १ A "लितत्त". २ AP हईं सुप्ति, S हृति. ३ AP वाली

10 a वधुजसक वधुयशा नाम. 11 b वयंसु छिय सखी. 13 b चिरेत्वा दि चिरसचित्तस्वकर्म-
सौन्दर्यस्य, 'अनकन्दुसौन्दर्योदावेत्' इति अनेन सूत्रेण आदेस्त्य एत्वं, अनस्ताने एत्य, कटुक, गेदुव,
सौदर्यं, सुदे. 17 b समाणु सम्मानपूर्वकम्. 21 ससियरभवणि चन्द्रविरणजुके एहे

9 1 b मेहुणउ विवाहवाञ्छक, पुत्तु नमिनामा. 6 a बाल कयलि^{१०} नवीनकदली, b साली
फन्ना.

सो अर्धहरमि जेमि^१ बलवर्ण
मच्छिपविज्जह सो आवाविह
किंजरपुरणाहेण ससेल्ले
मच्छिपाव विद्धसिधि मिच्छ
णिह गजंतु णाह अयसायव
तेण भसेसव विज्जह छिण्णव
मेमिणा सह दिणयरकरपयिमि
सहि अवसरि संगामपियारव

त भिसुणेवि तेण सुह वर्थे ।
आरणेव ससुरे सताविह ।
आयेपिणु ससयणवच्छल्ले ।
अबुक्कुमारो ताव ताहि पत्तव । 10
अवधत्तसुव तेरव भायव ।
पदिमवधियव विद्यावलि विण्णव ।
अक्खमालि गव णासिधि मेवुयलि ।
आहवि कण्हवु अक्खह णारव ।

पत्ता—अबुपुरि अववतकगहु अबुसेण पवहणि सह ॥

15

कये सोहवणे निरुयमिय तेहि धीय अवावह ॥ ९ ॥

10

पुवई—ता सरसुच्छेवदकोवदेविसलिपसपविचारिभो ॥

रणि मयदवपण वरुवदव कव वि हु व मारिभो ॥ व ॥

हरि असवतु मयणवाजावलि
कयपयिर्विज्जियहु पदाव
कयपासिव इम्मासणि सुत्तव
अक्खिलु विरमवमार सहोयव
साहणविहि फणिसेयरपुत्ताह
गव तियसाहिव तियसविमाणह
मते कीरसमुहु रयपिणु
विज्जह साहिपाव मोविदे
हुह पविणिय कण्हे वरुवार्णे

गव जिणपपणिहिउक्खसुमज्जलि ।
आवेव अर्धवतु अवरावह ।
तावायव सिणेहसुत्तव । 5
मासिधि ताहु महासुक्कामव ।
ओहेणिमोहनिमारणविज्जह ।
उम्मु अणहणु मणिपविहाणह ।
सहि अहिसयणहु अवरि कडेपिणु ।
पुणु रणि सुजिहवि समव जणिदे । 10
माहपविणु विणु सध्माणे ।

४ B अवहरेवि ५ P निमि ५ A उमल्ले ५ AP मक्खिपाव ७ B कुमार ८ B वपव
९ B नामि १ BP वत ११ B मणिणा १२ P महिये १३ B आववि १४ AP जाहि
10 १ B सल्लुच्छद^२ २ P कोद^३ ३ विहित ४ अबुवत ५ AP गवसीहि
(B मोहि) वाहिणिव विज्जह ६ B तियसाहिव ७ AP विवावरो (P विहाणभो also)
८ B वरुवार्णे

7 a जेमि जयामि 8 a मच्छिपविज्जह मच्छिपविज्जह 9 a किंजरपुरणाहेण वसमाणिना राहा
14 b णारव नारद

10 4 a णिवहु उम्मु ६ अवरावह अपावित जेतुमयण 8 a न विल्लु उदयवउ
7 a साहणविहि विद्यानां साधनविधि 8 b मणिपविहाणहु देवकविधिविधे 9 b अहिसयणहु
अवरि नागशम्योपति

तां जंववद्द सभेवु सुणतिइ मुणिक्कमक्कमल्लजुयल्ल पणवन्तिइ ।
 घत्ता—मत्तिइ पणिवाड कैरतियइ संचियसुद्धदुहक्कम्मइ ॥
 ता भणिउं सुसीमइ वज्जरहि महुं वि देव गर्यंजम्मइ ॥ १० ॥

11

हुवई—पभणइ मुणिवरिंदु सुणि सुंदरि धावइसंखदीवण ॥
 पुब्बिहम्मि माइ पुब्बिहम्मिदेहि पट्टणीवण ॥ छ ॥
 मंगलवज्जणवइ मंगलइरि रयणंसंघयपुरि ।
 धीसंदेउ पडु देवि अणुंधरि मुउ पिययमु रणि अरि करिवरइरि ।
 करि करवाल्लु कराल्लु करेप्पिणु उज्जाणाहें सहुं जुज्जेप्पिणु ।
 पणइणि समउ पइइी हुववहि पयडिययावरजंगमजियवहि ।
 विंत्तरसुरि जयरयालि हई दससहसइहं भुत्तविहई ।
 मयविम्ममि भमेवि इइ दीवइ भरहसेचि पुणु सामरिगामेइ ।
 रक्खहु इल्लिपडु ररसवाहिणि देवसेण णामें तहु मेहिणि ।
 तहि उप्पणी धरमुहसररुह जक्खदेवि णामें तहु तणुवइ ।
 धम्मसेणुं मुणि मयियाणंगउ कयमासोववासु कीर्णंगउ ।
 पय पक्खालेप्पिणु विणु गावें होइउ तासु गासु पइं भावें ।
 घत्ता—अण्णहि दिणि घणि कीलन्ति तुडु महिहरविवरि पइइी ॥
 तहि भीमं अर्धयेण गिलिय मुय सयणेहि ण दिइी ॥ ११ ॥

12

हुवई—हरिधेरिसत्तरालि उप्पणी मज्झिममोयभूमिहे ॥
 किइ थाहारडाणु णउ विज्जइ जियवरमग्गामिहे ॥ छ ॥
 तहि मरेवि वडुसोक्खरणिंरंतरि णायकुमारदेवि भवणतरि ।
 पुणु इइ पुब्बविदेहि मणोहरि देवि पुक्खलावरहि सुद्धंकरि ।

- १ P जा. १० P समउ, S समउ ११ ABP शुणि वदिउउ सौसु विण्णतिप. १२ S करतिप.
 11 १ S रयणक्कि २ B 'सचिय', P 'सचिय' ३ A वीसदउ ४ B वैतरसुर. ५ S
 गावय. ६ APS जक्खहो. ७ Als वडु, PS वडु ८ P भग्गमेव. ९ AP पक्खालेप्पिणु पय विणु
 १० AS अजगणेण
 12 १ B 'वसत्तरालि.

11 2 °णीवण नीधे, कळवे. 4 a वीसदउ विवदेव. 5 a करि इस्ते. 6 a पणइणि
 अनुभरी, ७ °जियवहि 'जीवववे अशी. 7 a रयरावलि विज्जावै 11 महियाणंगउ मयितकामः.

पुरिदि पुर्दरीकिणिदि असोयहु
 सुय सिरिफत नाय होएपिण्य
 कणयायलिउयवासु करेपिण्य
 सुहपम्भारपरजिपचंवह
 अणगिदि जेदुदि वयवरविंदहु
 हुहु सुसीम सुय हरिपरिणिचु
 पुणु लफचणह विरयनचनसारउ
 कफपह गणहह हरिसियमेहह
 पवरपुवचछाएविसयतरि
 यासवराय वसुमरदेविदि
 ताए सजमेण मरसहवह

सोमसिरिदि भुजियगिर्वमोयहु । 5
 जिपयसहि सेमीवि मड लेपिणु ।
 सहेहणहुपीर मरेपिणु ।
 हुह देवि कपि माहिदर ।
 पुणु सुहवहुणहु गरिंदहु ।
 पसी मोह परमगुणकिचणु । 10
 पियमर्धे पुकिछव देह मडारउ ।
 जवहीवह पुष्यविदेहह ।
 सारि मरट्टिणपरि कुयलयसरि ।
 सिमु सुसेणु जायउ शिवसेविदि ।
 सेयरसेणपासि तह छायह । 15

मता—महमहृष्टावसेण मुव पुसर्सेणेहें वसुमर ॥

हरे पुंकिदि यिरिवरकुहारे मिच्छसें महजियमर ॥ १२ ॥

13

हुयई—दिदुड ताह कदि मि तदि कणलि सायरणदिदुडयो ॥

कारणमुणिपरिउ पणवेपिणु सिदिदियकम्मपणो ॥ ५ ॥

सायययवहं तेव तदि दिण्ह

उजियययमह कम्महं छिण्ह ।

मसपाणपरिचायपपासै

सवरि मरेपि तेतुं सणासै ।

हरे हावभायविग्गमकणि

अहुमसगसुरिंदहु णळणि । 5

पुणु हह मरएवेसि सवरायकि

हारिणसेदिदि सवयउजळि ।

पुरि कदवरि मैदिउ महाणहु

ताहु मणुपरि पासें पियवहु ।

तह तादि कणयमाउ वेहुम्मव

हरे हसयसवीणारव ।

महमह पह रहरमर्परसाह

वह हरियाहु सयवरमाउह ।

१ S पुंठरिणिदि २ A असोयह ४ A निवयोयह 5 नुव ६ S वमीरे १ ABP वड
 करेपिणु B करेपिणु ८ A कउणपणो ९ B हुह १० B माव ११ A कयलणपविपयसण
 १२ ABS मड P मड १३ ABP वायसेणपासि १४ सावरेण वासिउड १५ A विणेहें
 १६ P पुंकिदि

13 १ S दिव २ A नदिद ३ ABPA ४ रमविताउ

12 8 a हुह पुति ७ कपि लो 9 a वयवरविंदहु कमळोचनरव ७ सुहवहु
 णहु सुहववर्धनस्य 10 a हरिपरिणिचणु कणमार्वा उवातेलव 11 a कयलणह कयलणया
 13 ७ सारि उचमे 15 a ताए पयसयहा 16 वहुमह रात्री
 13 ४ ७ वपरि मिहरी 8 a देहुम्मव पुनी 9 ७ वव मरं

अण्णहिं दिणि तिहुवणचूडामणि
घोलीणाई भवाइं सुणेपिणु
तइयसग्गि देविंदेहु चल्लह
णवपल्लोवमाइं जीवेपिणु
संघररापं हिरिमइकंतहि
पउमसेणधुयसेणहु अणुई

वंदिवि सिद्धकूडि जमहरमुणि । 10
मुत्तावल्लववासु करेपिणु ।
हूई पुणविहणहु दुल्लह ।
पुणु सुखोदि अणिद चपपिणु ।
तुहुं संजणिय विविहगुणवंतहि ।
लक्खण नाम पुत्ति तणुतणुई । 15

अन्ता—एवमेव पससिवि गुणसयइं गहसायरचलमयरं ॥

तुहुं आणिवि आपिय महुमहहु पवणवेमवरखयरं ॥ १३ ॥

14

दुवई—तेण वि तुज्जु दिण्णु वेविस्तणु पट्टणिवंधंभूसियं ॥

ता सीप वि णमिउं जेमीसरु दुच्चरियं विणासियं ॥ छ ॥

पुच्छइ माहवुं मयणवियारा
गघारि वि गोरे वि योमावइ
भणइ भडारउ महुंमह मण्णहि
जंजुवीवि कोसलदेसंतरे
विणपसिदि सि पत्ति पत्तलतणु
मुणिहि तेण पुणेणुत्तरंकुव
घरिणि मरेपिणु जोण्डावंदहु
पत्तु वीथि पुणु खयरमहीहरि
मिच्छुंवेयकतहि सदित्तिहि
गिष्ठाळोयणयरि रुइवंदहु
मुणि विणीयचारणु वदेपिणु

महुं अक्खहि वरयसभडारा ।
किह पत्ताउ भवेसु भवावइ ।
यंघारिहि भवाइं आयण्णहि । 5
पहु सिद्धत्थु मरिथ उज्झाडरि ।
बुद्धत्थहु करि दिण्णउं सुअंसणु ।
तहिं मुउ जाहु कहिं मि जापउ सुव ।
चंदधरे पिय हूई चंवहु ।
उत्तरसेदिहि गहवल्लहपुरि । 10
पुत्ति पट्टई उत्तिमैसत्तिहि ।
नाम सुकेविणि दिण्ण महिंहु ।
अण्णहिं दिवेंसि धम्मु गिच्छुणेपिणु ।

अन्ता—तउ लहउ माहिंदे परिअविण पंच वि करणइं वंडियइं ॥

अहु वि मय धाडिये गिज्जिणिवि तिण्णि वि सल्लइ जडिपई ॥१४॥ 15

४ P तिहुवण°, S तिहुवण°. ५ S देवेदहो. ६ A सुखदि, BP सुखोदि, S सुखोदि. ७ AP पणवेवि पससिवि ८ S माहवो.

14 १ B "गिरइ" २ S णविउ ३ P माहउ ४ B मउमइ. ५ S उज्झावरे ६ S "पुजइ सुव ८ B चदमई ९ P विववेय" १० A उत्तम°. ११ A सरुविणि. १२ S दिववे १३ A धाडियि, B धाडिउ.

12 b "विहणहु निदीनस्य 1३ b सुखोदि देवसरीरम्. 15 a अणुई लघुभगिनी, b तणु तणुई मन्नामा 16 गहसायरचलमयरं नम समुद्रमस्त्येन रत्नेन

14 1 b भवावइ सवारपत्. 7 a पत्ति पत्ती मार्या, b बुद्धत्थहु करि बुद्धार्थस्य भुने. करे, मुअसणु सुउउ अशनम्. 11 a सदित्तिहि सदीप्तिनाम राज

दुख—साह सुहृदियाहि पयमूळइ मूलेगुजेहि सुखतं ॥

तवं मयतधोर मारावडु तयुतावयत तसत ॥ ६ ॥

सुर्य सणासें पुणु गिरि भिरुवसु
मुसत ताह चार वेधिसेणु
इह गधारिविसह कोमलयाणि
सुपसिद्धु रामडु इंदरतिहि
मेरुमईहि गभि उव्यण्णी
किर मेहुणयडु दिज्जइ लगी
पर जाइवि त पडिबलु जित्तड
गिसुणि साम पियराम पयासमि
जायणपरि हेमाडु परेसह
चारणु जसहक पिया गियच्छिड
त समरिवि परहि वक्काणिठ
बहुमानपुंरिसिस्तीपडइ
पुष्पामरगिरिमबरविदेहइ
माणवडु जायी गियवस
साह इपाजुपार शुणवतइ
विण्णडं मण्णवाणु मँपतवडु
पहि देवइ पक्कवइ आयइ

पडिहइ सगि पडु पडोवसु ।
हुसत तहि वि कालि परिवेत्तसु ।
विठेळपुष्पळावइवरपट्टणि । ४
असिधारावारियणियवरिहि ।
धूय पडु गधारि खण्णी ।
अक्खिठ पारपण तुह जोगी ।
कण्णारपणु एरं रणि हित्तड ।
गोरीममसमवणु समासमि । 10
जससहमजयणतरकपकड ।
बदिवि गियजममतह पुच्छिड ।
अ गियगुदसमीवे सुविघाणिठ ।
भणइ मईसाइ धादरसहइ ।
पवरासोपणयि बरगेहइ । 15
जवपसा सयसा कयररस ।
मँबविडु पुणवतु पणिकेतइ ।
अमियाइहि सावरडु मुणिवडु ।
पक्कडिपर मरि सजावइ ।

बसा—सुय कालें जैं मूर्तिगियन उतरकुहहि हवेयिणु ॥

पुणु भावगियमहपवि हुव हेत उव्यण्ण खपणिणु ॥ १५ ॥

15 १ B "गुणाहि २ PS तडु ३ B डुर ४ S देवत्तु ५ APS परिवत्तु ६ B वर
पुक्कळावइ" S विठले पोक्कळावइ" ७ S "करक ८ A omits this line ९ AS "समीवि लडु
जाणिठ B "समीवि सुयाणिठ P समीसुविनामिठ १ BS बहुमाव" P वदमाण" ११ B पोरिवि
वियसहइ १२ AP महारिहि १३ ABPS जावा जाया वस १४ S कविहपुण्णवतु P पुणु पडु
Als गवविहपुणववणि" १५ AP हयनिदहो BAls भववदो १६ P अमियायहि १७ AP
मिया" P मियणवणे १८ B भावनेद" १९ A एहे त देहु सुपणिणु P डुर त देहु सुपणिणु

15 2 मारावडु कामापवतकम् 4 ङ परिवत्तु मरवय 6 अ इदइरिहि इन्द्रगिरे
10 अ साम ह बाङ्गेव गियराम हे गियमई, गिया रामा यस्य ङ मवसमवणु मवममणम् 11 ङ
जससइ" यशस्वती 14 अ वडु मा नेलादि वषमानपुक्कळीनुपुक्के ङ महासइ महासती स्वमपुजे
कययति 16 अ आणवडु बणिज गियवस मायी वष जात ङ वनवा स्वयया" यधोमुक्ता 18 अ
मयसदहु मये तन्ना आलस्य यस्य, निर्मयवेत्सर्ग" ङ अमियाइहि सावरडु अमिदसागस्य ॥ इहे
इत्यादि अइ तमाच्युत्ता नन्दकामरी यशस्वती जाता

16

दुर्वह—पुंणु केयारणयदि णरवइसुय संजमंदमदवौवरं ॥

इति समासिऊण सम्मार्वे सौवरयत्तमुणिवरं ॥ ७ ॥

किउं तवचरणु परमरिसिमाणइ

सुमइहु समइहि धणजलवाइहु

पुणरवि अमराळोवणिसइहि

अणवणण कोकिय सुहकम्मणि

अइजंतियहि समीवि पसत्थी

धीयसोयपुरि पुणु कयणिरइहि

गोरी एह धीय उण्यणी

आणिवि तुल्लु कण्ह कयणेहं

परिणिय पीणियरइमवरइउ

पुणु आहासइ देउ दियवर

पत्थु जि उल्लेणिवि विजयंकउ

ताल्लु देवि अवैराइय जामे

मयें गय थिय सोहम्मविमाणइ ।

कोसंबिहि णयरिवि वणिणाइहु ।

इहं सुय सेट्टिणिहि सुइइहि । 5

धम्मसील सा णामे धम्मणि ।

जिणवरणुणसंपत्ति वउत्थी ।

मेरुचंदरायहु बंदमइहि ।

विजयपुरेसें विजयं विण्णी ।

पइं वि अणंगवाणइयदेहं । 10

महपविचंणपट्टु णिबइउ ।

णिसुंणिवि पोमावइजमंतइ ।

एहु सोमत्तगुणेण लेंसंकउ ।

गुणमंडिय धणुलट्टि वं कामे ।

घत्ता—तहि पुंसि सलफमण विणयसिदि हत्थसीसेंपुरि रायहु ॥

विण्णी हरिलेणहु हरिसिण तापं लच्छिसइयाहु ॥ १६ ॥ 15

17

दुर्वह—गयपंचेदियत्थपरमत्थसिरीरयेरमणधुसहो ॥

विण्णउं ताइ भोण्डु मरु आयहु रिसिहि समादिसुसहो ॥ ७ ॥

तेण फलेण सौक्खसंपत्तिहि

पुणु वि बरामरविचिणिरोहिणि

इय हेमववइ भोयधरिसिहि ।

इहं देवहु चंदहु रोहिणि ।

16 १ B पुण. २ P समसजमदया. ३ P दयावर. ४ A सावरपरममुणिवर, BP सावरदत्त.

५ P सुय. ६ P सुमइहे. ७ A अमलालाविणि, PS लाविणि < BS अइसत्ति १ BPS add after this सा मह (P महि) सुक्खमो देवी इय, तेसु सोक्खु मुजेवि पुणरवि सुय. १० AP तणे, BS तणु ११ S णिहुणइ १२ S सकउ. १३ S अनराय १४ S व for व १५ P हत्थसीसे.

17 १ B रहरमण २ B आवइ. ३ APS देवय

16 1° दयावर मुनिम् 2 समासिऊण समीपमाभित्य 4 a सुमइहु सुमते अेधिन, समइहि मतिउहितस्य 5 a आलावणि ७ वीणा. 7 a अइसत्ति यिहि विनमत्ता. 8 a कयणिरइहि पुण्यनिरताया. 9 b विजय तव सुइइहा. 13 b सकउ चन्द्र. 14 b कामे कामेन गुणमण्डिता धनुर्पाणिः कृतेव. 16 हरि सि एण ह्येण

17 1° परमत्वं भोक्षणी, २° रतम्. 4 a चिचणिरोहिणि मनोरोधिका.

एक पक्ष तदि सुह माणेपिणु
घणकणपठरि मगहदेसतरि
विजयदेवहलियडु पिय हेविक
पठमदेवि तेहु बुद्धिप घणत्थणि
रिसिणाहडु कर मठलि करेपिणु
गहडि तार रसणिदियणिगहु
मुहमकबिलासियभिगयसहदि
मयेणदयिणणासे विहाणड

जोइसजम्मसरीरे मुपपिणु । 5
सामेलगामि वेणुविरहयघरि ।
सुमुदि सुभासिणि सुहयलयाहल ।
सा चंवाणी गुणवितामणि ।
वरधम्महु पयार एणवेपिणु ।
अविपानियतरहलडु अवग्गाहु । 10
भिहंठ गड नाहलहि रउहदि ।
मइयह लोठ असेसु पलाणड ।

घसा—गड काणणु जणु बिह दुनिसेयड विसवेलिहि फलु मफसाह ॥
अमुंनतणामु सा हलिपसुय परत किं वि न चफसाह ॥ १७ ॥

18

मुह—मुह जेठमियड लपडु वयमयमपण न जोइ विसहलं ॥
जीविय पठमदेवि विहुरे वि मण गयेणान मिच्छलं ॥ सु ॥

काळे मय गय सा हिमेवयडु
पळिमोचमु जि ते पु जीवेपिणु
दीवि लयपहि देवि लयपह
हरे पुणु इह दीवि सुहावहि
आरजयतणपरि विचक्षाणहु
सिरिमइवेविहि विमळसिरी सुव
विण्णी जणणे पाळियणायहु
तिविहेण वि गिन्हेय लखड

देसहु कण्ठकणमोयमयडु ।
मोयभूमिमणुयसु मुपपिणु ।
सुरहु लयपहणामहु मणमह । 5
अदसूरमायकह भारहि ।
सिरिमतहु सिरिसिरिहरपयहु ।
जवमालहमालाकोमलमुय ।
महिलपुरवरि मेहणिणायहु ।
रेखु मुपवि लो वि पळहयड । 10

४ S 'सरीर' ५ A समरिगमे BPS समरिगमे ६ B सगुहि ७ APS तदि ८ B 'सिगय'
९ AP गहडि १ A मवणि दविणु ११ BP बुनिकयड B records १२ 'जण गिह
मुनिकयड' वा पाठ १२ ABPS अमुपति

18 १ S गणनिकड २ BAls साएणि विसहक and Als thinks that वि in
his other Ms is lost ३ A विहुरेवि ४ A यस्याण B गस्याण ५ AIS हेमवयहो
६ S मुयेपिणु ७ P पुण ८ B देवि ९ S 'पाहो' १ AP वरधम्महो लभीवि पावहयड

॥ ७ वेणुविरहय' वयविरचितम् 7 सुहयलयाहल मुक्ताब्जम् 8 ७ चंवाणी रोहिणीचरी
10 ७ अविनागियेसादि अवातल्लय मय लीलय 11 a सुहय' मुक्ताब्ज' 'मिगय' मधुकरी
महियमुक्ताब्जम्. ७ पाहलहि मिळे-

18 2 गस्याण गरिष्ठानाम् 3 a हिमवयडु हेमवयहो 6 a 'मा दंकड मा प्रमा वक्ता
यत्र धनुकाका क्षेत्रम् अववा मावकय स्वकामिहिते 7 ७ सिरिसिरिहरपयहु भीभीरराक 9 a
'पायहु न्यायम्

घत्ता—मुउ जइवरु हुउ सहसारवर मेहरौउ मेहाणिहि ॥
गोवईसंतिहि पासि कय विमलसिरीइ सुतवविहि ॥ १८ ॥

19

दुचई—अच्छच्छविलेण भुंजंती अणवरयं सुरीणिवा ॥

जाया तस्सं चेष नियदइयहु पवरच्छरपहाणिवा ॥ छ ॥

पुणु अरिहपुरि सुरपुरसिरिहरि	रयणसिहरणियरंविमंदिरि ।
मरुणचविममंदणंदणवणि	हिंदिरेकोइलकुलकलणीसाणि ।
राउ हिरणवस्सुं विमलमइ	तासु घटिणे वल्लह सिरिमइ सइ । 5
ताहि गम्भि सदसैंदाणी	सिरिघणरवहु चिराणी राणी ।
पोमावइ हई गियैपिउपुरि	एयइ तुहु वरिभो सि सयवरि ।
कुसुममाल उरि चित्त गुरुक्की	ण कामे धाणावलि मुक्की ।
पइ मि कण्ह सुल्लिय गम्भेसरि	कय महएवि देवि परमेसरि ।
जहि ससारहु आइ ण कीसइ	केसिउं तहि जम्मावलि सीसइ । 10
दुवै अणणणिहि भावहि वचइ	जीई रंगगउ णहु जिह णचइ ।
णचाविजइ चिंसायरियं	विविहकसायरियरसंभेरियं ।
इय आयणिवि कुयलयणयणिहि	जय जय जय भणेवि भव्ययणहि ।

घत्ता—देवरइ हरिणा हलहरिण महएविहि अहिणविउ ॥

सिरिणेमिमडारउ भरहगुरु पुप्फयत्तंजिणु बंदिउ ॥ १९ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभस्वभरहापुमणिप महाकखे गोविदमहोदेवीभवेवलि-
वण्णणं जाम णवैदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ १० ॥

११ B मेहणाउ. १२ A पोमावइ, S गोवय. १३ B विमलसरीए, S विमलसिरिय.

19 १ A अच्छच्छविलेण २ A तस्स देवि नियं ३ B हिंदिय. ४ S ०णीउरे
५ P ०वागु ६ S सहसैंदाणी. ७ AP नियियं ८ 1' देवि गम्भेसरि ९ ABP निव.
१० B1'S जिउ रंगगउ ११ PS चित्ताहरि १२ P ०क्य १३ PS ०भरिय. १४ P पुप्फदहु.
१५ S महाएवी. १६ AS मवावण्णण १७ S णउदिमो

11 मेह राउ मेघनिनाद., राउ शब्द, मेहाणिहि बुद्धिनिधि

19 1 अच्छच्छविलेण काञ्जिकादारेण, सुरीणिवा अन्ता 2 नियदइयहु मेघनिनाद
चरदेवस्थ, ०पहाणिवा मुख्या 3 a सुरपुरसिरिहरि इन्द्रनमस्कोमापरारके. 7 b एयइ एतया
पपावत्या. १ n गम्भेसरि गम्भे घनवती.

पञ्चैरणमैवाह पुच्छित्त्वं सीरदरेण मुनि ॥

तं गिसुनिवि तासु वयणविधिमेव विज्वमुनि ॥ सुवक ॥

1

इह दीवि मरहि वयमगहदेसि
हुंमिरगोहणमाहिसपमामि
सोसिउ हुंनु निवसह सोमवेउ
तहि पहिळारउ सिमु मग्गिभूह
विणिण वि वउवेयसहवधारि
ते वण्णहि वासरि विहियज्जण
पयसमोरकेळीरवति
कुसुमसरसिसेरफरुइयरहु
विणिण वि जण वेयायारणिइ
आवतं मिहासिम जंइरेण

पुरपट्टणयरायविसेसि ।
वहुसाळिछेसि तहिं सालिगामि ।
कयसिद्धिविहि मग्गित्तवहुसमेउ । 5
छायायउ जायउ वीरभूह ।
विणिण वि पण्डियजणविचहारि ।
पुढ कहिं मि पविचरुणु पयण ।
तहिं पेदिघोसणवणवति ।
रिसि मयलोइउ रिसिसणहु । 10
ते बुद्ध कहु वणिइ धिइ ।
अर थोछिये मउ महुंरं सरेण ।

वृत्ता—किञ्चिद उच्येकस पावि च उच्येद धम्ममह ॥

लोयवपरिहीणु किं जाणह पडणइयर ॥ १ ॥

2

शुक्लवपु मुनिवि वयकामकद
जे सल्लु जोइवि भियतलु वपति
जे नीविउ मरणु वि समु वणति
जे मिगे जिह पिळणि वणि वसति

यिय मौणु कयमिणु मुनिवरिं ।
उवसमि वि यति जिणु समरति ।
एक पइणतु वि वउ पडिहणति ।
मुणिणाइह ताह मि यइरि होति ।

1 १ P वहुणं २ B भावह ३ P विविभाव ४ A इच्छितं ५ A सुउ P हरे
६ PS वाइभू ७ AP किंका B निक्का ८ PS वदोउ ९ S आवेत १० A वयवरेण
११ A वोलिउ

2 १ A कहु २ A वणि ३ S म्हा

3 ३ वयमं पुच्छ 4 ४ हुंमिरं गोहणमाहिसपमामि ५ ५ सिद्धिविहि
अमिहोनय ६ ६ पविचरुं वयमवपुच्छ १० १० कुसुमसरसिसेरफरुइयरहु ११ ११
वेयायारणिइ वेदाचारतत्त्वौ १२ १२ वोलिउ उवा १३ उच्येकस मिहाद

2 1 १ वयकामकद सनितकन्दर्पकन्दा 2 २ जे सल्लु इत्यादि वेपामवि कारण विनापि
शुक्लवो मवन्ति

आया ते पमणिवि अभणियाइं
 णिग्गय गय पिसुण पलंवाहु
 सो भणित्तेहि रे मूढ गग्ग
 पसु मारिवि खड्डु ण जणिण मासु
 ता सच्चयमुणिवरु भणइ पंवं
 त्तो सुणागारहु पढमुं सम्भु
 जंपितं जणेण जइ भणइ चारु
 अण्णाहिं दिणि ओइयभुयवलेहि
 आवाहिउ भीसणु आसिपहारु
 ते विणिण वि थभिय खग्गहत्थ
 वरदेवपद्मावणिपीलियाइं
 थलियउ ण होइ जिण्णाहसुत्तु

घसा—तणुरुहतणुरोहु अवलोइवि उव्वेइयइ ॥

मायापिचराइ जक्कहु सरणु पराइयइं ॥ २ ॥

खमदमंदिहिवंतहिं णिसुणियाइं । 5
 गामंतरे दिट्ठउ अवरु साहु ।
 मल्लमलिण मोक्खवाएण भग्ग ।
 तुम्हारिसाहं कहिं तियसवासु ।
 जइ हिसायर णर होति देव ।
 जापसइ को पुणु णरयमग्गु । 10
 जायउ विप्यह माणावदारु ।
 णिवसंतहु सतहु वाणि खेलेहिं ।
 कंचणजक्खं किउं दिव्वचारु ।
 ण मेट्ठियमय थिय किय णिरत्थ ।
 अट्ठंभोवंगं खीलियाइं । 15
 पावेण पाउ खज्जइ णिरत्तु ।

3

कंपति णाइं खग्गहय भुयंग
 सोवणजक्ख जय सामिसाल
 ता भणइ देउ पसुजीवहारि
 हिंसाइ विवज्जित सच्चयग्गुं
 त्तो करमि भुयंगइ मोकलाइ
 गहियाइं तेहिं पालियदयाइं
 णिवडिय ते कुग्गमहच्चयि

जंपति विप्य महिणिवडियंग ।
 रक्खहि अम्हारा वे वि बाल ।
 जइ ण करंहु कम्मं कुजम्मकारि ।
 जइ पडिवज्जइ जइणिवधम्म ।
 पेक्खहु अज्जु जि सुक्कियफलाइ । 5
 मायाभावे सत्थयवयाइं ।
 णीसारसारि तंवारवारि ।

४ P °विहिवतहिं ५ A सुव्वय° ६ P ता ७ BA 1 पढसग्गु ८ B णयरमग्गु ९ A विवखलेहिं,
 P विवखलेहिं. १० APS कउ ११ BS मट्ठियमय थिय णर णिरत्थ. १२ B उव्वेइयउ.
 १३ B पराइयउ

3 १ S जपति. २ AP करहु, S कइ. ३ AP जणु. ४ P °कम्म ५ ABPS तो.

5 a अभणियाइ अवचब्ब्यानि 8 a जणिण यवे. 9 a सच्चय° सात्वकि, b हिंसायर हिंसाकरा.
 13 b °चारु चेष्टितम्, 17 तणुरुहततणुरोहु पुत्रशरीरलोका.

3 1 a खग्ग° गच्छ 3 a पसुजीवहारि यत्तकर्म. 5 a भुयंगइ पुत्रशरीरम्, b सुक्किय°
 पुण्यस्य. 7 a ते पितरौ, b णीसारसारि महानिःशारे, तंवारवारि प्रथमनरकद्वारे. 8 a °चयइइ
 शतव्याधिभि.

अणुहवियमीमभवसवरुपाहि
गय सोहम्महु कयसुररमाह
पुणु सिहरासियकीलतकवरि
परणाहु अरिजत वहरितासु
वणसिदि घरिणि सुउ पुण्यमहु

पुणु पाळित घेउ वियवरसुपाहि ।
सुत्ताह पच पळिमोचमाहि । 10
इह हीवि भरहि साकेयणपरि ।
वणि वणिउल्लुगमु अरुहदासु ।
अण्णेहु वि आयउ माणिमहु ।

मत्ता—सिद्धत्यवणतुं सह राप औदवि वर ।

सुह पविदि मरिहु आयणिवि धम्मककर ॥ ३ ॥

4

णियलच्छि विरंण अरिमासु
सिरसिहरचडावियणियमुपाहि
विरमममापापियराह आह
रिसि भणह वडमिच्छत्तराउ
रदनप्याहसपावसविचरि
अणुहजियि तेहि वहुउक्कससु
कुल्लगम्मे णवियउ पाययम्मु
तहु मरिदि तुम्हहु विदि मि माव
मगिल्लयमणि स सुणिवि तेहि
सधोद्वियाह विणि वि जणाह
सुह कायजु कयवयविहीसु
परिपाळियणियकुलहरकमेण
मगिल्लसुणी वि सिरिमहि धीय

पावइयउ आयउ अरुहदासु ।
पुणु मुणि पुच्छिउ वणिवरसुपाहि ।
जायाह भटारा केसु ताह ।
जिणधम्मविरोह तुम्हु ताउ ।
हुउ गरर जारपाउत्तमरि । 5
मायमु पइयउ कायजसु ।
सो सोमदेउ सपुण्णेछम्मु ।
सा सारमेय इह वराय ।
तहि औदवि मउवमणामपाहि ।
उवसतइ जिणपयणमणगाह । 10
सजावउ णदीसदि विहीसु ।
सज्जिवि णियेणारिधमेण ।
सुह सुण्णवज्ज धामे विणीय ।

वत्ता—मासीणजिवासु उग्घोसियमगलरवहु ॥

णवजोण्यणि जति पाळ सवधउमहवेहु ॥ ४ ॥

15

५ ABP वउ ६ A "सुहरमाह P सुहरमाह ७ A ववरि ८ A वणिवरसुमु ९ P "वणते
१० जाह विर

4 १ B "विदिण्य" २ S तेहि ३ A संपत्तम्मु ४ AP सारमे ५ B मायवि ६ A
पदीसर ७ B "कुल्लगमिय" ८ A मासीणवयसु ९ B "अहो

9 "रमा" छमी 11 a वहरितासु अणुहा पावउ

4 1 a विहण्य वितीर्णा 5 a सपावचविचरि सार्वमिडे 6 a मायसु चाण्डाल
7 b तम्मु पायण्ड 8 b सारमेय छमी 9 b अउववणामपाहि मउवचनामवे 11 b विहीसु
यस 13 b सुह पविधा 14 मासीणजिवासु मासीना नृपा कथ

5

पइणा पडिवज्जिवि पारिवेहु
सुणहत्तणु तं वज्जरिउ ताहि
तं गिसुणिवि सा संजयेमणाहि
तउ करिवि मरिवि सोहम्मि जाय
ते भायर सावर्यवय धरेवि
तत्थेव य चियलियमलविलेव
बोलीणइ देहि समुदकालि
गयउरि णिउ णामे अरुहदासु
महु कीडय णामे तेहि तणय

मार्यगजम्मु बहुपावगेहु ।
इलि अगिालि कि रइ तुह विवाहि ।
पावइय पासि पियदरिसणाहि ।
मणिचूल णाम सुरवइहि जाय ।
ते^३ पुण्णमाणिमहंक वे वि । ॥
जाया मणहर सावर्णेदेव ।
हुयं कुवजगलेंदेसंतरालि ।
कासव पिययम वल्लहिय तासु ।
ते जाया गुणग्गज्जणियपणय ।

घत्ता—मायणिवि घम्मु भवससरंणहु संकियउ ॥

10

विमलण्यहपासि अरुहदासु विक्कसंकियउ ॥ ५ ॥

6

महु कीडय वडसणेहभाव
ता अवैरकपपुरवइ पसण्णु
आयउ किर किंकर महुहि पासु
पीणरथणि णामे कणयमाल
असहत्ते पइणा सरपिसकु
जह दुज्जडतवसिययमल्लि थकु
कणयउहे सोसिउ णियेयकाउ

गयउरि संजाया वे वि राय ।
कणयरहु णाम कणयारवणु ।
ता तेणे वि इविछय हरिणि तासु ।
पहुंमणि उग्गय मयणगिजाल ।
उहालिय बहु वियलियविद्यकु । ॥
तिर्येसोए कउ तवे भेसियकु ।
विसाहिउ दुसदु पंचमिताउ ।

5 १ P सयम^०. २ AP सावयवउ करेवि. ३ B वे ४ P सामण्य^० ५ A बोलीणदेहि
हुवमुद^०. ६ P चुय. ७ AB जमलि. ८ A गयउरि णामे णिउ अरुहदासु ९ A तहि. १० AP
सारातो.

6 १ PS माय. २ AS जाया ते वे वि, P ते जाया वे वि ३ AB अमरकय^०, P अव-
कय^०. ४ P पासु ५ A कणयार^०, S कणयार^०. ६ AP तेण फलेइय ७ महो मणि. P महमणि.
८ B वित्तु ९ B दुज्ज १० S तय^०. ११ S तथ १२ B नियद^०

5 1 a पइणा य पूर्व पति पञ्चाध्यायान्तरतो यद्यस्तेन 2 b किं रइ तुह विवाहि विवाहे
का रति तव. 3 a सजय^० सप्त वदम् 4 b जाय माया. 5 a तत्थेव सौधमेस्वर्गे, b सावण्णदेव
सामानिका 7 a बोलीणइ देहि श्रुते हरिरे. 8 a णिउ वृष., b कासव काश्यपी 9 a महुकीडय
मधुकीटकी

6 2 b कणयार^० पीतवर्णपुण्यम्. 3 a किंकर मधुराज^० कनकरय. सेवक, b तेण मधु-
रजा. 5 a सरपिसकु स्मरण, b वियलियविययक् विगलितवितर्क 6 a दुज्जडतवसि^० द्विजट-
सपत्नी, b भेसियवृ शक्तिवर्क तप.

यदेयि मङ्गारु विमलबाहु
परियाणिवि तच्च तवेण तेहिं
चिरु वृद्धमह सग्नि महापसल्लु
हरिमहपविहि कृष्णिणिहि यन्धि
महु सभूयउ पञ्चण्णु णामु

यत्ता—कणवरु मरियि जायउ भीसणवैहरवसु ॥

पहि अतु विमाणु जलित कुर्हेउ ओरसतियसु ॥ ६ ॥

7

यत्ता विमाणि सौ मिण्णकेउ
चिरु जम्मतरि सिमुहरिण्णेषु
सौ जायउ महु जि पणु बेरि
यल्लमि काणणि अविषेयभाई
गणणयल्लमगातालीतमाकि
परिणु मोहेप्पिणु सयलणपरि
पुरि वट्ठिई सोउ महायणाह
ता चिईलि सेलि वेयणुणामि
वाहिनसेहिहि यणकुवणपरि
तहिं कालि काँसिखवद कर्णिउ

यत्ता—सविमाणकडु कखनमाळर समउ तहिं ॥

सयसउ राउ अक्खइ महुमहर्णिमु जहिं ॥ ७ ॥

जाकईउ गल्लइ धूमकेउ ।
अयहारिउ केण मेउउ कल्लु ।
अरु मारमि खल्लु गिण्णुखेरि ।
हुइ अणुहुजिवि जिह मरुई पाउ ।
इय मतिथि खयत्तणत्तयालि । ६
सिमु धेहिउ तक्कयसिलहि कवेरि ।
इल्लहरुक्खिणिणायायणाह ।
अमयवइहेलि चित्तिण्णगामि ।
अइसोयपरि विज्जलियधिंघमपरि ।
अधियारिविहुसिउ ण गइहु । 10

8

अयलोइउ पाळउ कर विमदु
बोह्लिउ पणुणा लक्खण्णुणु

हुइ हुइ उमउ ण रयि तयहु ।
ल्ल ल्ल सुदरि मुह दोउ पुपु ।

११ P कीरुपहिं १४ AP ^०वरियउ विमलजग्धि १५ ABPS भीषणु १६ A कुपउ

7 १ A बोह्लिकेउ २ AP जाकईउ ३ B मारमि ४ B ^०माय ५ B मरण पाहु ६ B
पल्लिव ७ B उअरि P उअरि ८ B वट्ठिउ ९ B ^०रुपिणि १ B विउळ ११ APS
णहसाय^० १२ B काळसमु

7 1 a मिण्णकेउ मित्राह विद्वज्जो वा 3 b ^०खेरि वैम, 6 b तक्कयसिलहि
उअरि तक्कयसिलोपरि 7 a महायणाह महाजनानाम्, 9 a यणकुव येयकुव्, 10 b यणिपारि^०
हस्तिनी 12 महुमहर्णिमु कृष्णस पुत्र

8 1 a कर विमदु लहल्लो भेरम

वालउ लम्पणलम्पणंकिंयं
ता ताह लउउ सुउ ललियवाहु
वरतणयलमहरिसियमणाउ
परमेसर जइ मइं करहि कब्बु
जिह होइ देव तिह 'देहि बाय
त निमुनिवि पट्टणा विष्णुरंतु
यज्जउ पुत्तह जुवरायपट्टु

रुवें निच्छउ होसइ अणंगु ।
णं निपदेहइ मयणमिडाहु ।
पुणु पत्थिउ निपपिययमु अणाइ । ॥
तो तुह परोक्खि एयहु जि रत्तु ।
रक्खिज्जउ महु सोहग्गछाय ।
उब्बेल्लिवि कतहि कणयवत्तु ।
पुल्लयं जणनिहि कंजुउ विसहु ।

धत्ता—णियणयरु रायाइ पुण्णपहावपहारियइ ॥

10

णदणल्लहेण विणिण वि हरिसाऊरियइ ॥ ८ ॥

9

महिरि मिलियइ सज्जनसयाइ
काणीणह दीणहु विण्णुं दाणु
यंठियइ थणेयइं पुज्जियाइ
विरउउ तणयहु उच्छेयपयत्तु
भाणहु पणायिउ सज्जणेहिं
ण किंतिवेहिवित्थरिउ कंदु
सज्जाउ निहिलधिण्णाणकुसल्लु
मटलियणियरकलियारण्ण
रुण्णिणिहि महत्तगयधिओउ
णिर्वमउ इत्थणकतिल्लपाय

णाणामंगलत्तरइं हयाइं ।
पुरियदिहि 'अइइच्छापमाणु ।
कारागाराउ विसज्जियाइं ।
तहु णामु पइट्ठिउ ठेवयत्तु ।
उच्छाहु विमुक्कउ दुज्जणेहिं । ॥
परिवुंहु वालु ण वालयहु ।
जिण्णाहपायराईवमसल्लु ।
एत्तहि हिंउवें णारएण ।
कण्हहु जाइवि अवहरिउ सोउ ।
गोविंइ निमुंणि रायाहिराय । 10

धत्ता—मेइणि विहरतु पुण्यविदेहि पसण्णत्तरि ॥

हउ गउ णरणाह चारु पुंडरीकिंणिण्येयत्ति ॥ ९ ॥

10

तहिं महु विद्वसिधमयगदेन
जिह्म पिठ देधे धराधरेण
जिह्म पालित अवरे केदरेण
जिह्म ज्ञायत सुवद नयजुषाणु
त गिमुनिवि कैपिणिदरिदि हरिसु
एतहि वि कुमारि हयमलेण
अपिठ नियतायहु पीससहु
कवणमाछहि कामगिजाळ

अपिठ अर्धहेण सयपदेण ।
जिह्म धिहू रणि परमारण ।
सुउ पडिवाजिनि पर्णयफरेण ।
सोलहसवच्छेरपरिपमाणु ।
सजायत हरिससुयह वरिसु ।
रुनि अगिरात मधिवि वलेण ।
अवलोहवि नवणु गुणमहत्तु ।
उदिय हियतल्लह गिर कराल ।

धरा — महीलसिउ सपुत्रु मायह विरहविसडुलह ॥

कामहु वल्लभतु की वि अति मेहनिपलह ॥ १० ॥

11

पंगणि रगतु विसाळनेतु
ज धनचूयह लाउ देवतु
ज जोहव नयनहि विपसिपदि
त एवहि पेनुगयरसेण
पुत्रु जि पदमावे छह ताह
होकारिवि दरिसिउ पेम्ममाउ
मह इच्छहि छह वणनस विज
त गिमुनिवि भासिउ लेण सामु
गलिउत्तरिखपयडिबयणह

ज उवाहउ धूलीपिलिनु ।
ज कलरुं परियदिउ हेवतु ।
ज बोळुगविउ पियेजपिपदि ।
बीसरिय सल्लु वम्महयसेण ।
सताविय मणहसिदिदिदिहाह ।
तुहु होहि देव अयराहिराउ ।
विप्वहमाण भाजवमणोज ।
करपल्लवि होहं पाणिपोनु ।
सगहिय विज दिण्णी अणाह ।

10 १ A सुह २ A अदेण ३ AP विरह वणि ४ P वनयधरेण ५ B सवत्तरपरिपमाणु ६ ABPS कृषिणि ७ A "गुणमहत्तु" Als गुणपरिसु against Miss ८ B सुपुत्र ९ APS मयनविसडुलह B records a p मयन इति वा पाठ

11 १ AP अगने २ A वनचूयह B वनचूयह PS वनचूयह ३ APS वयंतु ४ P कलरु ५ B अल्लु ६ P जोहव ७ B ज विनयपदि ८ AP बीसरिय ९ B विचरिय १० B होकारिवि दरिसिउ

10 1 a "मय" मय 2 a नयनधरेण नयनधरेण 3 b वनयधरेण स्नेहकारिणा 5 b अमुय अमु 9 सुपुत्रु निजपुत्र

11 2 a वनचूयह वनचूयह b परिपडि अन्वोक्ति 5 a पदमाव पतिपरिणामेन 6 मणहसिदि दिदिदिहाह कामागिणिपया 7 b उह वल्लभ 9 a गलिउत्तरि नेत्यादि द्वयोपरिचनवक्ष्यमानप्रकटितसंज्ञा

मयणंगणलमाचिविचचूणु
अत्रलोरेचि प्याण्ण पिण्णि तेत्थु
आयणिणधि चट्ठसमाचमणिउं
तत्तायमन्नि संमाग्मारु

गड मुंदग जिणहेंग मिळऊणु । 10
 मुणिवर जयकारिणि जगपयधु ।
 सिग्मिजयतमि निगाहचरितं ।
 धिरुड चिज्ञासाहणपयाग ।

घस्ता—गुणु आयेउ गोदु सुउ जायंति धिग्लपण ॥

उरि चिकी प्र सि फण्यमाल मयरद्वय ॥ ११ ॥

12

गिरत्था मरेणं
 हजती कणती
 कभोते चिचिचं
 त्रिदृषणं पुनती
 मनेण विमदं
 मिलमिदं शयं
 पदंत ण कीर
 घण ध्विऊण
 धरं चिचिचोर
 पद्याय कुंरंत
 ण मेणोदं हन
 ण पद्यां ण ग्राण
 ण मूसाविद्याणं
 ण शिन्नाविजाणं
 मरीरे चुलंती
 कथमेयमाळा
 ण नीण सुद्धित्री

उग्रग करेण ।
 मग्नी धुणती ।
 विष्णोण पक्ष ।
 अहं णिमग्नी ।
 ण पंचेन्द्र षष्ठ ।
 ण कश्यपभेद्य ।
 पदायंङ्ग मार ।
 काल जपिकुण ।
 ण वाहेन्द्र मोर ।
 मग्नील धरत ।
 ण धीण ण धर्म ।
 ण पाण ण वारण ।
 ण गयत्थदाय ।
 ण भुजेन्द्र भेष ।
 जलहा जलती ।
 भिदिस्नेय जाला ।
 मये काममग्नी ।

୧୦. A.B.P. ଓଡ଼ିଆ, ୨୧. I.P.S. ଗିନିଅର, ୨୨. ଡି.ଏସ୍.ଏସ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ୨୩. I.P.S. ଆଇଡି.

12 १ षष्ठः. २ A¹ ण मध्यममेयं, जितलोह वय ३ B पुस्त. ४ B चकत. ५ B माणेष्ट.

३ A मिट्टिसायजाळा, पत्रभोयगाला.

10 a चक्षुः शिखरम् . 11 b जगत्पथः जगत्पदार्थः जीवादिः . 13 c यथा यदुक्तिः शयन्यन्तपादमार्गः .

14 विकसद्धण कार्मण.

12 १ = चरेण रामेण, ८ उरमा हृदयम्. ३ न कञ्चोमे कपोले, ८ मया पत्रायलि स्मृ-
यन्ती ६ न नि सा मेव क्षणोति; ८ कञ्चममेव कृतव्याप्तमेदम्. ४ न पथ हत्यादि गोष दर्शयित्वा
मयूर = नाटयति. 10 न °र्ध्वं गो वी कमान् मयथ.

शिरुत्तण्णमग्गा	अरुत्तुत्तसण्णा ।	
यिमोन्न सक्क	सगोत्तस्स पक्क ।	20
एकाउ पसत्ता	सवेत्तसगत्ता ।	
सयेम्म भवन्ती	पयसुं वमती ।	
पहातेह एव	सुयं कामएव ।	
अहो सध्धमावा	मह ईच्छ देवा ।	
सओ तेण उच	अहो हो भनुत्त ।	25
विहण्णसत्ताया	सुम मन्नु माया ।	
धैणगाउ थण्ण	गलत्त पसण्ण ।	
मए सुम्भ पीय	म अण्णेहि वीय ।	
असुयं अशुज	सुहाण विद्वज्ज ।	

धत्ता—ता सत्तिययंमैह अपिउ अपहि वेहनुत्त ॥

मह कामासि कइ अदसु मर मह देहेह ॥ १२ ॥

80

13

सकणवत्तिल नामे सुम्भ माव	मह कामासि सहि देहि धाय ।	
त भयसु सुगिवि मरुत्तसण्ण	अवहेर करेणिणु गवत्त मयसु ।	
ता भिइ उइ सुम्भासोह	वियणहहि वियारिणि विययंहेह ।	
आरुह सुं निहुरहवास	अक्काह वियवहयह जायरोत्त ।	
मह देव विमकवणाह सुसु	परजणित् होह किं कहि मि पुसु । 5	
कामसु पाणिपळेभि विहन्नु	ओयदि पाहवारिउ मह वणसु ।	
त निहुरिणि राय कुत्तपण	अल्लेण व जात्तासिपणे ।	
भीलणपिसुणह मारणमणाह	आपसु विण्णु वियणहणाह ।	
गिह्ज अशु दायरु महई	एक्कण्णत्त पसुं वहाह वहाह ।	
सणमह अयगहणुकाठियाह	ता एव सयाह समुत्तियाह । 10	

७ P मरुत्त ८ AP सुयेम्म ९ BS कवती १ B इच्छि ११ A वणगाव वणी 12
अपमाउ वण against Meo १२ PS कविवकाए १३ S देह सुओ

13 १ AP कामाउहे पवेहि B अमाउहि २ ABS अवहेरि ३ B सुह ४ B पण
५ AP ६ वयण ७ PS दाह ८ AP मरह ९ A सुवहार १ AP वार

18 a विहत्तण्णमग्गा निम्मेन अन्नमना उद्वत्तित्ता b चरसुत्तसण्णा विहण्णेण सुत्तसा
20 b सकत्तसगत्ता सवेत्तसगत्ता 20 b वीय विलीकम्, अक्क 28 a अशुज अशानम्
29 वेहनुत्त लोहपुवम्

13 2 b अवहेर अक्का 3 b वियवहहि निक्कसे 9 a मरह मय ६ वहाह
वणेन, माहत्तत्वा विहणेन अक्क विलीक विलीकम्

घत्ता—प्रियंवयणु मणेवि सिरिरमणमउ साहसिउ ॥
 निउ रणहु तेदि सो कुमारे कीलरसिउ ॥ १३ ॥

14

णं पलयकालजमदूयतुडे	तदि हुयवदजालाजैलियकुडु ।
णियजणणसुपेसणपेरिदि	दषसालिवि धोह्तिउ वहरिपेदि ।
मो देवयत्त दुकर विसंति	एयहु दर्सेणि कायर मरंति ।
त निस्तुणिवि विरसिवि तेत्तु तेण	महुमहणरायरुण्णिणिसुएण ।
अण्णउ धल्लिउं सद्धस सि केम	सीयलचदणचिबिह्लि जेम । 5
पुज्जिउ देवाइ महाणुभाउ	अण्णाहिं जाइवि पुणु सोमकाउ ।
सोमिसमहीदरमज्जि निदिउ	कूरेहिं तेहिं चउदिसेदि पिहिउ ।
धीरेण तेण समुद मिडंत	यदकंठ धरिय गिरिखर पडंत ।
पुणु जम्बिलणीइ जगसारपदि	पुज्जिउ वत्थालकारपदि ।
साहसियहु तिहुयणु होइ सज्जु	हुग्गु वि अबुग्गु हुग्गेज्जुं गेज्जु । 10

घत्ता—सयलेदि मिलेवि वहरिदि करिकरवीहरंमुउ ॥
 सयरगिरिउंवि पुणु पइसारिउ कण्हसुउ ॥ १४ ॥

15

तदि महिदर धाईउ होवि कोलु	धुरुधुरणरावकयधोरेपलु ।
धाढाकरालु देह्णिगिलिलु	णिलालिकसणु रेंतंतणेसु ।
अरिवसिदतणिदसणसेह्दि	भुयदडैदि चूरियरिउरहेदि ।
मोडिउ रदिसुग्गु सर अमउ	वहेकठु पुत्तै कंठकंडु ।

१० BP नियं. ११ B कुमार.

14 १ PS 'तोह्' १ 1'5 'जलिउ. २ P 'कुड, S 'कोह्. ३ APS वेरिपदि. ४ P दरिणे. ५ A धित्तउ. ६ B 'चिणिसाहु, S 'चिकलेहु ७ APS सोमकाउ. ८ S 'महीदरे. ९ 1' 'दिसिहिं. १० A महुस्व. ११ P हुग्गेज्जु. १२ APS 'दीदकुउ.

15 १ A भाविउ २ 1' होइ. ३ B 'धोर. ४ A देहिणिं, B देहिणं. ५ B रत्तंत. ६ A 'सयदि. ७ B 'दरिहिं. ८ ABPS येसुग्गु. ९ ABPS वरज्जुओ.

11 सिरिरमणमउ कृष्णपुण.

14 3 दुकर विसति ये प्रविशन्ति तदुक्तम्. S ४ मरुव छमस्वम्.

15 1 a होवि कोलु शूको भूवा, b 'रोह् कोलार 2 a देह्णिं कंदम, दिह् उपचये, b 'कसणु कृष्णवर्ण 3 ' 'निरसणसहेदि निर्माणसमर्थाया सुजात्या, b चूरियरिउ-रहेदि चूर्णितरिपुराया. 1 a पाक तीक्ष्ण, अमउ अमनोऽ, b वहेकठुपुत्तै हरिपुणेन, कठकंडु सूकराया

सुधिरत्तं निजियमईरासु
 देवयइ विरुणैत विजययोसु
 अण्णेकु पिसुणपाटीणजालु
 सज्जणहु वि दुज्जणु कुडिलचिसु
 रयणीयरेण सुहउ पसत्थ
 विरैसदणु भइकईमइणासु
 पुणु वम्मइण विट्ठउ कयालि
 विज्जाइव विज्जावसइरेण
 तहु वसुणदइ अवलोइयाइ
 णरदेइसोक्कईसजोयणीइ
 मेलाविठ भाविठ माउ ताउ
 इरितणयहु वरपईसियमुदेण
 उवयारु पडितवयाव रउ

धत्ता—दुज्जणवयणेण परिवहियमहिमानमउ ॥

सइसाणजसणविवरि पइउ अयविज्ज ॥ १५ ॥

त विजसित पेळ्ळिवि सुवपसु । 5
 जलयक परवाहिणिदियंयसौसु ।
 दोइयउ महाजालु वि विसालु ।
 पुणु फालणामगुईमुहि णिदितु ।
 पणवेवि महाकालेण तेत्थु ।
 तहु दिण्णउ केसवणदणासु । 10
 पम्मट्टवेट्ट रुक्कवतरालि ।
 कीलित केण वि विज्जाइरेण ।
 णियकरयलसयवलदोइयाइ ।
 गुलिंयौइ णिववणमोयणीइ ।
 उप्पण्णउ तासु सणेईमाउ । 10
 दिण्णउ तिणि विज्जाउ तेण ।
 भणु को व सुयणसणेण छइउ ।

16

तहि सक्काउरणणिगएण
 पप्पाळकिउ अयलकिउवणु
 बहुकवजोणि णरवरविमइ
 जोयवि बुयालिइ कोयवेहु
 तहि गयणगणममणउ सुयाउ
 सुविसिदुइरुपैवियसिवेण

आएण सणाइणिसगएण ।
 वणु दिण्णउ कामडु विसवणु ।
 अण्णेक कामकविणिप मुई ।
 धामे कपाविठ तरुकविहु । 5
 छइयाउ कुमाई पाउयाउ ।
 पुणु सुसिवि पक्कण्णाहिवेण ।

१ BP भविरासु ११ S पेळ्ळिउ १२ S देवय १३ B विदिण्णउ १४ B "हिबइ १५ B
 गुहयइ" १६ S निउदणु १७ AP "कवदणासु १८ दिण्णउ १९ APS "ओम्भु २ B
 अगुलिण्ण २१ A लाविउ माउमाउ २२ A सिणेइ" २३ A इरिसियवियमुदेण P इरिवियमुदेण
 16 १ I मुई २ P दुमालिण S दुमालिण ३ APS जेवणिहु ४ APS इन्डियसिवेण

6 a विजययोसु नाम एउ b "वाहिलि" सेना 7 a पिसुणपाटीण" शुभमत्था ॥ a
 सज्जणहु वि दुज्जणु सज्जनत्वापि बुद्धेना भवन्ति 9 a रयणीयरेण राससेन 10 a विससदणु
 शृणुस्सन्दमनामा रथ "कड" समूह 11 a कयालि विजयार्थे ज्ञापाचछे 1२ a माविउ रुचितः
 आता पिनावत् 19 सइसाणज सइसुणउ सयं वनविजउ जगति विजयो वत्स

16 1 b आएण सणे सणाइणिसगएण स्कन्हीवेन 2 a वणु सपत्ते परिणामः
 3 a बहुकवजोणि बहुकवोत्सविभारणम् "विमइ मईवकरी 4 b कविहु कविच्छ 5 b पाउयाउ
 पादुके द्वे 6 a इउ पावि व सिवेण इहस्व प्राप्तिमुत्सेन ७ a वक्कण्णाहिवण पक्कणणसणेण

दोश्य हरिपुत्तहु पंच वाण
तप्पण पुण तावणु मोहणक्खु
पचमु सर मारणु चित्तविउह
चलचमरजुयल्लु सेयायवत्तु
गुणरजिएण जसलपडेण
कहं वसुद्धिवाविहि नायवासु
तहु सपय पेच्छिवि भायरेहिं
पच्छणजैणियकोधेणलेहि
अह पइसहि तुहुं पायालवावि
धत्ता—पिण्णुणिगिउ एम जैणिधि सुंदर ओसरइ ॥

वाविहि पण्णत्ति तहु रुवै सह पइसरइ ॥ १६ ॥

गदयधणुजोमौ उहयमाण ।
विलवणु मग्गणु हयवइरिपक्खु ।
ओसहिमालइ सहं दिण्णु मउहु ।
पं सिरिणवभिसिणिहि सहसवत्तु । 10
खीरवणणिवासै मंजडेण ।
दिण्णउ एयहु रिउदिण्णतासु ।
तिल्लु तिल्लु शिज्जंतकलेवरेहिं ।
पुणरवि पडिचोइइ हयखैलेहिं ।
तो तुह सिरि दोइ अउव्व का वि । 15

17

पच्छण्णु ण विट्ठ तेहिं वालु
सिलवीदें छाइय वावि जाम
ते तेण जायेपासेण धद्ध
णिक्खित्त भदोमुह सलिलरधि
णिपसयणविहुरविणिधारण
जोरप्पहेण सा धरिय केम
तहिं अवसरि परवलदुम्महेण
आसण्णु पत्तु तें भणिउ कामु
तुज्जुप्परि आयउ तुज्जु ताउ
ता कसिवि पडिमउमहेण
हेय गय हय गय धुरिय रओह

अप्पाणहु कोक्खित पल्लकाळु ।
रुप्पिणितणुहुं भणि कुइइ ताम ।
सुहिअवयारें के के ण कइ ।
सिल उवरि णिहियें जायइ तमंघि । 5
अगवइत्तर्ण लहुयोरण ।
उप्परि णिवडंती मारि जेम ।
एहि एत्तु पलोइउ धम्महेण ।
ओ विट्ठु जम्मणेहुहु विरामु ।
ओ मयरइय लइ सत्तेव चाउ । 10
देवें दामोयरणदणेण ।
विच्छिण्णल्लत्त माहिधित्त जोह ।

- ५ ABP जोमाउइपहाण ६ B मोहवक्खु ७ B उवड ८ BPS मकडेण ९ A कहं वसुद्धि°
१० ABPS °जलिय° ११ A जणेण १२ A खलेण. १३ A पिण्णुणिगिउ, K पिण्णुणिगिउ १४ S जाणवि
17 १ B °तणहु, S तहु २ P कुविउ ३ S °वासेण ४ P omits this foot.
५ A विदिय ६ P °तणुए. ७ B लहुवारण ८ PS जहें ९ B इह १० B समर ११ A हय
हय गय गय

७ गदयधणु° नन्नावर्तधनु, उहयमाण कम्मानअरमानोपेता ९ a चित्तविउहु चित्रामेण (१)
विहट्ट प्रकटो विपुलो वा 10 b सहसवत्तु कमलम् 12 b कहं वसुद्धि° कर्दममुखी वापी 13 b
सिअत्त° सीणम्. 15 b अउव्व अपूर्वा 16 a पिण्णुणिगिउ पिञ्चनस्तेद्धित चेष्टितम्

17 3 b सुहि अवयारें सुहदामपकारेण. 4 a सलिलरधि बाष्पाम्. 7 b एत्तु आगच्छन्
८ a त तेन ज्योति प्रमेण 10 b देवें प्रत्युमेन. 11 a हय इत्यादि अश्वा यज्ञाश्च हता सन्त नष्टा.

यथा—येच्छिवि दुष्कार कामपवसरनियरगा ॥

॥ कुमुदिकुशुदे मगवत समरि यगादिवह ॥ १७ ॥

18

पणुपुयविधपसाहणेन
पायालयावि सपत्तु जाम
जोहणहेण सिरपेहणेन
जहिं जहिं अम्हाहिं कवई निहिसु
तहिं तहिं भीसरर महापुमाउ
किं फहिं मि पुसु अहिलसर माव
को अणु सुसचसठचवतु
को जानइ किं अवार कुसु
महिछाउ होति मायाविणीउ
किं ताव गियनिगिछहु जरहि
पडिबण्णउ पालहि कमहि सामु
इय गिसुणिनि वारपवीछियाइ
गउ तहिं जहिं यिउ सिरिमगतवउ
भीसहु पयोसिउ गियइ डुकु
उच्चारवि सिउ केसवसुएण

वासेवि जणसु सहु साहणेन ।
बोछिउ लहुप सणुएण ताम ।
सुहु मोहिउ दइवें मोहणेन ।
पणुल्लुमलदलविमलणेसु ।
देयिहिं पुसिअर दिव्यफाउ । ॥
को पावइ कामहु तगिय छाव ।
गमीर थीरं गुणगणमइतु ।
मारावहु पारदउ सुपुसु ।
अ मुणहि पुरिसतउ मुष्णिणीउ ।
लहु गपि कुमारहु विणउ करहि । 10
अणुणहि गियणइणु देउ कामु ।
पडुणयणइ असुजलोछियाइ ।
बोछाविउ तें किउं तासु पणउ ।
आलिगिउ बोहिं मि पयमेहु ।
अवयव विउ कलसमुएण । 15

यथा—कप त्रियलियवासं ते केयरंरायगवह ॥

निगम सलिछाउ पुअसमसिमसमलिंभमुह ॥ १८ ॥

19

मयणहु सुमणोरखारण
भौ गिसुणि गिसुणि रिउदुयिअं

तहिं अयसरि अदिकउ पारएण ।
वारवइपुरवारि पवरतेय ।

18 १ ABPS लणण २ APS देवहिं ३ AP को महिपलि अणु सुसचवह
४ ABPS चीर ५ AP को (P किं) जानइ किं मायए (P माए) पसुउ (P पउउ)
६ ABPS सपु ७ APS कउ ८ B किउ डुकु ९ B एकुवेहु १० P पाते ११ A लेवरा
दिवअगवह P सवरादिवअगवह १२ APS माअणु

19 १ A रगगएण २ AP पुसिउ ३ B पुरि ४ AP निवउ ५ पउरतेय

18 8 a अवाइ मगा 10 a गियनिगिछहु मार्वाभिणयण 11 b अणुणहि समानव
10 वि य लिय पाउ नागाअरहिता

19 1 a वारएण पूरण

जरैसिधकंसकयप्रार्थहारि
तहु पणइणि रुपिणि तुज्झु माय
भो आउ जाहु किं चयणपरिहिं
पर्णमियसिरेण मउलियकरेण
तुहु ताउ महारउ गयविलेव
पयलतखीरधारापणील
अ हुंमणिमो सि दुणियच्छिओ सि
ता तेण विसज्जिउ शुणविसाळु
कलहयरें सहुं चद्धिउ तुरतु

घत्ता—संगरकखेण कामहु केरउ णउ रहिउ ॥

सिद्धिभूइपहुइ भवसवधु सण्डु कहिउ ॥ १९ ॥

तुह जणणु जणहणु सैकधारि ।
पत्तियहि महारी सच वाय ।
णियगोसु णियहि णियणयणपरिहि । 5
ता मणिउ कालसंभहुं सरेण ।
वहाँरिउ हँउ परं रुक्खु जेव ।
वीसरमि ण जणणि वि कणयमाल ।
तं खमहि जामि आउच्छिओ सि ।
अणइहसदणि आरुहु वालु । 10
अयपुर सपसउ सवरतु ।

20

ता भणइ मयणु मई माणियाई
ता भासइ णारउ मयमहेण
ता विणिण वि अण उवसमपसण्ण
तहिं कुंउकुल्लुमसमदत्तियाउ
ककेल्लिपत्तकौमलभुयाउ
वेहविथउ वमियउ तावियाउ
अणु सयल्लु वि विष्ममरंसविसट्टु
कारावियमणिमयमंडवेहिं
पारदी भाणुहि देहुं पुत्ति
तहिं भरिवि सरेण पुल्लिवेह

चिरंजम्मइ किह पर जाणियाइ ।
अविखउ अरुहँ विमलपण्णेण ।
एव खवंत मयउउ पधण्ण ।
जाणिवि भाणुहि विक्कासियाउ ।
दुज्जोहणपहुजल्लिणिहिंसुयाउ । 5
मायारुवेण हसावियाउ ।
गउ मयणु मज्जरमग्गे पयहु ।
मज्जुराउरि एवहिं पडवेहिं ।
ण कामकायवायारजुत्ति ।
अलिकज्जलसामलकविलकेल्लु । 10

५ BP जरसिधुं, नरुंषं. ६ A 'सयमाणहणि, BP 'कयमाणहणि. ७ AP३ चकपाणि.
८ P पणवियं. ९ AP कालसवम. १० B अहुविउ ११ S पर हउ १२ AP 'धारायणाल.
१३ BK दुंमणिमोसि दुग्णिं.

20 १ A किर जम्मइ. २ P 'पवण ३ A 'पहुजाणिहि ४ AP विमखरं, BS विग्दयरं.

6 b सरेण समेण कामेन 9 a दुणियच्छिओ दुर्निरोधित, b आउच्छिओ आपुट्ठ.
10 b अणइहसदणि वृषमस्यन्दननाम्नि रथे. 11 a कलहयरें नारदेन. 13 सिद्धिभूइपहुइ
अग्निभूतिजन्मादि.

20 1 a माणियाइ भुक्कानि 4 a 'दत्तिमाउ दुय्येयनपुल्ल 5 b 'जलणिहिं राजी-
नामेदम् 6 a वेहविथउ वधित्ता 7 b मज्जुरमग्गे मयुरमग्गेण 9 a देहु दाहु प्रारब्बा, b 'कह-
यवायारजुत्ति कैतवाचासुत्ति कामभूर्तिप्रवृत्ति 10 a सरेण कामेन

पीसेसकलाविष्णवाणुच
दारावर्णयति परावर्ण

केलिभिः किरियालिभि पडपुस ।

कुसुमसरै कतिविराहरण ।

घटा—विह्वलं ह्येव विचारत मयसि ससद्वयत ॥

वापरवेलेन भाविह्वलं महामहत्तयत ॥ २० ॥

21

क्षणादिपसुरकामिनिविह्वल
विसयिविसयित्वाभाहलेन
सोसेयि वावि हसमाविषण
पिरयोत्कंभयोळतकेस
अणु पद्विपयित ममहरपयसि
पुरणारिहि द्विपड ह्यस्तु रमह
हवं छिण्णकण्णसघाणु करमि
भाणुहि निमिषु उमगिवड जाड
पुणु माणुमायवेवीणिकेड
यदि वहासारिड सहु वमणेहि
मुज्ज मीयणु केम वि न धार
ता सवहोम वमणह सुवुडु

सिरिसवहामकीलाणिवाहु ।

उज्जानु भणु मायवचलेण ।

सकमडलु पूरिड पाणिपण ।

रहवदि जोसिय गहह समेस ।

कामेय जयैरगोडरपेवेसि ।

पुणु वेजवेसु घोसतु भमह ।

वाहिपड तिण्णवेयाड हरमि ।

विह्वलविड नुवकुयरीड ताड ।

गड वमणयेले मयरेकेड ।

त्रिवर्गेरिहि लहुं पकावणेहि ।

आययी जाम रसोह काह ।

वमणु होरवि रचकलु पडु ।

घटा—ता भासर महु देवे न सज्ज मीयणह ॥

किं देवे जाय पड मज्ज जारायणह ॥ २१ ॥

५ S लेलेवि ६ A कृष्णिकामि ७ A विष्णवाणि ८ P वन

21 १ AP सवमाम २ APS दिविदिहि ३ APS वापिड ४ B जयरे
५ P पयसे ६ AS वाहिड P वाहीड ७ ABP विन ८ AP सवमाम S सवमाम ९ S
वमण १ APS विपयजहि ११ B लहुं P लहुं S लहुं १२ A केय १३ P सव
माम १४ P न होर for होरवि १५ AP वीन १६ S किल

11 ६ सिरियालिभि कदर्यमिता सेदमित्ता वा 13 काहमि

21 1 ६ विनासु उज्जानय 2 ६ मायवचलेण
वेजवेसु वेधेय 10 ६ त्रिवर्गेरिहि वृणुते लहुं लहुं
नरति पूर्वदेशे दक्षिणदीप 11 ६ ज्ञानमी स्वांग यत्न (1) 13 ५

पुणु गयउ झसद्धउ वद्धणेहु
 हउं भुक्खिउ रुप्पिणि गुणमहति
 ता सरसभक्खु उक्खित्तगासु
 जेमाविउ तो वि ण तिचि जाइ
 कह कह च ताइ पीणिउ विद्वांसि
 विणु कालें कोइलरावमुद्धु
 तक्खणि वसतु अकुरियकुरुहु
 गारउ पुच्छिउ पीणत्थणीइ
 महु घर को आयउ खयरहं देउ
 अवयरिउ माइ दे देहि खेउ
 वंसिउ सरैउ नियमाउयाहि

खुल्लयवेसें णियजणणिगेहु ।
 दे देहि भोज्जु सम्मत्तवति ।
 णाणातिम्मणकयसुराहिवासु ।
 हियउल्लइ देविहि गुणु जि थाइ ।
 विरण्वि पुरउ लुडुयहं रासि । 5
 अवयारिउ महुसमत्तमसल्लु ।
 कयपणयकलहु जणजणियविरहु ।
 कोऊल्लभरियइ रुप्पिणीइ ।
 ता तेण कहिउं सिखु मयरकेउ ।
 ता कामें णिसुणिवि ववणु पउ । 10
 पण्डयपयपयलियथणजुयाहि ।

वृत्ता—जगणीधण्णेण सुउ मिलंतु अहिसिखु किइ ॥

गंगातोपण पुष्केयतु पडु भरहु जिइ ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकडपुष्पयंतविराए
 महाभाव्यभरहाणुमणिप महाकले रूप्पिणिकामपवसजोउ णाम
 एकणवदिमो परिच्छेठ समत्तो ॥ ११ ॥

22. १ AP० ०शेठ, ॥ ०ख० २ BP खयरदेउ ३ S वरुव. ४ A ता एत्तहिं for मिलतु in second hand ५ S पुष्कदत्त. ६ B रुप्पिणि ७ AS एकणवदिमो, B एकणवदिमो, एकणउदिमो

22 1 = झसद्धउ काम, ६ खुल्लयवेसें ब्रह्मचारिवेषेण ॥ a उक्खित्तगासु उवलित-
 वज्र, ६ ० तिम्मणं गच्छाम. 5 a विहासि शोभमान, ६ लुडुयहं मोदकानाम् ॥ b महु०
 मरुन्द. 7 b ० पणयकलहु मिथुनस्य स्नेहयुद्धम् 10 a लेउं आलिङ्गनम् 11 b पण्डयपय
 प्रस्तुत पय. 13 भरहु जिइ भरतचक्रीवत्.

पसरतणेहरोमचिपण देवें खमचारें ॥

कमकमलह जणगिहि बबियाह सिरिपकुण्णकुमारें ॥ घुबक ॥

1

जहिं बचिउठ त पुढ ग्रह देसु वि
मुहकुहकगयसुमहुरवायहि
पुत्तसणेहु जणित णिह बिम्बव
हुज्जेणु हरिसैं कहिं मि व माह
हेण समीहलें वुसह कलि
भाणुकुमारहु ण्हाणणिमिलें
पुच्छिय णियमायदि कद्वे
णील भिय भगुर सुहकाँरा
त णिसुणिवि देवीह पडुसड
विम्बपुरिसळकणसपणवड
तहपहु सळभामणामकह
बिहिं मि सहीउ गयाउ बरिवहु

बत्ता—ता तहिं हरिजा सुसुट्टिएण पियपायति बहू ॥

मन्हारी सिंहेमिगळोपायिय सहपरि सहसा विट्ठी ॥ १ ॥

पुणु विस्तु कहित णसिसु वि ।
बालकील दक्खालिय मायहि ।
तहिं कालह परियाणिवि अवसर । 5
सुरोवेहत्तु चडिलउ पराह ।
मानिय मयवज्जणपिबलयावलि ।
त विस्तुणिवि णिह विभियेविसे ।
किं पडुत्तें एएण सवर्णे ।
किं मगिय धम्मिल्ल तुहारा । 10
पुण्णकम्मु परिणवह णितसड ।
जहपहु तुहु महु सुउ उण्णणउ ।
भाणु जणित मुहजितससकह ।
पसि पार्थपाडियरिउववहु ।

2

देवदेव बभियिगिहि सुरावड
तार पडुत्तु पुणु सजापड
पढमपुत्तु तुहु वेय पघोसिउ
बहरिएण बहियमवलेले

उक्कजजज्जणवधियकायड ।
त णिसुणिवि हरिसिउ महिरापड ।
पडियककहु मुहमणु पदेसिडे ।
जवर बिजो सि कहिं मि तुहु देवें ।

- 1 १ AP देहरोमचिपण २ कुण ३ S omits this foot ४ S विम्बव
५ B पडुत्तु पर एण सवर्णे ६ B मिह ७ APS कुणग ८ A "पुरिह ९ A "सपुण्णउ
१ A सचहाम" ११ B विह १२ S पावणिय १३ S "मू" १४ S "मू"
2 १ A बभियिगुज्जकड २ P "बिजल" ३ A पदरसिउ

- 1 1 १२ मचारें कामेन 6 a हुज्जेणु सलमामाणुल; ७ बचिउठ नारिता 9 b एएण
पतेन 10 a भगुर वजा 14 a विहिं हरो उक्कज्ज 15 पावति पादान्ते 16 मन्हारी सखी
2 B ७ पडियककहु सलमामाणुलस 4 a बहरिएण पूरिज्जयिपुवा ५ अवलेवें भवेण

चिमलसरलसयदलदलनेत्तदु
कलद्वतिदिं यदियपिसुणत्तणि
विदिं मि पुत्तु जा पदम् जणेसद
मंगलधवलधोत्तदयमोत्तद
हरितं अल्लु संवत्ति विसद्वर
णु ताहि आप्पे वम्मद
तं णिसुणियि विज्जासामत्थे
वम्महेण जणकोत्तलद्वारिदि
पत्त अणंतं वि णं अमदुप

जेट्ठ कमु जायउ सावत्तदु । 5
चिक्क बोद्धिउं दोहिं मि तरुणत्तणि ।
सा अधरहि धम्मिहं लुणेसद ।
पुत्तंविवादकाळि संपत्तद ।
सुयकल्लाणह्णानु धरि वट्ठद ।
मोविउ मज्झ सिरोरुह मग्गद । 10
देवें उच्छुंखरासणहत्थे ।
अवरु सदाउ विदिउ दुरधारिदि ।
तज्जिय मिच्च जणहर्णकप ।

यत्ता—पम्परसें गयणालम्पण कसिवि पंतु दुरंतउ ॥

अइदीहं पाप ताडियउ अरु णामेण महंतउ ॥ २ ॥

15

3

मेसें होयपि हउ सपियामदु
सपिणिहूउ अणु किउ तक्कणि
दामोयक मसेण्णु कुदि लम्माउ
जयसिरिमीलालोपसणहं
वर हर्नंतु सुरणरुलियारउ
कामणउ णरणयणपियारउ
अं कल्लोलहू उस्सगतणु
अ तणयदु पयाउ गल्लसणु
हरि हरियमसंगरुहणेमरु

हलिदि मिडिउ होएप्पिणुं महम्मदु ।
णिदिय चिमाणि णीय गयणंणणि ।
णिधेज्जालेण सो वि णिडु भग्गउ ।
को पडिमल्लु पत्तु कयपुण्णहं ।
तहिं अबसरि भाद्दासदु णारउ । 5
एधं वियमिउ पुत्तु तुदारउ ।
तं महम्मदु सायरदु पट्टत्तणु ।
त माइय कुलहरदु विहत्तणु ।
त णिसुणियि हरिसिउ परमेस्सर ।

४ A जेट्ठकमु पालिउ गायत्तदो, B ५ A 19 जेट्ठकमु जाउ सावत्तदो, P जेट्ठकमु पालिउ गायत्तदो,
A 19, suggestive to read जेट्ठकमु जायउ सावत्तदो ५ S वट्ठिय ६ S पदम ७ B धम्मिहं,
P धम्मोद, S धम्मोद. ८ B ५ "मिच्च" ९ AP णियत्तणुसविवादे आदत्तए. १० B सविस्ति.
११ S मोविउ १२ P उच्छुं १३ P "सुदे, S रुच

B १ S होयपि. २ S होयपि वदि. ३ B सुदुदु, P सुदुदु ४ AP विदामणम्मे.
५ AP णिवरणेण, S नूतनणेण ६ AP ३ णि. ६ B एव, S एउ. ७ A कल्लोल होउ तुगत्तणु.
B 19 उच्छुं. ८ A हमिउ

5 b गायत्तदु गायत्रीपुत्रस्य 8 a °दयकोत्तद हत्तमे 9 a विसद्वर विसवत्ति, b °कल्लाण°
पियाद 10 a णु नासित 12 a वम्महेण कमेन, b दुरधारिदि नासितस्य. 13 a एउ
आगच्छन्, b तण दण रूप विण्णुत्थेण. 15 उरु अरनाम्ना.

3 1 a मेमे होइवि मेयरूपेण, सपियामदु समुदेव 3 a कुदि दूधे, 6 णिउ दूध.
9 a °धेयव दूधे.

सिसुदुब्बिलमियाइ कयरायडु
पयतरि मणगु पयडगड
पडिउ सरणजुयलइ मडुमइणडु
तेण वि सो भुयेंदइहि मडिउ

हरिसु जणति अवेस थियतायडु । 10
होइवि गुडेंयणि विणयवस गड ।
कसकेसिपाययदइणडु ।
आसीमाउ देवि अयकडिउ ।

यथा—कदपु कणयणिडु केसवडु अगालेणउ मणहउ ॥

अ अजणमदिहरमेहलहि वीसह सहाजलहउ ॥ ३ ॥

15

4

हरिणा मयणु यथाविउ मयगलि
वयसमेण परमयविमाणाइ
वदिविदेउमोसियमई
किउ अहिलेउ सरडु सुमहियडु
लो सि कुळकैमि अडु पवासिउ
सुय वण्णिणीइ यपि नीलुळ
अवियव्वउ पण्डणु पेरिसिउ
पोयिदडु करिकरवीहरकड
स आयणिगि माणुहि मायरि
पयिउ विमयसु ताइ यवेण्णिणु
साय जाय तणुवेडु उयअइ
स गिह्णुमिगि वण्णिणिइ सजडणु
पुस पुस पिसुणहि पाविडिहि

अ विवहेण माणु उययांचलि ।
अ अरैडु देउ गुणठाणइ ।
पेरि परसोरिउ जयअयसई ।
माणुयडुकुमारिहि सडियडु ।
पडियकअडु उण्णेउ पयिलसिउ । 5
सच्चइमोदेविहि सिरि कौतल ।
अण्णहि वासरि केण वि आसिई ।
होही को वि पुसु कण्णामउ ।
गय तहि अहि अण्णाय पिय हरि ।
अण्ण म सेयहि मइ मेहेण्णिणु । 10
अ मगिउ तहि देइय दिअइ ।
अयिउ सयणमणजयमायवणु ।
मण्डु सेवसिहि पुडुहि चिडुहि ।

यथा—कैयरिइ महुंसेपणवहइइ अइ वि गाडु ओलमिउ ॥

लो वि तिह कैरि भे होइ सुउ यचिउ गुडु मइ मगिउ ॥ ४ ॥ 15

१ P अयडु १० P गुडयण ११ S भुवदइहि

4 १ B उययांचलि २ S अहलदेउ ३ B यड ४ S omits this foot ५ AB
पयसोरिउ ६ S माणु वि इड ७ P माणुयडु कुमारिहि ८ P कुळकम ९ AP गीह्णुयक
१ APS सच्चमाम २ BS वि दरिसिउ ३ B वण्डडु ४ P तहि दइवै ५ व दइय-
११ BP चन्निचिरे १४ BP सेयरि १५ P मइयण १६ S करे १७ BPS गड होइ

10 a कयरायडु कृतयास्य प्रीतेः b अयस अयस्यम् 11 a पयडगड प्रकटशरीर 13 a
तेण हरिणा 14 कणयणिडु सुवर्गसदृशवर्ण 15 मेहलहि मेसलया वडे

4 2 a परमयविमाणाइ वनोदो गुणत्वानि 3 a मई मङ्गलेन 4 a सरडु स्मस्य
b माणुयडु इई मानोर्था कण्ण उपदिष्टा तामि सङ्गितस्य 7 a अवियव्वउ केनचिन्नेमिचिरेन
अवितम्ब कथित स्वर्गोद्देशम्भुत्वा कृष्णपुत्रो अविवृति 9 a माणुहि मायरि सत्यमासा 11 b दिअइ
दीयते, दत्तमियथ 13 a विह्णुमिगि इर्जनाया सयमासा 14 सयरिइ सत्यभासाया.

5

ताहि म होउ होउ वर पयहि
 वच्छल पियसहि णडउ रिज्जउ
 तं णिसुणिवि विहेसिवि कद्वे
 पहरइकामहि वड्डियउयहि
 जवावइहि ऊँउ किउ केहउ
 कामरुयमुदिय पैहिरिण्णि
 रमिय गन्धु तकरणि सजायउ
 णवमासहि लायेणरवणउ
 जधोवइहि पउण मणोरह
 जणणिजणियपिसुणसँ दारुणु
 समवेण अवमापिवि चित्तउ
 पुण्णविसेसु सुँणिवि गरुवारउ
 सबैहामदेविइ गुणफित्तु

वत्ता—इय णिसुणिवि मुणिगणहरकहिउं सीरपाणि पुणु भासइ ॥

अज्ज वि कइ वरिसइ मट्टमहणु देव रज्जु भुजेसइ ॥ ५ ॥ 15

6

वत्तदिसिवहपविदिण्णहुयासँ
 मज्जणिमित्तँ दारावइ पुरि
 एउं भविस्तु देउ उग्गोसइ
 पढमणरइ सिरिइरु णिवँडेसइ
 पच्छइ पुणु तित्थयक हवेसइ

णासेसइ दीवायणरोसँ ।
 जरणामे वणि णिहणेवउ हरि ।
 थारइमइ सवच्छरि होसइ ।
 गक्कु समुहोवमु जीवेसइ ।
 एतये जेचि कम्माइ डहेसइ । ॥

5 १ P हसेवि २ B °कामहो ३ AP'S रयसल° ४ S रुधु ५ AP'S सचभाम°
 ६ S °रुधु° ७ S परिरेण्णिणु ८ B Aiv विषवर (वि + अवर) ९ A मेहेण्णिणु १० AP'
 कीडवसुइ सो स्याहो आइउ ११ P छवण° १२ B समवणामु, 1° जवावइहे पुसु उप्पणउ
 १३ AP ते वेण्णि वि पउणमणोरह. १४ BK °जायहि १५ AP' पुणेवि १६ AP'S सचभाम°
 १७ P मज्ज

6 १ P णिहणेवउ. २ ABPS णिवसेसइ ३ AP एसु जेचि.

5 4 a पहरइकामहि भारुत्तिवान्ठकाया, b रयसलिदियहि रजस्वलादिने 6 b पघर
 मण्णेपिणु प्रवरा सत्ता 7 b कीडवसुइ कीडवचरः ॥ महारह रणेऽनिवर्तका 1 a जणणिजणिय°
 मातृसपुच्छितेन 11 b मणियसरजाइहि मणितवाणवात्ता

6 2 b जरणामे सत्यमामान्निषा.

तुह छम्मास जाम सोमायर्ह
विमल्लि देवि उम्भोदेव
दग्गावरिय दिक्ख पालेप्पिणु
भाहिंदर ममरसु लहेसहि
होसहि सिरिधरदत्तु मडारउ
इय गिसुणिगि दीयापणु मुणिवर
महुमहुमरणायणणसकिउ
जरकुंभाउ विलसियपचाण्णि
भूसिउ गुजाहरणवित्तै

हिंदेसहि सोपत्तेउ भायउ ।
वणि सिद्धाय सरोदेवउ ।
कुञ्जिउ वरसरीउ मेहेप्पिणु ।
पुवरवि पउ केसु आवेसहि ।
बुम्महवम्माहवम्मावियारउ ।
हुउ पउ अवउ पवउ देसउ ।
पिउ जायि गियवरुं डकिउ ।
कोसवीपुरिणिमउर काणणि ।
सठिउ सुदुउ गाहलवेत्तै ।

10

धत्ता—मिच्छत्तं भेलिणीद्वयपण ददन्वरणात्तु वदउ ॥

महुमहणे पुणु संसारउउ मिणवरउत्तुं लउउ ॥ १ ॥

15

7

पल्लरियसमपमसिगुणरुं
ससुय काराविय गियपुरवरि
सिन्धयरसु गामु वेणजिउ
इय गितुणिगि माहउ आउच्छि
पल्लणाइ पुउ पउ केप्पिणु
वप्पिणि आइ करिदि महुपविउ
वम्माहु समेउ रित्ति भणुवउउ
तिणि गि उज्जयंतगिरियरसि
केवलणाणु विमल्लु उप्पाइवि

वेळावधु कयउ गोविंदि ।
मोसहु तं दिण्णउ तुणिवरकरि ।
उ अमरिंदणरिंदहि पुञ्जिउ ।
जासणसीलु सवु अशु पेच्छि ।
यिय गिगाय कल्लु मेहेप्पिणु ।
अहु वि विक्किपाउ सुणसेविउ ।
तवजल्लं इदि वि मयरउउ ।
महुमहुमरणायमहुवरगि ।
किरियाछिण्णुं ज्ञाणु गिज्झाइवि ।

10

धत्ता—यय मोन्कहु गेमि सुरिवधुउ जिम्मलणाणविराउ ॥

विहरेप्पिणु वहुसतउ पल्लववित्तणु आउ ॥ ७ ॥

४ AS वीयाउव P वीयाव ५ B वीयाउ ६ APB विमल्लं दे ७ A उम्भोएवउ P उम्भोदे
वउ ८ 1 वीयापणु ९ B आववि १ B कुमर ११ ॥ भिलिणीद्वयपण १२ ॥ दसण
7 १ B गियपुरि २ S पिप्पा ३ B माहउ ४ AP विण ५ AB वपूरिणि ६ APB
अणिउउउ ७ ABPS उवेवि ८ S जिण

6 ७ वीयाउउ वीचमान " a उम्भोदेवउ मोहहिउ वरणीव; ७ विद भे सिद्धार्थनासा देवेन
9 ७ आवेसहि मरतलेमणमिण्णवि 12 a आयणणसकिउ आकर्णनेन मीर

7 1 a समय जिममत्तम् 2 a ससुयवसकव 4 a आउच्छि वि धुहा ७ जासणसीलु
अदियम् 6 ७ सुयसेविउ वीवेविवा 7 a वम्माहु महुअ अशुवउउ महुअपुन 8 ७ महुम
महुम महुगदवि महुअ महुवरगिणि ममरउउ

8

धलपवें पुच्छित्त सुरसारउ
कंपिछिदि नयनिहि नरपुंगमु
वदरह धरिणि पुत्ति तहु दोवइ
सा दिज्जइ कहु मंतु पमतिउ
देविल धरिणि पुत्तु जाणिज्जइ
अवरें भणिउ भीमु भउ केसरि
दिज्जइ तासु धूय परमत्तयें
तो एयहि तूयपट्टु गियउअइ
सुयहि सपवरविहि मडिज्जइ
जो वइह सो माणउ इच्छइ

धत्ता—तहि अवसरि पलहुंजोहणेण कचडें जूरें जिणेप्पिणु ॥

गिद्धाडिय पडव पुरवरहु सर यिउ पुदइ लपप्पिणु ॥ ८ ॥

पंडवकह वत्तार भडागउ ।

हुमउं नाम महियर मुहम्मगमु ।

जा सोहगें कामु चि गोवइ ।

चहु नाम पोयणपुरि गत्तिउ ।

इदवम्मु तहु सुदरि दिज्जइ ।

जा आहवि घल्लइ गहयलि करि ।

अवरु भणइ जइ धरिणिय पार्ये ।

अण्णु भणइ महु हियउइ मुज्जइ ।

केत्तिउ हियउल्लउ गाडिज्जइ ।

हुज्जण किं करति किर पच्छइ । 10

9

पुण्वपुण्णपम्भारपसंमं

गय तहिं जहिं आठसु सयंबरु

मिलिय अणेय राय मउहुअल

पहपसुल पयिय बुहु आइय

वइवें लोयवाल ण होइय

सिद्धत्ताइ राय अवगाणिवि

पल्लु सलोणु विसेसं जोइउ

विंस सदिहिं माल तहु उरयलि

ता हरिसिय नीसेस णरेसर

अयजयसइं जयंरि पइइहिं

जउहरि घल्लिय जहु तुरगें ।

विचिहकुसुमरयंरजियमहुयरु ।

चमरधारिचालियचामरचलें ।

ते पच वि कण्णार पलोइय ।

णं वम्महसरगुण सजोइय । 5

कामु च दिव्वधेणुअरु मणिगधि ।

तहि वइये भत्तारु गिओइउ ।

लच्छीकीलाप्रगणि पविउलि ।

पहिय पणाशिय उग्गिभि गियकर ।

जिणमहिसेयपणामपहिइहि । 10

8 १ AP दुवउ गासु, S हुमउ. २ BS अवरि ३ AB भीममहु. ४ AP तियपट्टु, ५ B खल. ६ BP गरु

9 १ A नकहरे, BPS चउहरे. २ P सुहुये ३ BS 'कुसुमरसरजिय' ४ BI 'जहु. ५ B 'चल ६ P लोइयवाल ७ P दिव्व ८ P 'पगणि, S 'प्रगण' ९ A 'पणामअहिइहि'.

8 ॥ b हुमउ हुपद. 3 a दोवइ जौपदी, b गोवइ कोपयति श्लेष कारयति 6 b करि गनान् 7 b पत्ये अजुतेन.

9 1 a चउहरि अस्त्रामण्डपे आवासे धृताः, तस्मान् बृहद्विवरेण नष्टाः. 3 b चमरधारि° चमरधारिणीभिः. 4 a पहपसुल मार्गबुलिग्राहिण्य. 6 b दिव्वधेणुअरु अर्जुन. 7 a पल्लु अर्जुनः सलोणु लावण्ययुक्तः.

कालु अहु बहुरायविजोयहिं

येंड जाणह भुजोवि य मोयहिं ।

यत्ता—कालें अंतें थिरैथोरकव एणि पव्हतिथयमयवह ॥

पत्थेण सुहइहिं सज्जयित सिद्धु अहिमंथु महामह ॥ ९ ॥

10

अवेद वि मुहमकयिमत्तालिहि
पुणु वि भुयंगसेणपुदि पविसेणु
मायावियकयाई धरेपिणु
अरिणरवह जिमिवि सर यत्तिवि
पुणु कुववोसि पवहियगोरव
अकलियपरिपासिपहरियाजड
थिव दायाणुपहिं गुणवतव
वारववरित्तह अवर पवज्जह
वणवेल्लियमहराह पमैपहिं
सिद्धुकीकारपहिं सत्ताविड
लो दीयापणु सुह सुह जायव

सुय पचाळें जाय पचाळिहि ।
कियेंड तेहिं कीमयाणेण्णासणु ।
पुणु विराडमदिदि गिवसेपिणु ।
कुडि कग्गिवि मोडलह गिपसिवि ।
पइसुपहिं परजिय कौरव । 5
जाड बुद्धिदिद्धु देसहु पाणड ।
मायपेहिं सुंहु सिरि भुगतव ।
गलियह पंकयणाहहु पुण्णाह ।
मयपरवलाहिं पमुम्मिरणेत्तहिं ।
यवकुमारपहिं रिसि रोलाविड । 10
मुय मायेणसुय तपज्जणि जायेंड ।

यत्ता—माकसिवि पिणुजें मुह सिदि पावेपिणु सुहपुण्णाह ॥

अवडहरधवळधर्ममज्जरिय जणि येँही वारावह ॥ १० ॥

१ BAls पड ज्ञाणिजह भुजिममोयहिं ११ A थिरथोरकव १२ APS अहिमंथु

10 १ S अवर २ BS पंचाह ३ B भुयंगसेण^० S भुयंगल^० ४ P पवणु ५ S कपड
६ P कयाह ७ S omits this foot ८ BAls जातव PS भठरव ९ PS कडरव
१ AP गायणुपहिं B गायणुपहिं ११ P वड १२ ABPS वजे १३ B पत्तिहिं १४ B
मावणि S मावणु १५ P सजायव १६ P अहमजोहरिय १७ B सिद्धी

18 सुहइहिं प्रथमराकां सुयज्जावाह अहिं जणु अगिमन्थु

10 1 a मुहमक सुत्तवत्ते b पैचाळ शीपकीपुवा पव्ह पैचाळिहि शीपया 2 a भुयंग
सेण नगराय नामेदम् b कीअय कीचरुव 3 a मायावियकयाई भुभिद्धिरेण रामरुपम्,
मीमेन रसवदीपाकरुपम् अकुंनेन वृहदकुरुपम् नकुलवहदेवाणां विमरुपम् 4 a सर यत्ति वि
वाणान् मुक्त्वा b गिवसिवि पयाभिकर्त्त यद्धिता 8 b पैकयणाहहु वचनानामत्थ 10, b रिसि
दीपयन

सयणमरणेकदमोण भवियड
होउ होउ दिव्याउदमिक्कण्ड
ण धय ण उच्च ण रह णउ गयवर
देहमेत्त सावयमीमावणु
चकि विडचित्ति सुत्तु तिर्मायड
तहि अवमरि हयदेहं रुडउ
जइ वि जीउं दुग्गइ आमवड
मुउ राउ पदमणेरयधियन्तक
जलु लणवि तक्कणि पट्टियाण

धत्ता—पयकालकणिधं कवलियड महि निवट्टिउ निजेयणु ॥ 10

योह्माविउ भायर हलहरिण मैहउ मडलियन्जेयणु ॥ ११ ॥

उट्टि उट्टि आपाणु निदालहि
दामोयर धूलीइ विलिच्चउ
उट्टि उट्टि केसय मां आभिउ
उट्टि उट्टि सिरिहर साहारहि
उट्टि उट्टि हरि मइ बांलावहि
पूयणमंथेण सयडविमहण
इउ वि सुट्टइ तुह असिघरजलि
डज्जउ पुरि विहडउ तं परियणु
भाइ अरसिदिच्छिउपायण

लइ जलु महमह सुह पम्मागलहि ।
उट्टि उट्टि किं भूमिहि सुत्तउ ।
णिरु तिरिभो सि विवहि तुहं पाणिउ ।
मइ निज्जाणि पाणि किं अवहेरहि ।
चिंताकरिउ केसिउं सोवहि । 5
विमणु म थधाहि देव जणहण ।
अजे वि तुह जि राउ धरणीयलि ।
अतेउरु णासउ विपलउ घणु ।
सुह तुह पलु होहि जारायणं ।

11 १ AP °मरणभयमोए. २ P °ण ण उच्च ण रह णउ गयवर; S ण धय ण उच्च णउ गयवर. ३ B क्रिहर. ४ AP °वर्धति चामरथर ५ B °मिन्तु, S °मेत्तु ६ B भाइ ७ B वणे ८ AP°S तिराउड. ९ P °सीरि वि चलिउ पलोपट्टु गारओ. १० B इउ ११ AP °मल्ले. १२ S जीउ. १३ P °जइ १४ P °सुवण. १५ AP°S पट्टिआए. १६ S माहउ.

12 १ S मुह २ P °मयण. ३ AIs अज्जवि, BS अजि वि. ४ AP°S °भरिस्ति, ५ A °विचि P °विचि ६ P °उपायणु. ७ P जारायणु

11 1 a °रह° उल्लेखेन 2 b ममावपट्ट माय्य पुण्य तस्य क्षयं. 3 a विट विट लि वृक्षतले, b पवित्रो यद्वा अवभोक्कचित्तुम् 7 a दुग्गइ विपमस्थानानि, b निवड भवितव्यम्. 8 a पडि या ए प्रत्यागतेन. 11 मड लि य लो यणु मुकुलितनेत्र .

12 5 b चिंताकरिउ भगवदाहवात्. 6 b विमणु विमना . 8 b वि य छउ विगल्लु नक्षत्र.

जहि तुहु तहि सिरि मयसैं बिवसइ ॥ जहि ससि तहि कि जोण्ड न बिलसइ ॥
 उट्टि उट्टि महिय जाइजइ ॥ किं किर गिरिकदरि गिबसिजइ ॥
 किं न मज्झु करयलि कउ दोषहि ॥ किं रुठो सि बप्प णउ जोषहि ॥

पप्ता—उट्टागिणि सुइर सयसवेण इरिहि अगु परिमड्डं ॥
 वणवियरइ हौतउ उहिरज्झु ताम गलसउ दिहउ ॥ १२ ॥

13

त अयलोहवि सीरिहि कंण्ड
 गदंडणाहु किं [उसियउ सण्णें
 म झुहु अरकुमार पत्थाइउ
 घोइउ न मरइ कण्डु भडारउ
 दंड मण्डुं पेउ सो ज्हाणइ
 देवगइ बत्थइ परिहावइ
 सुयउ तो वि जीवतु व मण्णइ
 कुकुमवणपकें मडइ
 देवें सिद्धार्थें सवोहिउ
 छम्मासहिं महियलि ओपारिउ
 सुहिबिओपणिब्बेय रुइयउ
 मण्डरकरवालियसलजामइ

पप्ता—आपणिनि महुसुयणमरगु असयसलिपअयमड्ड ॥
 गय पय नि सिरिमेमीसरइ सरणु पइहुं पडव ॥ १३ ॥

14

विहउ मिणु नीसहु गिरिउ
 मयसइ जेमिनाहु इह मारहि

पणवेणिणु पुकिछउ समयतइ ॥
 वपाजवरिहि महेपलि सारहि ॥

८ APS ओपहि

13 १ AS सीरि P सीरि २ B गुडं ३ B रुठिउ ४ APS वपु वि पाइउ
 ५ APS वायउ ६ P दम ७ A मण्डु कण्डु सो ८ B महुवण ९ B महुवण १० P पवडा

14 १ B गिरिव २ APउ महियउ

11 a महिय हे नारायण 13 उट्टागिणि उपास्य 14 वय मय

13 1 b व नै श्रलेण २ a पेउ मृतक आपवति 9 b पलाहिउ गृहकारितः
 10 a ओपारिउ भूमि स्थापककारितः b उकारिउ दम्ब 13 १ वय जयत्

मेहयाहु कुरुवसपहाणउ
सोमदेउ घंभणु सोमाणणु
सोमयत्तु सोमिद्धउ भाणिउ
ताहं अणेयवण्णवर्णरिद्धिउ
अग्गिलगध्मवांससंभूयउ
धणसिरि मिच्छसिरी वि मणोहर
विण्णउ ताहं ताउ धवळच्छिउ
जिणपयपकयाइ पणवेण्णिणु
अण्णाहि विणि धम्मरुइ भडारउ
पावकंओट्टवल्लणेत्ते
परमइ अणुकंपाइ नियच्छिउ
धणंसिरि भणिय तेण वैयगेहुउ

यसा—ता रुसिंवि ताइ अलक्खणइ साहुहि बिस्सु करि विण्णउं ॥ 15

तं भक्खवि तेण समंजसेण संणासणु पडिवण्णउं ॥ १५ ॥

15

देउ मडारउ हुयउ अणुत्तरि
तं तेहुउ दुक्खिउ अवलोइवि
वरुणावरियहु पासि अमाया
शुणवइत्थतिहि पयइं जवेण्णिणु
तरुणिहिं सज्जमगुणैविरियण्णउं
सल्लेहणविहिलिदियइ गत्तं
पच वि तारं पहाइ महंतइ
ताम जाम वावीससमुहइ
रिसि मारिवि दुक्खियसंछण्णी
पुणु वि संयंपट्टीवि दुदरिसणु

दुक्खविवज्जिइ सोक्खणिंरंतरि ।
मइ अरहंतधम्मि संजोइवि ।
तिण्णि वि भायर मुणिवर जाया ।
कामु कोहु मोहु वि मेहेण्णिणु ।
मिच्छणायंसिरिहिं मि घंउं च्छिण्णउं । 5
अणुयकरि पुरत्तणु पत्तइं ।
यियइं विव्वंसोक्खणं भुंजतइं ।
धम्मं कामु न जायइं भइइं ।
पंचमियहि पुहुइहि उप्पण्णी ।
फणि हईं दिट्ठीविस्सु भीसणु । 10

१ A मेहयाहु. ४ APS °कणरिद्धउ. ५ Al. °वाले, B °वासि ६ P °मोहर ७ A ताउ ताह.
८ P सोमभूइ. ९ A वणिसिरी, P कणिसिरी १० S ववगेहरो ११ S दिणु

15 AS ते तेहउ, BP ते तेहउ २ PS वरुणाहरियहो ३ P °शुण. ४ P °णायवण-
विरिहिं ५ ABP वउ ६ A सोक्ख दिव्वइ. ७ S omits this foot.. ८ APS पुदविदे
९ PS घयइ जीवे.

14 4 a वमणु पुणेवा. 6 a ताह तेपा वमणा मातुल. 7 b तामु अग्गिभूते पुच्च.
१ b कुलभवणारिंदि °इल्लहेव कम्मम् 12 a °उदोइ °कम्मम्

15 6 a °तिहिं नइ कुजीकानि, कुपिनालि

पुणु वि गेतर तसथावरजोषिदि
पुणु मायणि जाय चपापुरि
साहु समाहिपुणु मेण्णेषिणु

दिहिदि बुक्कसमुम्भवणाणिदि ।
गोतरतोरणमालाबधुरि ।
वम्मु जिणिदसिहु जाणेप्पिणु ।

भसा—तेत्तु जि पुरि पुब्बरवि सा मरिवि दुग्गधेण विरुई ॥

मायणि सुंयवहु मणिवरहु सुय चण्णेषिदि हुई ॥ १५ ॥

15

16

तेत्तु जि धणवेयहु वणिउत्तहु
सुउ जिणवेउ भवठ जिणवत्तउ
पूरयध किर दिखइ हट्टे
वालहि कुणिमसरीव पुणुछिवि
तउ लेप्पिणु पिउ सो परमइहु
उवरोई कुमारि परिजाविउ
ण हसइ ण रमइ णउ बोझावर
णिदती जिणकुणिमकलेवउ
सुण्णयत्तिय स सि निदेषिदि
विणिमं दि वेविउ गुणमणरइयउ
भणइ मज्झरी वरसुहयवहु
वेणि वि जिणपुञ्जारयमइयउ
तहि सविमामणं सजाय
अइ माणुसैमउ पुणु पविउहु
इय निवधुं यउउ विहसतिहि
उमैहि सिरिसेणहु णरणाहु

परिणि जेसीयदस भणवत्तहु ।
जिणवरपयपकयजुयैमत्तउ ।
एउ वयणु मायणिणि अट्टे ।
सुण्णयमुणि गुठ हियइ समिच्छिवि ।
पायहि जिणविधेयं पउ पाणिहुहु । 5
हुमग्गधेण सुहु सत्ताविउ ।
पुहवत्तु किं फालु वि भावइ ।
यिइ जिणसुहु भणु परिणु वउ ।
पुच्छियं वरणरुमत्तु पणयतिइ ।
एयउ किं कारणु पावइयउ । 10
बल्लहाउ खिरैलोहम्मिइहु ।
वडीसरडीवत्तउ गइयउ ।
भवरोप्पउ बोद्धिउ मणुराप ।
तो वेणि वि तववरणु खरेसहु ।
देहि मि कउ करपकइ दिंतिहि । 15
सिरिकत्तहि अयलच्छिलगाहुहु ।

१ ॥ णरय ११ P जोषिदि १२ AP माणेप्पिणु १३ ABAIs सुयपुरे १४ A वणवेविरे

16 १ AP असीयदस BS वसीयदस २ ॥ वणवत्तउ ३ AP पकयउमत्तउ ४ B
गुणछिवि ५ APS छदवि ६ Als परमेइहो against Mas ७ AP निवडिउ वहु कणिछरी
Als निवडिउ पउ C A परिणु वणु १ PAIs पत्तिय १ AP निवडिउ ११ B पुच्छिय
हुमाया वणवविण in second hand १२ B निणि वि सुद्धिगाउ गुणमणरइयउ १३ APS चिउ
१४ S मउ १५ A निवहु १६ I जोषिदे

10 सुयवहु सुगन्धय

16 3 a पूरयव दुर्गेया 4 a कुमिय दुर्गेय कुमिय ७ a परमइहु परमायेन
8 b निवहुहु आमन सुम पुण्यम् 9 a निवचिइ निवचया सगहाधिपयतां तथा सा आयां पृथा
11 b चिरहोहम्मिइहु दुर्गेयमणि सीधर्मस 10 b करपकइ इत्तेन वाचा च

जायउ पुत्तिउं कुवल्लयण्येणउ

मुहंसंसंककरघवल्लियगयणैउ ।

घत्ता—हरिसेण धाम तहिं पढम सुय हरिसपसाहियदेही ॥

सिरिसेण जवर वम्महसिरि व रुवें सुरवहु जेही ॥ १६ ॥

17

घरणरणात्तीविरहयतंडवि
 वद्धसंथ जाणिवि ससितेयउ
 खतिवयणु आयणिवि तुट्ठी
 पैहु दिवसु झायतिउ जिणु मणे
 झे ति वसंतसेणणामालइ
 चित्तिउ जिह एयहुं सिधयामिउ
 जिह एयहुं णिब्बुहपरीसहु
 एव सलाहणिज्जु सलहतिइ

सरिवि सैजम्मु सयंवरमंडवि ।
 हलि विणिण वि पावइयउ एयउ ।
 सुकुमारि वि तघयम्मि णिविट्ठी ।
 जोईयाउ सव्वउ णंदणवणि ।
 वेसइ कुसुमसरावलिमालइ । 5
 तिह मज्झु वि होजउ जिणसामिउ ।
 तिह मज्झु वि होजउ तहु वूसहु ।
 गणियइ पावें सहुं कलहतिइ ।

१७ S पुत्ति कुव°. १८ AP °णयणिउ १९ ABPS मुहससहरक° २० A गयणिउ, P गयणओ.

17 १ AS omit व in सजम्मु, B सुजम्मु २ P सुकुमारे. ३ From this line to

18. 2, P has the following version —

एकु दिवसु झायतिउ जिणु मणे
 तेसु घसतसेणणामालिय
 बहुविदेहि परिमळी जती
 णियकव करयलेसु लयती
 णियवि णियाणु कयउ सुकुमारिए
 जिह एयहे एए सुकराय
 जिह एयहे सौह्यमहामव
 एम णियाणु करेवि अण्णाणिणि
 कालें कहि मि मरेवि वणारें
 अत्तसगे जाइय सिधसेविय

सठियाउ सव्वउ णहणवणे ।
 वेसय कुसुमसरावलिमालिय ।
 लील्ल वयणहो वयणु भणती ।
 वयणसरावलीए पणती ।
 बहुदोह्यभारणिवभारिए ।
 तिह मज्झु वि जम्मतरे णरवर ।
 तिह मज्झु वि होजउ सुणिरतव ।
 हुय अण्णाणहो मि सा वइरिणि ।
 दसणणायचरित्तपयासे ।
 चिरमवसीमभूइ सुरदेविय ।

घत्ता—तहिं होतउ कालें ओयेवि हुउ सोमवधु जुहिउड्डि ॥

सोमेउ मीसु मीमारिमहु सुववल्मल्लणु महामहु ॥ १७ ॥

18

बारसविहवक्षीणसरीरउ
 सो कैरौहि होएवि उण्णउ

सोमभूइ सो आसि मंडारउ ।
 घणसिरि णउउ घम्मवित्थिणउ ।

४ A सठियाउ. ५ A तेसु for सत्ति ६ A °सारए.

19 सुरवहु सुरवधू अम्भरा

17 1 a °तउवि नर्तके, b सरिवि स्मृत्ता 2 a °सथ नियम, इलि हे प्रीतिगन्धे
 3 b सुकुमारि प्रीतिगन्धा, णिविहो प्रविष्टा 4 b वेसइ वेसया. 8 a सलाहणिज्जु सलाह तप,

पुण्यु गिवद्धर किं वण्णिअर
मरिचि तेथु विणिज्जि वि सणासे
अण्यसग्गि आयउ सुयसेविउ
जिणु सुमरतह पुक्किउ छिअर ।
इसण्णाणवरिसपयासे ।
विरमवसोमभूइ सुंउ सेविउ ।

10

अत्ता—ताहिं होती कासें ओयरिचि हुयै हरितेण बुद्धिद्विउ ॥
सिरिसेयें भीमु भीमारिअ सुयवळ्ळलणु महावत्तु ॥ १० ॥

18

आळमरासलीलगागामिणि
सा किरादि हाएवि उप्पण्णी
मिअसिरि वि सइएउ न बुअर
हुयअहु सुय पेम्मममहाण्ण
अण्णर बुद्धिद्विउ इयवळ्ळीसर
कहइ भइराउ मरिअयतवत्तु
रिसि विअतु सयरिणिइ वारिउ
अविअ मइराउ विअसियगावें
कवि उंकिरे मुउ भिउ वरावउ
पुणु इउं कासें जिणपणविअसिउ
पुणु सुउ धैरिचि देहमाभासुउ
पुणु तउं अरिचि समादि लोअण्णिणु
पुणु अवराउउ गरवइ हुयउ
पुणु सजामउ इयैणिहीउउ

अवर वसतसेण जा कामिणि ।
कणसिरि णउलु धम्मविट्ठिण्णी ।
कम्म गिवद्धउ अवसें पुअर ।
जा दुग्गअ कण्ण सा दोमइ ।
अणु अणु गियमवाइ पेमीसर ।
होतउ पडमअदिम इउ णाहुलु ।
वाणि सणाणु धरिउं मोसारिउ ।
मइमासइ गिविसि कय भावें ।
इअकेउ अणिररकुलि जावउ ।
अयइसेण हुयउ कप्पामर ।
हुउ चित्तागइ कयरपरेसउ ।
उप्पण्णउ माहिदि अरेअणु ।
मुणि होअवि अण्णेर संभूयउ ।
सुधैरहु णामें पुहरेसउ ।

10

अत्ता—इउ हुंउ रिसि सोळकारअर विअदियउल्लर भाविअर ॥ 15

जिणजग्गकम्म मइ संविअउ वहुदुरियउ उइअविअर ॥ १८ ॥

७ A सुमरतहे S सुमरतह ८ A विणिज्जि वि ९ AS अण्यसग्गि १० A विअसेविअ ११ A सुवे विअ B सुवेविउ १२ A होतउ १३ A हुउ सोमयउ बुद्धिद्विउ १४ A सोमिअ भीमु (It appears that P contains an altogether new version from वहुविदेहि down to अरिणि, while A seems to agree with P in lines which are common to all versions)

18 १ A agrees with P in the text of the first two lines for which see under 17 २ S वम्म. ३ A दोमइ ४ AP अरेवि ५ APS उक्किउ ६ S पेणमिअ ७ ABPK अरेवि ८ A देहमाभासुउ ९ S तउ १ B अण्णिणु ११ B अण्णुउ १२ A देउ गिहीउ BPS विअणिहीउ १३ P हुयअहु १४ BKS omit हुउ

11 a अण्यसग्गि वोडगे खोँ सुयसेविउ ओलेविने सोमभूविअत्तु देवकी सनाते हे अजिके

18 2 a विरिचि अणुउ ३ कणसिरि नागभीअती 4 ३ दोमइ होयरी 5 ३ णाहुलु भिअ 7 ३ सणाणु वापउद्विउ 8 a अविअ मइराउ मरिओ मइराउ

19

पुणरवि मुउ रयेणावलयितइ
तहि हौतउ आयउ मल्लचत्तउ
ता पचमगइसामि णवेप्पिणु
पंचिदियइ दिहीई णियेत्तिवि
पंचमहव्वयपरियरु रइयउ
कौंति सुहइ दुवई सुयसत्तउं
तिव्वेतवेण पुण्णसंपुण्णउं
तिण्णि वि पुणु मणुयसु लहेप्पिणु

अहमिदत्तणु पत्तु जयतइ ।
अरइत्तत्तणु इह सपत्तउ ।
पंचासवदाराइ वैहेप्पिणु ।
पच वि संणाणइं सचित्तिवि ।
एवहिं पढवेहिं तउं लइयउ । 5
रायमईहिं पासि णिंश्वेतउ ।
अच्चुयकप्पि ताउ उप्पण्णउ ।
सिज्जिहंति कम्मार् महेप्पिणु ।

घसा—पंच वि तवतावसुतसैतणु चिरु जिणेण सहु हिडिदि ॥
मय ते सत्तुंजयभिरिवरहु पडव जणवउ छंडिदि ॥ १९ ॥

10

20

सिद्धपरिद्वेत्तिणिट्ठाणिट्ठिय
भायेणेउ कुरुणाहहु केरउ
तेण विट्ठ ते तहिं अवमाणिय
कडयमउउकुंडलइं सुरत्तइ
तणुपलरसवसलोहियहरणइं
अमभायेण विवज्जियदुक्खहु
णियसरीरु जरतणु य गणेप्पिणु
णउल्लु महासुणि सहएउ वि मुउ

तहिं आयावणजोयपरिद्विय ।
पावयम्मु दुज्जणु विवेरेउ ।
अउदिसु साहणेण सदाणिय ।
कडिसुत्ताइ हुयासणतत्तइ । 5
रिसि परिहाविय लोहाहरणइं ।
तव सुय भीमज्जेण गय मोक्खहु ।
अरियिरउ उवसग्गु सहेप्पिणु ।
पंचाणुत्तरि अहमीसरु हुउ ।

घसा—मिच्छत्तु जडत्तणु णिह्लवि वेंतु बोहि विदिगारा ॥

पंडवमुणि जणैमणतिमिरहर महं पसियंतु भट्टारा ॥ २० ॥

10

19 १ P °मलिअतए २ S °दारावइ ३ AP विहेप्पिणु, AIs वहेप्पिणु, ४ B दिदिइ, ५ AP णियत्तिवि, ६ A वउ, ७ PAls दुवय°, ८ A सुह°, P सुव°. ९ APAls सत्तउ, १० A णिकिखत्तउ, B णिकलत्तउ ११ A पुव्वतवेण १२ P °सपण्णउ १३ BS सुतत्तणु.

20 १ PAls °सुणिट्ठा°. २ A आवावणजोएण, S आयावणजोए, ३ P भाइणेउ, ४ B सुतत्तइ ५ B भीमज्ज ६ B सहएउ ७ S omits मय

19 1 a रयेणावलयितइ हे स्तयालाकान्ते 3 b वहेप्पिणु हत्वा 4 a दिही इ सतोवेण 5 a °परियरु परिकर. 6 a सुयसत्तउ अतासत्ताः. 7 a पुण्णसपुण्णउ पुण्यसपूर्णः, सत्यः.

20 1 a °सणिट्ठ° स्तनिष्ठया चारिवेण, b आयावणजोयपरिद्विय आतापनयोरे स्थिताः 2 a कुरुणाहहु दुर्बोधस्तत्त्व. 6 b तव सुय तव पुना बुधिक्षिरादय.

21

छद्दसयाह णवणवह य वरिसह
महि विहरेपिणु मयणविधारह
पडियपडियमरणपयासै
तवतावोद्धामियमयरह
मासादहु मासहु सियपणवह
पुर्व्वरासि भत्तामरपुञ्जिउ
पयहु धम्मवित्ति पयहत्तह
बममहामहिणाहु णवणु
बमयत्तु णामे च्छेसव
बण्णे तत्तकणययणुल्लु
सत्तसयाह धमाह जिरेपिणु
गठ मुठ कालहु को वि य सुज्जह
इय जाणिवि चारित्तपवित्तहु

जयमासाह भयव चउदिवसह ।
गठ उज्जतहु जेमि भडारउ ।
मासमेतु पिउ ओयम्भासै ।
पचसपरिहं पिसिहि सई सिज्जउ ।
सत्तमिवासरि चित्तारिक्खर । ०
जेमि सुहाह वेउ मलवज्जिउ ।
विमुणहि सेणिय कालि गलत्तह ।
धूलवेविहि णयणाणदणु ।
सजायउ जगमलरुहेसव ।
सत्तथावपरिमाणुं महाबलु । 10
उक्खव वि मेहणि भुजेपिणु ।
सकु वि जयकालहु णउ लक्खह ।
सत्तहु सत्तुमिसैसमवित्तहु ।

धत्ता—सुविहिदि भउहु तिरथकरहु धम्मबज्जेजेमिहि वरर ॥
समरहं पुष्पदत्तहु पयह विविहज्जमेतमसमहरह ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिलहिमहापुरित्तगुणाल्लारे महाकापुष्पयतविरचय
महामम्ममरहाणुमणिए महाकम्मे जेमिणाहनिष्ठाणगमण
जाम पुणवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ २२ ॥

जेमिजिणे जयमवळयवत्तहह धासुपवकणह पडिवासुपवज्जरेत्तव
वायुमवळयवत्तहह पत्तविरिच समत्त ॥

21 1 AP उपाह वरिसह जणवठवह 2 णवठवह वरि 3 Ais णवणउवह वरिसह
२ APS उज्जतो ३ P वहु ४ S पुवरव ५ A reads b as a and a as b ७ AI
जीवेपिणु ८ A सुज्ज ९ I वत्त १ BP मित्तु ११ P समहु १२ A "जम्ममवसमहरह"
BSAIs "जम्ममवसमहरह" P "जम्ममवसमहरह" १३ A adds बमदत्तवक्कपिवरर १४ AS
दुणवदिमो १५ A omits this पुष्पिका १६ B जरात्तु S जरत्तु

21 4 a तावोद्धामियमयरदउ तापेन निस्सुत्तकाम 6 a पुष्परत्ति पूर्व्वरासे
11 a विहपिणु जीविता 14 सुविहिदि सुद्ध चारित्तव वक्कायाउल्लणस

NOTES

LXXXI

1. 2 भणु नुरारिजरसवह—The narrative of Nemi, the twenty-second तीर्थंकर of the Jainas, contains an important episode, viz, the fight of कृष्ण and जरासव. According to the भागवतपुराण the fight of कृष्ण and कृष्ण is regarded as the most important feature of the life of कृष्ण, while जरासव is killed by भीम. कृष्ण is mentioned as having run away from the battlefield and founded द्वारका in order to escape the attacks by जरासव. In MP the word जरासव appears in three different forms, जरसव, जरसिच and जरसैच. Of these the first two are promiscuously used in my text and the third almost ignored as there is no consistency in Mss.

2. The poet states, as in MP I, that he does not possess necessary qualifications to undertake the composition of हरिवंश 1 b देखिलेहु, fragmentary or elementary knowledge of देशी words or lexicons. 6 a सुबहु दिवहु (सुबन्त, दिवन्त) noun inflexion and verbal inflexion 11-12 The poet feels confident that his fame as poet will place her feet on the necks of the wicked and wander beyond the three worlds.

3. सीहडरि जरासव अहंदाहु—It will be better if the reader remembers that the poet is giving here the narrative of the previous births of नैमि, not in their chronological order but in the order of strikingness. These previous births chronologically are —मिह, हंसकेतु, सौधर्मदेव, चिन्तामणि, चतुर्थ-स्वर्गदेव, अपराजित, अमृतनेत्र, सुप्रसिद्ध and जयन्तदेव. The poet starts with the life of अपराजित here. He then takes up the story of चिन्तामणि and his two brothers. Then he proceeds to हरिवंश proper to give the parentage of नैमि.

4. 11 केसटिपुरि, i e, सिंहपुर 13 तुह जणु means अहंदाहु.

5. 7 यसनगह, च+अशनाङ्गानाम्, अशनाङ्ग means articles of food 10 अपुण्ह कलि, before his destined time of death, premature death.

6. 5 गहयलि मुणिद—The चारणमुनि are those who are able to travel through space as a result of their spiritual powers. They are his brothers of the previous birth.

8. 2 a-b, जीनेस वि गियपवमूलि चित्त निव्वाहर—She, i e, श्रीतिमती, trampled under her foot or humbled down the pride of all विद्यापद as they came to woo her, but were unable to complete the three प्रदक्षिणा of मेरु.

9 1 b *सुह* here stands for *सुह* 10 नीवर दुस्तसिद्धि, etc. The fire of sufferings of the poor etc. is extinguished if they cling to the lotus-like feet of the revered Jinās

10 3 a *सिरीविवस्मि* goes with *मार्हिदकस्मि* and means heaven as T says 13 दूरितरं stationed at a distance this word is to be construed with *पयणई*

12 5 b *अणु* food

14 12 *इवर*, the merchant *सुसुह*

18 14 *पितृ*, i e, father

19 4 *वसुवद*, the couple *सिंहदेव* or *मार्हे* and *विष्णुमाता* 18 Note how the narrative runs over to the next Samdhi

LXXXII

1 4 b *सुह* चार, the children of *सुमरा* and *अन्यकहस्मि* are enumerated here. They had ten sons and two daughters 9 b-18b These lines enumerate the lives of the first nine sons of *अन्यकहस्मि* *वसुदेव* is the youngest and his narrative is continued later

2 8 a *पञ्चउत्तरायणसुह* *सकवर*—According to the Jain version *सकवरी*, the wife of *पारणर*, is a princess of the *मल्ल* country and not a fisherman's daughter. Note the difference in the accounts of births of the *पञ्चवज्र* and *कीरवज्र* as given here and in the *महामातृ*

3 8 a *पुष्करि*, white or bright like a blooming lotus

5 1 a *सुहसुहसुह* etc. Note how the first born son of *कुन्दी* was disposed off. He had a pair of ear-rings a gold armour and a letter containing information about his parentage. He became the adopted son of king *आदित्य* and queen *रघा* of *वज्र* and seems to have succeeded his father to the throne of *वज्रदेव*

6 5 b *सुपन्नमसुह* to *अन्यकहस्मि* and *नरसिंहस्मि*

8 8 a *वरदच*, the name of a Brahmin priest of the family

16 1 a *वसुदेवायण* the previous births of *वसुदेव* 4 a *पितृमातृ* his maternal uncle 8 a *गुहसिद्धरुद्ध* ascending the lofty peak of the mountain from which he wanted to throw himself down 9 b *सुरणाम* *जिणाम* *मुनि*—These are destined to be *कुल* and *वज्र* in the subsequent birth 11 a *कायजय* *परु* the shadow of a human being

17 11 *b* दुरित दिसारलि दिवद—If you practise penance according to Jain principles, you can scatter your miseries in different directions दिसारलि, offering to or scattering in दिगास, i. e., quarters or cardinal points

LXXXIII

1 5 *a* अगार सलणु रणायर, ocean, not saltish, yet beautiful : Note the double meaning of सलणु

3 1-2 Note how a lady, looking at वसुदेव, put under her arms a cat instead of her own child, and thus supplied to the people a comic situation

4. 6 *b* अतुत्त, his improper conduct

6 1 *b* बाले, by young वसुदेव.

7. 10 *b* एह आपेवितवि मयणु वि दूहउ—Compared with you, even god of love looked ugly (दूहउ, दुर्भाग). 14 *b* मीणारलिमाणित, water respected or used by a mass of fish, i. e., fresh running water of a stream.

8. 13 एहियुण्णसाम्भे etc.—Fresh and young leaves came out or appeared on old and withered trees as if on account of the prowess of the merit of the visitor (एविक), viz., वसुदेव.

11 6 *b* बल्लिहिरुदे, by shouting " get out "

12 1 *b* दुहियावर, the husband of your daughter 13 समरएहि अमणी, वामरि who never know defeat in hundred battles

13 8 वामुज्जिणजम्मणरिदी—The town of वग्ग became famous as the birthplace of वामुग्ग, the 12th तीर्थंकर

16. 11 एवण्ण मीसणि उणउच्छिदुउ पिउउ—He threw on the heads of monks the leavings of food of people who were fed at the sacrifice The story of रलि and his conquest by the monk विणु by asking him to give him earth measured by three steps will remind the reader of the corresponding story as found in Hindu mythology

21 11 *b* देमिउ, a traveller or foreigner.

22. 3 *b* अविमारिय (अविदारिया), without being killed.

LXXXIV

1 5 *b* मदिणिय, resting or living in soil. 17 एउ वि रुमेमि मोयणु, I myself shall feed this monk by giving him alms. Although the king said so, he did not give him alms and the monk had to go without food.

2 1 b हुयासु स्युः, fire broke out in the city in the first month a maddened elephant teased the people in the second month, and a threatening letter from King जरासभ was received by King उग्रसेन in the third month
6 a यः वाक् सः पादसि देह—He prevents others giving alms to the monk but himself does not give food to the monk

3 8 b कलालयवाधिकाह, by a young lady of a wine-shop keeper (कलाल)
12 a वसुदेवरीशु—कः became a pupil of वसुदेव who is frequently referred to as मदनमोहिनी उज्ज्वल, चावली etc 19 मेरी कुल सो मावह he will win (the hand of) my daughter

5 1 a उग्रहर, by वसुदेव who was the son of कुमरा

6 5 b उषि विषगुह्यमहो पश्यरेवि—When वसुदेव and सिंहास were fighting कः stood between them and captured सिंहास

12 7 a विठवपति विद पावहः बीह—अविमुक्त, brother of कः, renounced the world when their father उग्रसेन was imprisoned by कः

14 1 b कः दिव्य—वसुदेव was pleased with the exploit of his pupil कः when the latter caught सिंहास and gave him a boon which कः kept in reserve अवसः तासु अमु, to-day is the time to get the boon fulfilled

17 11 a विष्णुमन्त्रासु जो आसि कसि, the god from महाभूत heaven, who, in his previous birth was a monk named निगम

18 10 a महिः one of the frequently used names of कृष्ण or विष्णु

LXXXV

1 5 a कण्डु मासि उषमि उवायत—कृष्ण was born in the seventh month after conception he had a premature birth, and hence कः was not watchful he put him to death as soon as born

2 Note the poetic beauty of this कवचः nay of the whole उषि which is one of the finest compositions of the Poet

3 3 a महु कवः etc—कः says that his wife यशोदा begged a son of a deity but she gave her a girl He wanted to return the girl to the deity if the deity would give him a son the desire of his wife would be fulfilled

4 5 अविनि पाविव दिर्दिदिदिदिदि, having crushed the nose of the girl and thus deformed her, कः put her into a cellar

8 10 b ता उहि देवगः उवायत—The deities which now came to कः were the same as when in his previous birth as a monk, had appeared

before him. For reference see LXXXIV. 2. 9-14. It is these deities which assumed different forms such as पूतना and made attempts to kill कृष्ण at कंस's bidding.

12 15-16 ओहायियववळ etc.—कृष्ण who had just vanquished the bull (i. e., demon अरिष्ट), was glorified in the cowherds' colony in songs styled ववळ Who will not praise the most glorified member of the house, the bright among the brightest ? ववळ is a kind of folk-songs composed in a metro which is named ववळ. The theme of these songs is usually the glorification of कृष्ण and they are sung by गोपीस. हेमचन्द्र in his छन्दोनुशासन V. 46, mentions some four types of ववळ and names them as यशोववळ, कीर्तिववळ, गुणववळ etc. Some of these are अर्धसम, with first and third line and 2nd & fourth agreeing, while there is one more type in which first and second are similar and third and fourth are again similar. Among the महाभारत poets these ववळs, or ववळे as they are called, seem to be well-known, and those of महाभारत, are now edited and published by Y. K. Deshpande under the title "आद्य मराठी कवयित्री" The type of her ववळे agrees with the last named scheme, viz.,

1st and 3rd line . 6+4+4+4=18, + 2 or 3

3rd and 4th. : 4+4+4+4+4=20, + 2 or 3

13.10-15. 9 These lines describe a secret visit of वसुदेव and देवकी to कृष्ण.

16. A fine description of the rainfall.

17.11-12 पायामिन्द्र etc. Astrologer वरुण says to कंस that he who is not frightened by sleeping on the bed of a snake, blows a conch with his own breath and strings the bow, will show to कंस the city of the god of death, and that he will release उग्रसेन and kill जरासह.

20. 8-9 हउ मि आमि etc. कृष्ण says he would also go to मथुरा and do all the three things, whether he will marry कंस's daughter, he could not say, for a cowherd-boy (दालिक) may not care for the princess

22. 3 a अग्नि व अवरेण दक्षेणि, having covered fire in clothes मानु and सुमानु, the sons of जरासह, brothers-in-law and allies of कंस, took कृष्ण with them to मथुरा.

23. 10 b अपसिदेव सुमानुहि मित्रे, by कृष्ण, who was taken to be some unknown servant of सुमानु.

LXXXVI

1 23 a उविदु १ e कृष्ण The name of कृष्ण is expressed here by all synonyms of विष्णु Compare पुरिलोचन and मधुसूदन below

3 4 b गड बीरर सधु गडवेड—कृष्ण, with his emblem of गड, is not frightened by सर्प The enmity between गड and सर्प is well known

5 10 उम्भगनसचालियवड, the crowd of cowherd boys caused the earth to tremble on account of mutual clashing

7 10 a सो वि सो वि, both कृष्ण and बाणू

10 8 a भवि वि निगड, having broken or removed the fetters which कड had put on उमसेन and पचावरी

11 2 b हरजामडु मडु डडु ताव ताड—Addressing मन्द कृष्ण says to him that मन्द is his father in this birth because he fostered him

LXXXVII

1 0 a कथिविविवि उवरमदि विव—Lake Northern India where there is no town bearing the name of काञ्ची (Canjeevaram of South India), बीवजरा having lost her husband कड, did not put on काञ्ची, girdle, which is used only by those ladies whose husband is alive

2 1-12 बीवजरा describes to her father बरलर the various exploits of कृष्ण

4 14 कामाकीरु डिगि कम्—असुरावित a son of बराचय, made three hundred and forty-six attacks or attempts on कृष्ण, but was defeated

5 14 b देवगमय, leaving the country or going to another country कालयवन being very powerful the advisers of कृष्ण proposed to him not to give a straight fight to कालयवन but to withdraw from मधुरा and go towards the western ocean

6 13 a हरिउदेनविसेरहि रयड—Certain guardian deities of हरिषय played a trick on कालयवन They set fire to a region where dead bodies were seen burning and the deities cried bewailing the loss of यादव कालयवन then thought that कृष्ण and other यादव were dead and returned to his father

7 10 आहवि सडु मिडेवि मडु मडु विवि वि व डडड—कालयवन regrets that यादव died of fire and that he lost the opportunity of obtaining fame by vanquishing them in a face-to-face fight

10. 6 थियउ ठेणु etc.—This was the site on which द्वारवती was built by कुवेर as it was to be the birth-place of नेमि, the twenty-second तीर्थंकर.

13. 4 पउरदरियइ आणइ, at the command of पुरंदर, i e, इन्द्र

17. 2 नेमि सद्विजो—The would-be तीर्थंकर was named नेमि, because he was the नेमि, the rim, that protects the great chariot of Law

LXXXVIII

1. This कडवक summarises events since कृष्ण left मधुरा down to his founding द्वारवती.

2. 10 a दुव्वाए जलजाणु ण ममउ, fortunately my ship did not wreck although it met a stormy wind (दुर्वात).

3. a णवरज = णवर + अज

4. 10 b दे आपसु—कृष्ण asks the permission of his elder brother बलराम before he starts

5. 16 a-b जो सुहृद्द etc —The poet says that the dust raised in the sky was the smoke of the fire of rivalry of warriors. Note a fine set of fancies on the dust raised on the battle-field in the next कडवक as well

9. 11 a गोपाल—जरासथ addresses कृष्ण as गोपाल. See the spirited answer of कृष्ण below in lines 15 and 16, पइ मारिवि etc गोमण्डल पालमि, गोड इड, I protect the earth (गोमण्डल), and so I am a गोप.

16. 13-14 These lines give the list of seven gems which a पाण्डवेव possesses

17. 3 b तेसियइ सहासइ विलयइ—कृष्ण had sixteen thousand wives & This line mentions the four gems which a बलदेव possesses. 13 a कसमहुवइरिड—कृष्ण is called here the enemy of कस and महु, i e, जरासथ.

19 15 होसि होसि etc —सत्यमामा says to नेमि “ I know you are my husband's brother, but are you दामोदर ? ”

22 10 a णिवेयहु कारणु—If नेमि sees some cause which would create in him disgust for सत्तार, he would practise penance, and become a तीर्थंकर. 12-13 रायमइ or राजीमती is said to be the daughter of उग्रसेन and जयवती. Elsewhere she is said to be the daughter of भोगरान or भोजराज. Compare अह च भोगरायस in the उत्तराख्यान, 24. 43 कस is mentioned as her brother, but this कस and his father उग्रसेन seem to be different from कस, the enemy कृष्ण, as T suggests

LXXXIX

1 3-4 एकदु विचि विचिदु etc —I do not like to eat flesh because, one (the eater) gets only a momentary satisfaction by eating flesh while the other (animal killed) loses its life भवविदुरकारि eating flesh causes the loss of spiritual life in one, while the other actually loses its present life 9 a निवेद्यदु कारणि इरिचिदाइ these creatures were placed on the way of नेमि in order to cause in him disgust for life

6 1c नेमी कीरणा is to be construed with पुच्छिउ in the second line of the next कदवक

8 7 a एरवरि etc —The portion beginning with this line and ending with this samdhi deals with the previous lives of देवकी, बलदेव and कृष्ण 7 b बरदचु the first गणपति of नेमि

9 1d मणिया—The narrative of मणिया the wife of वक्रमुष्टि is interesting She was very badly treated by her mother-in-law Her husband loved her dearly, but she ultimately proved to be faithless

18 9 a दो छलु वि छलु गिण्णामरण—These two monks were born later as बलदेव and कृष्ण

XC

1 5 to 3 9 This portion narrates the previous lives of उत्तमामा the most proud and impetuous wife of कृष्ण The narrative contains a small episode of दुष्टसत्तामय a Brahmin who abused the Jain doctrine and recommended to people the Brahmanic practices such as gifts of earth cows etc

2 10 b मोडु is definitely a Kannada word which the Poet has used Those who want to argue that the poet lived in South say at काशी should note that this word does not occur in Tamil or in any other South Indian languages except Kannada It is natural that the poet who lived under a mixed influence of माहासय and कर्णटक should use occasionally a word or two from either language and words from a weaker language would be those that are most commonly known word I stick to my view that the poet came from Northern India probably from Berar as suggested by Pandit Nathuram Premi

3 10 to 7 14 Past lives of रुचिगती

4. 4 *b* उबरकुट्ट, with leprosy. उबरकुट्ट is one of the 18 types of कुट in which the body gets the colour of the ripe fruit of उडुम्बर, fig 18 समारमै, with spiced waters

7.15 to 10.12 Previous births of जाम्बवती

10.13 to 12.10 Past lives of सुसीमा.

12.11 to 14.2 Past lives of लक्ष्मणा.

14.3 to 15.9. The same of गांधारी.

15.10 to 16.11 The same of गौरी.

16.11 to 19. 9. The same of पद्मावती. 10 *b* अनियाणियतमदलहु अवगाहु, a vow not to eat a fruit the name of which is not known. See how the lady died as she could not get fruits of known names in a famine

19. 10 *a* अहि सारहु आइ ण दीसइ etc—How can I narrate to you the series of births when the ससर is beginningless. The soul dances like an actor on the stage, taking different roles

XCII

2. 10 *a* ती क्षामारहु पदु सुम्प—If persons who kill animals would go to heaven, then, the butcher should be the first man to go to heaven

6. 6 *b* तियसीए, on account of grief at the loss of his wife. 12 *a* महु सभुस पदुण्णु णाहु—मधु, in his previous births, was अमिश्रित, पुण्यमद्र or पूर्णमद्र, and became प्रतुम, the son of रुक्मिणी. He was taken away by कनकरथ whose wife had been abducted by मधु. प्रतुम was handed over to his queen काञ्चनमाला by कनकरथ. This काञ्चनमाला later fell in love with प्रतुम, who rejected her love. The queen thereupon raised a false alarm that she was insulted by her so-called son.

16. 7 *a* हरिपुचहु, to प्रतुम the son of कृष्ण. 8 *a-b* These are the names of the five arrows of god of love whose incarnation प्रतुम was.

21. 9 *a* माणुमायदेवीणिकेउ, to the house of सत्यमामा, the mother of prince मल्ल 12 *b* बमणु दोइधि खससु पदहु—The Brahmin who has visited our house is in reality, a demon, that is why he eats so much and is not still satiated.

XCIII

1. 12-13 जइयहु etc—Both रुक्मिणी and सत्यमामा gave birth to sons at one and the same time. The maids of both went to कृष्ण to announce the

birth but as कृष्ण was sleeping one maid sat on the side of his head and the other on the side of his feet- कृष्ण got up and saw the maid who was sitting at his feet that maid (of रुक्मिणी) then announced the birth of a son to रुक्मिणी and कृष्ण said that that son would be the heir-apparent.

6 1 नेमि informs बलदेव how द्रमावती would be burnt and how कृष्ण would meet his death

8-10 The story of the पाण्डव's in outline and of the द्रौपदीस्वयंवर

14-15 Previous births of the पाण्डव's

18 6 Previous births of नेमि beginning with that of a मित्त

21 7 a The story of ब्रह्मदत्त, the twelfth and last चक्रवर्तिन,

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kadavaka	Line	Incorrect	Correct
8	9	1	उह	तुह
26	19	18	धम्मरह कुलहिं	धम्मरहकुलेहिं
31	Foot Notes	last	भिविड	भिमिडं
40	16	2	कर	कर
40	Foot Notes	4	मारणावा उकेन	मारणावाउकेन
42	19	4	मारसहोयव	"मार सहोयव
48	2	10	भगति	भगति
48	Foot Notes	last	अस्ताव	अस्ताप
51	7	2	असजस	अस जस
51	12	10	असजसजस	असजस कस जस
63	5	2	अलियाहहिं	अलियाहहि
63	6	13	जयोप	जयोप
76	19	1	विसरुमर	विसरुमर
82	1	1	"छिण्णउ	"छिण्णउं
112	12	8	नये	नये
120	23	1	"वहपव	"वहपव
129	10	8	वहरिणीह	वहरिणीह
133	13	17	वधव	वधव